सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : सवक

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 16

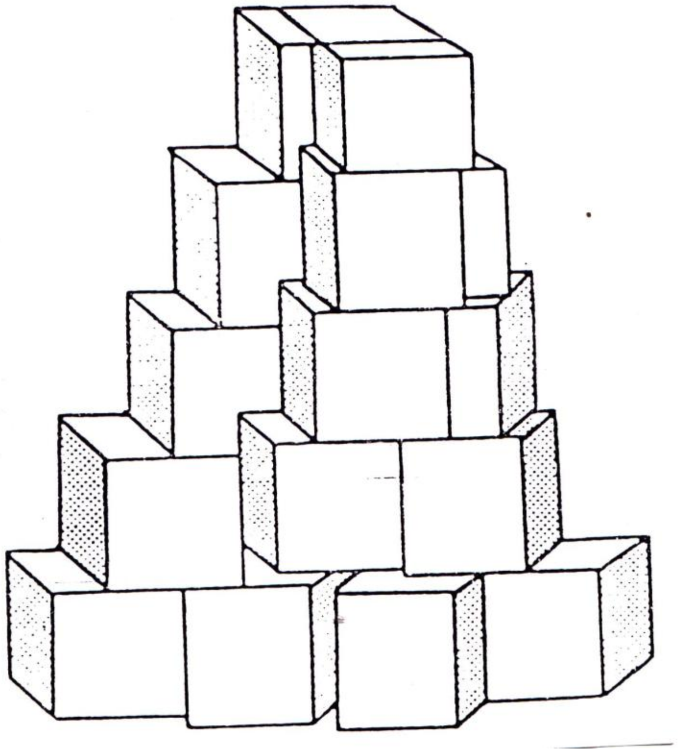

स्तर:

5. सवक
4. अगुवा / पास्टर
3. समूह या सेल अगुवा
2. चेला
1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- ## उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- ## और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक नं.: 16

पृष्ठ

क्रमाँक

- पृथ्वी पर बदलाव लाने के लिए परमेश्वर प्रार्थना और मध्यस्थता कैसे प्रयोग करता है! 2504

  (14 अध्याय)
  - प्रश्न है...
  - प्रार्थना की आवश्यकता
  - यीशु को दोबारा प्रस्तुत करना
  - सभाएँ: अच्छा, बुरा और बदसूरत
  - जाँचने की गुस्ताखी
  - उल्लंघन मना है
  - तितलियाँ, चुहियाँ, हाथी और चाँद
  - अलौकिक प्रसव
  - पेशावर पहलवान
  - अति महान मनुष्य
  - परमेश्वर की बिजली
  - प्रार्थना का तत्त्व
  - बोलनेवाले कार्य और कार्य करनेवाले शब्द
  - पहरेदार का अभिषेक

- कलीसिया में आज भविष्यद्वाणी को समझना (4 अध्याय) 2589
  - भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वाणी के वरदान को पहचानना
  - भविष्यद्वाणी की समस्याएँ
  - प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं का इकट्ठे काम करना
  - एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक कलीसिया पर कैसे आता है

- कलीसिया में आज प्रेरितों की पुनःस्थापना और पहचान 2618

- अन्तिम खोज - (अन्तिम दिनों के दर्शन) 2622
  1) नरक के झुण्ड कूच कर रहे हैं
  2) पवित्र पर्वत
  3) उकाबों का लौटना
  4) सफेद सिंहासन
  5) जयवन्त

प्रार्थना और मध्यस्थता को परमेश्वर पृथ्वी पर परिवर्तन लाने के लिए कैसे इस्तेमाल करता है!

अध्याय 1 – प्रश्न है...

कोई आशा नहीं

मैं जानता था कि जिस व्यक्ति के लिए मैं प्रार्थना करने वाला हूँ बहुत बीमार है। जो मैं नहीं जानता था वह यह था कि वह बेहोशी की नींद में थी और डॉक्टर ने उसके पेट में भोजन नली डाल रखी थी। वह इस दशा में डेढ़ वर्ष से थी। जब मैं ने उसे देखा मुझे धक्का लगा। उसकी बहन जिसने मुझे इस जवान लड़की के पास जाने के लिए कहा था, मुझे सब बातें नहीं बताई थीं। उसे डर था कि यदि उसने मुझे बताया होता कि स्थिति कितनी खराब है तो मैं जाता ही नहीं। वह जानती थी कि यदि वह मुझे एक बार वहाँ ले जाए, तो मैं सम्भव है दोबारा जाऊँगा। वह सही थी! डॉक्टरों ने उसे जीवित रहने की, और बेहोशी की नींद से बाहर निकलने की कोई आशा नहीं दी थी। उन्हें विश्वास था कि उसके दिमाग को गहरी क्षति पहुँची हुई है। उन्होंने कहा था कि यदि वह होश पा भी लेती है तो भी वह मानसिक रूप से निक्रिष्य रहेगी। क्या आप कभी इस प्रकार की स्थिति वाले व्यक्ति के पास खड़े हुए हैं और परमेश्वर से चमत्कार की माँग की है? मृत्यु के सामने खड़े होकर जीवन की माँग करना डरावना दृश्य हो सकता है। यह हमें सिखा भी सकता है - जीवन के बारे में, मृत्यु के बारे में, हमारे अपने बारे में और परमेश्वर के बारे में। जब हम उसी व्यक्ति के पास, पूरे वर्ष भर में, 60 से 70 बार, हर बार एक या एक घंटे से अधिक, खड़े रहेंगे तो हम काफी कुछ सीख सकते हैं।

अनपेक्षित से सामना

उस जवान स्त्री में, जैसी मैंने आशा की थी वैसी प्रगति नहीं हुई। जीवन में बिरले ही होता है, है ना? मैं ने आशा की थी कि प्रभु इस जवान स्त्री को हमारी प्रार्थनाओं के द्वारा एक नाटकीय, आसान, शीघ्र तरीके से चंगा कर देगा। आखिरकार, जब यीशु किसी को चंगा करते थे तो ऐसा ही होता था।

- मैं ने अपने जीवन के हर सप्ताह तीन से चार घंटे (सफर के समय के साथ) लगाने की अपेक्षा नहीं की थी।
- मैं ने नर्सिंग होम के कर्मचारियों से जहाँ वह थी अपमान की अपेक्षा नहीं की थी।
- मैं ने इतना रोने की अपेक्षा नहीं की थी।
- मैं ने कभी-कभी इतना साहसिक होने की अपेक्षा नहीं की थी।
- मैं ने कभी-कभी इतना भयभीत होने की अपेक्षा नहीं की थी।
- मैं ने अपेक्षा नहीं की थी कि इतना समय लगेगा।
- मैं ने इतना सीखने की अपेक्षा नहीं की थी।

चमत्कार

हाँ, परमेश्वर ने उसे चंगा कर दिया! स्थानीय अखबार के पहले पृष्ठ पर लिखा था, "दो वर्ष बेहोशी की नींद में रहने के बाद स्त्री जागी हुई, जीवित, स्वस्थ्य।" परमेश्वर ने उसके दिमाग को चंगा कर दिया था, हालाँकि डॉक्टरों ने कहा था इसे बाहरी सतह को वाइरस ने पूरी तरह नष्ट कर दिया था। यह सारा का सारा संदूषण से भरा हुआ था। डॉक्टरों ने इसे "डाक्टरी चमत्कार" कहा था। "हमारे पास कोई स्पष्टीकरण नहीं है", उन्होंने कहा, परन्तु उन्होंने परमेश्वर को महिमा नहीं दी। चंगाई वास्तव में एक शनिवार की सुबह हुई जब वह अकेली थी। उस सप्ताह के शुरू में वह संदूषण के इलाज के लिए नर्सिंग से अस्पताल में ले जाई गई थी। और अतिरिक्त परीक्षणों के बाद, डॉक्टरों ने कहा था कि उसकी स्थिति खराब हो गई है और सम्भवतः वह शीघ्र ही मर जाएगी। इस बुरी खबर को सुनने के बाद, उस स्त्री की बहन ने मुझे बताया। मैं तेजी से अस्पताल पहुँचा। मैं जानता था कि जो लोग बेहोशी की नींद में होते हैं अपने आपपास हो रही हर चीज को सुनते और समझते हैं। इसलिए उस बुधवार मैं ने उससे बहुत बात की। (हमें बाद में पता चला, कि उसके दिमाग में हानि के कारण, वह मुझे सुन नहीं पा रही थी।)

"यह बुरा सपना लगभग बीत गया था," अपनी आँखों में से बहते आँसुओं के बीच, मैं ने कहा।

"हमें कुछ भी अपना चमत्कार पाने से रोक नहीं सकता है। कुछ भी नहीं!"

जैसे मैं रोते हुए अस्पताल से निकला, मैं बार बार अपने आप से कहे जा रहा था, "हमें कुछ भी अपना चमत्कार पाने से रोक नहीं सकता है। कुछ भी नहीं!"

यह न केवल मेरे अन्दर एक शक्तिशाली आशा थी, परन्तु यह एक महान विश्वास भी था। उस सारे वर्ष भर मैं अनेक बार परमेश्वर से पूछता रहा था, कि क्या उसने वास्तव में मुझे इस स्त्री के पास भेजा था। हर बार मैं ने यह आश्वासन पाया था: "मैं ने तुझे भेजा है, हिम्मत मत हारना।"

दृढ़ता की सामर्थ्य

मुझ पर एक हठीला व्यक्ति होने का दोष लगाया गया है, और मुझे लगता है यह सच है। फिर भी, हठ को एक दृढ़ता या सहनशक्ति नामक धर्मी शक्ति में ढाला जा सकता है। मैं ने इसे मसीही जीवन के एक सबसे महत्त्वपूर्ण आत्मिक गुण के रूप में देखा है। महान प्रचारक चार्ल्स स्पर्जियन ने कहा, "दृढ़ता के कारण घोंघा भी नूह के जहाज में पहुँचा।"

दृढ़ता की कमी हार का, विशेषकर प्रार्थना में हार का, एक सबसे बड़ा कारण है। हमारे लिए प्रतीक्षा करना कठिन होता है।

तो, मैं एक वर्ष तक लगा रहा। जैसे मैं लगा रहा, मेरा विश्वास बढ़ता गया, और मुझे मेरे भीतर पता था कि हम जीतने वाले हैं। मेरा आदर्श-वाक्य गलातियों 6:9 बना हुआ था, "हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।"

उस बुधवार के तीन दिन बाद मुझे मेरा इनाम मिल गया! जवान स्त्री अपने दिमाग में पूरी चंगाई के साथ जाग उठी। जब मैं ने उसे जागे हुए और उसे "प्रभु की स्तुति हो" कहते सुना तो मुझे लगा कि हर घंटा और हर आँसू जो मैं लगाया था लाभकर हुआ था।

<u>प्रार्थना योद्धा नहीं</u>

मैं ने उस वर्ष भर में क्या सीखा? काफी कुछ! और मैं अभी भी सीख रहा हूँ। किसी ने बताया कि कुछ पर्यटक एक चित्रोपम गाँव से गुज़र रहे थे। उन्हें सड़क किनारे एक वृद्ध व्यक्ति बैठा दिखा। एक पर्यटक ने वृद्ध व्यक्ति से पूछा, "क्या कोई महान पुरुष इस गाँव में पैदा हुए थे?" वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया, "नहीं, केवल बच्चे।" मैं ने सीखा है कि कोई भी प्रार्थना योद्धा जन्म नहीं लेता है। वे जीवन की अभ्यास भूमि पर बनाए और शुद्ध किए जाते हैं।

कितने सारे प्रश्न

इस और दूसरी प्रार्थना की यात्राओं से... असफलताओं और विजयों से... अध्ययन में लगाए सैकड़ों घंटों से, मेरे पास आपको बताने के लिए कुछ विचार हैं। मेरा विश्वास है वे अनेक प्रश्नों के उत्तर देंगे, जैसे कि:

- क्या प्रार्थना सचमुच आवश्यक है? यदि हाँ, तो क्यों? क्या परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ नहीं? क्या इसका अर्थ यह नहीं कि वह जो चाहता है पूरा करता है, जब चाहता है करता है? यदि ऐसा है तो प्रार्थना क्यों करें?
- क्या एक मसीही के लिए परमेश्वर की इच्छा अपने आप से कार्य करती है या यह प्रार्थना और दूसरे कारकों से जुड़ी हुई है?
- एक प्रार्थना का उत्तर पाने में अकसर इतना समय क्यों लग जाता है? लगे रहने की आवश्यकता क्यों है? याकूब ने परमेश्वर के साथ कुश्ती की। क्या हमें भी प्रार्थना में वैसा ही करना है? मुझे परमेश्वर के साथ कुश्ती लड़ने का विचार अच्छा नहीं लगता है, क्या आपको लगता है?
- खोए हुओं के लिए प्रार्थना के बारे में क्या कहेंगे? मैं अधिक प्रभावशाली कैसे हो सकता हूँ? परमेश्वर से लोगों को उद्धार दिलाने के नए नए तरीके सोचते-सोचते मैं परेशान हो जाता हूँ, क्या आप नहीं होते? मैं सोच रहा था वह उन्हें उद्धार देना चाहता है? तब मुझे क्यों लगता है कि मैं उसे इस काम में शामिल करने की कोशिश करता रहता हूँ? क्या कोई बेहतर तरीका है? क्या मुझे उनके उद्धार के लिए बारम्बार माँगना चाहिए या केवल एक बार प्रार्थना करूँ और फिर विश्वास में उसका धन्यवाद करूँ?
- आत्मिक युद्ध के बारे में क्या कहेंगे? यदि शैतान हारा हुआ है और मसीह के पास सारा अधिकार है तो क्या हमें शैतान के बारे में भूल नहीं जाना चाहिए? क्या परमेश्वर दुष्ट को बाँधता है या हम बाँधते हैं?
- मध्यस्थता की प्रार्थना असल में है क्या? मैं जानता हूँ यह बाइबल से है परन्तु यह है क्या?
- सुरक्षा के बारे में क्या कहेंगे? क्या सबकुछ जो मेरे या मेरे परिवार के साथ होता है परमेश्वर होने देता है? या अपनी सुरक्षा के लिए मुझे कुछ करने की आवश्यकता होती है?
- "एक दूसरे का भार उठाओ" कैसे किया जाता है? (गलातियों 6:2)
- क्या प्रार्थनाओं के उत्तर के लिए सही समय है या समय मुझ पर निर्भर होता है?

क्या आप इन प्रश्नों से थक रहे हो? मैं जानता हूँ मैं थक रहा हूँ - इसलिए मैं रुक जाऊँगा। आप अपने आप से कुछ प्रश्न पूछते पूछते थक गए होगे। मैं जानता हूँ मैं थक गया था। कई लोगों ने उन्हें पूछना बहुत पहले ही बंद कर दिया था - और सम्भवतः प्रार्थना करना भी बंद कर चुके हैं।

कृपया, ऐसा मत कीजिए! पूछते रहो! मैं ने पाया है कि सही **उत्तर** सही **प्रश्न** से आरम्भ होता है। मैं ने यह भी पाया है कि परमेश्वर एक सच्चे प्रश्न से नाराज नहीं होता। वह संदेही को संतुष्ट नहीं करेगा और वह अविश्वासी से प्रसन्न नहीं; परन्तु वह एक सच्चे खोजी को पसन्द करता है। जिनके पास बुद्धि की कमी है और वे माँगते हैं, उन्हें वह डाँटता नहीं है (याकूब 1:5)। परमेश्वर एक अच्छा पिता है।

क्या आप मेरे साथ यह प्रार्थना करोगे ?
पिता, हमें अधिक ज्ञान की नहीं, अधिक समझ की आवश्यकता है। हमारे पास इतना सारा ज्ञान है कि हम चकराए हुए हैं। हाँ, हम कभी-कभी दोषदर्शी भी होते हैं क्योंकि हमारा ज्ञान सदा काम नहीं करता है। कभी-कभी बाइबल हमारे अनुभवों के विरुद्ध जान पड़ती है। हमें कुछ उत्तरों की आवश्यकता है। हमें बाइबल का ज्ञान और अनुभवा का मिलाप कराना होगा।
हम ने पूर्व के हमार मध्यस्थों के बारे में सुना है जो हर दिन लम्बे-लम्बे समय तक प्रार्थना करते थे और अदभुत परिणाम पाते थे। सच पूछिए तो प्रभु, जब हमारी प्रार्थनाएँ काम नहीं करतीं। यह थोड़ा परेशान और भयभीत करता है। हमें पता नहीं कि हम, जैसे महान मध्यस्थ किया करते थे, एक दिन में दो या तीन घंटे तक प्रार्थना कर सकेंगे। हमें उनकी प्रेरणा से अधिक की आवश्यकता है। हमें उत्तर चाहिए।
इसलिए प्रभु, जैसे आपके चेलों ने कहा था, हम कहते हैं, "हमें भी प्रार्थना करना सिखा दे।" हम जानते हैं इसमें अकसर परिश्रम लगता है, परन्तु क्या यह आनन्द नहीं हो सकता ? हम जानते हैं असफलताएं तो होगी, परन्तु क्या कुछ सफलताएँ नहीं हो सकतीं ? हम जानते हैं, "हम रूप को देखकर नहीं विश्वास से चलते हैं" (2 कुरिं. 5:7), परन्तु क्या हम कुछ और विजयों को... कुछ और लोगों को उद्धार पाते... चंगाइयाँ... नहीं देख सकते ? हम धार्मिक अभ्यासों से थक गए हैं जो हमें कुछ समय के लिए अच्छा महसूस करवाती हैं परन्तु कुछ भी फल बना नहीं रहता। हम भक्ति के भेष से थक गए हैं जिसमें शक्ति नहीं है (2 तीमु. 3:5)। कृपया, हमारी सहायता कर। यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

अध्याय 2 – प्रार्थना की आवश्यकता

जब आप बच्चे थे, तो सम्भवतः कोई जो अधिकार में था अकसर आपको कहता था, "यह करो!" जब आप पूछते, "क्यों!" तो वे उत्तर देते, "क्योंकि मैं ने कहा इसलिए!" हम में से कोई भी ऐसा कुछ करना नहीं चाहता जिसे किसी ने कहा है। असल में, क्योंकि परमेश्वर ने कुछ करने को कहा है, इसलिए हम अकसर करना नहीं चाहते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ परमेश्वर कभी-कभी "क्यों" के बारे में सबकुछ बताए बिना हमें कुछ करने को कहता है। परन्तु, यह अकसर कभी-कभार होता है जब वह हमें परख रहा होता है कि हम उस पर भरोसा कर रहे हैं या नहीं। यदि हम "क्यों" जाने बिना आज्ञापालन करते हैं, तो वह जानता है कि हम उस पर पूरा भरोसा करते हैं।
अनेक बार वह अपेक्षा करता है कि हम "क्यों" पूछें। असल में, मेरा विश्वास है वह चाहता है हम ऐसा करें। हमें रोबोट के समान काम करने के लिए नहीं बनाया गया है कि हम "क्यों" पूछें ही नहीं। परमेश्वर नहीं चाहता हमारी "शुतुरमुर्ग मनोवृत्ति" होः सिर रेत में, और सत्य, तथ्यों, विचार-वस्तुओं के लिए अंधा।

मैं जानना चाहता हूँ क्यों

परमेश्वर ने हमें जीवन के "क्यों" प्रश्नों के उत्तरों से भरी एक बाइबल दी है। जिसमें मैं रुचि रखता हूँ वह हैः **प्रार्थना क्यों करें ?**
जब हमें किसी चीज की आवश्यकता होती है और हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तब हमें "क्यों प्रार्थना करें" पूछने की आवश्यकता नहीं होती। प्रकट है हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि हमें कुछ चाहिए। मैं इस भाव से "क्यों" की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं परमेश्वर की प्रभुसत्ता के संदर्भ में "क्यों प्रार्थना करें" की बात कर रहा हूँ। क्योंकि परमेश्वर प्रधान है तो क्या मेरी प्रार्थनाओं का कोई प्रभाव पड़ता है ? परमेश्वर जो करना चाहता है क्या वह वैसे भी करने वाला नहीं है ? अधिकाँश लोग बिना स्वीकार किए ऐसा सोचते हैं। वे उनके प्रार्थना के जीवन, या बिना प्रार्थना के जीवन में प्रमाणित करते हैं कि वे ऐसा विश्वास करते हैं। क्या मेरी प्रार्थना वास्तव में कुछ बदल सकती हैं ? क्या मेरे प्रार्थना नहीं करने से पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा व्यर्थ की जा सकती या पूरी नहीं हो सकती है ? क्या परमेश्वर को मेरी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है या वह बस चाहता है मैं प्रार्थना करूँ ?
कुछ लोग कहेंगे कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर को किसी भी चीज की "आवश्यकता" नहीं है। परन्तु इन और दूसरे प्रश्नों के उत्तर मिलने चाहिए।

मुझे जानना है

जब परमेश्वर कहता है "प्रार्थना कर", तो मैं जानना चाहता हूँ यह महत्त्वपूर्ण है। मुझे धार्मिक अभ्यासों में कोई रुचि नहीं है और मेरा समय कीमती है। और आपका भी है। किसी ने लिखा है: "प्रार्थना करने के बाद आप प्रार्थना करने से कुछ अधिक कर सकते हो, परन्तु जब तक आपने प्रार्थना नहीं की है आप प्रार्थना करने से अधिक कुछ नहीं कर सकते। प्रार्थना विजयी प्रहार करना है। सभा परिणाम इकट्ठे करने के लिए है।"

यदि परमेश्वर हमारे प्रार्थना करने या न करने के बेपरवाह कुछ करने वाला है, तब तो उसे हमारे माँगने की आवश्यकता नहीं है और हमें भी अपना समय बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं है। हम कह सकते हैं: यदि सबकुछ वैसे भी होने ही वाला है, तब तो आओ हम सो जाएँ और सबकुछ होने दें।

जॉन वेस्ली ने लिखा, "परमेश्वर पृथ्वी पर विश्वासी प्रार्थना के बिना कुछ नहीं करता है।" यदि यह सत्य है, तो मैं इसके लिए कुछ नींद गवाऊँगा। मैं उसके लिए अपनी जीवनशैली बदलूँगा। प्रार्थना करने के लिए मैं जो कुछ कर रहा हूँ रोक दूँगा। मैं कभी-कभी भोजन भी छोड़ दूँगा।

- मैं जानना चाहता हूँ क्योंकि मैं ने प्रार्थना की थी मेरी पत्नी के अण्डाशय में वह पुटी गायब हो गई ।
- मैं जानना चाहता हूँ क्योंकि किसी ने प्रार्थना की थी इसलिए मैं भूँचाल में बच गया था।
- मैं जानना चाहता हूँ क्योंकि हम ने प्रार्थना की थी डायना उसके कोमा में से ठीक दिमाग के साथ बाहर आ गई थी।
- मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी प्रार्थनाएँ किसी के लिए स्वर्ग और नरक में अन्तर ला सकती हैं।

क्या प्रार्थना सचमुच आवश्यक है?

असली प्रश्न है: क्या प्रधान, सर्वशक्तिमान परमेश्वर को हमारी आवश्यकता है या नहीं? क्या प्रार्थना सचमुच आवश्यक है? यदि है तो क्यों?

मुझे विश्वास है यह आवश्यक है। हमारी प्रार्थनाएं बेदारी ला **सकती हैं**। वे चंगाई ला **सकती हैं**। हम एक देश को बदल **सकते हैं**। शैतान के गढ़ क्योंकि हम ने प्रार्थना की है ढह **सकते हैं**।

मैं इस कथन से सहमत हूँ: "परमेश्वर प्रार्थना द्वारा संसार को बदलता है। संसार में जितनी अधिक प्रार्थना होगी उतना बेहतर यह संसार होगा, उतनी सामर्थी दुष्ट के विरुद्ध शक्तियाँ होंगी। परमेश्वर के सन्तों की प्रार्थनाएँ स्वर्ग का मूलधन हैं...जिनके द्वारा परमेश्वर पृथ्वी पर उसका महान कार्य करता है।" यदि आप इससे सहमत हैं तो आप अधिक प्रार्थना करेंगे। आप सम्भतः अधिक विश्वास के साथ भी प्रार्थना करेंगे।

परमेश्वर की आरंभिक योजना

क्यों प्रार्थना का उत्तर अवश्य ही परमेश्वर की आरंभिक योजना जब उसने आदम को बनाया था में है। आदम नाम का अर्थ है: "मनुष्य, मानवजाति, व्यक्ति या मानव।" दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर ने आदम का नाम रखा था तो उसने उसे मनुष्य बुलाया था। मैं यह केवल इस बात को बताने के लिए कह रहा हूँ कि आदम हम सब का प्रतिनिधि है। जो परमेश्वर ने आदम के लिए नियत किया था उसने सारी मनुष्यजाति के लिए नियत किया था। परमेश्वर का उद्देश्य क्या था? आरम्भ में उसने आदम और हव्वा और उनके वंशज को सारी पृथ्वी और सारी सृष्टि पर अधिकार दिया था। हम इसे उत्पत्ति 1:26-28 में देखते हैं: "फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलु पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें। तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, और अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

हम इसे भजन 6:3-8 में भी देखते हैं: "जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधी ले? क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने उसके हाथों के कार्यो पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पाँव तले सब कुछ कर दिया है: सब भेड़-बकरी और गाय-बैल और जितने वनपशु हैं, आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियाँ, और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं।"

आदम, परमेश्वर का पृथ्वी पर प्रतिनिधित्व करनेवाला है

इब्रानी शब्द "mashal" का भजन 8 की 6 आयत में अनुवादः "प्रभुता" दिखाता है कि आदम पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रबंधक था। आदम परमेश्वर का भण्डारी, शासक, मध्यस्थ, प्रतिनिधि था। फिर आदम के वंशज ने उसकी इस जिम्मेवारी को लिया।
भजन 115:16 इसकी पुष्टि करता हैः "स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।" परमेश्वर ने पृथ्वी की स्वामित्व मनुष्यजाति को नहीं दे दी थी, परन्तु उसने उस पर शासन करने की जिम्मेवारी उसे दी थी।
उत्पत्ति 2:15 कहता है, "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।" रक्षा शब्द बाइबल में एक पहरेदार के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आदम पृथ्वी पर परमेश्वर का पहरेदान या संरक्षक था। बाइबल का कोई भी गम्भीर विद्यार्थी विवाद नहीं करेगा कि आदम यहाँ परमेश्वर का प्रतिनिधि था। परन्तु किसी का प्रतिनिधि होने का अर्थ वास्तव में क्या है? एक प्रतिनिधि वह व्यक्ति है जो दूसरे का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के तौर पर, मुझे सारे संसार में मसीह का प्रतिनिधि होने का सम्मान प्राप्त है। मैं आशा करता हूँ कि जैसे मैं बारम्बार उसके विषय में बोलता हूँ तो उसका प्रतिनिधित्व करता रहूँगा।
अब, परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करना कोई छोटी बात नहीं है। इसलिए परमेश्वर ने इस जिम्मेवारी को निभाने में हम मनुष्यों की सहायता की है। उसने हमें उसके स्वरूप में बनाया है।
"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, और अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।" (उत्पत्ति 2:27)
"स्वरूप" के लिए इब्रानी शब्द है "tselem", जिसमें एक परछाई, एक छायाभास या एक भ्रम का विचार है। एक भ्रम कुछ ऐसा है जो आपको लगता है आप देख रहे हो, परन्तु निकट से देखने से पता चलता है कि आपकी आँखों ने आपको धोका दिया है। जब बाकी की सृष्टि ने आदम को देखा होगा, तो उन्होंने कुछ इस प्रकार सोचा होगाः "एक क्षण के लिए तो मुझे लगा यह परमेश्वर है, परन्तु यह तो आदम ही है।" आदम परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने वाला था, और वह काफी उसके समान था! भजन 8:5 वास्तव में कहता हैः परमेश्वर ने मनुष्य को स्वर्गदूतों से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। यह आयत कहती है कि मनुष्यजाति को परमेश्वर ने अपनी महिमा दी है। इब्रानी भाषा में "महिमा" के लिए शब्द का अर्थ है "भारी"। निस्संदेह, इसका सम्बंध अधिकार से है। आदम ने पृथ्वी पर वजन उठाया हुआ था। मुझे पता नहीं उसका वजन किलोग्राम में क्या था, परन्तु वह अधिकारी था। वह पूरे अधिकार के साथ परमेश्वर का प्रतिनिधि था। वह अधिकारी थी। महिमा के लिए यूनानी शब्द "doxa" में पहचान का विचार सम्मिलित है। महिमा वह चीज है जो किसी को जो वह असल में है पहचान देती है।
जब हम पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं कि मनुष्यजाति परमेश्वर की महिमा है (1 कुरिं. 11:7), तो यह हमें बता रहा है कि परमेश्वर मनुष्यों में पहचाना जाता है। क्यों? ताकि मनुष्य उसका ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके। जब प्राणियों और सृष्टि ने आदम को देखा था, तो उन्हें परमेश्वर को देखना था। और उन्होंने देखा! आदम के पाप करके परमेश्वर की महिमा से वंचित होने तक देखा। परमेश्वर अब पापी मनुष्यों में पहचाना नहीं जाता है। इस पहचान को दोबारा दिखने के लिए, हमें "उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके" बदलते जाना है (2 कुरिं. 3:18)।
मेरा उद्देश्य बहुत सारी परिभाषाओं द्वारा आपको पराजित करना या प्रभावित करना नहीं है, बल्कि परमेश्वर की हम मनुष्यों के लिए आरंभिक योजना की आपकी समझ को बढ़ाने का है। इसलिए, आओ हम जो अभी तक कहा है उसने संक्षेप में कहें:

- आदम परमेश्वर के तुल्य या समान था। वह परमेश्वर के इतने समान था कि वह परमेश्वर जैसा दिखता था। परमेश्वर आदम में पहचाना जाता था।
- इसका अर्थ था कि आदम यहाँ पृथ्वी पर "वजन उठाए हुए" था। आदम परमेश्वर का प्रतिनिधि था। आदम परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर दोबारा प्रस्तुत की थी। आदम यहाँ परमेश्वर का शासक या प्रबंधक था।
- पृथ्वी आदम का कार्यभार था। यह आदम के अधिकार में थी। आदम पहरेदार या संरक्षक था। पृथ्वी पर, अच्छा या बुरा क्या हो रहा था, आदम और उसके वंश की जिम्मेवारी थी।

कृपया इसके बारे में सोचो। यदि पृथ्वी स्वर्ग बना रहता, तो यह मनुष्यजाति के कारण होता। यदि गड़बड़ी होती, तो मनुष्यजाति के कारण होती। यदि साँप (शैतान) को नियंत्रण मिलता तो यह मनुष्यजाति के कारण होता। असल में मनुष्यजाति अधिकार में थी! परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा? वह ऐसा जोखिम क्यों लेगा? मुझे पवित्रशास्त्र से और उसके साथ मेरी चाल से परमेश्वर के विषय में जो पता चला है, मैं केवल एक ही परिणाम निकाल सकता हूँ: परिवार को एक परिवार चाहिए थाः पुत्र और पुत्रियाँ जो उसके साथ व्यक्तिगत सम्बंध बना सकते, और वह उनके साथ बना सकता। इसलिए उसने हमारे आरंभिक माता-पिता को उसके स्वरूप में बनाया। उसने अपना जीवन और अपना आत्मा उसमें डाला, और बहुत सारे पालतू पशु और एक सुन्दर घर दिया। तब वह बैठ गया और कहा, "यह अच्छा है।" वह हर दिन उनसे बात करता, उनके साथ सैर करता, अपने और उनके घर के बारे में उन्हें सिखाता था। उसने कहा, "मुझे कुछ पोते और पोतियाँ दो।" अब परमेश्वर पिता था और वह अत्यन्त प्रसन्न था!

परमेश्वर उसके लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा काम करता है

आदम का अधिकार पृथ्वी पर इतना सम्पूर्ण और निर्णायक था कि उसके पास इसे दे देने की योग्यता थी! लूका 4:6,7 में शैतान के शब्दों को सुनो जब उसने यीशु की परीक्षा की थी: "मैं यह सब अधिकार, और इनका वैभव तुझे दूँगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है : और जिसे चाहता हूँ उसी को दे देता हूँ। इसलिए यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।"

शैतान को अधिकार सौंपे जाने की बात सच थी, और यीशु इसे जानता था। उसने शैतान को सुसमाचारों में तीन बार "इस संसार का सरदार" कहा था (यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11)।

पृथ्वी पर मनुष्यों के द्वारा काम करने का परमेश्वर का फैसला सम्पूर्ण और अन्तिम था। यह इतना निर्णायक था कि आदम के इसे दे देने के बाद उसे वापस पाने के लिए परमेश्वर को अपने एकलौते पुत्र की कीमत देनी पड़ी थी। पापी मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए यीशु को मनुष्यजाति का एक भाग बनना पड़ा था। मैं किसी और अधिक आश्चर्यचकित करनेवाले सत्य को नहीं जानता। पृथ्वी पर मनुष्यों के द्वारा काम करने के परमेश्वर के फैसले की अन्तिमता का प्रमाण यीशु है। बिना संदेह, पृथ्वी पर अधिकार और कार्य के साथ परमेश्वर का सम्बंध सदा के लिए मनुष्यजाति ही होने वाली थी।

यहाँ हमारे पास प्रार्थना की आवश्यकता के कारण हैं। परमेश्वर ने, सृष्टि के समय से लेकर, पृथ्वी पर मनुष्यों द्वारा काम करने का फैसला किया था। उसने फैसला किया था कि वह उनसे सिवाय काम नहीं करेगा। उसने सदा किया है और सदा करेगा, चाहे उसे यीशु मसीह में एक मनुष्य ही क्यों न बनना पड़ता। परमेश्वर प्रधान और सर्वशक्तिमान है। और पवित्रशास्त्र हमें स्पष्ट बताता है कि उसने पृथ्वी के कार्यभार से सम्बंधित मनुष्यजाति के द्वारा काम करने के लिए अपने आपको सीमित किया है। क्या यह कारण नहीं है कि पृथ्वी ऐसी गड़बड़ी में है? यह गड़बड़ी इसलिए नहीं क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है। यह गड़बड़ी उसकी लोगों के द्वारा काम करने और उसकी इच्छा पूरी करने के कारण है।

यह कहानी सारे पवित्रशास्त्र में पाई जाती है:

- परमेश्वर और मनुष्य, भले या बुरे समय के लिए इसे इकट्ठे कर रहे हैं।
- परमेश्वर को विश्वासयोग्य पुरुषों और स्त्रियों की आवश्यकता है।
- परमेश्वर को काम करने के लिए एक जाति की आवश्यकता है।
- परमेश्वर को भविष्यद्वक्ताओं की आवश्यकता है।
- परमेश्वर को न्यायियों की आवश्यकता है।
- परमेश्वर को एक मानव मसीहा की आवश्यकता है।
- परमेश्वर को चंगा करने के लिए मनुष्य के हाथों, बोलने के लिए मनुष्य की आवाजों और जाने के लिए मनुष्य के पैरों की आवश्यकता है।

क्या उसने कहा नहीं कि हम माँगें तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो (मत्ती 6:10)? निस्सदेह, वह नहीं चाहेगा कि हम कुछ ऐसा माँगने में अपना समय गवाएँ जो वैसे भी होनेवाला है, है ना?

क्या उसने कहा नहीं हम अपनी प्रतिदिन की रोटी माँगें (मत्ती 6:11)? और फिर भी, हमारे माँगने से पहले ही वह हमारी आवश्यकताओं को जानता है।

क्या उसने कहा नहीं कि हम मजदूरों को भेजने के लिए प्रार्थना करें (मत्ती 9:38)? परन्तु, क्या फसल का प्रभु हम से अधिक फसल की चाह नहीं रखता?

क्या पौलुस ने नहीं कहा, "हे भाइयो, हमारे लिए प्रार्थना किया करो कि प्रभु का वचन ऐसा शीघ्र फैले और महिमा पाए, जैसा तुम में हुआ" (2 थिस्स. 3:1)? क्या परमेश्वर इसे पहले ही करने की नहीं सोच रहा था?

क्या ये सब चीजें परमेश्वर की इच्छा नहीं? मैं उससे कुछ करने को क्यों कहूँ जिसे वह पहले ही करना चाहता है, क्या ऐसा नहीं कि मेरे माँगने से किसी प्रकार उसे करने की स्वतंत्रता मिलती है?

एलिय्याह की उत्साही प्रार्थनाएँ

1 राजा 18 में हम एक कहानी पाते हैं जिसमें परमेश्वर प्रार्थना के द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिए एक मनुष्य को खोजता और इस्तेमाल करता है। यह एलिय्याह का तीन वर्ष के अकाल के बाद बारिष के लिए प्रार्थना करने का विवरण है। याकूब 5:17 भी इसकी बात करता है। हम याकूब के विवरण से जानते हैं कि न केवल एलिय्याह की प्रार्थना बारिष लाई थी, परन्तु उसकी प्रार्थना ने तीन वर्ष पहले बारिष को रोका भी था। 1 राजा 18:1 में, तीन वर्ष के अकाल के बाद, परमेश्वर ने एलिय्याह को कहा, "जाकर अपने आपको अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूँ।" तब एलिय्याह ने सात बार प्रार्थना की और बारिष हुई।

बारिष भेजने का किसका विचार था? ... किसकी इच्छा ... किसकी पहल? ... उत्तरः परमेश्वर की, एलिय्याह की नहीं।
तब, यदि यह परमेश्वर की इच्छा, विचार और समय था, तो क्यों बारिष को "जन्म" देने के लिए एक मनुष्य की प्रार्थना की आवश्यकता पड़ी थी? (बारिष के लिए प्रार्थना करते समय, एलिय्याह उस संस्कृति में प्रसव-पीड़ा में एक स्त्री की स्थिति में था। यह प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना का प्रतीक था। 1 राजा 18:41-45 देखो।)
एलिय्याह को सात बार क्यों माँगना पड़ा था? सात बाइबल का सम्पूर्णता का अंक है। मुझे निश्चय है कि परमेश्वर हमें सिखा रहा था कि जब तक काम न हो जाए हमें प्रार्थना करते रहना चाहिए। परन्तु जब यह परमेश्वर की इच्छा, विचार और समय था तो हमें इस या किसी दूसरी प्रार्थना में दृढ़ रहने की क्या आवश्यकता है?
और अन्त में, क्या एलिय्याह की प्रार्थना के कारण बारिष हुई या यह संयोग था कि जब वह प्रार्थना कर रहा था परमेश्वर ने बारिष भेज दी?
याकूब इस अन्तिम प्रश्न का उत्तर देता है। हाँ, एलिय्याह की प्रार्थनाओं ने बारिष रोकी और आरम्भ की थीः "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है। एलिय्याह भी तो हमारे समान दुखःसुख भोगी मनुष्य था; और उसने गिडगिड़ाकर प्रार्थना की कि मेंह न बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर मेंह न बरसा। फिर उसने प्रार्थना की, तो आकाश से वर्षा हुई, और भूमि फलवन्त हुई।" (याकूब 5:16-18)। एलिय्याह को प्रार्थना क्यों करनी पड़ी के प्रश्न का एकमात्र तर्कसंगत उत्तर है कि परमेश्वर ने लोगों के द्वारा काम करने का फैसला किया है। तब भी जब प्रभु कुछ के लिए आप पहल करता है, उसे फिर भी हमारे माँगने की आवश्यकता है। जब उसे कुछ करने की इच्छा होती है, तो उसे हमारी प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है।
जैसे किसी ने हमारी प्रार्थना करने की आवश्यकता के बारे में लिखाः "परमेश्वर के देने का हमारे माँगने के साथ एक अटूट बन्धन है...केवल प्रार्थना के द्वारा स्वर्ग से उस सामर्थ्य को पृथ्वी पर लाया जा सकता है जिससे कलीसिया को संसार को जीत लेने की योग्यता मिलती है।"

प्रार्थना का मनुष्य, दानिय्येल

एक दूसरा उदाहरण जो प्रार्थना की आवश्यकता के हमारे विचार का समर्थन करता है दानिय्येल के जीवन में पाया जाता है। 606 ई.पू. में, एक दूसरे देश ने इस्राएल के पाप और अवज्ञा के कारण उसे बन्दी बना लिया था। वर्षों बाद जब दानिय्येल यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी पढ़ रहा था तो उसे पता चला कि इस्राएल की बन्धुआई का समय समाप्त होने पर है (दानिय्येल 9:2 देखो)। यिर्मयाह ने न केवल बन्धुआई की भविष्यद्वाणी की थी (जिसका दानिय्येल एक हिस्सा था), बल्कि उसने यह भी भविष्यद्वाणी की थी कि यह 70 वर्ष तक रहेगी (यिर्मयाह 25:12)। तो इस समय दानिय्येल ने ऐसा कुछ किया जो हम ऐसी स्थिति में करते उससे अलग था। जब हम बेदारी, छुटकारे या चंगाई की एक प्रतिज्ञा पाते हैं तो हम इसकी पूर्ति की बिना कुछ किए प्रतीक्षा करते हैं।
परन्तु दानिय्येल नहीं, उसे पता था क्या करना है। किसी प्रकार उसे पता होगा कि परमेश्वर को उसके शामिल होने की आवश्यकता है, क्योंकि उसने कहा, "तब मैं अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठकर वरदान माँगने लगा" (दानिय्येल 9:3)। दानिय्येल के प्रार्थना करते ही जिब्राएल स्वर्गदूत को उसके पास भेजा गया। परन्तु, जिब्राएल स्वर्गीय स्थानों में एक महान युद्ध में फँस गया जिससे दानिय्येल के पास उत्तर आने में देरी हो गई। इस महान स्वर्गदूत को दानिय्येल को बताने के लिए 21 दिन लग गए कि "उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ" (दानि. 10:12)। मैं यह सोचे बिना रह नहीं सकता कि न जाने परमेश्वर की कितनी प्रतिज्ञाएँ पूरी हुए बिना रह गई हैं क्योंकि उसे मनुष्य का सहयोग नहीं जिसकी उसे आवश्यकता थी।

परमेश्वर को हमारी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है

परमेश्वर का अस्तित्व और चरित्र सृष्टि की चीजों से बिलकुल स्वतंत्र हैं (प्रेरितों 17:24-25)। परमेश्वर के हाथ में पहले ही सब साधन हैं (अय्यूब 41:11; भजन 50:10-12)। फिर भी, परमेश्वर को हमारी प्रार्थनाएँ चाहिएः "मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूँढना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसका नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला। इस कारण मैं ने उन पर अपना रोष भड़काया और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया हैः मैं ने उनकी चाल उन्हीं के ही सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है" (यहेजकेल 22:30-31)। इन आयतों के गहरे अर्थ हमें चौंका सकते हैंः परमेश्वर की पवित्रता, अखण्डता और अटल सत्य पाप को अनदेखा करने से रोकते हैं। इसका न्याय होना ही चीहिए।
दूसरी ओर, वह न केवल पवित्र है, परन्तु वह प्रेम भी है। उसका प्रेम सदा छुड़ाने, स्थापित करने और दया दिखाना चाहता है। पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि परमेश्वर दुष्ट की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता (यहेजकेल 33:11)। यहेजकेल 22 के अनुच्छेद में प्रभु स्पष्ट कह रहा हैः "जबकि मेरे न्याय की माँग दण्ड थी, मेरे प्रेम ने क्षमा चाही। मैं ने किसी मनुष्य को खोजा जो मुझ से इन लोगों को बचाने की माँग करता। यदि मुझे कोई प्रार्थना करने वाला मिलता, तो इससे मैं उनको दया दिखा सकता था। परन्तु, क्योंकि मुझे कोई नहीं मिला, मुझे लोगों को नष्ट करना पड़ा।"

मुझे भी आपके समान जो यहाँ दिखाया गया है पसन्द नहीं है। मुझे यह जिम्मेवारी नहीं चाहिए। मुझे एक ऐसे परमेश्वर का विचार पसन्द नहीं है जिसने किसी प्रकार अपने आपको हम मनुष्यों द्वारा सीमित किया हुआ है। परन्तु इन और दूसरे अनुच्छेदों के, और संसार की स्थिति के दृष्टिकोण से, मैं किसी दूसरे निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता हूँ।

या तो परमेश्वर पृथ्वी को इस स्थिति में देखना चाहता है या वह नहीं देखना चाहता। यदि वह नहीं चाहता तो हमें दो में से एक बात माननी होगी। या तो वह इसके विषय में कुछ करने के लिए शक्तिहीन है, या वह हम में से किसी के परिवर्तन लाने की प्रतीक्षा कर रहा है। यह सत्य इसके साथ आनेवाली जिम्मेवारी के कारण हमें डरा सकता है। यह हमें हमारी प्रार्थना की कमी के कारण दोषी भी बना सकता है।

परन्तु एक दूसरी जिम्मेवारी भी है। एक जिम्मेवारी विशेषाधिकार भी लाती है। एक जिम्मेवारी आनन्द की बात हो सकती है। यह प्रकटीकरण हमें अपने स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु के साथ प्रतिष्ठा के एक नए पद में ऊपर उठाती है।

<u>जैसे कहा गया है, "प्रार्थना मूल रूप से एक साझेदारी है। प्रार्थना में, परमेश्वर का उद्धार पाया पुत्र परमेश्वर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता है। प्रार्थना के कारण, वे परमेश्वर के पृथ्वी पर उद्धार संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति की ओर एक साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं।"</u>

आओ हम परमेश्वर के साथ संगी मजदूर होने के इस अवसर को ले लें और निमंत्रण को गले लगा लें। आओ हम उसके विस्मयकारी पवित्र आत्मा को ले जानेवाले, और उसके महान राज्य के राजदूत बनें। आओ हम उसके प्रतिनिधि हों!

हे प्रभु, हमें हमारी नियती के लिए जाग्रत कर!

अध्याय 3 – यीशु को दोबारा प्रस्तुत करना

उत्तरों की खोज

मध्यस्थता की प्रार्थना की परिभाषा देने के लिए, हमें पहले मध्यस्थता की परिभाषा देनी चाहिए। हम न केवल मध्यस्थता की अक्षरशः परिभाषा देंगे, बल्कि नीचे दी बातों के संदर्भ में भी उसे देखेंगे:

1) सृष्टि के समय मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की योजना,
2) पतन के कारण उस योजना में भंग, और
3) परमेश्वर का समाधान

दूसरे शब्दों में, हम इन दृश्यों में मध्यस्थता के विचार को देखेंगे और उन्हें इनकी परिभाषा देने देंगे। इससे तीन काम पूरे होंगे:

1. यह आपकी मध्यस्थता के विचार को समझने में सहायता करेगा जिससे आप मध्यस्थता समझ सकेंगे।
2. यह आपको मसीह की मध्यस्थ की भूमिका को समझने में योग्य करेगा। (हमारी मध्यस्थता की प्रार्थना सदा उसके मध्यस्थता के काम का विस्तार ही होगा।)
3. इस प्रकार के ज्ञान से, यह आपको आपके समूह में सबसे आत्मिक व्यक्ति बनाएगा!

मध्यस्थता की परिभाषा

आओ हम पहले मध्यस्थता के आक्षरिक विचार पर नज़र डालें। तब, हम पतन के संदर्भ से इस पर विचार करेंगे। शब्दकोष के अनुसार, मध्यस्थता के विचार का सार है बीचबचाव करना, मध्यस्थ होना, दूसरे के लिए आग्रह करना, एक पक्ष का दूसरे के सामने प्रतिनिधित्व करना।

- हमारी अदालतों में मध्यस्थता हर दिन होती है जहाँ वकील उनके ग्राहकों के लिए मध्यस्थता करते हैं।
- सभाओं में रोजाना मध्यस्थता होती है जहाँ ठेके बनाए जाते हैं।
- दफ्तरों और व्यवसायी सभाओं में रोजाना मध्यस्थता होती है जहाँ सेक्रेटरी और दूसरे सहायक एक व्यक्ति की दूसरे के सामने मध्यस्थता करते हैं।

इसमें कुछ भी आत्मिक नहीं है। इसमें अधिकार सम्मिलित होता है। इसमें प्रतिनिधित्व सम्मिलित होता है। जैसे हम ने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, प्रतिनिधित्व करने का अर्थ होता है दोबारा प्रस्तुत करना। कई वर्ष पहले मेरे पिता ने मध्यस्थ (हम उसे वकील कहते थे) को किराये पर लिया था। पिता को किसी पोलीसवाले ने रोका था। उन्होंने उसे बुरी तरह पीटा और जेल में फेंक दिया जबकि मेरी माँ और बेबी बहन देखते रहे थे। पौलीसवालों का ऐसा करने का कारण यह था क्योंकि उन्होंने उसे कोई दूसरा

समझ था! पिता जी वास्तव में एक कलीसिया की सभा से लौट रहे थे जहाँ उन्होंने उस रात प्रचार किया था। इस सत्य ने सारी अग्निपरीक्षा को व्यंगात्मिक और अन्याय की चीज बना दिया था।

हमारा वकील पिता, जॅज, दूसरा वकील और पोलीसवालों के बीच मध्यस्थ बना था। उसने मुकद्दमें को सुना, प्रमाण इकट्ठे किए, पता लगाया जो पिता चाहते थे और तब इसे अदालत में प्रस्तुत किया। उसने अच्छी मध्यस्थता की। पिता जी ने मुकद्दमा जीत लिया।

मध्यस्थता अदालत के विचार से नहीं है। यह तो केवल एक उदाहरण है। लोगों में प्रतिनिधित्व करना मध्यस्थता है।

अब, आओ हम इस विचार के विषय में सृष्टि और पतन के प्रकाश में सोचें। आदम को पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि होना था - प्रबंध करना, उसकी ओर से शासन करना। परमेश्वर ने आदम को बताया जो उसे चाहिए था और आदम ने सारी पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व किया। आदम परमेश्वर का बिचवई था। अक्षरशः, आदम पृथ्वी पर परमेश्वर का मध्यस्थ था।

मसीह, अन्तिम मध्यस्थ

निस्संदेह, आदम असफल रहा, और परमेश्वर को एक दूसरा मनुष्य जिसे "अन्तिम आदम" या "दूसरा मनुष्य" कहा जाता है भेजना पड़ा (यीशु मसीह - 1 कुरिन्थियों 15:45-47 देखो)। "अन्तिम आदम" ने वह किया जो पहले आदम को करना था और जो पहले आदम ने गड़बड़ की थी उसे ठीक किया। इस प्रकार, मसीह परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के लिए पृथ्वी पर आया। वह मध्यस्थ बन गया, परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच प्रतिनिधि।

यूहन्ना 1:18 के अनुसार, यीशु ने हमें दिखाया परमेश्वर कैसा हैः "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।"

"प्रगट किया" शब्द यूनानी शब्द "exegeomai" से मिलता है - जिसका अर्थ हैः व्याख्या करना। जब हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते हैं तो हम सत्य को इस प्रकार समझाते, समझ देते, स्पष्ट करते और प्रकट करते हैं कि यह समझने योग्य हो जाता है। यीशु परमेश्वर की व्याख्या करने आया - परमेश्वर को समझने योग्य बनाने।

यीशु आया और उसने परमेश्वर का एक चित्र बनाया! अब हम जानते हैं वह कैसा दिखता है। यीशु ने कहा, "...जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है..." (यूहन्ना 14:9)।

परन्तु यीशु की मध्यस्थता की केवल यही दिशा नहीं है। मनुष्य को परमेश्वर का मध्यस्थ होना था, जो उसके लिए मध्यस्थता करता। आदम, जिसे पृथ्वी पर परमेश्वर का मध्यस्थ बनाया था, अब उसके किसी की परमेश्वर के सामने मध्यस्थता की आवश्यकता थी। निस्संदेह, मसीह वह मध्यस्थ बना। उसने न केवल परमेश्वर का मनुष्य के सामने प्रतिनिधित्व किया, उसने मनुष्य का परमेश्वर के सामने प्रतिनिधित्व किया। यह परमेश्वर-मनुष्य दोनों पक्षों के लिए "मुख्तार" था! वही अन्तिम और एकमात्र बिचवई है। वह "प्रेरित और महायाजक" है। (इब्रानियों 3:1)

प्रेरित के रूप में, यीशु परमेश्वर की ओर से मनुष्यजाति के लिए बिचवई है। महायाजक के रूप में, वह मनुष्यजाति की ओर से परमेश्वर के बीच बिचवई है। मसीह की मध्यस्थता, यदि हम इसका आक्षरिक अर्थ लें तो, उसके द्वारा की गई प्रार्थना नहीं है, परन्तु यह मध्यस्थता का काम है जो उसने किया है। "क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है" (1 तीमु. 2:5)।

कई लोग सोचते हैं कि स्वर्ग में पिता के सामने हमारे लिए यीशु की मध्यस्थता, प्रार्थना है। मैं ऐसा नहीं सोचता। मुझे निश्चय है कि उसकी मध्यस्थता पिता के सामने वकील ही है (1 यूहन्ना 2:1 देखो)। वह अब हमारे प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहा है। वह पिता के सामने हमारी पहुँच की और उद्धार के हमारे लाभों की गारंटी दे रहा है। असल में, यूहन्ना 16:26 में वह हमें बताता है कि वह अब पिता से हमारे लिए माँग नहीं रहा हैः "उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे; और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूँगा।"

तो जैसे वह हमारे लिए मध्यस्थता करता है तो वह क्या कर रहा है? वह मध्यस्थता कर रहा है। वह ऐसा, हमारे विरुद्ध दोषों को निकालने के लिए नहीं करता है। हमारे विरुद्ध दोषों से तब निपटा गया था जब वह क्रूस पर गया था और हमें पाप से छुड़ाने की कीमत दी थी। अब उसकी मध्यस्थता हम में से हर एक को पिता के सामने धर्मी, और एक अपने के रूप में प्रस्तुत करने की है। जब मैं सिंहासन के सामने जाता हूँ तो सोचता हूँ कि यीशु वहाँ है और कुछ इस प्रकार कह रहा हैः "पिता, जय यहाँ आपसे बात करने आया है। वह अपनी योग्यता या धार्मिकता के आधार पर नहीं आया है। वह यहाँ मेरी धार्मिकता के आधार पर आया है। वह यहाँ मेरे नाम से आया है। मुझे निश्चय है आपको याद होगा कि मैं आपके और जय के बीच मध्यस्थ हूँ और उसे आपके सामने पहुँच दी है। वह आपसे कुछ चीजें पूछना चाहता है।" क्या आप पिता को यह कहते सुन नहीं सकते, "निस्संदेह, मुझे याद है, बेटा। तुम ने उसे हम में से एक बनाया है। क्योंकि वह तेरे द्वारा आया है, जय का सदा स्वागत है।" पिता मेरी ओर देखता है और कहता है, "बेटा, मेरे अनुग्रह के सिंहासन के पास साहस के साथ आओ और अपनी विनती बताओ।" यीशु हमारे लिए प्रार्थना नहीं करता है; वह हमारे लिए मध्यस्थता करता है ताकि हम प्रार्थना कर सकें। "उसके नाम में" माँगने का अर्थ यही है।

आओ हम मसीह की मध्यस्थता के एक और पहलू को जो मनुष्यजाति की निर्दोषता से पाप में पतन के संदर्भ में है देखें। मूल रूप से, मनष्यजाति को पतन के बाद दो चीजों की आवश्यकता थी।

1) पहली, उन्हें उनके और परमेश्वर के बीच मेलमिलाप कराने के लिए किसी के उनके और परमेश्वर के बीच आने की आवश्यकता थी।

2) दूसरी, उन्हें उनको और शैतान को अलग करने के लिए किसी की उनके और शैतान के बीच आने की आवश्यकता थी।

पहली एक करने के लिए, दूसरी अलग करने के लिए। पहली ने अन्तिम आदम की प्रधानता को स्थापित किया, दूसरी ने शैतान की प्रधानता को तोड़ा। यह मध्यस्थता का दोहरा काम था। हमें दोनों की आवश्यकता थी। यीशु ने दोनों चीजें कीं। मध्यस्थ के रूप में, वह परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच गया और हमारा पिता से मेल कराया - और वह शैतान और मनुष्यजाति के बीच गया और हम पर शैतान के अधिकार को और पाप के स्वामित्व को तोड़ा। यह मध्यस्थता का उद्धार का काम है और यह समाप्त है। इसलिए, मनुष्यजाति के उद्धार के कानूनी अभिप्राय से, मसीह केवल एकमात्र मध्यस्थ है। इसीलिए पवित्रशास्त्र कहता है, "क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है" (1 तीमु. 2:5)। यह प्रकटीकरण हमारे समझने के लिए आवश्यक है। इसका अर्थ है कि हमारी मध्यस्थता की प्रार्थनाएँ मध्यस्थता के उसके कार्य का विस्तार ही हैं। यह इतने महत्त्व का क्यों है? क्योंकि परमेश्वर मसीह की मध्यस्थता के अलावा किसी को स्वीकार नहीं करेगा। और, यह समझ मध्यस्थता की हमारी प्रार्थनाओं को अधिक सामर्थी बनाएगी।

आओ हम सिंहासन के सामने हो रही बातचीत में लौटते हैं। मैं वहाँ पिता से माँग रहा हूँ कि वह एक लोगों पर अपनी दया दिखाए और उनको उद्धार दे। पिता कुछ ऐसा कहेगा, "मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? वे तो पापी हैं। वे झूठे देवताओं की उपसना करते हैं, तो वास्तव में शैतान की आराधना है। और इसके अलावा, वे नहीं चाहते कि मैं उनके लिए ऐसा करूँ। उन्होंने स्वयं कभी पूछा नहीं है।" मैं उत्तर देता हूँ, "पिता, क्योंकि यीशु ने उनके लिए मध्यस्थता की है, तो मैं उसके आधार पर माँग रहा हूँ। और उसे एक मनुष्य की आवश्यकता है कि कोई उसकी ओर माँगे, क्योंकि वह अब स्वर्ग में है। इसलिए, जैसा उसने मुझे सिखाया है, मैं माँग रहा हूँ कि उस जाति में तेरा राज्य आए और तेरी इच्छा पूरी हो। मैं माँग रहा हूँ कि कुछ मजदूर भेजे जाएँ। मैं यह सब मसीह के लिए और मसीह के द्वारा माँग रहा हूँ। और मैं माँग रहा हूँ कि तू यह सब उद्धार के कार्य के आधार पर करे जो उसने पहले ही किया है।" पिता कहता है "ठीक है!" और तब वह जिब्राएल स्वर्गदूत को उस जाति में काम पर लग जाने की आज्ञा देता है।

परमेश्वर के वितरक

हमारी मध्यस्थता की प्रार्थनाएँ यीशु के मध्यस्थता के काम का विस्तार हैं। हमारी प्रार्थनाओं और उसके काम में अन्तर वितरण करने और उत्पन्न करने में अन्तर है।

हमें कुछ भी उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है जैसे कि मेलमिलाप, छुटकारा, विजय आदि। बल्कि हम वितरण करते हैं, वैसे ही जैसे चेलों ने रोटियों और मछलियों के साथ किया था (मत्ती 14:17-19)।

हमारा बुलावा और कार्य परमेश्वर का स्थान लेने के लिए नहीं है परन्तु उसे प्रकाशित करने का है।

नीचे दी चीजों को जानने से हम भयभीत होने से स्वतंत्र होते हैं और साहसी बनते हैं।

- परमेश्वर जो उत्पादक है, केवल हमारे द्वारा वितरण करना चाहता है।
- परमेश्वर जो मध्यस्थ है, हमारे द्वारा मध्यस्थता करना चाहता है।
- मध्यस्थ हमारे द्वारा मध्यस्थता करना चाहता है।
- प्रतिनिधि हमारे द्वारा प्रतिनिधित्व करना चाहता है।
- बिचवई हमारे द्वारा बिचवई होना चाहता है।
- विजयी हमारे द्वारा उसकी विजय लागू करना चाहता है।
- मेलमिलाप के सेवक ने हमें मेलमिलाप की सेवा दी है। (2 कुरिं. 5:18-19)

हम अब उसकी प्रतिनिधित्व की सेवा में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। परमेश्वर आप ही अपने उद्धार के कार्य को कर रहा है - और वह इसे मनुष्यों के द्वारा करता है। हम किसी को नहीं छुड़ाते। हम किसी का परमेश्वर से मेल नहीं कराते। हम शत्रु को नहीं हराते। काम पहले ही पूरा हो चुका है। मेलमिलाप समाप्त है। छुटकारा और विजय समाप्त हैं। उद्धार समाप्त है। मध्यस्थता समाप्त है! समाप्त! हो गया! कितनी राहत की बात है। और फिर भी... हमें इन चीजों को छोड़े जाने और लगाए जाने की माँग करनी है।

तो, आओ मैं आपको मध्यस्थता की प्रार्थना की एक बाइबल की परिभाषा देता हूँ। **मध्यस्थता की प्रार्थना उसकी देह, कलीसिया के द्वारा मसीह की सेवा का एक विस्तार है।**

प्रार्थना के द्वारा हम **परमेश्वर के साथ संसार का मेल कराने** के उद्देश्य से परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच मध्यस्थता करते हैं। प्रार्थना के द्वारा हम **कलवरी की विजय को लागू करने** के उद्देश्य से शैतान और मनुष्यजाति के बीच मध्यस्थता करते हैं।

पिता को पृथ्वी पर एक मनुष्य की आवश्यकता थी जिसके द्वारा वह अपना प्रतिनिधित्व कर सकता। यीशु को भी पृथ्वी पर एक मनुष्य की आवश्यकता है जिसके द्वारा वह अपना प्रतिनिधित्व कर सकता। पिता का मनुष्य यीशु था; यीशु के मनुष्य हम, कलीसिया हैं। उसने कहा, "जैसा पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ" (यूहन्ना 20:21)। भेजे जाने का विचार महत्त्व का है। एक प्रतिनिधि "भेजा गया" है। भेजे गयों के पास, जब तक वे भेजनेवालों के प्रतिनिधि हैं, अधिकार होता है। महत्त्वपूर्ण भेजे गए नहीं, भेजनेवाला है। एक राजदूत जो हमारे देश का दूसरे देश में प्रतिनिधित्व करता है, भेजा हुआ है। उसका अपना कोई अधिकार नहीं है, उसे भेजनेवाले देश के अधिकार का प्रतिनिधित्व करने का ही अधिकार है। यीशु भेजा गया था। उसे उसका अधिकार पिता से मिला था जिसने उसे भेजा था। इसके महत्त्व का वह चालीस बार यूहन्ना के सुसमाचार में जिक्र करता है कि उसे पिता ने भेजा है। असल में, सामर्थ्य के काय यीशु नहीं कर रहा था, परन्तु पिता जिसने उसे भेजा था वह उन्हें कर रहा था। (यूहन्ना 14:10 देखो) वही चीज हमारे लिए भी सत्य है। हमारा अधिकार हमें भेजे जाने से आता है। हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब तक हम उस सामर्थ्य में काम करेंगे तो हम मसीह के अधिकार में काम कर रहे हैं। और, असल में, काम वास्तव में हम नहीं करते हैं; वह करता है।

आओ मैं उदाहरण देकर समझाता हूँ। कुछ वर्ष पहले, जब मैं एक देश में जाने और प्रचार कार्य के विषय में प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने ये शब्द सुनेः "इस सेवा में, यीशु का लोगों के सामने प्रतिनिधित्व कर।"

पहले तो मैं ने उस आवाज को डाँटा, यह सोचकर कि यह शैतान है जो मुझे धोखा देने का प्रयास कर रहा है। परन्तु आवाज दोबारा आई, और इस समय कुछ और शब्द भी थेः "उसकी आवाज बन, उसके हाथ बन, उसके पैर बन। वही कर जो वह यदि शरीर में होता तो करता। उसका प्रतिनिधित्व कर।" अचानक, मैं समझ गया। मुझे अपना या जिस सेवा के साथ मैं काम करता था उसका प्रतिनिधित्व नहीं करना था। जैसे यीशु ने पिता का प्रतिनिधित्व किया था, मुझे यीशु का करना था। मुझे उसके शब्द बोलने हैं और उसके कार्य करने हैं। यदि मुझे वास्तव में विश्वास था कि मैं एक राजदूत या भेजे गए के रूप में कार्य कर रहा हूँ, तब मैं विश्वास कर सकता था कि यह मेरी योग्यता या अधिकार नहीं है, बल्कि मसीह का है। मैं तो केवल उसका और जो उसने पहले ही किया है प्रतिनिधित्व कर रहा था।

एक "गलीली यीशु" एक "स्थानीय यीशु" बना

देश में पहुँचने के बाद मैं एक दल के साथ एक दूर गाँव में गया जो किसी भी आधुनिक शहर से दूर था। वहाँ न कोई बिजली, न नलसाजी, और न फोन थे। वहाँ जाने का हमारा उद्देश्य गाँववालों के लिए घर बनाना था जिनके पहले की झोपड़ियाँ भूकम्प में नष्ट हो गई थीं। भूकम्प ने कई लोगों को मार दिया था और बहुत सारे बेघर हो गए थे।

हम सामग्री साथ ले गए थे और दिन के समय हम छोटे-छोटे, एक कमरे वाले मकान बनाते थे। शाम के समय हम गाँव के बीचोंबीच सभाएं चलाते थे। हम ने यीशु मसीह का सुसमाचार उन्हें सुनाया, और बताया कि यह उसका प्रेम है जो हमें अपना समय, रुपया-पैसा और शक्ति उनकी सहायता में खर्च करने के लिए प्रेरित कर रहा है। हम ने एक सप्ताह प्रचार किया परन्तु बहुत कम लोग मसीह में आ रहे थे। लोग सुन रहे थे परन्तु प्रतिक्रिया नहीं दिखा रहे थे।

अपनी यात्रा की अन्तिम रात को प्रचार करने की मेरी बारी थी। जैसे ही सभा आरम्भ होने वाली थी, कि दल के सदस्य ने मुझे एक छः या सात वर्ष की एक छोटी लड़की के बारे में बताया, जिसे गाँव के बाहर एक पेड़ से बाँधा हुआ था। जो उसने देखा था उस पर विश्वास न कर पाने पर, उसने निकट के एक परिवार से पूछा, "इस छोटी लड़की को उस पेड़ से क्यों बाँधा गया है?" प्रकट था कि वह वहाँ, एक कुत्ते के समान, पिछवाड़े में रहती थी - घिनावनी, गन्दी, बेसहारा और अकेली। "वह पागल है", माता-पिता ने बताया। "हम उसे नियंत्रण में नहीं रख पाते हैं। यदि उसो छोड़ दें तो वह अपने आप को और दूसरों को चोट पहुँचाती है और भाग जाती है। हम उसके लिए कुछ नहीं कर पाते हैं इसलिए उसे बाँध कर रखना पड़ता है।" जैसे सदस्य ने बताया मेरा हृदय टूट गया। जैसे हम ने सभा आरम्भ की तो यह बात मेरे मन में थी। मेरे संदेश में कुछ मिनटों के बाद ही वही आवाज जिसने ने यात्रा से पहले मुझ से बात की थी बोलने लगी। "उन्हें बताओ कि तुम गाँव के बाहर पेड़ से बँधी हुई उस छोटी लड़की के लिए प्रार्थना करोगे। उन्हें बताओ कि तुम ऐसा यीशु के नाम में करोगे जिसका तुम प्रचार कर रहे हो। उन्हें बताओ कि उसके द्वारा तुम उन दुष्ट शक्तियों को जो उसे वश में किए हुए हैं तोड़ दोगे।" "उन्हें बताओ कि जब वह स्वतंत्र और सामान्य हो जाएगी, तब वे जान जाएंगे कि जो तुम प्रचार कर रहे हो सच है। तब वे विश्वास करेंगे कि यीशु मसीह वही है जो तुम प्रचार में बता रहे हो वह है।" मैं

उस आवाज को अपने हृदय में डरते और काँपते हुए उत्तर दिया। मैं ने पूछा, "क्या इसे करने का कोई दूसरा तरीका नहीं है?" उत्तर आया, "कोई दूसरा तरीका विद्रोह और असफलता लाएगा।" "याद करो जो मैं ने तुम्हें सफर से पहले कहा था? यीशु का प्रतिनिधित्व करो।"

मेरी आत्मा में विश्वास बढ़ने लगा। मैं ने देखा कि इस स्थिति में जोर मेरे ऊपर नहीं है; परन्तु उस पर है जिसने मुझे भेजा है। मैं तो केवल उसका प्रवक्ता था। मैं वही दे सकता था जो उसने पहले किया था। उसने इस छोटी लड़की को छुड़ाने का काम पूरा कर दिया है। मेरी प्रार्थनाएं उस काम को लाएँगी जो उसने पहले उत्पन्न किया है। मैं तो केवल उसका वितरक ही हूँ। मैं ने अपने आप से कहा, "हे भेजे गए, हिम्मत रख, और विजय को लागू कर।" नए आश्वासन के साथ मैं लोगों को बताने लगा जो मैं करने वाला था। वे मेरी बात को सुन कर आश्चर्य से भर गए। एक छोटे से, दूर-दराज के गाँव में उस चाँदनी रात को एक मुट्ठी भर लोगों के सामने मेरा जीवन सदा के लिए बदल गया। ऐसा लगा था जैसे यीशु छिपने के स्थान से बाहर निकल आया हो। वह जीवित... पर्याप्त... उपलब्ध हो गया था! एक "छिपा हुआ" यीशु आध्यात्मविद्या के जालों में से निकल आया था। कल का यीशु आज और आनेवाले कल का यीशु बन गया था। एक गलीली यीशु स्थानीय यीशु बन गया था। और एक नई योजना मेरे सामने खुल गई थी। एक नया विचार आया - यीशु और मैं।

स्वर्गीय नमूना

पहली बार मैं स्वर्गीय नमूने को समझ पाया था: यीशु विजयी है - हम लागू करनेवाले हैं। यीशु उद्धारकर्त्ता है - हम देनेवाले हैं। यीशु सिर है - हम देह हैं।

हाँ, उसने छोटी लड़की को स्वतंत्र कर दिया। हाँ, पूरा गाँव यीशु की ओर फिर गया। हाँ, यीशु भेजे हुओं में प्रबल हुआ। इस प्रकार साझेदारी चलती रहती है - परमेश्वर और मनुष्य। परन्तु सही नमूना अति महत्त्व का है: मेरी मध्यस्थता की प्रार्थनाएं मसीह के मध्यस्थता के समाप्त कार्य को लाती हैं।

संसार भर में बहुत सारे घायल और चोट खाए व्यक्ति "पेड़ों से बँधे" हुए हैं। आप उन में से कुछ को अपने काम के स्थान में जानते होगे। दूसरे आपके पड़ोस में रहते होंगे। उनके बन्धन शराब, गर्द, टूटे सपने, अस्वीकरण, रुपया-पैया और लालसा होंगे। चलो भी कलीसिया! आओ हम कुछ को "खोल दें"। आओ हम उनको बताएँ कि एक परमेश्वर है जो परवाह करता है। आओ हम प्रतिनिधित्व करें - आओ हम मध्यस्थता करें!

अध्याय 4 – मिलन : अच्छा, बुरा और बदसूरत

लड़का लड़की से मिलता है

"श्रीमान्, फलानी बहन से मिलिए।" संसार अचानक थम सा गया और मेरा जीवन सदा के लिए बदल गया। मेरे जीवन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण मिलन हो रहा था - केवल यीशु के साथ मेरा परिचय इससे ऊँचे स्तर का था। यह वर्षों पहले की बात है और मैं उस समय एक बाइबल कालेज का विद्यार्थी था। अपने व्यक्तिगत प्रार्थना के समय का आनन्द लेने के बाद, मैं प्रार्थना के कमरे में से बाहर निकला ही था, कि मैं ने जो व्यक्तियों को एक मुड़वी मेज लाते देखा। उन में से एक मेरा नर मित्र था। दूसरी एक ऐसी सुन्दर जवान महिला थी जैसी मैं ने पहले कभी नहीं देखी थी। ओह, यह पहली बार नहीं था कि मैं ने उसे देखा था, परन्तु यह मेरी पहली आमने-सामने की मुलाकात थी। मेरे घुटने कमज़ोर पड़ गए और मेरा मुँह सूख गया। उसकी ओर से मेज पकड़ते-पकड़ते मैं लगभग गिर पड़ा था, परन्तु आखिरकार मैं उसके हाथ से मेज लेने में सफल हो ही गया। यह दिखाने के लिए कि मैं मेज को कितनी सरलता से उठा ले जा सकता हूँ, मैं ने अपने मित्र को लगभग गिरा ही दिया था। फिर परमेश्वर ने मेरा परिचय उससे करवाया जिसे मेरी "खोई हुई पसली" ही होनी चाहिए थी (उत्पत्ति 2:21-22 देखो), और मैं जान गया कि यदि मैं ने इस स्त्री से विवाह न किया तो मेरा जीवन सही नहीं होगा। सौभाग्यवश वह सहमत हो गया और स्त्री भी। जीवन अच्छा है! मैं निश्चय ही खुश हूँ कि मैं ने उस दिन प्रार्थना में समय बिताया था। मैं उस मिलन ले चूकना नहीं चाहता था!

लड़का बेसबॉल से मिलता है

मेरा एक और स्मरणीय मिलन हुआ था जब मैं छटवीं कक्षा में था। यह उतना सुखद नहीं था। इसकी याद मेरे जीवन भर मेरे साथ रहेगी। एक बेसबॉल का मिलन मेरे सामने के दाँतों से हुआ; और उस मिलन के फलस्वरूप मेरे सामने के दाँतों में दो सुन्दर आवरण हैं।

परमेश्वर अपनी सखी से मिलता है, शैतान जोड़ से मिलता है

स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक आकृति एक क्रूस पर लटकी हुई है। दो मिलन होने वाले हैं - एक अच्छा और सुखद, एक बदसूरत और हिंसक।

एक मनुष्य अपनी दुल्हन से मिलने वाला है और एक साँप उसके दाँत पर एक गेंद से मिलने वाला है।

"इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है, पर मैं यहाँ मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।" (इफि. 5:31-32)

"उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर मुझे बचा ले! क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है।" (भजन 3:7)

ऐसी सुन्दरता, ऐसी बदसूरती... संयोग, विच्छेद... जुड़ना, टूटना... असल में, क्रूस पर कई दूसरे मिलन हुए थे।

- दया का न्याय से मिलन।
- धार्मिकता का पाप से मिलन।
- ज्योति का अन्धकार से मिलन।
- दीनता का घमण्ड से मिलन।
- प्रेम का घृणा से मिलन।
- मृत्यु के डंक का इसके विषहर से मिलनः पुनरुत्थान।

केवल परमेश्वर ही ऐसी एक घटना की योजना बना सकता था और उसे इतनी सिद्धता से पूरा कर सकता था। केवल वह ही एक घटना में ऐसे सिरों को मिला सकता था।

परमेश्वर नहीं तो और कौन जीवन लाने के लिए लहू बहा सकता था, और चंगाई लाने के लिए दर्द उपयोग कर सकता था? परमेश्वर नहीं तो और कौन न्याय को संतुष्ट करने के लिए अन्याय होने दे सकता था, और स्वीकरण होने देने के लिए अस्वीकरण स्वीकार कर सकता था?

कौन इतनी भलाई करने के लिए एक ऐसे बुरे कार्य को उपयोग कर सकता है? केवल परमेश्वर।

साँप ने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ पर अपनी सबसे बड़ी विजय प्राप्त की थी। साँप ने अपनी सबसे बड़ी हार एक दूसरे पेड़ पर सही थी: कलवरी का क्रूस (1 पतरस 2:24)।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि पहला आदम अदन के उद्यान की परीक्षा में गिरा था, और अन्तिम आदम (यीशु) ने अपने सबसे बड़ी परीक्षा को गतसमनी के उद्यान में जीत लिया था?

इन तीन कहानियों के बारे में दोबारा सोचो: मेरा पत्नी से मिलन, बेसबॉल और क्रूस। सम्भवतः आपने अनुमान लगा लिया है कि इन तीन कहानियों में कहीं पर मध्यस्थता की प्रार्थना के चित्र छिपे हुए हैं।

मध्यस्थता एक मिलन उत्पन्न करता है

मध्यस्थता के लिए इब्रानी शब्द "paga" का अर्थ है: "मिलना"। जैसे हम ने पहले देखा है, मध्यस्थता न केवल एक **प्रार्थना** है जो एक व्यक्ति **करता है**, परन्तु कुछ ऐसा भी है जो एक व्यक्ति **करता है** जो केवल प्रार्थना द्वारा ही किया जा सकता है। इस मामले में, यह परमेश्वर से "मिलना" है।

मेलमिलाप के लिए एक मिलन

जैसे हम ने कहा, क्रूस पर यीशु परमेश्वर और शैतान दोनों से मिला। हमारी अपनी मध्यस्थता की उससे तुलना की जा सकती है। जब हम मध्यस्थता में परमेश्वर से मिलते हैं तब हम उसे किसी दूसरे से मिलने को कहते हैं। परमेश्वर के साथ हमारा मिलना अकसर दूसरे मिलन के लिए होता है - मेलमिलाप। हम बिचवई बन जाते हैं। हम कह सकते हैं: "स्वर्गीय पिता, मैं आपसे मिलने आया हूँ, यह कहने के लिए कि आप मेरे मित्र से मिलें।"

दूसरी ओर, जैसे मसीह ने आत्मिक युद्ध के द्वारा किया है, शत्रु के साथ हमारा मिलना एक मिलन तोड़ना है। यह एक तोड़ने, अलग करने, एकता भंग करने के लिए है।

हमारी मध्यस्थता की सारी प्रार्थनाओं में इन सेवाओं में से एक या दोनों सम्मिलित होंगी - मेलमिलाप या तोड़ना, मिलाना और अलग करना।

आओ हम पहले कुछ वचनों को देखें जो बताते हैं कि जब मसीह परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच मिलन कराने के लिए पिता से मिला था तो उसने क्या किया था। भजन 85:10 कहता है, "करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है।"

परमेश्वर का सच्चा चरित्र इस आयत में चार शब्दों के द्वारा देखा जा सकता है: "करुणा", परन्तु वह "सच्चाई" का परमेश्वर भी है। वह केवल "मेल" ही चित्रित नहीं करता परन्तु "धर्म" भी करता है। परमेश्वर की सच्चाई और धर्म के बिना, करुणा और मेल नहीं हो सकते हैं। एक पवित्र, धर्मी, न्यायी और सच्चा परमेश्वर एक पापी मनुष्यजाति को यूँ ही क्षमा, दया या मेल नहीं दे सकता है। पाप को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसका न्याय किया जाना चाहिए, और इसके साथ पापी का भी न्याय होता है।

<u>तो यह पवित्र, परन्तु प्रेमी परमेश्वर, इन दो पक्षों का मिलाप कैसे कर सकता है? वह उन्हें कैसे मिला सकता है? उत्तरः क्रूस पर!</u>

क्रूस पर, करुणा और सच्चाई का एक दूसरे से मेल हुआ। धर्म और मेल ने एक दूसरे को चूमा। जब यह हुआ, तब परमेश्वर और मानवता सच में मिले!

हम ने पिता को पुत्र के द्वारा चूमा है! हम उससे मसीह के लहू के द्वारा मिले हैं! मेरा अपनी पत्नी से मिलने के अलंकार को इस्तेमाल करते हुएः यीशु ने "मेज का एक सिरा पकड़ा" और उसकी पत्नी से उसका परिचय हुआ।

बुद्धि के एक सर्वश्रेष्ठ कार्य के द्वारा, परमेश्वर ने अपने प्रेम और अपने न्याय दोनों को संतुष्ट किया। उसने धर्म और मेल दोनों स्थापित किया। जब ऐसा हुआ तब मसीह की मेलमिलाप की सेवा पूरी हुई। "जिसने (परमेश्वर) मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया...परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया" (2 कुरिं. 5:18-19)। क्योंकि हम अब मसीह का उसकी मध्यस्थता में प्रतिनिधित्व करते हैं, तो आओ हम इन आयतों को अपने ऊपर लगाएँ। 2 कुरिन्थियों 5:18 कहता है, "...और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी।" हम अपनी मध्यस्थता की प्रार्थना के द्वारा, यीशु के क्रूस पर किए मध्यस्थता के कार्य के सामर्थ्य को छोड़ते हैं। हम प्रार्थना में लोगों को परमेश्वर के पास लाते हैं कि पिता उनसे मिले। हमें भी मेल-मिलाप की सेवा दी गई है। हम चाहे एक व्यक्ति या एक देश के लिए प्रार्थना कर रहे हों, हमें परमेश्वर और मनुष्यों में एक मिलन उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा होता है। इस प्रकार हम मसीह के कार्य का सामर्थ्य और फल छोड़ते हैं। यह तब भी हो सकता है जब आप अपने पड़ोस में से परमेश्वर को कहते हुए गुज़रते हैं कि वह परिवारों से मिले और उनका उद्धार करे। यह तब भी होता है जब आप अपने बिस्तर के पास प्रार्थना में घुटने के बल होते हो। हर बार जब आप मध्यस्थता की प्रार्थना करते हो, आर परमेश्वर और लोगों में एक मिलन उत्पन्न कर रहे हो।

मिलन जो चंगा करते हैं

मैं ने मध्यस्थता की प्रार्थना के कारण चंगाई के चमत्कार देखे हैं। एक बार जब मेरी पत्नी, एक दूसरा दम्पती और मैं एक वृद्ध महिला की सेवा कर रहे थे जिसका हाल में उद्धार हुआ था। हम उसके घर उसे कुछ शिक्षा देने गए हुए थे। छः महिने पहले वह एक स्टूल से गिर पड़ी थी और उसका टखना टूट गया था। जैसे अकसर प्रौढ़ लोगों के साथ होता है, उसका टखना ठीक से चंगा नहीं हो रहा था। उसका टखना अभी भी सूजा हुआ था और उसे बहुत दर्द हो रहा था। जब हम उसके घर पर थे तो दूसरे व्यक्ति और मुझे दोनों को लगा कि परमेश्वर उसके टखने को चंगा करना चाहता है - उसी समय।

हम ने यह उसे बताया और वह प्रार्थना के लिए सहमत हो गई। हम ने उसे उसकी टाँग एक स्टूल पर रखने को कहा। प्रार्थना में, मैं उसके और परमेश्वर के बीच आया ताकि उनका मिलन हो। उस क्षण परमेश्वर की उपस्थिति उस कमरे में इतनी सामर्थ्य के साथ आई कि मैं तुरन्त रुक गया। मैं ने उसकी ओर केवल एक कदम ही लिया था और एक शब्दः "पिता" कहा था। परमेश्वर को केवल इतना ही चाहिए था। ऐसा लगा कि वह इस महिला को छूने का इतना उत्सुक था कि वह अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सका था। पवित्र आत्मा की उपस्थिति उस कमरे में इतनी अधिक भर गई कि मैं रुक गया, बोलना बंद कर दिया और रोने लगा। मेरी पत्नी और दूसरा दम्पती भी रोने लगे। जिसकी हम सेवा कर रहे थे वह भी रोने लगी। उसका पैर स्टूल पर उछलने लगा और कई मिनटों तक बिना नियंत्रण हिलता रहा। उसकी पवित्र आत्मा के साथ एक सामर्थी मुलाकात हो रही थी - एक मिलन। प्रभु ने उसे चंगा किया और पवित्र आत्मा से भर दिया।

उसी भ्रमण के समय मेरी पत्नी और मैं, दूसरे दम्पती के साथ जिनका पहले जिक्र हुआ है, एक दूसरी महिला के लिए प्रार्थना करना चाहते थे जो टीबी के कारण अस्पताल में थी। हम ने उसे चालीस दूसरी महिलाओं के साथ एक वार्ड में पाया। हर बिस्तर केवल तीन फुट की दूरी पर थे। जैसे हम उसके साथ बात और प्रार्थना कर रहे थे तो हम ने देखा कि अगले बिस्तर की महिला हमें ध्यान से देख रही थी। जब हम ने इस महिला से निपट लिया तब उसने पूछा कि क्या हम उसके लिए प्रार्थना करेंगे। हम निस्सेदह करने के लिए खुश थे और उसकी आवश्यकता के बारे में पूछा। उसने अपनी बाँहें चादर में से बाहर निकालीं और हमें दिखाईं। वे उसके शरीर की ओर मुड़ी हुई थीं और उस स्थिति में जम गई थीं। वह उन्हें इस्तेमाल नहीं कर सकती थी। उसके पैर भी उसी स्थिति में

थे। जब वह अस्पताल में पीठ की शल्यचिकित्सा के लिए आई हुई थी, डॉक्टर ने अनजाने में उसकी रीड़ की हड्डी की एक नस काट दी थी। उसी कारण से उसकी यह स्थिति बन गई थी। उसकी समस्या को हल करने के लिए वे कुछ नहीं कर सकते थे।
जैसे हम प्रभु से उसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए कहने लगे हमारे हृदय तरस से भर गए। कुछ भी ऐसा नहीं हुआ जिसे देखा जा सकता था परन्तु हम ने उसे प्रभु पर भरोसा करने को कहा। हम कमरे में आगे बढ़ गए यह देखने के लिए कि क्या किसी दूसरे को यीशु के बारे में बताया जा सकता है। तब हम ने एक आकस्मिक शोरगुल और चिल्लाना सुना। हम ने मुड़ कर देखा और देखा कि वह महिला उसके हाथों को जोर-जोर से हिला रही थी, उन्हें खोल और बंद कर रही थी, अपनी अंगुलियों को हिला रही थी, चादर के नीचे अपना पैरों को पटक-पटककर "चमत्कार" चिल्ला रही थी। एक मिलन हुआ था! उसके बाद कमरे की हर महिला हमें उसके लिए प्रार्थना करने की विनती कर रही थी। हम हर बिस्तर के पास गए, उनको मसीह में लाए और उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना की। हम अस्पताल के वार्ड में बेदारी देख रहे थे!
कई महिलाओं का उद्धार हुआ। टीबी वाली महिला भी चंगी हो गई और एक दूसरी महिला जिसकी अगली सुबह शल्यचिकित्सा होनेवाली थी उसे बदले में घर भेजना पड़ा क्योंकि वह चंगी हो गई थी। एक उदास, आशाहीन, बीमारी से भरे वार्ड को एक कलीसिया की सभा में क्या बदल सकता है? परमेश्वर! परमेश्वर का लोगों से मिलना। प्रार्थना के मिलन परमेश्वर के मिलन बनाते हैं।

मैं आपको यह सोचने में गुमराह नहीं करना चाहता हूँ कि चमत्कार उतनी सरलता से हो जाते हैं जितनी सरलता से वे उन दो अवसरों पर हो रहे थे। परन्तु, हम लोगों को परमेश्वर से मिला सकते हैं और "मध्यस्थता" शब्द का अर्थ यही है। इसमें अक्सर काफी मध्यस्थता की प्रार्थना लगती है। फिर भी, इसमें दिन या मिनट लग सकते हैं परन्तु प्रयास का लाभ होता है। महत्त्व की बात यह है कि हम करें।

रीछनी से मिलन

आओ हम मध्यस्थता के मिलन के तोड़ने के पहलू की बात करें। इन में हम कलवरी की विजय को लागू करते हैं। मैं इन्हें नीतिवचन 17:12 के कारण "रीछ अभिषेक" कहता हूँ: "बच्चा-छीनी-हुई रीछनी से मिलना तो भला है, परन्तु मूढ़ता में डूबे हुए मूर्ख से मिलना भला नहीं है।" मैं एक जंगली रीछनी से उसके बच्चों के साथ या बिना कभी नहीं मिली हूँ, और मैं आशा करता हूँ कभी न मिलूँ। एक पुराने बुद्धिमान वनपाल ने मुझे एक सलाह दी थी: "बेटा, यदि सम्भव हो तो बच्चों-वाली रीछने से बचने का प्रयास करना! परन्तु, यदि उसके सामने पड़ भी जाओ तो उसके और उसके बच्चों के बीच में मत आना। यदि आते हो तो एक मिलन होगा, और या तो तुम घायल हो जाओगे या मारे जाओगे!"मैं यह कहने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ कि नीतिवचन 17:12 प्रार्थना के विषय में बात कर रहा है। परन्तु मैं यह कह रहा हूँ कि इस आयत में "मिलना" के लिए शब्द इब्रानी शब्द "paga" है, जिसका अनुवाद "मध्यस्थता" है।
दूसरे ईब्रानी शब्द यहाँ इस्तेमाल किए जा सकते थे। परन्तु, paga शब्द का यहाँ इस्तेमाल करने का एक कारण यह है क्योंकि इसका अकसर अर्थ होता है कि कुछ हिंसक होने वाला है। असल में, paga प्राय एक युद्धक्षेत्र का शब्द है। (न्यायियों 8:21; 15:12; 1 शमूएल 22:17; 2 शमूएल 1:15; 1 राजा 2:25-46)।
मध्यस्थता हिंसक हो सकती है! मिलन अप्रिय हो सकते हैं! कुछ तो बड़े घृणित हो सकते हैं जैसा शैतान का कलवरी पर यीशु के साथ हुआ था। वह तब हुआ था जब मसीह ने हमारे लिए मध्यस्थता की थी। शैतान परमेश्वर और उसके लोगों के बीच आया था। इसकी तुलना एक रीछनी और उसके बच्चों के बीच आने से की जा सकती है! शैतान के दुःस्वपन सच हो गए थे। यीशु उस से कलवरी पर मिले थे। युद्ध की शक्ति से चट्टानें फूट गई थीं। सूर्य भी अन्धकार हो गया था। (मत्ती 27:52, 54 देखो)। शैतान को लगा उसने अपने सबसे बड़ी जीत हासिल की है। परन्तु तब उसने और उसकी सेना ने एक दिल दहलानेवाली ध्वनि सुनी जैसी उन्होंने पहले कभी सुनी नहीं होगी: परमेश्वर की उपहास की हँसी! (भजन 2:4)। हँसी के पीछे मनुष्य के पुत्र की जोर की घोषणा थी, "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30)। कृपया ऐसा मत सोचिए कि जब यीशु ने ये शब्द कहे थे तब वह मृत्यु की बात कर रहा था। यहाँ इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द "tetelestai" है। इसका अर्थ है: "कुछ पूरी तरह पूरा करना या इसके समाप्त की स्थिति में लाना।"
उस समय इस शब्द को खरीदारी पर मोहर लगाया जाता था: "पूरी कीमत चुकाई गई।" यीशु चिल्लाया था, "ऋण पूरा चुकाया गया है!" हाल्लेलुया! जब मसीह ने ये शब्द कहे थे तब वह भजन 22:31 के शब्द प्रयोग कर रहा था। क्रूस पर की उसके सात में से तीन कथन इसी भजन में से हैं। इस भजन से उद्धत किया शब्द "asah" है। इसका अर्थ है: "सृष्टि करना।" यही शब्द उत्पत्ति में भी प्रयोग किया गया है जब परमेश्वर ने पृथ्वी बनाई थी। मसीह कह रहा था, "ऋण पूरा चुकाया गया है।" मेरा विश्वास है वह यह भी कह रहा था, "प्रकट हो जा, नई सृष्टि!" आश्चय नहीं कि पृथ्वी हिल गई, सूर्य दोबारा प्रकट हुआ, सूबेदार डर गया और पुराने नियम के सन्त जीवित हो गए। (मत्ती 27:52-54)। और दृश्य के पीछे हिंसा हुई थी। बंदी छुड़ाए गए थे, चोट पहुँचाई गई थी और अधिकार बदला गया था। (1 पतरस 2:24; 3:19; 4:6; यशायाह 53:5; 61:1; उत्पत्ति 3:15; मत्ती 28:18 देखो)।

1 यूहन्ना 3:8 में एक दिलचस्प शब्द प्रयोग किया गया है। यह शब्द जो क्रूस पर हुआ था उसमें कुछ अधिक अर्न्तदृष्टि देता है। वचन है, "परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" "नाश करे" यूनानी भाषा में है "luo", जिसके कानूनी और शारीरिक दोनों अर्थ हैं। इसके सम्पूर्ण अर्थ को समझने से हमें जो यीशु ने शैतान और इसके कामों के साथ किया था जानने में सहायता मिलेगी।

luo का कानूनी अर्थ है:

1) घोषणा करना कि कुछ या कोई अब बंधा हुआ नहीं है;
2) एक ठेके को या कुछ जो कानूनी रूप से बाँधता है रद्द है।

यीशु शैतान की हमारे ऊपर कानूनी पकड़ को समाप्त करने और घोषित करने के लिए कि हम अब उसके कामों से बंधे नहीं है आया था। उसने "ठेके" को रद्द कर दिया, और हम पर शैतान के अधिकार को तोड़ दिया।

luo का शारीरिक अर्थ है:

1) घोलना या पिघलाना,
2) तोड़ना,
3) किसी चीज के टुकड़े-टुकड़े कर देना, या
4) कुछ जो बंधा है खोल देना।

प्रेरितों 27:41 में जिस जहाज पर पौलुस सफर कर रहा था तूफान से टुकड़े-टुकड़े (luo) हो गया था। 2 पतरस 3:10, 12 में, हमें बताया गया है कि एक दिन पृथ्वी के तत्त्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे। यीशु ने न केवल हमें कानूनी रूप से छुड़ाया है, बल्कि उसने निश्चित किया है कि उस छुटकारे के शारीरिक परिणाम भी सबको स्पष्ट दिखाए गए हैं। वह चंगाई लाया, बंदियों को स्वतंत्र किया, अत्याचार को मिटाया और जो शैतानी नियंत्रण में थे उन्हें स्वतंत्र किया।

विजय लागू करना

हमारी जिम्मेवारी है कि जब हम अन्धकार की शक्तियों में मिलते हैं विजय को लागू करें। यह दिलचस्प है कि यीशु ने उसी शब्द, luo को, बताने के लिए इस्तेमाल किया है जो कलीसिया को आत्मिक युद्ध में करना चाहिए। मत्ती 16:19 हमें बताता है, "मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।" इस आयत में खोलेगा शब्द luo है।

अब, प्रश्न यह है - क्या मसीह ने शैतान के कामों को luo किया था या क्या हम शैतान के कामों को luo करते हैं ? उत्तर है - दोनों सही हैं। यीशु ने शैतान के अधिकार को तोड़ने के काम को पूरी तरह पूरा किया था। यीशु ने शैतान की मनुष्यजाति पर कानूनी पकड़ को रद्द कर दिया था। परन्तु, किसी को पृथ्वी पर उसे उस विजय में प्रतिनिधित्व करना होगा, और लागू करना होगा। यही हमारी सभा में उस छोटी लड़की के साथ हुआ था जब हम ने उसके लिए प्रार्थना की थी (पिछले अध्याय में बताया है)। हम ने अन्धकार की शक्तियों से मिलन किया और क्रूस की विजय को लागू किया।

कई वर्ष पहले मेरे एक मित्र ने एक उत्साही, स्वस्थ्य जवान महिला की ओर संकेत किया, और फिर निम्नलिखित कहानी बताई:

कुछ महिने पहले, जब उसने इस महिला को देखा था तब वह गर्दन से नीचे लकवा थी। वह अपने सिर को थोड़ा सा हिला सकती थी, परन्तु बोल नहीं सकती थी। वह दो वर्ष से इस हालत में थी। डाक्टर कुछ भी पता लगा नहीं पाए थे कि उसे यह रोग कैसे हुआ होगा। मेरे मित्र ने परख लिया कि यह शैतानी काम है। उसे ऐसे मामलों में कलीसिया की स्थिति पता नहीं थी। इसलिए, वह इस महिला के पास जो पहियादार कुर्सी में थी सावधानी के साथ गया। वह उसके पास घुटनों के बल हो गया और उसके कान में फुसफुसाया। उसने कहा: "शैतान, मैं यीशु के नाम में इस महिला पर से तेरी पकड़ तोड़ता हूँ। मैं तुझे आज्ञा देता हूँ तू उस पर से अपनी पकड़ खोल और उसे जाने दे।" उस समय न कोई प्रदर्शन या परिवर्तन हुआ। परन्तु, एक सप्ताह के बाद, वह अपनी बाहों को थोड़ा हिलाने लगी। अगले सप्ताह वह अपनी बाहों को सामान्य रूप से हिला रही थी और टाँगों को थोड़ा हिला रही थी। एक महिने तक परिवर्तन होते रहे जब तक वह पूरी तरह स्वतंत्र और अच्छी न हो गई।

तब उसने मेरे मित्र को उसकी हालत के कारण का निम्नलिखित विवरण दिया:

"मेरे स्कूल के एक शिक्षक ने, जो ओझा भी था, मेरी ओर यौन प्रस्ताव रखे, जिनका मैं ने इन्कार किया। वह क्रोधित हुआ और मुझे कहा कि यदि मैं ने उसके साथ सेक्स नहीं किया तो वह मुझ पर शाप डालेगा।" उसे बुरे शापों के बारे में कुछ समझ नहीं थी और उसने इस के बारे में अधिक सोचा नहीं। परन्तु, कुछ समय के बाद, उसे लकवा मारने लगा। उसकी बोल नहीं पाने की अयोग्यता के कारण वह अपनी हालत का कारण किसी को बता नहीं पाई थी।

उस लड़की को स्वतंत्रता मिलने के लिए क्या हुआ था? एक व्यक्ति इस लड़की और अन्धकार की शक्तियों के बीच आया था। वह उनसे यीशु के नाम में, और यीशु की विजय लागू करते हुए मिला था। यह मध्यस्थता है! एक मिलन एक सुखद अनुभव हो सकता है, या यह विरोधी शक्तियों के बीच हिंसक मुकाबला हो सकता है। मध्यस्थ संसार को पिता से और उसकी अदभुत आशीषों से मिलाने के लिए परमेश्वर से मिलन कर सकता है। दूसरी ओर, उसका मिलन कलवरी की विजय को लागू करने के लिए शैतानी शक्तियों से हो सकता है।
मिलन का उद्देश्य भिन्न हो सकता है, परन्तु एक चीज निश्चित है। एक समझदार मध्यस्थ की प्रार्थनाएँ एक मिलन उत्पन्न करेंगी। और जब मिलन समाप्त होगा, तो कुछ बदल गया होगा। इस दैत्य से डरो मत। यीशु ने आपको उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए योग्य बनाया है। और अतीत की असफलताओं से डरो मत। आप कर सकते हो!
आओ हम प्रार्थना द्वारा मिलन करें!

अध्याय 5 – गाल से गाल

मेरा सहारा लो

बाइबल कहती है, "रोनेवालों के साथ रोओ" (रोमियों 12:15) और "तुम एक दूसरे का भार उठाओ" (गलातियों 6:2)। इसमें इकट्ठे खड़े होना, एक दूसरे के दर्द को बाँटना सम्मिलित है। परन्तु, इन आयतों का कुछ और भी अर्थ है। हमें मसीह में अपने भाईओं और बहनों के भार केवल उठाने ही नहीं हैं; हमें उन्हें ले जाना है। इसमें एक भार निकाल देना सम्मिलित है। असल में, नए नियम में "उठाने" के लिए दो शब्द इस्तेमाल किए गए हैं। पहला है, "anechomai", जिसका अर्थ है: "सहारा देना, सहना या सँभालना।" क्या आप ने कभी टमाटरों से लदे पौधे को देखा है? फलों का भार पौधे को इतना झुका सकता है कि वह टूट जाएगा। पौधे की सहायता के लिए, माली टमाटर के पौधे को भार से झुकने और टूटने से बचाने के लिए उसमें एक खूँटा बाँधता है। खूँटे की ताकत पौधे को दी जाती है। इसलिए, खूँटा पौधे का "भार उठाता" है।
जब प्रभु हमें कुलुस्सियों 3:13 और इफिसियों 4:2 में एक दूसरे की सह लेने के की आज्ञा देता है, तो वह केवल ऐसा नहीं कह रहा, "एक दूसरे को सहन करो।" वह हमें ऐसा करने को कह तो रहा है परन्तु वह ऐसा भी कह रहा है, "एक दूसरे के लिए खूँटा बनो।" दूसरे शब्दों में, हमें एक कमज़ोर भाई या बहन के बगल में जो उदास है आना है और कहना है, "तुम गिरोगे और टूटोगे नहीं, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए खूँटा बनूँगा। मेरी ताकत तुम्हारी ताकत होगी। आओ, मेरा सहारा लो। जब तक मैं खड़ा रहूँगा तुम भी खड़े रहोगे।" यह मसीह की देह की कितनी सुन्दर तस्वीर है। फल मिलेगा।

भार उठा ले जाना

"उठाने" के लिए दूसरा शब्द है "bastazo", जिसका अर्थ है: ठोना, उठाना या ले जाना।" इस शब्द में कुछ उठा ले जाने या निकालने का विचार है। यह रोमियों 15:1-3 और गलातियों 6:2 में इस्तेमाल किया गया है।
मसीह ने उठाने वाले इन दोनों विचारों को किया है। वह हमारे लिए "खूँटा बनने", और हमारा भार उठा ले जाने दोनों का एक सिद्ध उदाहरण है।
हम ने पहले ही सिद्ध कर दिया है कि उसकी हमारे लिए मध्यस्थता एक प्रार्थना नहीं है जो उसने की थी, परन्तु एक काम है जो उसने किया था। यह पिता के साथ हमारा **मेल-मिलाप कराने**, और शैतान के अधिकार को **तोड़ने** के लिए "बिचवई होने" का काम था। इस क्षेत्र में उसके काम को समझने से हमें भी अपने मध्यस्थता के काम को समझने में सहायता मिलती है। मसीह का मध्यस्ता का काम उस समय इसके चरम पर पहुँचा था जब हमारे पाप उस पर "लाद दिए गए" थे और वह उन्हें "उठा ले गया" था: "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया.....उसने अपना प्राण मृत्यु के लिए उण्डेल दिया; वह अपराधियों के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिए विनती करता है" (यशायाह 53:6, 12)। इन दो आयतों में इब्रानी शब्द 'पागा' इस्तेमाल किया गया है। पहली बार इसे "लाद दिया" इस्तेमाल किया है। दूसरी बार इसे "विनती करता" इस्तेमाल किया गया है। दोनों बार हमारे पापों, अपराधों और रोगों का उस पर लादे जाने की बात करते हैं।
नया नियम इस कार्य को इस प्रकार बताता है: "जो पाप से अज्ञात था, उसी (यीशु) को उसने (परमेश्वर) हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें (यीशु) होकर परमेश्वर की धार्मिकता बना जाएँ" (2 कुरिं. 5:21)। तब मसीह ने हमारे पापों और कमज़ोरियों को

"उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है" (भजन 103:12)। वह उन्हें अभी भी उठाए नहीं है, उसने उन्हें फेंक दिया है। "उठाने" या "सहने" के लिए इब्रानी शब्द "nasa" है। इसका अर्थ है: "उठा ले जाना" या "दूर कर देना।" पीछा छुड़ाने के लिए उठाने का यह विचार बड़े महत्त्व का है। यह तब और अधिक महत्त्व का हो जाता है जब हम मसीह की मध्यस्थता की सेवा में अपनी भूमिका देखते हैं।
यह जानना अवश्य है कि हम केवल दूसरों का भार उठाते नहीं हैं। हम व्यक्ति के लिए खूँटा (anechomai) बनते हैंऔर भार को उठा ले जाते (bastazo) हैं। हम उनके भार से उनका पीछा छुड़ाने में उनकी सहायता करते हैं।

बलि का बकरा

एक बलि का बकरा वह है जो दूसरे के दोष और दण्ड लेता है। पुराने नियम का एक समारोह इसे चित्रित करता है।
वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के दिन, इस्राएल का महायाजक देश के पाप उठा ले जाने के लिए एक बकरे को चुनता था (लैव्य. 16:7-22)। बकरे को बलि का बकरा कहते थे। बलि के बकरे को महायाजक हारून के पास लाया जाता था। "और हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे पर रखकर इस्राएलियों के सब अधर्म के कामों, और उनके सब अपराधों, अर्थात् उनके सारे पापों को अंगीकार करे, और उनको बकरे के सिर पर धरकर उसको किसी मनुष्य के हाथ जो इस काम के लिए तैयार हो जंगल में भेजके छुड़वा दे" (लैव्य. 16:21)। अपने हाथ बलि के बकरे के सिर पर रखकर, हारून लोगों के पापों को जिन्हें उसने अंगीकार किया था बकरे के ऊपर डाल रहा था। जब पाप अंगीकार किए हैं और बकरे पर स्थानातंरित किए गए हैं, तो बकरे को जंगल में ले जाया जाता था और उनके पाप के बोझ तले मरने के लिए छोड़ दिया जाता था। पुराने नियम का बलि का बकरा मसीह का प्रतीक है जो हमारा बलि का बकरा है। "दूसरे दिन उसने (यूहन्ना) यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)। जिस प्रकार बलि का बकरा इस्राएल की छावनी के बाहर मरता था, उसी प्रकार यीशु भी शहर के बाहर हमारे शापों या पाप के दण्ड को उठाए मरा था (इब्रानियों 13:11-13)।

हमारा बलि का बकरा, मसीह जिसने हमारे पाप उठाए हैं, इस कहानी में जिसे मैं ने एक बार पढ़ा था अच्छी तरह चित्रित किया गया है। कहानी को सरल बनाने के लिए संपादन किया गया है:
एक दम्पती था जिन्हें पता चला कि उनके 14 वर्ष के बेटे स्टीफन ने उनसे झूठ बोला है। वह लगातार तीन दिन स्कूल नहीं गया था। जब पता चला, तो उसने अपने माता-पिता से झूठ बोला। उसके माता-पिता को स्टीफन के स्कूल नहीं जाने से अधिक उसके झूठ बोलने से दुख हुआ था। जो उसने किया था उसके विषय में उसके साथ प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने एक अनोखे और कड़े दण्ड का फैसला किया। स्टीफन के पिता ने उससे कहा, "तेरी माँ और मुझे जो तू ने तीन दिन झूठ बोला है उसकी गम्भीरता को तुझे समझाना होगा। तेरा अनुशासन यह होगाः अगले तीन दिन तू अटारी में जाएगा और वहाँ अकेले रहेगा। तुझे वहीं पर खाना मिलेगा और तू सोएगा भी वहीं।" तो स्टीफन अटारी में गया जहाँ उसके लिए बिस्तर तैयार किया गया था। यह स्टीफन के लिए और उसके माता-पिता के लिए भी एक लम्बी शाम थी। कोई भी सो नहीं पा रहा था। रात के 2 बजे भी माता-पिता जागे हुए थे। "मैं और सहन नहीं कर सकता!" पिता ने कहा, और एक तकिया और कम्बल लेकर बिस्तर से नीचे उतरा। "मैं भी अटारी में जा रहा हूँ।" उसने स्टीफन को जैसी उसने अपेक्षी की थी, जागता, और आँखों में आँसुओं के साथ पाया।
"स्टीफन," पिता ने कहा, "तुम्हारे झूठे बोलने का तुम्हारा दण्ड मैं रद्द नहीं कर सकता हूँ क्योंकि तुम्हें पता चलना चाहिए कि यह कितनी गम्भीर बार है। परन्तु तुम्हारी माता और मुझे अच्छा नहीं लग रहा है कि तुम यहाँ अटारी में अकेले रहो, इसलिए मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे इस दण्ड में भागी होऊँगा।" पिता उसके साथ वहाँ लेट गया और दोनों ने एक दूसरे पर अपनी बाहें डाल दीं। उनके गालों पर के आँसूँ मिल गए, और उन्होंने तीन रातें एक ही तकिये पर बिताई और उस सजा को मिलकर सहा।
क्या चित्र है! दो हजार वर्ष पहले परमेश्वर भी "अपना कम्बल और तकिया लिए अपने बिस्तर पर से उतरा था।" उसने अपना आँसुओं से भरे गाल को खूँटे के समान हमारी गाल के साथ टिका दिया और हमारे पाप का दण्ड खुद "उठा लिया"। उसकी अटारी एक कब्र थी और उसका बिस्तर एक चट्टान की पटिया थी। उसके गाल के साथ लगा हुआ आपका और मेरा गाल था। हम वहाँ शारीर के भाव से तो नहीं थे परन्तु आत्मिक रूप से वहाँ थे (रोमियों 6:4, 6)। जब वह वहाँ लटका हुआ था, वह कुछ चीजों को "उठाए हुए" था। हमारे पाप उस पर "लादे गए" थे और वह उन्हें हम से दूर ले गया था।
परन्तु, मसीह का काम कुछ पूरा नहीं हुआ था। आप सम्भव है मुझे से सहमत न हों, परन्तु आओ हम कुलुस्सियों 1:24 को देखें: "अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिए उठाता हूँ और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात् कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी करता हूँ।"

हमारा भाग

"अतः उन बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें, न कि अपने आप को प्रसन्न करें। हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए प्रसन्न करे कि उसकी उन्नति हो" (रोमियों 15:1-2)। "तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो" (गलातियों 6:2)। दोनों आयतों में "सहो" या "उठाओ" के लिए यूनानी शब्द "bastazo"। यह हटाने या ले जाने का विचार देता है। मसीह की मध्यस्थता की याजकीय सेवा करने में, हमें दूसरों के लिए केवल उनके भार ही उठाने नहीं हैं। हमें उन्हें दूसरों से हटा लेना है, जैसे मसीह ने किया था।

कृपया, याद रखिए कि हम अक्षरशः वह नहीं दोबारा कर रहे हो मसीह ने किया है। हम उसका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो उसने किया है। दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है। हम मसीह का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उसने हमारी कमज़ोरियों, रोगों, पापों, निन्दाओं और अपमानों को उठा लिया था जब उनको उस पर "लाद दिया" (paga) गया था। हमें इस काम को संसार में लागू करना है।

वह गिलाद का बलसाम है (यिर्मयाह 8:22), परन्तु हम उस बलसाम को घाव पर लगाते हैं।

वह जल का सोता है (यिर्म. 2:13; 17:13), परन्तु हम उसके जीवित जल को देते हैं।

उसके पास चरवाहे का शान्ति देनेवाला सोंटा है (भजन 23:4), परन्तु इसके इस्तेमाल का सौभाग्य हमारा है।

उसने न केवल हमारी कमज़ोरियों को उठा लिया है, परन्तु वह अभी भी हमारी कमज़ोरियों के साथ सहानुभूति रखता है (इब्रा. 4:15)। वह हमें उसी सहानुभूति से छूना चाहता है ताकि हम भी ढोनेवाले हो सकें।

महान चंगा करनेवाला हमारे द्वारा "चंगा" करना चाहता है। महान महायाजक हमारे द्वारा उसका "याजक का काम करना चाहता" है। महान प्रेमी हमारे द्वारा प्रेम करना चाहता है।

उसने नई वाचा अपने लहू में बनाई थी (इब्रा. 12:24)। परन्तु, उसने "हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य" किया है (2 कुरिं. 3:6)। हाँ, मसीह ने हमें "योग्य सेवक" बनाया है। सेवक कुछ सेवा करते हैं। हम क्या सेवा करते हैं? नई वाचा की आशीषें और भण्डार।

किसने इन आशीषों को निश्चित किया और गारंटी दी है? निस्संदेह, यीशु ने। तब तो यह आयत कह रही है कि हमें, जो मसीह ने पहले ही किया है उसके योग्य वितरक बनाया गया है।

आपकी सहायता के लिए आ रहे व्यक्तियों के द्वारा दिया गया

मैं नई वाचा का एक योग्य सेवक हूँ मेरे मित्र के द्वारा मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ था। जैसे उसने कहा, "कभी-कभी प्रभु की वाचा दूसरों के द्वारा तुम में कार्य करती है जब वे तुम्हारी सहायता के लिए आते हैं।"

उस समय मेरा मित्र और उसकी पत्नी विदेश में प्रभु की सेवा कर रहे थे। वे उनके बेटे के साथ जीवन और मृत्यु के संघर्ष में लगे हुए थे। जवान लड़के को एक संकटपूर्ण रोग लग गया था और वह मौत के निकट था। उस समय उसने मुझे फोन पर बुलाया।

"मैं टोकने के लिए क्षमा चाहता हूँ", मेरे मित्र ने कहा, "परन्तु मुझे किसी भी हालत में तुम्हारी सहायता चाहिए।"

"क्या है?" मैं ने पूछा।

उसने कहा, "मेरा बेटा, बुखार के कारण मरने पर है। डाक्टर कारण का पता नहीं लगा पा रहे हैं। वे जो कुछ कर सकते थे, उन्होंने किया है, परन्तु कोई लाभ नहीं हो रहा है। कह नहीं सकते कि वह इस हालत में एक और रात बिता पाएगा।"

"मैं ने उसके लिए बहुत प्रार्थना की है, परन्तु इस आक्रमण को तोड़ने में असफल रहा हूँ। प्रभु ने मुझ पर प्रकट किया है कि यह बीमारी कमज़ोरी की एक आत्मा के कारण आई है। मैं अपने बेटे पर से इसकी शक्ति तोड़ नहीं पाया हूँ हालाँकि मैं ने घंटों संघर्ष किया है।" "परन्तु, मुझे लगता है प्रभु ने दिखाया है कि मुझे कुछ सामर्थी मध्यस्थों को सम्पर्क करना चाहिए। यदि वे प्रार्थना में मेरे साथ जुड़ेंगे तो हम इस आक्रमण को तोड़ सकेंगे।"

मेरा मित्र और उसकी पत्नी प्रभु में शक्तिशाली हैं। वे प्रार्थना करते हैं। उन में विश्वास है। वे अधिकार को समझते हैं। वे पाप में नहीं थे। वे उनके बेटे के मामले में विजय क्यों नहीं प्राप्त कर पा रहे थे? मैं नहीं जानता। परन्तु मुझे लगता है हमें जो प्रार्थना कर रहे थे एक महत्त्वपूर्ण सबक सिखाना चाहता था। हम प्रार्थना में लग गए। हम ने कहा कि इस बच्चे के साथ पागा हो जाएँ। हम ने कहा, "पिता, हमें अपने याजक के मध्यस्थता के काम (paga) में लगने, और इस स्थिति में यीशु की विजय लागू करने दो। हमें नई वाचा की आशीषों को देबारा प्रस्तुत करने दो। हमें बच्चे के साथ खूँटा बना दो। हमें मसीह के साथ, उसकी कमज़ोरियों की भावनाओं को छूने दो। हम पर इस भार को डाल दो (paga) कि हम इसे उठा ले जाएँ (nasa, bastazo)। पिता, हम यह यीशु के नाम में - जो वह है और जो उसने किया है उस के आधार पर माँगते हैं।"

तब हम ने इस बच्चे के जीवन पर से शैतान की शक्ति को बाँधा। हम ने यह यीशु के नाम में किया, क्योंकि हम उसकी विजय की सेवा कर रहे थे।

मेरे मित्र ने कुछ घंटों बाद फोन किया और कहा, "आप लोगों को सम्पर्क करने के लगभग शीघ्र ही, बुखार टूट गया और मेरे बेटे में सुधार होने लगा। कुछ घंटों के भीतर वह चंगा हो गया और उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई।" परमेश्वर की स्तुति हो! मसीह की देह ने जैसा प्रभु ने चाहा था कार्य किया था। यीशु की महिमा हुई थी। मेरे मित्र ने आगे कहा, "मैं ने प्रभु से पूछा कि मुझे इस

आक्रमण को तोड़ने के लिए दूसरों की सहायता की आवश्यकता क्यों पड़ी थी। उसने यहोशू और इस्राएल की सेना का गिदोनियों की सहायता करने जाने की कहानी की याद दिलाई। गिदोनियों के सामने पाँच सेनाएँ थीं।"
तब उसने मुझे यहोशू 9 और 10 में से कहानी सुनाईः
गिबोन के निवासी कनानी जनजाति के थे जिनका यहोशू और इस्राएल को नाश करना था। गिबोन के निवासी मरना नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने इस्राएलियों के साथ धोखे से मित्रता की एक वाचा बाँध ली। उन्होंने इस्राएलियों को विश्वास करवा लिया कि वे उनसे दया की भीख माँगने के लिए एक दूर दराज के देश से आए हैं और उनके साथ वाचा बाँधना चाहते हैं। यहोशू और इस्राएलियों ने इसके विषय में प्रार्थना नहीं की थी। वे बहुत खुश हो गए थे कि कुछ लोग जिन्होंने एक दूर देश से आने का दावा किया था उनके साथ मित्रता की वाचा बाँधने की याचना कर रहे थे। इसलिए वे गिबोन के साथ समझौता करने के धोखे में आ गए थे। (क्या आप कभी किसी समस्या में पड़े हो क्योंकि आपने उसके बारे में प्रार्थना नहीं की थी?)
वाचा वैध थी, और इस्राएल गिबोन का मित्र बना गया था। कुछ दिनों के बाद पाँच सेनाओं ने गिबोन पर आक्रमण बोल दिया। वाचा के कारण, गिबोन ने यहोशू को सहायता के लिए पुकारा। यहोशू और उसकी सेना सारी रात चल कर गिबोम को बचाने के लिए समय पर पहुँच गए। यह कहानी वाचा के सामर्थ्य का एक अविश्वसनीय प्रदर्शन है।

इस कहानी को याद दिलाने के बाद मेरे मित्र ने मुझ से ये शब्द कहेः "यह कहानी मुझे याद दिलाने के बाद प्रभु ने निम्नलिखित विचार मेरे मन में डालेः कभी-कभी प्रभु की वाचा तुम्हारे लिए दूसरों की सहायता से कार्य करती है!" क्या यह अदभुत नहीं? सर्वशक्तिमान हमारे द्वारा वाचा की आशीषों की सेवा करता है। मध्यस्थता इसी के बारे में ही तो है।

Paga: वह हम पर किसी दूसरे की आवश्यकता "डालता" है।
Anechomai: हम अपने आप को उस व्यक्ति के लिए "खूँटा" बनाते हैं।
Bastazo: हम कमज़ोरी या भार को "उठा ले जाते" हैं।

शत्रु पर लागू करना और रौंदना

मसीह और कलीसिया में इस साझेदारी की एक दूसरी तस्वीर इस्राएल और गिबोनियों की उसी कहानी में दी गई हैं। यह यहोशू 10:22-27 में दी गई है। यहोशू यीशु की पुराने नियम की एक तस्वीर है। यहोशू का नाम भी यीशु के यूनानी नाम का समानार्थी इब्रानी नाम है। वाचा के अनुसार, यहोशू ने पाँच कनानी राजाओं को हराकर गिबोनियों का बचाव किया था। तब इन सेनाओं के राजा छिपने के लिए एक गुफा में भाग गए थे। उनका पता चलने के बाद, यहोशू ने आज्ञा दी कि वे बाहर लाए जाएँ। उसने उन्हें जमीन पर लेटाया। वह अपनी विजय का प्रदर्शन करने के लिए, जैसा उस समय का रिवाज था, उनकी गर्दनों पर उसका पाँव रखने वाला था। परन्तु, उन राजाओं पर अपना पैर रखने के बदले, उसने अपने कुछ सैनिकों को बुलाया और उनको करने दिया। यह हमें मसीह और कलीसिया, उसकी सेना की एक आक्षरिक तस्वीर देता है।
यीशु ने जब शैतान को हराया था तब इस भविष्यसूचक तस्वीर को पूरा किया था। उसने भी अपनी सेना के सदस्यों को अपने पास बुलाया और कहा, "तुम इन शत्रुओं की गदनों पर अपने पैर रखो।" इफिसियों 2:6 सिखाता है कि यीशु ने "उसके साथ उठाया।" मसीह हम से कह रहा है, "यह मेरी विजय ही नहीं, तुम्हारी भी है। जो मैं ने किया है, तुम्हें लागू करना है। मैं ने अन्धकार की शक्तियों को जीत लिया है और उनकी गर्दनों पर पैर रखने के लिए मैं उन्हें तुम्हारे पास करता हूँ। वे मेरे अधिकार में हैं। परन्तु, तुम्हें उस अधिकार को एक-एक स्थिति में इस्तेमाल करना है।"

इसीलिए रोमियों 16:20 कहता है, "शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा।"
लूका 10:19 हमें बताता है, "देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।" तब ऐसा ही हुआ था जब हमने अपने मित्र की जोर के बुखार (कमज़ोरी की आत्मा) को जीतने में जो उसके बेटे को मारने की धमकी दे रहा था सहायता की थी। इसमें एक लागू करना और रौंदना था। कभी-कभी "लादने" में "रौंदना" होता है!

भजन 110 भी मसीह के साथ हमारी साझेदारी को चित्रित करता है। इस भजन में एक आश्चर्यजनक भविष्यद्वाणी मसीह के पुनरुत्थान और पिता के दाहिने स्वर्गारोहण की बात बताता है। नए नियम में समानार्थी अनुच्छेद इफिसियों अध्याय एक में पाया जाता है। उसके स्वर्गारोहण और राज्याभिषेक के समय, पिता ने पहले ही सारे आत्मिक अधिकार और दूसरे अधिकारों को मसीह के पैरों के नीचे कर दिया थाः "और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया

को दे दिया" (इफि. 1:22)। "क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके अधीन कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके अधीन कर दिया है तो प्रत्यक्ष है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, वह आप अलग रहा" (1 कुरिं. 15:27)।
परन्तु, भजन 110 बताता है कि यीशु अभी भी "सब वस्तुओं" को उसके पाँवों की चौकी बनने की प्रतीक्षा कर रहा है: पिता पुत्र को कहता है, "तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ" (भजन 110:1)। क्या इस मसीहा संबंधी भविष्यद्वाणी और नए नियम के वचनों में कुछ विरोध है? क्या मसीह सब वस्तुयों को उसके पैरों की चौकी होने की प्रतीक्षा कर रहा है या क्या वे पहले ही उसके पैरों तले हैं? क्या वे **अभी** उसके पैरों तले हैं, या क्या वे की **जाएँगी**? दोनों का उत्तर हाँ है!

क्रूस के द्वारा सब चीजें कानूनन उसके पैरों तले हैं। जैसे हम अपना भाग करेंगे वे अक्षरश: उसके पैरों तले हो जाएँगी। भजन 110 की आयतें 2 और 3 हमारे भाग का वर्णन करती हैं: "तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर। तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं।" यहाँ "पराक्रम" शब्द इब्रानी शब्द "chayil"। इसका सेना भी अनुवाद किया गया है। मसीह एक स्वैच्छिक सेना की खोज में है जो उसके अधिकार के राजदण्ड को आगे बढ़ाएगी। वे उनके शत्रुओं के बीच शासन करेंगे और उसकी महान विजय को लागू करेंगे।
कभी-कभी मसीह हम पर एक प्रार्थना का काम या बोझ डालता है (paga) ताकि हम उस बोझ को उठा ले जाएँ (nasa, bastazo)। अकसर काम में युद्ध सम्मिलित होता है...."रौंदने" के लिए प्रयोग किए गए इब्रानी और यूनानी दोनों शब्दों में हिंसा या युद्ध का विचार है। वे हैं "darak" (इब्रानी) और "poteo" (यूनानी)। इब्रानी शब्द डरक असल में तीर छोड़ने के समय: "धनुष को मोड़ना" के लिए प्रयोग होने लगा था। यह इस्राएल में अभी भी "अपने हथियार तैयार करो" आज्ञा के लिए प्रयोग होता है।
दोनों शब्द एक कोल्हू में पैर रखने या रौंदने के लिए प्रयोग होता है। यह यशायाह 63:3 और प्रकाशितवाक्य 19:15 में मसीह के उसके शत्रुओं को जीतने का एक प्रतीक है। प्रकाशितवाक्य की आयत कहती है, "जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।"
इन्ही दो शब्दों को न केवल मसीह को युद्ध में बताने के लिए, परन्तु हमारे युद्ध को बताने के लिए भी प्रयोग किया गया है। यहोशू 1:3 में प्रभु ने यहोशू से कहा, "उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ।" "पाँव धरोगे" निस्संदेह डरक है। परमेश्वर इस्राएल को यह नहीं कह रहा था कि जहाँ कहीं भी वे चलेंगे या उनके पैर रखेंगे उनकी हो जाएगी। उसने मीरास की सीमाओं को पहले ही बना रखा था। उसका अर्थ है, "मैं हर वह स्थान तुम्हें दे दूता हूँ जहाँ तुम अपना धनुष उठाओगे और अपने हथियार इस्तेमाल करोगे।"

क्या परमेश्वर विजय दे रहा था, या क्या वे इसे ले रहे थे? दोनों सच हैं! याद रहे कि मूसा के अधीन पिछली पीढ़ी डर रहे थे और उन्होंने उनके हथियार लेकर युद्ध नहीं किया था। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें देश दिया नहीं था। (गिनती 14:1-39 देखो)
कृपया, एक क्षण के लिए भी ऐसा मत सोचो कि यह आज हमारे लिए कुछ भिन्न है। ये इस्राएल के साथ हमारे लिए प्रतीक के रूप में हुआ था (1 कुरिं. 10:6, 11 देखो)। जो यीशु के पास है और जो वह हमें दे रहा है अपने आप हमारे पास नहीं आ जाएगा क्योंकि हम उसके हैं। हमें भी "हमारी लड़ाई के हथियार" उठाने होंगे (2 कुरिं. 10:4 देखो) और darak। अर्थात्, यदि हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अपना बनाना है तो हमें भी अपने आत्मिक शत्रुओं को अपने आत्मिक हथियारों के साथ रौंदना होगा। जिस तरीके से हम इसे करते हैं मध्यस्थता है। अकसर हमें अपने भाइयों और बहनों की निराशा की अटारी पर चढ़ना होगा। हमें अपनी गाल उनकी गाल के साथ लगानी होगी और उनके भार को उठा ले जाना होगा।

- मसीह आपके द्वारा जीवन जीए!
- मसीह के दुखों में जो कमी है - हमारा भाग - अब कमी न रहे!
- राजदण्ड हमारे द्वारा आगे बढ़े। हम अपने शत्रुओं के बीच राज्य करें! हम उन्हें अपने पैरों की चौकी बनाएँ!
- प्रभु की वाचा पृथ्वी पर लागू की जाए!

केवल एक रोटी का टुकड़ा

निम्नलिखित पिता-और-पुत्र की कहानी इस अध्याय के लिए एक उचित समाप्ति है:
बार-बार चेतावनियाँ देने के बावजूद, छोटा लड़का स्कूल से घर देर से पहुँता रहा। एक सुबह उसके माता-पिता ने उसे कहा कि अह अनुग्रह का समय समाप्त हो गया है। उसे उस दिन समय पर पहुँचना होगा। परन्तु, वह देर से पहुँचा।

रात के भोजन के समय उसे उसके दण्ड का पता चला। उसकी थाली में केवल एक रोटी थी। बच्चे को धक्का लगा और वह निराश हुआ। पिता ने इसका पूरा प्रभाव पड़ने देने के लिए थोड़ी प्रतीक्षा की। तब उसने लड़के की थाली लेकर उसे मांस और सब्जियों से भर दिया।
जब लड़का बड़ा हो गया तब उसने कहा, "जो मेरे पिता ने उस रात किया था, उससे मैं ने अपने सारे जीवन भर जाना है कि परमेश्वर कैसा है।" मसीह समान बनने की कीमत लगती है। मध्यस्थता के काम की भी कीमत है। आओ हम कीमत दें। आओ हम कभी-कभार अपनी भरपूर मेज से कुछ पीछे करें और किसी को दिखाएँ कि परमेश्वर कैसा है।

मनन के लिए कुछ प्रश्न

1. पवित्रशास्त्र में से दो प्रकार के उठाने को समझाओ। वे मध्यस्थता को समझने में कैसे सहायता करते हैं ? पागा का उठाने से क्या सम्बंध है ?
2. क्या आप समझा सकते हो कि बलि का बकरा किस प्रकार मध्यस्थता की एक तस्वीर है ?
3. यहोशू 10:22-27 में यहोशू और इस्राएलियों का विवरण किस प्रकार मसीह और कलीसिया में साझेदारी की एक तस्वीर है ?
4. भजन 110 किस प्रकार यीशु और कलीसिया के बीच सम्बंध को चित्रित करता है ?
5. क्या आपने आज यीशु को बताया कि तुम उससे प्रेम करते हो ?

अध्याय 6 – अतिक्रमण मना है

"कूड़ा फेंकना मना है। अतिक्रामकों को दण्ड दिया जाएगा।"
यह चिन्ह सार्वजनिक स्थानों, पार्कों, और जहाँ कहीं सीमाएँ हैं देखा जाता है। लोगों को इन सीमाओं का सम्मान करना चाहिए, नहीं तो उनको परिणाम भुगतना पड़ेगा। यह मध्यस्थता का एक पहलू है जो सुरक्षित सीमाओं से संबंधित है। यह आत्मा में चिन्ह लगाने जैसा है। चिन्ह में लिखा हो सकता है। "शैतान, कूड़े का ढेर लगाना मना है। अतिक्रामकों को दण्ड दिया जाएगा।" यहोशू अध्याय 19 इस्राएल के हर कुल की सीमाओं का वर्णन करता है। इस अध्याय में paga (मध्यस्थता) शब्द अनेक बार प्रयोग किया गया है। इस प्रकार प्रयोग में, पागा है: एक सीमा का फैलाव।
क्या आप को आश्चर्य हो रहा है कि मध्यस्थता के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द, पागा, "सीमा" भी प्रयोग किया जा सकता है ? इससे आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यह बिलकुल तर्कसंगत है कि सुरक्षा की सीमाएँ एक प्रार्थना से जुड़ी होनी चाहिए। हम मध्यस्थता के द्वारा दूसरों और अपने चारों ओर सुरक्षा की सीमाएँ बना सकते हैं। यह जानना कितनी शान्ति की बात है कि यह सत्य "मध्यस्थता" के लिए इब्रानी शब्द के अर्थ में पाया जाता है!

कई मसीही विश्वास करते हैं कि दुर्घटनाओं, विनाश और शैतानी आक्रमणों से मसीही की सुरक्षा अविवेचित है। कई विश्वास करते हैं कि इस सुरक्षा के लिए हमें कुछ नहीं करना होता है। वे विश्वास करते हैं कि यह सुरक्षा परमेश्वर की प्रभुता पर ही निर्भर है।
दूसरे शब्दों में, कई विश्वास करते हैं कि जब परमेश्वर हमें इन चीजों से सुरक्षित रखना चाहता है, वह रखता है। उनको यह भी लगता है कि जब वह हमारी रक्षा नहीं करना चाहता है, तो वह बुरी चीजें होने देता है। इस विश्वास का अर्थ है कि बुरी चीजों से हमारा बचाव पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर है, हम पर नहीं। जो इस शिक्षा पर विश्वास करते हैं ऐसा सोचते हैं: एक मसीही के साथ ऐसा कुछ नहीं होगा जिसे परमेश्वर ने होने नहीं दिया है। दूसरे हैं जो कहते हैं कि यह न केवल मसीहियों के लिए, बल्कि सब के लिए सच है। वे विश्वास करते हैं कि सब कुछ जो पृथ्वी पर होता है परमेश्वर के नियंत्रण में है।
असल में, सब कुछ जो पृथ्वी पर होता है परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं है। हम इसे निम्नलिखित तथ्यों में देखते हैं:

- परमेश्वर कभी भी फैसला नहीं करेगा कि किसी का बलात्कार या दुर्व्यवहार हो।
- परमेश्वर कभी भी नहीं चाहेगा कि निर्दोष दुख उठाएँ।
- परमेश्वर कभी भी अनेक प्रकार की हत्याएँ जो संसार में होती हैं नहीं चुनेगा।

नियंत्रण के सिद्धान्त

क्या परमेश्वर एक मसीही के जीवन की हर घटना को सीधे नियंत्रण में रखता है? इस प्रश्न का उत्तर बोने और काटने के मूल नियमों से दिया जा सकता है। उत्तर के लिए हम कारण और प्रभाव, वैयक्तिक जिम्मेवारी और स्वतंत्र इच्छाशक्ति को देखेंगे। जब हम मसीह में आते हैं तब ये चीजें मिटा नहीं दी जाती हैं।

हाँ, परमेश्वर ने हमें कई बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ दी हैं। परन्तु, परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं के साथ शर्तें लगी हुई हैं। इन शर्तों को "नियंत्रण के सिद्धान्त" कहा जाता है। इसका अर्थ है कि एक प्रतिज्ञा को पाने के लिए हमें एक शर्त को पूरा करना होगा। इन शर्तों में से, यदि सब नहीं तो, अधिकाँश में हमारी ओर से जिम्मेवारी होती है। हमें प्रतिज्ञा पाने के लिए एक विशेश तरीके से सोचना, एक विशेष काम करना, या एक विशेष सत्य का विश्वास करना होता है। सुरक्षा पाना भी कोई अपवाद नहीं है। हम में से अधिकतर को यह विचार पसन्द नहीं है। यह हमें डराता है। यह हमारे मन में परमेश्वर को कमज़ोर बनाता है क्योंकि सब कुछ उस के नियंत्रण में नहीं लगता। अधिकाँश लोग इस विचार से बहुत नाराज होते हैं कि परमेश्वर से सुरक्षा पाने में असफलता उनकी गलती के कारण हो सकता है। वे मानना नहीं चाहते कि चंगाई की कमी या प्रार्थना का उत्तर नहीं उनकी गलती है। वे विश्वास नहीं करना चाहते कि परमेश्वर से कुछ नहीं पा सकना उनकी गलती हो सकती है।

बाइबल की बहुत सारी प्रतिज्ञाएँ विश्वास करने और पाने से संबंध रखती हैं। कितनी बार बाइबल कहती है कि यदि हम विश्वास करें और संदेह न करें तो हम पाएँगे (मत्ती 17:20; 21:21; मरकुस 11:22-24; याकूब 1:6-7 देखो)। इसलिए, हम उस शिक्षा का विरोध क्यों करें जो कहती है कि हमारे अविश्वास ने हमें परमेश्वर से पाने से रोके रखा है? बाइबल कहती है कि हम "विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं" (इब्रानियों 6:12)। तब हम नाराज क्यों होते हैं जब यह दिखाया जाता है कि हमारे आलस के कारण कमी उत्पन्न हुई थी? बाइबल कहती है यदि हम "आज्ञाकारी होकर मेरी (परमेश्वर की) मानें" तो देश के उत्तम-उत्तम पदार्थों को खाएँगे (यशा. 1:19-20)। इसलिए हम उलझन में या गुस्से में क्यों हो जाते हैं जब कहा जाता है कि हमारे कुछ न करने से असफलता हुई है?

उदाहरणार्थ, जो अपने आप को नया-जन्म पाए कहते हैं उन में से कम से कम 80% दशमाँश नहीं देते। इस तरीके से वे अपने आप को शाप के लिए खुला छोड़ते हैं। फिर भी वे नाराज होते हैं जब कोई उनसे कहता है कि उनकी कमी का कारण उनकी अपनी गलती है (मलाकि 3:8-12 देखो)।

- हम क्षमा नहीं करते, और फिर भी सोचते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनेगा और उत्तर देगा (मरकुस 11:25-26 देखो)। अकसर, हम ठीक से नहीं खाते, व्यायाम नहीं करते, और दूसरे तरीकों से अपने शरीरों को चोट पहुँचाते हैं। फिर हम अपनी बीमारी का दोष परमेश्वर की इच्छा को देते हैं।
- हम अपने बच्चों को सही प्रशिक्षण नहीं देते। फिर भी हम नाराज होते हैं जब कोई कहता है कि उनके विद्रोह का कारण हमारी ही गलती होगी (व्यवस्थाविवरण 6:7 और नीतिवचन 22:6 देखो)।
- हम मसीह और उसके वचन में बने नहीं रहते। फिर भी, हम इसका दोष "परमेश्वर की इच्छा" को देते हैं, क्योंकि हम पूछते हैं "हम क्या करें" परन्तु करते नहीं हैं (यूहन्ना 15:7)।
- हम जानते हैं कि विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने और मनन करने से आता है (रोमियों 10:17)। परन्तु, हम में से अधिकतर ऐसा बहुत कम करते हैं। तब हम क्रोधित होते हैं जब कोई कहता है कि हम ने अपने विश्वास की कमी के कारण प्रतिज्ञा को प्राप्त नहीं किया।

भजन 91 सुरक्षा की प्रतिज्ञाओं से भरा हुआ है। कुछ लोग इसे "मसीही की बीमा योजना" कहते हैं। प्रतिज्ञाओं को पाने की एक शर्त है। शर्त पहली आयत में पाई जाती है: "जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे" बाकी के भजन में दी गई प्रतिज्ञाओं को पाएगा।

इफिसियों 6:13-18 हमें बताता है कि हमारे पास शैतान के अग्निबाणों को रोकने के लिए आत्मिक हथियार हैं। इन हथियारों में एक विश्वास की डाल भी है (आय. 16 देखो)। यदि हम आत्मिक हथियारों को नहीं पहनते तो क्या शैतान पर विजय की अपेक्षा कर सकते हैं?

1 पतरस 5:8 इसे स्पष्ट करता है कि "तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।" याकूब 4:7 हमें बताता है कि मुझे शैतान का सामना करना है। परन्तु, जब कोई मुझे बताता है कि किसी बुरी चीज से मेरी सुरक्षा की कमी मेरी अपनी गलती हो सकती है, तो मैं नाराज होता हूँ।

आप क्या कहते हैं? क्या आप भी नाराज होते हो?

मैं ऐसा बिलकुल नहीं कह रहा हूँ कि परमेश्वर हमें कठिनाइयों में से नहीं गुज़रने देता। मैं नहीं कह रहा कि हमारी सारी समस्याएं अज्ञोल्लंघन के कारण हैं। मैं नहीं कह रहा कि सब प्रार्थनाओं के उत्तर नहीं मिलना अविश्वास के कारण है। मैं कह रहा हूँ कि हमारी कई असफलताएँ और कठिनाइयाँ हमारी अपनी गलती हैं। वे सब "परमेश्वर की इच्छा" नहीं हैं।

सुरक्षा और दूसरी स्वर्गीय आशीषों को पाने में हमें अपना भाग निभाना है।

- आओ हम अपने डर, असुरक्षाओं और नाराजगियों को त्याग दें।
- आओ हम इस सच्चाई को स्वीकार करें कि पवित्रशास्त्र उन नियमों से भरे पड़े हैं जो हम पर जिम्मेवारी डालते हैं। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पाने के लिए इन जिम्मेवारियों को पूरा करना होगा।
- आओ समझें कि यह कर्मों द्वारा उद्धार की शिक्षा नहीं देता। यह अनुग्रह को रद्द नहीं करता। परन्तु, अनुग्रह का तात्पर्य यह नहीं कि हमारी ओर से कोई जिम्मेवारी नहीं है।
- आओ हम समझ लें कि परमेश्वर का प्रेम बिनाशर्त है, परन्तु उसकी कृपा और आशीषें नहीं हैं।
- आओ हम आलस और परमेश्वर की ओर इच्छा की कमी को त्याग दें।
- आओ हम समझ लें कि कभी-कभी कमी रह जाएगी। जब ऐसा होगा तो दोषी महसूस न करें।

प्रार्थना द्वारा सीमाएँ बनाना

क्या हम अब सहमत हैं कि सुरक्षा पाने के लिए कार्य करना चाहिए? एक कार्य प्रार्थना के द्वारा सुरक्षा की सीमाओं (paga) को बनाना है।

एक पास्टर की कहानी है जिसने वर्षों पहले ईश्वरीय सुरक्षा पाई थी। उसने ऐसा प्रार्थना के द्वारा सुरक्षा की सीमाओं को बनाकर किया था। इस पास्टर ने हर दिन प्रार्थना में एक घंटा बिताने का अनुशासन बनाया हुआ था। परन्तु, एक उसने अधिक प्रार्थना करने की पवित्र आत्मा की अगुआई अनुभव की। वह दूसरे घंटे में भी लगा रहा। दो घंटे के बाद भी उसे प्रार्थना करते रहने की आवश्यकता महसूस हुई। वह तीसरे घंटे में भी लगा रहा, और उस दिन के लिए परमेश्वर की सुरक्षा और आशीष माँगता रहा। उसने दूसरी चीजों के लिए भी प्रार्थना की। अन्त में, उसने अधिक प्रार्थना करने की आवश्यकता से छुटकारा महसूस किया, इसलिए वह रुक गया।

उस शाम को, जैसे वह अपने अहाते में काम कर रहा था, उसे लगा कि कोई चीज उसकी टाँग को बार-बार छू रही है। उसने नीचे देखा और पाया कि एक विषधरसाँप उसको डसने की कोशिश कर रहा था। परन्तु, यह उसे डस नहीं पा रहा था। बदले में, यह केवल उसकी टाँग को छू पा रहा था।

उस व्यक्ति ने सुबह अधिक प्रार्थना करने की आवश्यकता क्यों अनुभव की थी? जब उसने प्रार्थना की थी तो वह वास्तव में क्या कर रहा था? दूसरी चीजों के साथ-साथ, वह सुरक्षा की सीमाओं को बना रहा था - paga।

कुछ लोग कहेंगे कि परमेश्वर को एक विषधरसाँप से बचाने के लिए तीन घंटों की प्रार्थना की आवश्यकता नहीं है। मैं सहमत हूँ। परमेश्वर को यरीहो का नाश करने के लिए सात दिन उसके चारों ओर घूमाने की "आवश्यकता" नहीं थी। परन्तु उसने ऐसा किया था। उसे व्यक्ति को चंगा करने करने के लिए उसकी आँखों में थूकने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु यीशु ने किया था। वह क्यों चाहता है कुछ चीजें की जाएँ, हमें पता नहीं है। परन्तु, हम जानते हैं कि हमारे लिए - **आज्ञापालन कुंजी है।** यदि वह कहता है, "तीन घंटे", तब तो तीन घंटे ही लगेंगे।

गुप्त स्थान में रहना

जब सुरक्षा की प्रार्थना की बात होती है तब स्थिर प्रयत्न भी एक कुंजी है। हमें सर्वशक्तिमान के छाए में "रहने" के लिए गुप्त स्थान में "रहने" की आवश्यकता है: "जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।" (भजन 91:1)

यीशु ने मत्ती 6:6 में कहा कि गुप्त स्थान ही प्रार्थना का स्थान है। भजन 91:1 में "बैठा रहे" शब्द है "yashab", जिसका अर्थ है: "बने रहना"।

बात यह है कि प्रार्थना एक जीवनशैली होनी चाहिए, न कि एक ऐसी क्रिया जिसे हम कभी-कभार करते हैं। हमें अपने गुप्त स्थान को "रहने का" स्थान बनाना चाहिए। कई विश्वासियों के प्रार्थना के समय इतने नियमित या स्थिर नहीं होते हैं कि सुरक्षा की शक्तिशाली दिवार बना सकें।

भजन 91:1 में "ठिकाना पाएगा" शब्द है "luwn", जिसका अर्थ है: दूसरी चीजों के साथ-साथ, "रात बिताना।" आओ हम वचन को इस अर्थ के साथ पढ़ें: "जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में रात बिताएगा।" दूसर शब्दों में, प्रार्थना परमेश्वर के वचन के समान है। जो हम आज पढ़ते हैं सारे सप्ताह के लिए नहीं बना रहेगा। हमें प्रतिदिन की "रोटी" या मन्ना चाहिए। उसी प्रकार हमें गुप्त स्थान में **प्रतिदिन** जाना चाहिए। जब हम जाएँगे, तो हम वहाँ "रात बिता सकते हैं।" परन्तु, कल दोबारा जाना चाहिए। स्थिर प्रयास के साथ प्रार्थना करना कुंजी है।

एक सेवक था जो द्वितीय विश्व युद्ध के समय एक जहाज में सेवा कर रहा था। हर दिन, वह और कुछ दूसरे नाविक मिलकर प्रार्थना करते थे। वे उनके अपने लिए और जहाज के लिए परमेश्वर की सुरक्षा माँगते थे।

वे क्या कर रहे थे? वे सुरक्षा की सीमाओं (paga) को बना रहे थे। सेवक ने बताया, "एक युद्ध में, एक शत्रु के विमान ने हमारे जहाज के डेक पर एक बम फेंका। परन्तु, फूटने के बदले, बम डेक पर से उछल कर पानी में जा गिरा। यह एक रबर बॉल के समान उछला था!!" इस सेवक ने बताया कि एक के बाद एक युद्ध में उनका जहाज और उसके लोग चमत्कारी तरीके से बचते रहे।

प्रार्थना के समयोचित समय

सुरक्षा की सीमाएँ! गुप्त स्थान में जीवन!

मध्यस्थता में ऐसा ही नहीं है जो हम एक सामान्य नियमित आधार पर कर सकते हैं। ऐसे विशेष समय भी होंगे जब पवित्र आत्मा हमें विशेष स्थितियों के लिए चौकन्ना करेगा जिन में सुरक्षा की प्रार्थना की आवश्यकता होगी। इन्हें बाइबल "kairos" समय कहती है।

"समय" के लिए यूनानी भाषा में केवल दो शब्द हैं। एक "chronos" है, जो **सामान्य** समय है जिसमें सबकुछ किया जाता है। एक घड़ी में समय क्रोनोस समय होगा। दूसरा शब्द "kairos" है, जो **कौशल सम्बंधी** या **सही** समय है। यह सिद्ध समय है जब कोई चीज **की जानी चाहिए**।

अवसर का एक विशेष समय 'कायरोस' होगा। युद्ध में आक्रमण का एक बिलकुल सही समय कायरोस होगा। जब कोई खतरे में है या शैतान का आक्रमण होने वाला है, तो यह कायरोस होगा। बाइबल समयोचित (कायरोस) परीक्षाओं की बात करती है (लूका 4:13; 8:13 देखो)। कोई संदेह नहीं कि कभी-कभी एक परीक्षा यूँ ही आ सकती है। एक व्यक्ति गलत समय पर काम के स्थान पर हो सकता है। परन्तु शत्रु भी सुआयोजित, समयोचित परीक्षाएँ ला सकता है। अपने लिए और दूसरों के लिए, सतर्क रहना महत्त्वपूर्ण है। मुझे पवित्र आत्मा ने नए विश्वासियों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया है, इस विचार के साथ, "यह उनके लिए परीक्षा का समय (kairos) है।" लूका 22:31-32 में जब यीशु ने पतरस के लिए प्रार्थना की थी, तब यही हुआ था। यीशु ने प्रार्थना की कि पतरस जब उसका इन्कार करेगा, तब उसका विश्वास खो न जाए। पतरस के लिए यीशु की प्रार्थना सुनी गई थी।

ऐसे भी हैं जो मसीह से दूर हो गए हैं। क्या उन्हें रोका जा सकता था, यदि किसी ने उनके लिए प्रार्थना की होती?

पवित्रशास्त्र हमें विशेष रूप से समयोचित सताव की भी सूचना देता है (प्रेरितों 12:1; 19:23 देखो)। यह अकसर शत्रु हमें निराश करने के लिए आयोजित करता है। यह हमारा ध्यान भंग या नष्ट भी कर सकता है। प्रारंभिक कलीसिया में बेदारी और सफलता के समयों के दौरान, शैतान ने सताव के आक्रमण किए थे। उसके आक्रमण सफल नहीं हुए थे क्योंकि विश्वासी प्रार्थना कर रहे थे। क्या यह सम्भव है कि कलीसिया के विरुद्ध अधिकाँश सताव रोके जा सकते हैं? क्या इसे रोका जाता यदि हम चौकन्ने होते और इसके विरुद्ध प्रार्थना की होती? अकसर हम अपनी समझ का सहारा नहीं लेने की शिक्षा को भूल जाते हैं (नीतिवचन 3:5-6 देखो)। उन समयों में हम प्रभु को अपनी मध्यस्थता में स्वीकार करना भूल जाते हैं। हम पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं का, या तो प्रतीक्षा नहीं करते या सुनते नहीं। इससे हमें हानि होती है। हम भूल जाते हैं कि "हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं" है (इफिसियों 6:12)। हम इस सच्चाई को अनदेखा करते हैं कि "हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं" हैं (2 कुरिं. 10:4)। हम दुष्टात्माओं के बारे में अधिक सोचने से इतना डरते हैं कि हम उनकी जानकारी नहीं रखते। कभी-कभी हमारी सन्तुलन की खोज सन्तुलन से बाहर हो जाती है।

इफिसियों 6:18 कहता है कि हमें "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना" करनी है और "जागते" रहना और "सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती" करते रहना है। परमेश्वर नहीं कह रहा कि हम सब समय प्रार्थना करते रहें। उसे chronos कहेंगे। बदले में, वह हमें सब विशेष समयों (kairos) में प्रार्थना करने को कहता है। दूसरे शब्दों में, हम युद्ध में हैं।

यदि हम चौकन्ने रहेंगे, तो पवित्र आत्मा हमें शत्रु के विशेष, समयोचित आक्रमणों की चेतावनी देगा। तब हम प्रार्थना करके सुरक्षा की सीमा (paga) बना सकते हैं।

पागा करने का समय, कायरोस

कई वर्ष पहले मैं प्रार्थना कर रहा था, जब प्रभु ने मुझे मेरे मन में एक तस्वीर दी। कोई इसे दर्शन कहेंगे। इसे कुछ भी कहें, पर मैं ने कुछ देखा। यह एक विषधरसाँप था जो मेरे डैड के पैरों से लिपटा हुआ था।

वह मेरे लिए कायरोस समय था! मैं ने उसकी सुरक्षा के लिए लगभग 15 मिनट प्रार्थना में बिताए, और फिर स्वतंत्र अनुभव किया। अगले दिन मेरे डैड ने मुझे दूसरे प्रान्त से फोन किया। उसने कहा, "तुम सोच नहीं सकते कल क्या हुआ। मम्मी शैड में बाहर गई थी। वैसे तो वह सीधे अन्दर चली आती है। परन्तु इस समय उसने दरवाजे को अन्दर की ओर धकेला, रुकी और नीचे देखा। वहाँ, जहाँ वह कदम रखने वाली थी, एक कुण्डलित विषधरसाँप बैठा हुआ था। वह सावधानी के साथ पीछे हट गई। उसने मुझे बुलाया और मैं ने उसे मार दिया।"

मैं ने डैड से कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ।" उन्होंने आश्चर्य के साथ पूछा, "तुम्हें कैसे पता?" "मैं ने आत्मा में देखा", मैं ने उत्तर दिया, "और आपकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर की स्तुति हो!" जब मैं ने उनके लिए प्रार्थना की थी तब मैं क्या कर रहा था? उनके और मम्मी के चारों ओर सुरक्षा की सीमाओं को बना रहा था।

मैं ने प्रार्थना कैसे की? मैं ने पिता से उनकी रक्षा करने को कहा था। मैं ने शैतान की उनको हानि पहुँचाने की किसी भी कोशिश को बाँधा था। मैं सुरक्षा की प्रतिज्ञा के विषय में एक या दो बाइबल के वचन भी बोले थे। फिर मैं ने आत्मा में प्रार्थना की थी।

एक माँ की प्रार्थनाएँ

मेरा एक मित्र है जिसने एक कायरोस स्थिति में प्रार्थना के उत्तर का एक दिलचस्प अनुभव पाया था। वह एक दिन सुबह अपने बेटे और बहू से मिलने गई थी। बेटा एक रात की बदली में काम करता था। काम से उसके लौटने की प्रतीक्षा में, उसकी पत्नी और माँ थोड़ी देर बातें करते रहे। जैसे समय बढ़ता गया और बेटा लौटा नहीं, तो वे बेचैनी अनुभव करने लगे। कुछ ठीक नहीं था। यह सोचकर कि वह सम्भवतः अभी भी काम पर है, उन्हों ने वहाँ फोन लगाया। उन्हें उत्तर मिला कि वह तो पहले ही जा चुका है। वे अधिक चिन्तित हो गए। माँ ने कहा, "मुझे चिन्ता हो रही है। आओ हम उसके काम की ओर चलें।" उसने अनुमान लगाया था कि उसके बेटे ने सामान्य समय पर काम छोड़ा होगा और इसलिए उसे अभी तक घर आ जाना चाहिए था। असल में, वह उनके फोन करने के कुछ क्षण पहले ही काम से निकला था। परन्तु, इसमें प्रभु उनकी अगुआई कर रहा था। हालाँकि वह अभी किसी खतरे में नहीं था, परन्तु पवित्र आत्मा जानता था कि उसके लिए एक कायरोस क्षण आ रहा है। प्राभु चाहता था कि जब यह तो उसकी प्रार्थना करनेवाली माँ वहाँ पर हो।

माँ और बहू उस व्यस्त महामार्ग में उसके काम की ओर कार से जाने लगे। तब उन्होंने उसे दूसरी दिशा से अपनी मोटरसायकल पर, लगभग 60 से 70 किलोमीटर की रफ्तार से आते देखा। जैसे वे उसे देख रहे थे, उसकी आँख लग गई और उसकी मोटरसायकल की सड़क से दिशा बदल गई। वह किनारे से जा टकराया और हवा में लगभग 40 फीट तक उड़ गया। वह तो टोप भी नहीं पहने हुए था। जैसे बेटा हवा में से उड़ रहा था, उसकी माँ प्रार्थना कर रही थी, "यीशु, मेरे बेटे को बचा!" जैसे वे मुड़े और उसकी ओर वापस जा रहे थे, वह प्रार्थना किए जा रही थी। वे दौड़ते हुए दृश्य पर पहुँचे और सोच रहे थे न जाने क्या देखने को मिलेगा। उसके चारों ओर एक भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

उन्होंने एक चमत्कार देखा! किसी प्रकार की कोई चोट नहीं - कोई घाव नहीं, कोई टूटी हड्डियाँ या भीतरी चोट नहीं थी। केवल एक चकाचौंध नौजवान.... सोच रहा था क्या हुआ है। कायरोस और पागा हुआ था! सीमाएँ हुई थीं। एक माँ को पवित्र आत्मा से चेतावनी मिली थी। इसलिए, वह सही समय पर सही स्थान पर थी।

क्या इसका अर्थ यह है कि जब आपके किसी प्रिय जन की दुर्घटना हुई हो और आप वहाँ प्रार्थना करते हुए नहीं पाए गए तो यह आपका दोष है? क्या उनकी चोट या मृत्यु आपकी गलती है? निस्संदेह नहीं। इसका अर्थ केवल यह है कि हमें चौकन्ने रहना चाहिए। जब पवित्र आत्मा से चेतावनियाँ आती हैं तब हमें प्रार्थना करके प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए। हमें कुछ सीमाएँ बनानी चाहिए। सुरक्षा की सीमाएँ कभी-कभी एक क्षण में बन जाती हैं। दूसरे अवसरों में मध्यस्थता का एक समय बिताना होता है जिसमें वे बनती हैं।

एक मनुष्य ने मुझे सीमाएँ (paga) बनाने के कायरोस के समय की एक दिलचस्प कहानी सुनाई। इस व्यक्ति को एक स्पष्ट स्वपन बार-बार दिखाई दे रहा था। यह उसकी विवाहित बेटी के मरने का था। उसे लगा यह प्रभु की ओर से चेतावनी है। स्वपन में उसे दिखाया नहीं गया था मृत्यु कैसे हुई है। परन्तु, उसे लगा शैतान की उसकी बेटी का जीवन लेने की योजना थी। वह उसे डराना नहीं चाहता था इसलिए उसने केवल अपने दामाद को बताया। दोनों ने उसकी सुरक्षा के लिए रोजाना प्रार्थना करना (paga) आरम्भ किया। वे उसके चारों ओर सुरक्षा की सीमाएँ बना रहे थे।

दिन में जब-जब उसे याद आता वह उसकी बेटी की जीवन लेने की शैतान की योजना को बाँधता। उस इस प्रकार प्रार्थना करता:

- "पिता, मैं अपनी बेटी को तेरे पास लाता हूँ।" (वह परमेश्वर के साथ एक मिलन (paga) बना रहा था।)
- "मैं माँगता हूँ तू उसे शैतान के किसी भी फँदे से बचा। आपने कहा है: आप हमें 'बहेलिए के जाल से' बचाएँगे (भजन 91:3)।" (यहाँ वह सुरक्षा की सीमाएँ बना रहा था।)
- "मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने यह प्रार्थना का बोझ मेरे ऊपर डाला है ताकि मैं यह मृत्यु का भार उससे ले लूँ (nasa)।" (वह दूसरे का भार या कमजोरी अपने ऊपर "डालने" को कह रहा था।)
- "शैतान, मैं तेरी यह योजना बाँधता हूँ। उसके विरुद्ध तेरे हथियार काम नहीं करेंगे, और तू उसका जीवन ले नहीं पाएगा।" (वह शत्रु से उसके दुष्ट उद्देश्यों को तोड़ने के लिए मिलन (paga) कर रहा था।)

- "मैं यह प्रार्थना यीशु के नाम में करता हूँ!" (यहाँ वह अपनी सारी प्रार्थनाएँ यीशु मसीह के समाप्त कार्य पर आधारित कर रहा था। वह यीशु का प्रतिनिधित्व कर रहा था। वह उसकी सेवा कर रहा था जिसे यीशु ने पहले ही पूरा किया था। वह यीशु की विजय लागू कर रहा था।)

लगभग एक महिने के बाद, जब से वह रोजाना प्रार्थना करने लगा था, उसकी बेटी को उसकी नौकरी में पदोन्नति मिली। पदोन्नति के साथ जीवन बीमा योजना भी मिली, जिसके लिए शारीरिक जाँच करनी थी। जाँच के दौरान. डाक्टर ने उसके लहू का नमूना लिया। वह अचानक बहुत भयभीत हो गया। उसने कहा, "महिला, तुम अपने भोजन में क्या कर रही थी? आपके लहू में पोटैशियम बिलकुल नहीं है। आपको तो मरा हुआ होना चाहिए! आपके जीवित होने का कोई भी उचित स्पष्टीकरण नहीं है।" पोटैशियम एक आवश्यक खनिज है। जब यह व्यक्ति के लहू में पर्याप्त मात्रा में नहीं होता तो, व्यक्ति अकसर ठीक होता है परन्तु अचानक मर जाता है। डाक्टर ने उसे तुरन्त अस्पताल पहुँचाया और उसे पोटैशियम देने लगा। निस्संदेह, वह जीवित रही। वह कई सप्ताहों से केवल दो प्रकार के भोजन की विचित्र पथ्य पर थी। उसके जीवित रहने का कोई उचित स्पष्टीकरण नहीं था। परन्तु हम तो आत्मिक स्पष्टीकरण जानते हैं: प्रार्थना के द्वारा सुरक्षा की एक सीमा (paga) बनाई गई थी।

परमप्रधान की छाया के तले: *बाहर रहो*!

कायरोस प्रार्थना का सम्भवतः सबसे आश्चर्यजनक उदाहरण मेरे जीवन में मेरी एक यात्रा के दौरान घटा था। मैं 45 व्यक्तियों के साथ एक जंगल में दूर-दराज के स्थान में सफर कर रहा था। हमारा उद्देश्य जंगल में नदी पर एक चिकित्सालय और आऊटरीच केन्द्र बनाना था। हमें दो इमारतें बनानी थीं, और साथ में पास के गाँव में प्रचार करना था। यह एक आश्चर्यजनक यात्रा थी। हम ने बन्दर और साँप का मांस खाया। मैं इस भोजन का निश्चित रूप से आदी था। हम ने बड़ी मकड़ियों को मारा। हम ने अपने कैम्प में नौ इंच के लम्बे बिच्छू और एक घातक मूँगा साँप को भी मारा। मुझ पर चींटियों में आक्रमण किया जिन्होंने उस इमारती लकड़ी में आश्रय लिया हुआ था जिस पर हम सोए थे। हम ने असुरक्षित, पुराने सेना के विमानों में सफर किया। हमारे विमान के उतरने से पहले मैदान से बकरियों को निकालना पड़ा था।

जंगल में जाने से पहले हम ने पहली रात शहर में बिताई थी। अगले दिन जंगले में पहुँचाए जाने के लिए हम महिनों पहले हवाई कम्पनी से प्रबंध किया हुआ था। हमारे हवाई अड्डे पर पहुँचने पर, हमें बताया गया कि हवाई कम्पनी ने उनकी योजना बदल दी है। उन्होंने हमें एक दिन बाद हमें ले जाने की योजना बना रखी थी। हमारे अगुवे को लगा कि हमारे लिए पहले की योजना के अनुसार जाना महत्त्वपूर्ण है। हम ने तीन घंटे तक प्रयास किया कि हवाई कम्पनी उनके पहले के समझौते का सम्मान करें।

हवाई कम्पनी के मैनेजन ने कहा, "नहीं, हम आपको कल ले जाएँगे।"

"परन्तु आपने एक महिना पहले हमें आज के दिन ले जाना स्वीकार किया था," हम ने तर्क किया।

"हमारे पास कोई विमानचालक नहीं है," उन्होंने कहा।

"किसी को खोजो", हम ने आग्रह किया।

"जल्दी क्या है? शहर का आनन्द लो," उन्होंने हमें प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

और यह तीन घंटे तक होता रहा। हम एक आफिस से दूसरे में जाते, एक अधिकारी के बाद दूसरे से मिलते। अन्त में, एक ने अपने हाथ खड़े कर दिए और कहा, "ठीक है, हम आपको अभी ले चलेंगे! फुर्ती से उस विमान में चढ़ जाओ!"

हम सब विमान की ओर दौड़े, और अपने बैग और औजार सामान के क्षेत्र में डाल दिए। इससे पहले वे अपना इरादा बदलते, हम वहाँ से चले जाना चाहते थे। अन्त में विमान हमे लेकर वहाँ से उड़ गया। उस रात, शहर में एक भयंकर भकम्प आया और 34 सेकन्डों में हजारों-लाखों लोगों को नष्ट कर दिया। उस समय तक हम तो 250 किलोमीटर दूर चले गए थे। यदि हम एक और रात शहर में रुक जाते (जैसा हवाई कम्पनी हमें कह रही थी) तो हमारे दल के कुछ लोग मारे जाते और दूसरे घायल हो जाते। हम यह निश्चय से कह सकते हैं क्योंकि जब हम वापस लौटे थे तो क्या देखा कि जिस इमारत में हम ठहरे हुए थे वहाँ बिस्तरों पर बड़े-बड़े शहतीर पड़े हुए थे!

अब मैं बताता हूँ कि इस कहानी में मध्यस्थता की प्रार्थना कैसे ठीक बैठती है। हमारी कलीसिया में एक महिला है जो एक मध्यस्थ है। उसने प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना करने का एक शक्तिशाली बोझ पाया था। यह हमारे सफर के दूसरे दिन था। तीन घंटे वह हमारे लिए तीव्र प्रार्थना कर रही थी। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कौन से तीन घंटे? हाँ - वही तीन घंटे जब हमारे अगुवे हवाई कम्पनी के अधिकारियों से बातचीत कर रहे थे। यदि हम एक और रात शहर में रह जाते तो हमारे जीवन बड़े खतरे में होते। हम तो नहीं जानते थे, परन्तु परमेश्वर जानता था। इस मध्यस्थ को भी पता नहीं था। उसे केवल इतना पता था कि किसी कारण उसे हमारे लिए प्रार्थना करनी है। वह सर्तक थी, जैसे इफिसियों 6:18 हमें बताता है, और उसने कायरोस का समय जाना था। मेरे मन में कोई भी संदेह नहीं है कि उसने उस सुरक्षा को बनाने में सहायता की थी जिसे हम ने अनुभव किया था।

गुप्त स्थान में एक जीवन है, परन्तु यह विश्वासियों के लिए अपने आप नहीं होता। हमें शत्रु से सुरक्षा की प्रतिज्ञा मिली हुई है। परन्तु, हमें उसमें एक निश्चित भूमिका निभानी होती है। प्रार्थना के द्वारा हम अपने और दूसरों के लिए सुरक्षा पाते हैं। मध्यस्थ इसे समझता है और कुछ भी संयोग पर नहीं छोड़ता। एक सच्चा मध्यस्थ नर्क की शक्तियों के देखने के लिए चिन्ह लगाता है: "परमप्रधान के छाए के तले, बाहर रहो!"

मनन के प्रश्न

1. क्या मसीहियों के लिए सब सुरक्षा अपने आप होती है? क्या सबकुछ जो हमारे साथ होता है परमेश्वर होने देता है? क्या हमारे कार्यों और प्रार्थनाओं का इसमें भाग है? समझाओ।
2. सुरक्षा से सम्बंधित प्रार्थना में स्थिर रहने के बारे में बताओ।
3. Chronos और kairos में अन्तर समझाओ। इसका मध्यस्थता से क्या सम्बंध है?
4. क्या आपने हाल में कोई "अतिक्रमण मना है" चिन्ह लगाया है?

अध्याय 7 – तितलियाँ, चुहियाँ, हाथी और चाँद

संयोग से एक घटना

मेरी पत्नी और मैं अपनी तीन दिन की छुट्टियों के अन्तिम दिन में थे। हम एक समुद्र किनारे रिसार्ट नगर में थे। दो दिन तक मैं लोगों को किनारे से "पैरा-जलयात्रा" करते देख रहा था। आप सोच रहे होंगे "पैरा-जलयात्रा" क्या होती है। यह एक क्रीड़ा है जिसमें लोग खुले पैराशूट पहनकर समुद्र-तट पर खड़े होते हैं। वे रस्सियों को पकड़े होते हैं जो पानी में खड़ी नावों पर लगी होती हैं। फिर नावें उन्हें पानी में खींचती हैं। उनके पैराशूट लहराने लगते हैं और उन्हें हवा में खींच लेते हैं। वे सुन्दर पानी के ऊपर उड़ते हैं। मैं लोगों को इस उत्तेजक क्रीड़ा को करते देख कर आनन्द ले रहा था। वे बिना प्रयास के 5 से 10 मिनट तक हवा में उड़ते रहते थे। वे पक्षियों के समान उड़ते नज़र आते थे। फिर वे वापस तट पर आ जाते थे। मैं अचंभा करता कि वे कितनी कोमलता और सुरक्षा के साथ जमीन पर उतरते थे। वे तो गीले भी नहीं होते थे!

मेरी पत्नी भी जो ये पैरा-जलयात्री कर रहे थे उस पर विस्मय प्रकट कर रही थी। उसने मुझे इसका प्रयत्न करने को प्रोत्साहित भी किया। मैं तो असल में डर रहा था। परन्तु, मेरे घमण्ड ने मुझे उसके विचार के अनुसार करने के लिए उकसाया। मैं ने पैरा-जलयात्रा करने का पैसला किया। मैं ने मन प्रभु को पुकारा, "हे, स्वर्गीय पिता, मुझे इस में से निकालिए!" मैं ने उसका उत्तर अपने हृदय में सुना, "तुम अपने आप को इस में से निकालो। तुम अपने आपको इस में से निकालो।"

अपने जीवन में ऐसे समय होते हैं जब अपने आप को दीन करना और स्वीकार करना कि मैं डर रहा हूँ अच्छा होता है। आपको नर घमण्ड के अपने पाप से मन फिराने की आवश्यकता होती है। परन्तु, मैं ने उसके बदले अपना डर छिपाने का प्रयास किया। परमेश्वर तो न्याय भी करता है, और मजाक भी। आपको क्या लगता है वह मेरे घमण्डी रवैये को रहने देने वाला था? यह हमारी छुट्टियों की आन्तिम सुबह थी। हम लगभग एक घंटे में निकलने वाले थे। मैं अपने बाहर के कपड़े, जूते और सबकुछ पहने हुए था। मैं ने अपनी घड़ी भी पहनी हुई थी। आखिरकार, आप तो पानी को छूने वाले भी नहीं हैं, है ना? मुझे पता होना चाहिए था यह पैरा-जलयात्रा अकसर योजना के अनुसार नहीं होती है। मेरी उड़ान तो सामान्य ही थी। सेकन्डों में, मैं 200 फीट की ऊँचाई पर, तट के दृष्य का आनन्द ले रहा था। मैं उस दिन का पहला नाविक था। इस कारण से नाव मुझे तट के आसपास ही खींच रही थी। मैं तट से लगभग 50 यार्ड ही दूर था। नाव के लोग मुझे उनके दिन भर के धंधे के लिए दिखाना चाहते थे। मैं असल में इसका आनन्द लेने लगा था। तट पर के लोग मुझे आसानी से देख सकते थे। वे मुझे देख हाथ हिलाने और ताली बजाने लगे। मैं सबके आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। निस्संदेह, मैं ने भी लापरवाही के साथ हाथ हिलाया। मैं अधिक "प्रदर्शन" नहीं करना चाहता था।

अचानक, मुझे एक अजीब अनुभव होने लगा कि पानी निकट जा रहा है। एक सेकन्ड के बाद, मैं जान गया कि यह सच में निकट आ रहा है। और फिर, मैं एक बड़े छपाक के साथ पानी पर उतरा। "शूरवीर कैसे गिर पड़े हैं!" (2 शमूएल 1:19)। "यह असम्भव है," मैं ने सोचा। "यह एक स्वपन है - एक बुरा स्वपन।" मुझे समझने में अधिक समय नहीं लगा कि यह एक स्वपन नहीं था। मैं तैर कर नाव तक आया और हम वापस आरम्भ स्थान पर पहुँचे। जैसे मैं तट तक जाने लगा तो मैं ने खुश और विश्वस्त दिखने की बहुत प्रयास किया। मेरे कपड़े, घड़ी भीग चुके थे। निस्संदेह, मेरा पत्नी जानती थी मैं भीतर कैसा अनुभव कर रहा था।

मैं अनुमान लगा सकता हूँ आप इस समय क्या सोच रहे हैं। आप सोच रहे होंगे कि इस कहानी का मध्यस्थता से भला क्या सम्बंध हो सकता है। असल में, इस कहानी में paga का एक दूसरा अर्थ इस्तेमाल किया गया है। यहाँ पागा का अर्थ है: "उतरना"। विचार

है "किसी स्थान पर उतरना, या पहुँचना।" इसमें यह विचार भी है कि यह उतरना संयोग से होता है। इसलिए हम "संयोग से होना या घटना" शब्द भी उपयोग कर सकते हैं।

हमारा सहायक

यह अध्याय हमारे सहायक, पवित्र आत्मा के विषय में है। मध्यस्थता की सबसे बड़ी एक कुंजी पवित्र आत्मा के साथ मिलकर काम करना सीखने की है। यह उसे हमारे भीतर वह सब होने देना है जिसके लिए उसे भेजा गया था।

यीशु ने उसे यूहन्ना 14:26 में हमारा सहायक कहा था, "परन्तु, सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" यूनानी शब्द "parakletos" का अर्थ है: "सहायता या सहारा देने के लिए किसी को बगल में बुलाना।" कभी-कभी इसे मध्यस्थ भी अनुवाद किया जा सकता है। मैं पवित्र आत्मा पर "सहायक" और "मध्यस्थ" के रूप में ध्यान तेन्द्रित करना चाहता हूँ।

हम रोमियों 8:26-28 में देखते हैं कि वह हमारे प्रार्थना के जीवनों में हमारी सहायता करना चाहता है: "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है; और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है। हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

अँगरेजी भाषा की बाइबल में आय. 28 "and (और)" के साथ आरम्भ होती है। यह शब्द आय. 28 को आय. 26 और 27 के साथ जोड़ता है। "और" शब्द आय. 28 को जो आय. 26 और 27 में कहा गया है उस पर निर्भर बनाता है। दूसरे शब्द में, सब बातें मसीहियों या विश्वासियों के लिए तब तक मिलकर भलाई उत्पन्न नहीं करती हैं जब तक कि कुछ शर्तें पूरी न की जाएँ। सब बातें हमारे लिए भलाई उत्पन्न कर सकती हैं। यह परमेश्वर की इच्छा है कि सब बातें मिलकर हमारे लिए भलाई उत्पन्न करें, यह अपने आप नहीं होता। हमें कुछ करना होता है। हम तब कुछ कर पाते हैं जब हम पवित्र आत्मा को हमारे द्वारा प्रार्थना करने देते हैं (रोमियों 8:26-27 देखो)।

मैं नहीं मानता कि पवित्र आत्मा की मध्यस्थता जिसकी इन आयतों में बात की गई है केवल "अन्य भाषाओं" में प्रार्थना करने के बारे में है। परन्तु, मैं विश्वास करता हूँ कि इसमें यह वरदान सम्मिलित होना चाहिए। "अन्य भाषाओं" में प्रार्थना करने से पवित्र आत्मा को हमारे द्वारा प्रार्थना करने को मिलता है। मैं इसे यहाँ प्रमाणित करने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। और, मैं यह भी नहीं कह रहा कि जो अन्य भाषाओं का वरदान उपयोग नहीं करते उनकी प्रार्थना में दूसरे दर्जे के हैं। यदि आप इस प्रकार प्रार्थना नहीं करते हो तो मेरी पूरी इच्छा है कि मैं आपको नाराज नहीं करूँ। परन्तु, जो मुझे लगता है प्रभु ने रोमियों 8 के इन वचनों से सिखाया है मैं आपको बताना चाहता हूँ। यहाँ से आगे मैं "आत्मा में प्रार्थना करना" वाक्यांश ही उपयोग करूँगा। परन्तु, अकसर इसका अर्थ अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना होगा।

रोमियों 8 का अनुच्छेद कहता है कि पवित्र आत्मा हमारी "दुर्बलता" में हमारी सहायता करना चाहता है। यूनानी शब्द "astheneia" का अर्थ है: "शक्ति या योग्यता के बिना।" क्या आपने अपने प्रार्थना के जीवन में परिणाम पाने की सम्पूर्ण योग्यता की कमी अनुभव की है? ऐसा मेरे साथ अनेक बार हुआ है? प्रभु रोमियों 8:26 में कहता है कि हम परिणाम नहीं पा सकते हैं क्योंकि "हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए।" "चाहिए" शब्द यहाँ बड़े महत्त्व का है। यूनानी भाषा में, यह एक कानूनी शब्द है। इसका अर्थ है, "कि जो एक कानूनी मुकदमे में आवश्यक, सही या उचित है।" यह है जो कानून कहता है एक व्यक्ति को करना **चाहिए**।

लूका 18:1 हमें बताता है, "नित्य प्रार्थना करना और हियाब न छोड़ना" चाहिए। आयत का अर्थ यह नहीं है, "प्रार्थना करना एक अच्छा विचार है।" यह कह रही है, "हमारे लिए प्रार्थना करना अत्यन्त आवश्यक है।" यीशु ने यह शब्द उस समय उपयोग किया था जब उसने दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा से पीड़ित कुबड़ी स्त्री की बात की थी: "तो क्या उचित न था कि यह स्त्री जो अब्राहम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?" (लूका 13:16)। यीशु के पास एक अच्छा कारण था कि यह स्त्री उसकी बीमारी से छुड़ाई जाती। क्योंकि वह "अब्राहम की बेटी" थी। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की अब्राहम के साथ वाचा के अनुसार, उसे छूटने का अधिकार था।

यीशु के पास उसे वह देने की योग्यता थी जिसका उसे पाने का कानूनी या वाचा का अधिकार था। वाचा के कारण यह आवश्यक था कि वह अब्राहम की इस बेटी को दुर्बलता की आत्मा से छुड़ाता। अब जबकि हम "चाहिए" शब्द की ताकत को जानते हैं, तो आओ हम इसे वापस रोमियों 8:26 में डाल दें। प्रभु कहता है कि हमें सदा पता नहीं होता कि एक निश्चित स्थिति में क्या होने वाला है। हमें सदा पता नहीं होता कि क्या आवश्यक या सही है। कभी-कभी मैं ने किसी के लिए के लिए प्रार्थना करने की पवित्र

आत्मा की अगुआई अनुभव की है। परन्तु उस समय मेरे जानने का कोई तरीका नहीं होता है कि उन्हें प्रार्थना क्यों चाहिए। कभी-कभी मध्यस्थों को प्रभु प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है। परन्तु, उन्हें पता नहीं होता वे किस लिए प्रार्थना कर रहे हैं। उन्हें पता नहीं होता वे किस के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। वे केवल प्रार्थना करने का एक बोझ अनुभव करते हैं। इन समयों में हमें क्या करना चाहिए? यह समय है जब पवित्र आत्मा हमारी सहायता करना चाहता है। वह प्रार्थना करने में हमारी अगुआई करेगा, और सम्भवतः स्थिति के विषय में कुछ चीजें भी हम पर प्रकट करेगा। कभी-कभी वह हमें कुछ पवित्रशास्त्र याद कराएगा ताकि हम उनसे प्रार्थना कर सकें। वह हमारी प्रार्थनाओं को सामर्थ्य देकर निश्चय ही हमारी सहायता करेगा। और जैसे हम आत्मा में प्रार्थना करेंगे, तो वह हमारे द्वारा प्रार्थना करके वास्तव में हमारी सहायता करेगा।

सही समय पर सही स्थान

यह हमें पागा और उस परिभाषा की ओर लाता है जिसका पहले जिक्र किया गया था: "उतरना", या "संयोग से उतरना।" वह स्थान जहाँ यह शब्द इस प्रकार से उपयोग किया गया है उत्पत्ति 28:10-17 है। इस अनुच्छेद में याकूब अपने भाई एसाव से धोखे से उसका पहिलौठे का अधिकार लेकर उससे भाग रहा था। सारा दिन चलने के बाद, याकूब को रात बिताने के लिए एक स्थान की आवश्कता थी, "क्योंकि सूर्य अस्त हो गया था।" आय. 11 कहती है कि उसने किसी स्थान में पहुँचकर रात बिताने का विचार किया...और उसी स्थान में सो गया। ध्यान दीजिए कि याकूब ने पहले से तय नहीं किया था कि वह वहाँ रात बिताएगा। उसने उस स्थान को पहले से नहीं चुना था। परन्तु, वह संयोग से वहाँ पहुँचा था। उसे वहाँ रुकना पड़ा था क्योंकि अंधेरा हो चला था। परन्तु वह स्थान एक विशेष स्थान निकला जिसका नाम बेतेल था। इब्रानी शब्द बेतेल का अर्थ है: "परमेश्वर का भवन।" याकूब ने वास्तव में उसे "स्वर्ग का फाटक" कहा था।

जिस स्थान को याकूब ने संयोग से चुना था, वास्तव में प्रभु का स्थान था। इसे परमेश्वर ने उसके लिए चुना था। इसी स्थान पर याकूब की परमेश्वर के साथ एक सामर्थी, जीवन-परिवर्तन-करनेवाली मुलाकात हुई थी। इसी स्थान पर उसने स्वर्ग से स्वर्गदूतों को एक सीढ़ी पर उतरते और चढ़ते देखा था। इसी स्थान पर परमेश्वर ने याकूब को भी वही वाचा दी जो उसने अब्राहम को दी थी। परमेश्वर ने याकूब को बताया कि वह उसके वंश के द्वारा संसार का उद्धार करेगा। परमेश्वर ने याकूब से महान आशीषों की प्रतिज्ञाएँ भी कीं। उसने उसकी रक्षा करने और उसे उसके देश सुरक्षित लौटा लाने की भी प्रतिज्ञा की। संक्षेप में, यह वह स्थान था जहाँ पर याकूब का सारा भविष्य बताया गया था। यहीं पर उसकी सेवा ने आकार लिया था।

यह एक अच्छी कहानी है परन्तु आप सोच रहे होंगे कि इसका मध्यस्थता से क्या सम्बंध है। और इसका रोमियों 8:26-28 से क्या सम्बंध है? कभी-कभी जब हम मध्यस्थता करते हैं तो हम याकूब के समान होते हैं। वह इस स्थान पर अपने तर्क या समझ के द्वारा नहीं आया था। हम भी अपनी प्रार्थनाओं में अपनी समझ द्वारा अगुआई नहीं पा सकते हैं। इसी कारण से, हम परिणाम लाने की अपनी योग्यता में कमज़ोर अनुभव करते हैं। कभी-कभी लगता है कि हम चाँद पर निशाना लगा रहे हैं परन्तु चूक रहे हैं। ऐसा लगता है कि हमें स्थिति पर "संयोग से" ही "उतरना" होगा। यह ठीक है। "उतरना" पागा शब्द का एक प्रमुख अर्थ है। जो हमारे लिए संयोग लगता है हमारे सहायक, पवित्र आत्मा के लिए संयोग नहीं है। असल में, पागा का अर्थ "चाँद" भी होता है। चाँद शब्द लक्ष्य के बीच के स्थान के लिए उपयोग किया जाता है। यह वह स्थान है जहाँ जब हम तीर फेंकते या गोली चलाते हैं तो निशाना लगना चाहिए। लोग इस्राएल में शब्द को आज भी इसी प्रकार उपयोग करते हैं। तो - अपने आँखें बंद करो और गोली चलाओ! आप पवित्र आत्मा को अपने द्वारा प्रार्थना करने दे सकते हो। पवित्र आत्मा को प्रार्थनाओं को उसी प्रकार मार्गदर्शन करने दो जिस प्रकार उसने याकूब की सही समय पर सही स्थान की ओर अगुआई की थी।

यदि हम ऐसा करेंगे तो आत्मा हमारी प्रार्थना को सही व्यक्ति या स्थान पर उतारेगा (पागा)। हमारी प्रार्थनाएं सही तरीके से, सही समय पर उतरेंगी। वे स्थितियों में परमेश्वर की इच्छा पूरी करेंगी। और यह अच्छा होगा।

- परमेश्वर के साथ मिलन होंगे!
- स्वर्ग के द्वार खुलेंगे!
- भविष्य की घटनाएं लिखी जाएंगी!
- इतिहास बनाया जाएगा!

क्या आपको लगता है यह अधिक नाटकीय है? तब तो आप परमेश्वर को अच्छी तरह नहीं जानते। या सम्भवतः आप विश्वास नहीं करते कि हम पवित्र आत्मा की चमत्कार करनेवाली सामर्थ्य को हमारी प्रार्थनाओं में बुला सकते हैं। एक कारण कि हम अधिक चमत्कार नहीं देखते क्योंकि हम अधिक चमत्कार की अपेक्षा नहीं करते। पुराना और नया नियम दोनों हमें बहुत से चमत्कारों के बारे में बताते हैं। परन्तु, चमत्कार तो परमेश्वर से आते हैं। अधिक चमत्कार देखने का तरीका पवित्र आत्मा को अनेक स्थितियों में लाना है। आत्मा में प्रार्थना करना यह सम्भव करता है।

तितली अभिषेक

क्या आपने तितली को एक स्थान से दूसरे स्थान में उड़ते देखा है? यह यहाँ इधर-उधर, ऊपर-नीचे फड़फड़ाती रहती है। इसे कुछ पता नहीं होता यह कहाँ जा रही है। कभी-कभी जब मैं आत्मा में प्रार्थना करता हूँ तो तीतली के सामन अनुभव करता हूँ। जब मैं आत्मा में प्रार्थना करने लगता हूँ तो मुझे पता नहीं होता मैं क्या कह रहा हूँ। कभी-कभी मेरा मन इधर और उधर भटकता है। मुझे लगता है जैसा मैं "तितली अभिषेक" में काम कर रहा हूँ। मैं कहाँ जा रहा हूँ? मैं क्या कर रहा हूँ? क्या मैं सही स्थान पर, सही व्यक्ति पर उतरूँगा? क्या इस प्रार्थना से कुछ हो रहा है? परन्तु वैसे ही जैसे तितली को पता होता है वह कहाँ जा रही है, पवित्र आत्मा मेरी प्रार्थनाओं का संचालन करता है! मेरी प्रार्थनाएँ सही-सही "उतरेंगी"। इस सत्य की एक कहानी मैं ने एक सेवक से सुनी थी। वह एक छोटी कलीसिया में सेवा कर रहा था। यह उसका वहाँ पहला समय था। वह कलीसिया में किसी को ठीक से नहीं जानता था। उसे अपना संदेश देते पंद्रह मिनट ही हुए थे, कि उसने अपने भीतर पवित्र आत्मा की आवाज सुनीः "अपना संदेश रोको और आत्मा में प्रार्थना करना आरम्भ करो।" आप कल्पना कर सकते हैं उसे कैसा लगा होगा, विशेषकर जब वह इन लोगों को जानता भी नहीं था। परन्तु, पवित्र आत्मा की अगुआई इतनी शक्तिशाली थी कि उसे आज्ञापालन करना पड़ा। "आपको मुझे क्षमा करना होगा," उसने कहा, "परन्तु प्रभु ने मुझे मेरा संदेश रोकने और आत्मा में प्रार्थना करने की आज्ञा दी है।" वह मंच पर इधर-उधर टहलने लगा। वह ऊँचे स्वर से आत्मा में प्रार्थना कर रहा था। पंद्रह मिनट बीत गए और वह अभी भी आगे-पीछे चल रहा था और ऊँचे स्वर से आत्मा में प्रार्थना कर रहा था। मुझे आपके विषय में तो पता नहीं, परन्तु मैं तो अब तक काफी घबराहट अनुभव कर रहा होता। मैं तो मंच में एक फर्श-दरवाजे से गायब हो जाना चाहता। इस सेवक को तो कुछ भी विचार नहीं था कि यह सब क्या हो रहा था। उसे निश्चय ही पता नहीं था कि उसे कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। उसे असल में "तितली अभिषेक" की आवश्यकता थी ताकि उसकी प्रार्थनाएँ "संयोग से उतरेंगी"। बीस मिनट हो गए। लोग बैठे उसे प्रार्थना करते सुन रहे थे। अचानक पीछे एक महिला चिल्लाने लगी! वह उछल कर खड़ी हो गई और दौड़ कर आगे को आई। "क्या हुआ!" सेवक ने पूछा। "मेरी बेटी अफ्रीका में एक सेवक है," महिला ने कहा। "वह जहाँ है वहाँ पहुँचने तक तीन सप्ताह लगते हैं। आपको गाड़ी से, फिर नाव से, एक पशु की सवारी और फिर 21 दिन चल कर जाना पड़ता है।" "मेरे पति और मुझे अभी अभी एक तार मिला है कि वह बीमार है। उसे एक घातक रोग लगा है जो तीन दिन में काम करता है। यदि वह शहर में होती तो उसका इलाज किया जा सकता था, परन्तु वह तो यहाँ समय पर नहीं पहुँच सकेगी। वह तो सम्भवतः तीन दिन में मर जाएगी।" "पिछली बार जब मेरी बेटी घर आई थी," महिला ने जारी रखा, "उसने मुझे जिन लोगों में वह काम करती है उनकी कुछ भाषा सिखाई थी। आपने अभी उनकी भाषा में बोला है। तुम खुश हो सकती हो, तुम्हारी बेटी चंगी हो गई है! तुम खुश हो सकती है, तुम्हारी बेटी चंगी हो गई है!"

और वह हो गई थी!

अब यह पागा है! यह सही व्यक्ति पर, सही समय पर, सही तरीके से उतरा था। यह पवित्र आत्मा से सहायता है। यह "तितली अभिषेक" है। मुझे निश्चय नहीं कि बीस मिनट क्यों लगे। परन्तु, मेरा विश्वास है कि दृढ़ रहना (लगातार प्रार्थना करते रहना) अकसर आवश्यक होता है। हम दृढ़ता के विषय में आगे के एक अध्याय में सीखेंगे।

"के विरुद्ध साथ मिलकर पकड़ना"

एक दूसरा बहुत अच्छा तरीका जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है "सहायता" शब्द में छिपा हुआ है। "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है" (रोमियों 8:26)। "सहायता" के लिए यूनानी शब्द है "sunantilambanomai"। यह तीन शब्दों से बना एक लम्बा शब्द है: "sun" का अर्थ है: "साथ मिलकर"; "anti" का अर्थ है: "के विरुद्ध"; "lambano" का अर्थ है: "पकड़ना"। उन्हें इकट्ठे करने पर, शब्द का अक्षरशः अर्थ होता है: "के विरुद्ध साथ मिलकर पकड़ना।"

कभी-कभी जब हम प्रार्थना करते हैं हमें परिणाम नहीं मिलते। इन मामलों में पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं का ठीक-ठीक संचालन करना चाहता है। वह चाहता है वे सही-सही "उतरें"। आत्मा हमारे साथ मिलकर स्थिति को पकड़ना चाहता है। वह हमारी शक्ति में अपनी जोड़ना चाहता है। "न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है" (जकर्याह 4:6)। केवल उसके सामर्थ्य के द्वारा पर्वत सरकेगा। 2 कुरिन्थियों 12:9 कहता है कि परमेश्वर का सामर्थ्य हमारी निर्बलताओं में सिद्ध होती है। आत्मा में प्रार्थना करना सम्भवतः उसकी सामर्थ्य का हमारी निर्बलताओं में सिद्ध होने का सबसे बड़ा उदाहरण है। प्रार्थना में हमारी निर्बलताएँ परिणाम उत्पन्न करने की हमारी अयोग्यता है। जब हमें अपनी निर्बलताओं का पता चलेगा, तब हम पवित्र आत्मा की ओर सहायता के लिए देखेंगे।

यदि हम पवित्र आत्मा को अपने द्वारा प्रार्थना करने देंगे, तो वह हमारे "साथ मिलकर पकड़ेगा"। हमें केवल विश्वास करना है कि जब पवित्र आत्मा पकड़ता है, तब कुछ तो होने वाला है! जैसे हम ने कहा है, "सहायता" का अक्षरशः अर्थ है "के विरुद्ध साथ मिलकर पकड़ना।" यह दिखाता है कि आत्मा हमारे साथ, न कि हमारे बजाय, कार्य करता है। पवित्र आत्मा **हमारे** भीतर हमारे कुछ किए बिना प्रार्थना नहीं करता है। नहीं; **हम** आत्मा में प्रार्थना करते हैं, जो उसे वास्तव में हमारे **द्वारा** प्रार्थना करने देना है।

कई वर्ष पहले मेरी पत्नी के पेट में दर्द होने लगा। वर्ष भर में दर्द भर बढ़ गया। अन्त में, वह एक डाक्टर के पास गई। उसने उसके अन्दर एक अंडे के आकार की एक रसौली पाई। उसने हमें बताया कि उसे निकालने के लिए शल्यचिकित्सा की आवश्यकता होगी। यह डाक्टर मसीही विश्वासी था और आत्मिक सिद्धान्त समझता था। मैं ने उसे कहा, "डाक्टर, यदि आप हमें कुछ समय देंगे, तो मुझे लगता है कि हम रसौली को प्रार्थना द्वारा निकाल सकते हैं।" वह काफी विश्वस्त था कि रसौती से जीवन को कोई खतरा नहीं है। इसलिए उसने उत्तर दिया, "मैं आपको दो महिने दूँगा। यदि तब तक कुछ नहीं होता है तब हम शल्यचिकित्सा करेंगे।"

"यह ठीक है," वह सहमत हुआ। हम ने उसके लिए बाइबल के हर तरीके से जिसकी हमें जानकारी थी प्रार्थना की। हम ने उस पर हाथ रखे। हम ने उस पर तेल मला। हम ने पवित्रशास्त्र बोले। हम ने "बाँधने", "खोलने" और "निकालने" की प्रार्थनाएँ कीं। पर उसकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। मुझे समझ आया कि हमें इस चंगाई को नियमित प्रार्थना के द्वारा, और "...विश्वास की अच्छी कुश्ती" लड़ते हुए पाना होगा- विश्वास द्वारा चंगाई को पाना होगा (1 तीमुतियुस 6:12)। <u>यह, प्रसंगवश, वह तरीका है जिसके द्वारा अधिकाँश उत्तर आते हैं। उत्तर तुरन्त चमत्कार के रूप में नहीं आते हैं, परन्तु विश्वास और धैर्य की लड़ाई लड़ते हुए आते हैं।</u>

मुझे लगा कि मुझे मेरी पत्नी के लिए एक दिन में एक घंटा प्रार्थना में बिताना होगा। मैं प्रार्थना करना आरम्भ किया। मैं प्रार्थना के समय के आरम्भ में पिता को बताता कि मैं उसके पास क्यों आ रहा हूँ। फिर मैं उस वचन के विषय में सोचता जिसके आधार पर मैं अपनी विनती कर रहा था। मैं उन बचनों को बोलता, पिता का उसके वचन के लिए धन्यवाद करता और यीशु का चंगाई उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद देता। इसमें अकसर पाँच से छः मिनट ही लगते थे। तब बाकी के समय मैं आत्मा में प्रार्थना करता। मैं ने एक महिने तक हर दिन एक घंटा प्रार्थना की। कोई कह सकता है कि किसी चीज के लिए इतनी देर तक प्रार्थना करना अनुचित है। दूसरे कहेंगे कि परमेश्वर किसी को चंगा करने के लिए इतना समय नहीं लेगा। मैं केवल आपको वह बता रहा हूँ जो मेरे लिए काम किया। <u>मैं ने क्या पता लगाया है कि परमेश्वर के पास काम करने का एक ही तरीका नहीं है। वह उन्हीं चीजों को उसी तरीके से नहीं करता है। वह सदा नए तरीके से रचनात्मक नई चीजें करता है।</u> **<u>हमारे लिए कुंजी सदा आज्ञापालन है।</u>**

उसके लिए प्रार्थना करने के कुछ हफ्तों के बाद, एक दिन जब मैं प्रार्थना कर रहा था प्रभु ने मुझे एक तस्वीर दिखाई। मैं अपने आपको रसौली को हाथ में लिए, और उसे दबाते हुए देख रहा था। पवित्र आत्मा मुझे एक अदभुत सत्य सिखा रहा था। निस्संदेह, मैं जानता था कि मैं रसौली पर अपनी हाथ तो नहीं टिका सकता था। परन्तु, मैं पवित्र आत्मा को अपने द्वारा प्रार्थना करने दे रहा था। वह मुझे दिखा रहा था कि वह रसौली पर "उतर रहा" और उस "के विरुद्ध मेरे साथ मिलकर उसे पकड़ रहा" है। प्रकट है कि यह उसका सामर्थ्य था जो अन्तर ला रहा था। एक विशाल परमेश्वर के सामर्थ्य की तुलना में हमारे प्रयास तो बहुत ही छोटे हैं!

यह मुझे चुहिया और हाथी की कहानी याद दिलाता है जो गहरे मित्र थे। वे सदा साथ-साथ रहते थे। चुहिया हाथी की पीठ पर चढ़ कर जाती थी। एक दिन उन्होंने एक लकड़ी का पुल पार किया। यह उनके वजन के नीचे हिलने, काँपने और झूलने लगा। आखिरकार वे पार हो गए। चुहिया ने हाथी को कहा, "वाह! हम ने उस पुल को हिला दिया, है ना?"

इससे मुझे कुछ कहानियाँ याद आ रही हैं जो कुछ कलीसिया की सभाओं में क्या हुआ था उनके विषय में हैं। उन कहानियों से पता चलता है, आप सोचेंगे कि परमेश्वर चुहिया था और हम हाथी थे। यही कारण है कि हम "काफी पुल हिला नहीं सक रहे हैं!"

अपने हाथों से रसौली को दबाते देखने के बाद, मैं ने अपनी पत्नी से पूछा कि क्या उसकी स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ है। "हाँ, दर्द कम हो रहा है," उसने बताया। डाक्टर की प्रतिक्रिया थी, "यदि दर्द कम हो रहा है, तो रसौली सिकुड़ रही है। वह करते रहो जो आप कर रहे हो।" मैं ने निश्चित करने का भरपूर प्रयास किया कि मैं खुद अपने मन में इन तस्वीरों को नहीं बना रहा हूँ। परन्तु, दो बार और पवित्र आत्मा ने मुझे मेरे हाथों को रसौली को दबाते दिखाया। हर बार रसौली छोटी थी।

मैं एक महिने तक प्रार्थना कर रहा था जब उसने मुझे तीसरी और अन्तिम बार दिखाया। तस्वीर में रसौली लगभग चौथाई आकार की थी। जैसे मैं ने प्रार्थना की यह मेरे हाथ में से गायब हो गई। मैं जान गया प्रभु मुझे दिखा रहा था कि काम हो गया है। हालाँकि मेरी पत्नी ने कहा कि थोड़ा सा दर्द अभी भी है, परन्तु मैं इसके विषय में और अधिक प्रार्थना नहीं कर पा रहा था। मैं जानता था काम हो गया है।

तीन दिन के बाद उसने बताया कि सारा दर्द चला गया है। अगले चिकित्सिक जाँच ने प्रमाणित किया जिसे मैं पहले ही अपने हृदय में जानता था - रसौली नहीं है!

आप जानते हैं क्या हुआ, हैं ना? पागा!

- एक "के विरुद्ध साथ मिलकर पकड़ा" हुआ।
- एक "उतरना" हुआ।
- एक "उठाना" और "ले जाना" हुआ।
- एक "मिलन" हुआ।
- एक "लागू करना" हुआ।

● एक "दोबारा प्रस्तुत करना" हुआ।
● मध्यस्थता हुई! और यह आपके द्वारा हो सकता है!

एक सबसे महत्त्वपूर्ण चीज मैं आपको बताना चाहता हूँ - परमेश्वर आपको उपयोग करना चाहता है। आपको एक पास्टर या भविष्यद्वक्ता होना अवश्य नहीं। आपको सेवा में प्रसिद्ध होना अवश्य नहीं। आपको विदेशी भाषाएँ जानना अवश्य नहीं। आपको केवल यीशु मसीह में विश्वासी होना है - उसका एक चुना हुआ प्रतिनिधि - जिसे नई वाचा की आशीषों की सेवा करने को बुलाया हुआ है - एक मसीही।

पिता परमेश्वर आपके द्वारा यीशु का काम दिखाना चाहता है। पवित्र आत्मा आपकी सहायता करना चाहता है। बेतेल जैसे याकूब के स्थान खोजे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इतिहास लिखे जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भविष्य बनाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपने ज्ञान की कमी से डरो मत। चिन्ता मत करो कि आप नहीं जानते "सही या उचित" क्या है। अपकी कमज़ोरियाँ आपके कार्यों को रोके नहीं।

उठो! उससे बेहतर, अपने सहायक, पवित्र आत्मा को अपने भीतर उठने दो! मिलकर, आप किसी भी "पुल हो हिला सकते हो!" केवल इतना हो कि आपको पता हो चुहिया कौन है।

मनन के लिए प्रश्न

1. क्या आप उत्पत्ति 28:10-17 और रोमियों 8:26, 27 में सम्बंध को समझा सकते हो। पागा, "तितली अभिषेक" और आत्मा में प्रार्थना इन वचनों से कैसे सम्बंधित हैं?
2. पवित्र आत्मा हमें हमारी कमज़ोरियों में सहायता करने के लिए क्या करता है?
3. ऐसी स्थितियों के बारे में सोचो जहाँ आपको पता नहीं प्रार्थना कैसे करनी है, जैसे की जानी चाहिए। पवित्र आत्मा को आपकी सहायता करने देने का फैसला करो। एक समय निश्चित करो जब आप उसे ऐसा करने देने का अवसर दोगे।

अध्याय 8 – अलौकिक जन्म

क्या बाइबल हमें उद्धार के लिए प्रार्थना करने को कहती है?

एक स्वाभाविक जन्म होता है - "शरीर से जन्मा" - और एक आत्मिक जन्म है - "आत्मा से जन्मा।" आप यूहन्ना 3 में पढ़ते हो कि यीशु कैसे इन दोनों की तुलना करता है। "नए सिरे से जन्म" लेने के बारे में मेरे शब्द हैं "अलौकिक जन्म।" यह अध्याय इसी के बारे में है।

मैं ने वर्षों से खोए हुओं के लिए प्रार्थना की है कि वे आत्मा से नया जन्म पाएँगे। खोए हुओं के लिए प्रार्थना में मेरी सफलता की दर कम है। और वैसा ही उनकी भी है जिन्हें मैं जानता हूँ। इसलिए मैं ने सोचा मैं बाइबल में देखता हूँ वह इस विषय में क्या कहती है। कुछ अधिक नहीं! बाइबल में कहीं भी लिखा नहीं है कि परमेश्वर से किसी के उद्धार के लिए माँगा जाए। इसने मुझे उलझन में डाला दिया। कैसे हो सकता है कि इसनी महत्त्वपूर्ण बात के लिए इतना कम लिखा गया हो?

मुझे एक वचन अवश्य मिला, "मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए...दे दूँगा" (भजन 2:8)। मैं जानता था कि यह पुराने नियम की भविष्यसूचक आयत है। इसमें पिता यीशु से कहता है कि वह पृथ्वीवालों की उससे माँग करे। मैं ने पता लगाया कि मसीह ने इसे पहले ही कर दिया है, और सम्भवतः पिता ने "हाँ" भी कहा है। मैं ने पाया कि हमें फसल में भेजने के लिए मजदूरों की माँग करनी है (मत्ती 9:38)। परन्तु यह पिता से किसी का उद्धार करने को कहने की बात नहीं है। यह मजदूरों की माँग करना है। मुझे प्रसव-पीड़ा होने के विषय में कुछ वचन भी मिले।

प्रसव-पीड़ाः यह क्या है?

प्रसव-पीड़ा - कुछ भी हो, यह क्या है? यह क्या करता है? क्या यह प्रार्थना की वैध प्रकार है? मैं सोचने लगा।

क्या ऐसी कोई प्रार्थना है जो नया जन्म लाती है? मैं अब विश्वास करता हूँ कि है। परन्तु, इसे समझा पाना सरल नहीं। एक मनुष्य आत्मिक जीवन उत्पन्न करने में कैसे भाग ले सकता है? क्या यह स्वाभाविक प्रसव-पीड़ा के समान है? इसका कराहने, रोने और घोर परिश्रम से क्या सम्बंध है?

मसीह की देह का एक भाग सम्भवतः पहले ही जानता है प्रसव-पीड़ा क्या है। दूसरे भाग ने सम्भवतः इसके विषय में इतना सुना है कि वे इसके विषय में अधिक जानना नहीं चाहते। एक भाग हो सकता है जो इसके विषय में कुछ नहीं जानते। मैं तीनों भागों से कहता हूँ: "कृपया खुले मन से पढ़ते जाइए।"

प्रार्थना जो अति तीव्रता तक पहुँचती है "प्रसव-पीड़ा" कहलाती है। प्रसव-पीड़ा इब्रानियों 5:7 में बताई गई है। यीशु की प्रार्थना की सेवा के विषय में बाइबल कहती है: "यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में **ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर**...प्रार्थनाएँ और विनती की...।" इस प्रकार की प्रार्थना ने सदा मुझे उलझन में डाला था। मेरा पालन-पोषण मसीह की देह के एक ऐसे भाग में हुआ था जो इसमें विश्वास करते थे। परन्तु, यह अकसर नहीं होता था। कुछ बार जब मैं ने प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना देखी थी यह एक छोटी सी बूढ़ी स्त्री के बारे में था। वह कलीसिया में कुछ "प्रार्थना योद्धाओं" में से एक थी।
मुझे ऐसा लगा था कि कोई भी प्रसव-पीड़ा को समझता नहीं था। बहुत कम लोग कभी करते थे। जब वे करते भी थे, यह कभी-कभार ही होता था। परन्तु, सब इसके लिए आदर दिखाते थे।

यह मेरे साथ हुआ

प्रसव-पीड़ा असल में मेरे साथ एक बार हुई थी, हालाँकि मैं ने उस प्रकार शोर नहीं किया था जैसा मैं ने दूसरों को करते देखा है। जिन्हें मैं ने सुना था वे काफी मेरी पत्नी के समान सुनाई दे रहे थे जब वह जन्म देने के समय थी। मैं सम्भवतः 9 या 10 वर्ष का था जब प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना ने मुझे पकड़ा था। यह एक आँटी के लिए प्रार्थना करते समय हुआ था जिसका उद्धार नहीं हुआ था। एक रात जब मैं बिस्तर पर लेटा था, मैं ने अपने आँटी के उद्धार के लिए प्रार्थना करने की एक तीव्र प्रेरणा अनुभव की। मुझे याद है मैं बिस्तर से उतर कर अपने घुटनों के बल हो गया। मैं बिना नियंत्रण के रो रहा था और परमेश्वर से उसका उद्धार करने को कह रहा था। यह 30 मिनट से घंटा तक चला होगा। आखिरकार, बोझ उठ गया - और मैं सोने चला गया।
मेरी आँटी हम से लगभग डेढ़ घंटे की दूरी पर रहती थी। परन्तु, उसने उस सप्ताह हमें फोन कर के कहा कि वह रविवार सुबह हमारी कलीसिया में आना चाहती है। हमें उस समय पता नहीं था कि वह असल में अपना जीवन मसीह को देने की योजना बना रही थी। उसने दिया! मैं भौचक्का रह गया। मैं ने उसके लिए प्रसव-पीड़ा की थी और वह उसी सप्ताह अपना जीवन प्रभु को देने के लिए हमारी कलीसिया में आई। प्रसव-पीड़ा तो अदभुत थी, परन्तु मैं इसे समझता नहीं था। मैं ने केवल एक बार ही किया। मैं ने सोचा कि यह चीज जो लोगों को उद्धार पाने में सहायता करती है अधिक बार क्यों न हुई।
इस प्रकार की तीव्र, भावात्मक प्रार्थना अकसर लोगों पर "उतरती" नहीं है। इसलिए, हम ने सोचा कि हमें प्रतीक्षा करनी और धैर्य धरना होगा। यह बैतहसदा के कुणड पर पड़े अपंग लोगों के समान था जो पानी के हिलाए जाने की प्रतीक्षा करते थे (यूहन्ना 5:2-4 देखो)। मैं ने प्रसव-पीड़ा के विचार पर संदेह प्रकट नहीं किया। मैं ने सोचा, "परमेश्वर न करे कि ऐसी एक आत्मिक चीज के विषय में किसी के मन में प्रश्न हों!"
जिन चीजों को हम समझा नहीं पाते थे, उन्हें हम ने इतना पवित्र घोषित किया है कि संदेह न प्रकट किया जाए। हमें ऐसा दिखाना था कि प्रश्न हैं ही नहीं। यदि हमारे पास प्रश्न हों तो हम बहुत निरादरपूर्ण हुए। इसलिए हम ने न तो परमेश्वर और न किसी दूसरे को जानने दिया कि हमारे पास हैं। निस्संदेह, हम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते थे। वह जानता था कि हम में प्रश्न हैं!

थोमा अभिषेक

तब मुझे पता चला कि चेले जब वे कुछ चीजें समझते नहीं थे तो यीशु से बहुत प्रश्न करते थे। कभी-कभी तो प्रश्न थोड़े निरादरपूर्ण लगते थे। इससे विचार मिलता था कि वे सोचते थे उसकी सिखाने की निपुणताएँ बहुत अच्छी नहीं थीं। वे उसके दृष्टान्तों के विषय में पूछते। वे उसके कुछ कठिन कथनों पर संदेह प्रकट करते। अरे, वे तो चीजों को अच्छे से बोलते थे। वे उसे "स्वामी" पुकारते थे। परन्तु आप और मैं जानते हैं कि वे असल में कह रहे थे, "तुम आखिरकार कहना क्या चाह रहे हो?"
एक बार उसने उन्हें उसका मांस खाने और उसका लहू पीने को कहा। उनमें से कुछ ने कहा कि "यह कठोर बात है।" हम जानते हैं उनका तात्पर्य था, "यह अजीब है!" "विश्वासियों" का वह समूह उसे छोड़ कर चला गया। एक और समय यीशु चेलों को कह रहा था कि वे चिन्ता न करें। उसने उनको बताया कि जहाँ पिता है वहाँ बहुत सारे घर हैं। वह वहाँ जाएगा और उनके लिए भी घर तैयार करेगा। तब वह लौटेगा और उन्हें वहाँ ले जाएगा। उसने यह भी कहा कि वे तो उस स्थान का मार्ग जानते हैं (यूहन्ना 14:1-4 देखो)। तब थोमा ने कहा जो सब सोच रहे थे: "एक मिनट, यीशु। हमें कुछ पता नहीं है तू क्या बात कर रहा है। हम तो जानते भी नहीं तू कहाँ जा रहा है। और न हमें पता है वहाँ कैसे पहुँचना है।" यीशु ने कहा, "मैं मार्ग हूँ। तुम मेरे द्वारा जाते हो।" मुझे लगता है चेले बाद में ही समझ पाए थे यीशु ने क्या कहा था (यूहन्ना 14:5-6 देखो)।
जैसे बारह अकसर करते थे, मैं भी अक्सर दिखाता हूँ कि समझता हूँ, जबकि मैं समझा नहीं हूँ। यह मुझे अज्ञानी रखता है परन्तु मैं अच्छा दिखता हूँ। दुख की बात है कि मैं अकसर सोचता हूँ कि मेरे और दूसरों के लिए यही मायने रखता है! परन्तु, कभी-

कभार "थोमा अभिषेक" आता है। तब मैं परमेश्वर को बताता हूँ कि उसने प्रसव-पीड़ा जैसी चीज को समझाने का अच्छा काम नहीं किया है। जैसे मैं प्रसव-पीड़ा के इस विषय के बारे में सोचने लगा तो मैं ने उन प्रश्नों को बाहर निकलने दिया जिन्हें मैं ने छिपा रखा थाः "प्रभु, क्या प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना लोगों को उद्धार पाने में वास्तव में सहायता करती है? तो फिर इसे करना इतना कठिन क्यों है? यह इतना कम क्यों होती है?" "केवल कुछ ही लोग इसे क्यों करते हैं? इसे इतना कोलाहलपूर्ण और विचित्र क्यों होना चाहिए? आप इसके विषय में कि यह क्या है, और इसे कैसे करना है, क्यों नहीं कहते?"

आत्मिक अनुभव बनाम शारीरिक दिखावा

मेरा विश्वास है कि प्रसव-पीड़ा खोए हुओं के लिए मध्यस्थता का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। मैं नहीं मानता कि सदा इसका अर्थ कराहना, बिलखना, रोना और घोर परिश्रम होता है। स्वाभाविक प्रसव में निश्चय ही ये सब चीजें नहीं होती है। आत्मिक प्रसव-पीड़ा में भी ये चीजें हो **सकती हैं**। मैं नहीं विश्वास करता, इसमें वे सब होनी चीहिए। असल में, मैं विश्वास करता हूँ एक व्यक्ति बरतन धोते, घास काटते या कार चलाते समय भी प्रसव-पीड़ा में हो सकता है। वे कोई भी काम करते हुए प्रसव-पीड़ा में हो सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं।

हम जो कलीसिया में हैं हमें किसी चीज पर विश्वास करने के लिए उसे देखने या महसूस करने की आवश्यकता हुई है। इसलिए, हम जो देखते हैं उससे जो आत्मा में हो रहा है उसका निर्णय करते हैं।

उदाहरणार्थ, हम किसी के साथ उद्धार या पश्चाताप के लिए प्रार्थना करते हैं। तब हम सोचते हैं कि जो रो रहा है वह उससे अधिक पा रहा होगा जो रो नहीं रहा है। हम इस प्रकार की बातें भी कहते हैं, "पवित्र आत्मा ने उसे सचमुच छूआ है।" यह इसलिए है क्योंकि हम लोगों की प्रतिक्रिया देखते हैं। असल में, मैं ने कुछ को देखा है जिन्होंने न रोया और न कोई भावना दिखाई। परन्तु, वे पूरी तरह बदल गए थे। दूसरी ओर, मैं ने कुछ को देखा जो सिसक और रो रहे थे। परन्तु, उन्होंने कोई परिवर्तन अनुभव नहीं किया। एक बार और, बात यह है कि **आप जो स्वाभाविक में हो रहा है उससे जो आत्मा में होता है उसका निर्णय नहीं कर सकते हो।**

प्रसव-पीड़ा, एक आत्मिक घटना

गलातियों 4:19 में, पौलुस कहता है, "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।" यहाँ, पवित्र आत्मा आत्मिक घटना का वर्णन करने के लिए एक शारीरिक चीज - प्रसव पीड़ा (जच्चा की सी पीड़ाएँ) को इस्तेमाल करता है। ऐसा करने में, उसका जोर शारीरिक पर नहीं बल्कि आत्मिक पर है। जब पवित्र आत्मा प्रसव-पीड़ा शब्द इस्तेमाल करता है तो वह जो शारीरिक में हो रहा रहा है उसे नहीं परन्तु जो आत्मिक में रहा है उसे बता रहा है। यह एक स्वाभाविक जन्म नहीं परन्तु एक आत्मिक जन्म है। पौलुस आत्मिक जन्म देने के लिए आत्मिक सामर्थ्य के उपयोग की बात सोच रहा है। हम उन शारीरिक चीजों के विषय में नहीं सोच रहे हैं जो आत्मिक जन्म के साथ हो सकती हैं। इन में से कुछ हैं कराहना, रोना और चिल्लाना।

कइयों ने जो शारीरिक में होता है उसे मुख्य बात बनाया है। इससे वे उस बात से चूक जाते हैं कि कुछ आत्मा में जन्म ले रहा है। यदि आपने गलती की है तो पता लगाना आसान है। अपने आप से यह प्रश्न करो और ईमानदारी से उत्तर दोः जब आप प्रार्थना से जुड़ा "प्रसव-पीड़ा" शब्द सुनते हो तो सबसे पहले आपके मन में क्या विचार आता है? क्या आप आत्मा में जन्म हो रहे के बारे में सोचते हो? या क्या आप सोचते हो कि बाहर शारीर में जन्म हो रहा है? हम में से अधिकाँश आत्मा के एक काम को शरीर का काम समझते हैं। भिन्न शब्द इस्तेमाल करना सम्भवतः बुद्धिमानी होगा। सम्भवतः हम "प्रसव-पीड़ा" शब्द उपयोग करने के बदले "प्रार्थना के द्वारा जन्म देना" उपयोग कर सकते हैं। यह हमारी समझ में सहायता कर सकता है।

यह कहने में कि प्रसव-पीड़ा शरीर का एक काम है; हम असली बात से चूक गए हैं। हम ने अनजाने में शैतान के एक झूठ को भी स्वीकार किया है। झूठ यह है कि केवल कुछ लोग की प्रसव-पीड़ा कर सकते हैं, और वह भी कभी-कभार ही कर सकते हैं। मैं विश्वास नहीं करता यह सच है। असल में, मैं विश्वास करता हूँ कि हम सब मध्यस्थता में प्रसव-पीड़ा कर सकते हैं (किसी को जन्म देना), और ऐसा अकसर कर सकते हैं। मुख्य बात यह जानना है कि जोर किसी चीज का आत्मिक जन्म होने पर है। जोर उस पर नहीं है जो हमारे साथ करते हुए होता है।

कृपया याद रखिए कि प्रसव-पीड़ा मध्यस्थता में शक्तिशाली शारीरिक प्रदर्शन हो सकते हैं। परन्तु, होना अवश्य नहीं है।

जन्म देनेवाली प्रार्थना

इस अध्ययन के लिए, "जन्म देनेवाली प्रार्थना" और "प्रसव-पीड़ा" एक ही बात हैं। अब से लेकर इस अध्याय में, मैं इस प्रकार की मध्यस्थता के लिए दोनों में से कोई भी शब्द इस्तेमाल करूँगा।

प्रार्थना का एक पहलू है जो **आत्मा में चीजों को जन्म देता है।** हम परमेश्वर के लिए "जन्म देनेवाले" हैं। पवित्र आत्मा हमारे द्वारा "उत्पन्न करना" चाहता है।

यीशु ने यूहन्ना 7:38 में कहा, "उसके हृदय में से जीवन जल की नदियाँ बह निकलेंगी।" "हृदय में से" के लिए यूनानी शब्द है "koilia", जिसका अर्थ है: "गर्भाशय"। हम पृथ्वी पर परमेश्वर का गर्भाशय हैं। हम जीवन का सोता नहीं हैं, परन्तु जीवन के सोते को ले जानेवाले हैं। जीवन परमेश्वर देता है। परन्तु जब हम प्रार्थना करते हैं परमेश्वर काम कर पाता है।

स्नेही प्रार्थना के कारण उद्धार पाया

हमारी कलीसिया के दो सदस्यों को हाल में उनके बेटे के उद्धार की उनकी प्रार्थना का उत्तर मिला। उन्होंने उसके लिए चार वर्ष से अधिक समय तक प्रार्थना की थी, जब परमेश्वर ने उत्तर दिया। उसकी माँ और दूसरी कुछ महिलाओं ने इस सारे समय मिलकर प्रार्थना की थी। वे चार वर्ष तक उनके बेटे के लिए प्रार्थना को कसकर पकड़े रहे थे। उन्होंने मुझे मध्यस्थता का एक सबसे अधिक दृढ़ और सम्पूर्ण उदाहरण दिखाया है। इसमें जन्म देने का यह विचार सम्मिलित है।

निम्नलिखित उनकी कहानी में से कुछ उद्धरण हैं:

हम ने योनातान के जन्म होने से पहले ही उसे परमेश्वर को दे दिया था। हम ने उसका कलीसिया में पालन-पोषण किया, परन्तु 17 वर्ष की आयु में वह परमेश्वर से दूर होने लगा। हम विश्वास करते हैं कि शत्रु ने इसे कुछ बुरी, ध्यानपूर्वक योजना द्वारा किया था। शीघ्र ही वह सम्पूर्ण विद्रोह की जीवन जीने लगा था। वह नशीले पदार्थ और सबकुछ जो उसकी जीवनशैली के साथ होता है करने लगा। इन चीजों के द्वारा, वह बहुत बीमार हो गया, और कभी-कभी उसे अस्पताल जाना पड़ता था। परन्तु जब वह अस्पताल से निकलता, सीधे गर्द लेने चला जाता। उसी समय के दौरान हमारा पास्टर हमें मध्यस्थता के विषय में सिखाने लगा। हालाँकि हम भय से भरे हुए थे, हम अधिकाधिक सीखने लगे। मेरे मित्र और मैं मिलकर मध्यस्थता करने लगे। परमेश्वर ने प्रार्थना करने के लिए निर्देश, और कई उन्नत करनेवाली प्रतिज्ञाएँ और प्रोत्साहन के शब्द दिए।

हम मध्यस्थता की प्रार्थना करते, पवित्र आत्मा से जब वह सो रहा होता था तब उसके बिस्तर के चारों ओर मँडराने ... या उसकी कार पर मँडराने को कहते। हम ने प्रभु से उसमें में जीवन नया जन्म भरने को कहा। मैं ऐसी प्रार्थना हर दिन करता थी। लगभग रोजाना, हम उसके बिस्तर, उसके कमरे, उसकी कार, उसके कपड़ों और बाकी सबको भी जो उसके निकट था अभिषेक करते थे। जब वह घर पर नहीं होता था तब मैं उसके कमरे में जाकर एक घंटे के आसपास आत्मा में गाती थी। मैं ने इस प्रकार की चीजें गाई, "यीशु का नाम इस स्थान में - उसके बिस्तर पर, इन चीजों पर, इन कपड़ों पर और सबकुछ पर ऊँचा हो!" मैं ने गाया, "मेरे बेटे की एक नियती है मैं जानती हूँ वह पूरी करेगा।" मेरे मित्र और मैं कभी-कभी देर रात तक चार से छः घंटे तक प्रार्थना करते थे।

एक रविवार को, पास्टर ने "प्रार्थना के कपड़े" के बारे में सिखाया। यह वो कपड़े नहीं हैं जिन्हें लोग पहनते हैं। यह छोटे-छोटे कपड़ों के टुकड़े हैं जिन पर किसी ने प्रार्थना की है। हमारा इनका इस्तेमाल पौलुस के रुमालों और अँगोछों पर आधारित है जो प्रारंभिक विश्वासियों को चंगाई लाते थे (प्रेरितों 19:11-12 देखो)। तुरन्त मैं ने सोचो, "मेरे बेटे के लिए करो!" पास्टर और हम ने मिलकर एक कपड़े के टुकड़े पर हाथ रखे और उस पर परमेश्वर की सामर्थ्य और अभिषेक डाला। हम सहमत हुए कि नशीले पदार्थों, पाप, अभक्त मित्रों, विकृत और बाकी सब का बन्धन तोड़ा जाए। हम ने कपड़े के बारह टुकड़े किए और उन्हें उसकी चादर के नीचे और तकिए के अन्दर रखा। हम ने एक उसके पर्स के अन्दर भी छिपा दिया। हम ने उन्हें पैंट के अन्दर और पॉकेट के भीतर सिलाई कर दिया। हम ने उन्हें दीवारों की छेदों में और जूते की जीभ के नीचे छिपा दिया। हर के साथ हम ने घोषित किया, "अभिषेक बन्धन को तोड़ता है।" (यशायाह 10:27 देखो)

कभी-कभी ऐसा लगता था बात बिगड़ती जा रही है। ऐसा लगता था मेरा बेटा अपने जीवन को नष्ट करने के मिशन में है। परन्तु उससे प्रेम करने और उसके जीवन पर परमेश्वर की योजना को बोलने में दृढ़ बने रहे। हम ने उसके कमरे और कार को अभिषेक किया और उन पर गीत गाए। हम ने रोजाना मध्यस्थता की प्रार्थना की और वचन दोहराए। हम ने हर वचन और प्रतिज्ञा को बोला जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बेटे के लिए दिया था। जितना अधिक हम वचन बोलते उतना अधिक हमारा विश्वास बढ़ता। हर कुछ महिनों में हम प्रार्थना के कपड़ों को अपने पास्टर के पास ले जाते और प्रक्रिया को दोहराते।

हम ने अपने बेटे के लिए आत्मिक युद्ध भी किया। हम ने नशीले पदार्थों को शाप दिया और परमेश्वर से माँगा कि वह उनके अभक्त प्रभाव को उसके जीवन से निकाल दे। हम ने उसके मित्रों के उद्धार के लिए भी प्रार्थना की। उनमें से तीन मसीह में आ गए हैं। परमेश्वर ने हमारे आँसुओं को लेकर उन्हें युद्ध में बदल दिया। लगभग चार वर्षों के बाद हम ने एक मित्र से यह वचन पाया कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं के "प्याले को उलटने" वाला है। इसने हमें वास्तव में प्रोत्साहित किया और हम तो प्रतीक्षा नहीं कर पा रहे थे।

अगले महिने के दौरान, चार वर्षों से ज्यादा के बाद, हम देख सकते थे कि परमेश्वर हमारे बेटे से निपट रहा था। वह उसके जीवन को सीधा करना चाहता था। वह अपनी बाइबल पढ़ने लगा और अपनी नारीमित्र के उद्धार के लिए चिन्ता प्रकट करने लगा। वह नशीले पदार्थों की उस शक्ति से घृणा करने लगा जिसका उसके मित्रों पर प्रभाव था। तब एक रात हमारी प्रार्थना सभा में, उसने अपना जीवन मसीह को दोबारा समर्पित कर दिया। हम अचरज के साथ देखते रहे, जब संसार की चीजें उसके पीछे से गिरने लगीं। उसी समय, परमेश्वर के राज्य की चीजें उसके लिए स्पष्ट और आकर्षक होने लगीं।

चार वर्षों की मध्यस्थता के दौरान, प्रभु ने हमें प्रर्थना के विषय में काफी कुछ सिखाया। उसने मार्ग में हमें बहुत प्रोत्साहन दिया। उसने पास्टर को जिसने परवाह की और हमें सिखाया, और मित्रों को जिन्होंने परवाह और प्रार्थना की इस्तेमाल किया। उसने हमारे बेटे के बुलावे और उस पर परमेश्वर के हाथ होने के बारे में हमें भविष्यद्वाणी के वचन दिए। परमेश्वर ने मेरे पति को उस स्वर्गदूत को दिखाया जो उसकी कार में उसके साथ हर स्थान पर जाता था। उन में से दो बार जब हमारे बेटे ने जेल में समय काटा था स्वर्गदूत उसके साथ था। सारा भय निकल गया था और हम सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर भरोसा कर सकते थे। हम इस चमत्कार के लिए परमेश्वर के बहुत आभारी हैं जो हमारे बहुमूल्य बेटे में हुआ है। कोई भी हमें कभी निश्चय नहीं दिला सकता है कि प्रार्थना काम नहीं करती! परमेश्वर विश्वासयोग्य है और हम सदा के लिए कृतज्ञ हैं!

प्रसव-पीड़ा सरल और सामर्थी है

अब आओ हम प्रसव-पीड़ा प्रार्थना की जाँच करें। पवित्र आत्मा हमें सुनने के कान दे। क्या हम प्रसव-पीड़ा को किसी प्रकार कम रहस्यवादी बना सकते हैं ? मेरा विश्वास है हम बना सकते हैं।

निम्नलिखित अनुच्छेद प्रसव-पीड़ा (जन्म देनेवाली) प्रार्थना का सीधा जिक्र करता है या संकेत देता है: 1 राजा 18:41-45: "फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, 'उठकर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।' तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया, और उसने अपने सेवक से कहा, 'चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर के देख,' तब उसने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, 'कुछ नहीं दिखता।' एलिय्याह ने कहा, 'फिर सात बार जा।' सातवीं बार उसने कहा, 'देख समुद्र में से मनुष्य के हाथ-सा एक छोटा बादल उठ रहा है।' एलिय्याह ने कहा, 'अहाब के पास जाकर कह, 'रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।' थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं और आँधी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार होकर यिज्रेल को चला।"

एलिय्याह ने जो शारीरिक मुद्रा अपनाई थी पूर्व में स्त्रियाँ प्रसव-पीड़ा के समय अपनाती हैं। "भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया।" हम देख सकते हैं एलिय्याह असल में प्रसव-पीड़ा जन्म देनेवाली प्रार्थना में था। याकूब 5:16 भी हमें इस घटना के बारे में बताता है। भजन 126:5-6: "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा।" यशायाह 66:7-8: "उसकी प्रसव-पीड़ा उठने से पहले ही उसने जन्म दिया; उसकी पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा। ऐसी बात किस ने कभी सुनी ? किसने कभी ऐसी बातें देखीं ? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है ? क्या एक जाति क्षणमात्र में ही उत्पन्न हो सकती है ? क्योंकि सिय्योन को प्रसव-पीड़ा उठी ही थी कि उस से सन्तान उत्पन्न हो गए।"

यूहन्ना 11:33, 35, 38, 41-43: "जब यीशु ने उसको और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ..."

यीशु रोया....यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया। वह एक गुफा थी और एक पत्थर उस पर रखा था...तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया।

यीशु ने आँखें उठाकर कहा, 'हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उनके कारण मैं ने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा है।' यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, 'हे लाज़र, निकल आ!''

मत्ती 26:36-39: "तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नामक एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा, 'यहीं बैठे रहना, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।' वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। तब उसने उनसे कहा, 'मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।' फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की, 'हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।'

रोमियों 8:26-27: "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है : क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है; और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है ? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता

है।" इस अनुच्छेद का उद्देश्य प्रसव-पीड़ा है। प्रभु यह भी कहता है कि सारी सृष्टि हमारे साथ कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है (रोमियों 8:22-25 देखो)।
गलातियों 4:19: "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सकता हूँ।"

ये अनुच्छेद पूरी तरह समझाते नहीं हैं कि प्रसव-पीड़ा क्या है या कैसे की जाती है। परन्तु, कुछ चीजें स्पष्ट हैं:

- पवित्र आत्मा सम्मिलित है।
- प्रसव-पीड़ा का आत्मिक जन्म देने के साथ सम्बंध है।
- प्रसव-पीड़ा विश्वासियों को आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता करती है।
- प्रसव-पीड़ा बड़ी तीव्र हो सकती है। इसमें आँसू और कराहना भी सम्मिलित हो सकता है।
- प्रसव-पीड़ा भौतिक चमत्कार उत्पन्न करने में सम्मिलित होती है।

पवित्र आत्मा, परमेश्वर का जन्म देनेवाला प्रतिनिधि

हम कुछ भी आत्मिक रूप से उत्पन्न नहीं करते हैं। पवित्र आत्मा करता है। वह परमेश्वरत्व का जन्म देनेवाला प्रतिनिधि है (लूका 1:34-35; यूहन्ना 3:38 देखो)। पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का सामर्थ्य का सोता है (प्रेरितों 1:8; 10:38; लूका 4:14, 18 देखो)। वह सृष्टि के पीछे सामर्थ्य है। यह सृष्टि करनेवाला सामर्थ्य जन्म देने जैसा है (उत्पत्ति 1:2 देखो)। पवित्र आत्मा का सामर्थ्य परमेश्वर की इच्छा को जीवन प्रदान करता है। वह परमेश्वर की इच्छा को जन्म देता है। वही है जो परमेश्वर के लोगों में जीवन फूँकता है। यह शारीरिक और आत्मिक जीवन दोनों लाता है (उत्पत्ति 2:7; यहेजकेल 37:9-10; प्रेरितों 2:1-4 देखो)। जब हम उद्धार के बारे में बात करते हैं, तो हम इसे "नया जन्म" या "नई सृष्टि" कहते हैं। कभी-कभी हम कहते हैं कि हम अपनी मध्यस्थता के कारण परिणाम देखते हैं। परन्तु, यह असल में पवित्र आत्मा है जो परिणाम लाता है, हम नहीं। उदाहरणार्थ, एलिय्याह मनुष्य के रूप में वर्षा नहीं ला सकता था। फिर भी याकूब बताता है कि उसकी प्रार्थना ने लाई। पौलुस लोगों में नया जन्म या परिपक्वता नहीं ला सकता था, परन्तु गलातियों 4:19 दिखाता है कि उसकी मध्यस्थता ने लाया। हम अपनी मानवीय योग्यताओं के द्वारा आत्मिक पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। फिर भी यशायाह 66-7-8 हमें बताता है कि प्रसव-पीड़ा कर सकती है।
हम मानते हैं कि हम अपनी सामर्थ्य या योग्यता से इन चीजों को बना या जन्म नहीं दे सकते हैं। परन्तु, किसी प्रकार हमारी प्रार्थना पवित्र आत्मा को ऐसा करने के लिए अवसर देता है।
एक ऐसी प्रार्थना है जो जन्म देती है। परन्तु, असल में, यह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य काम करती है। पवित्रशास्त्र में ऐसे शब्द हैं जो पवित्र आत्मा के जीवन लाने वाले काम का वर्णन करते हैं। ये वही शब्द हैं जिन्हें जो हमारी प्रार्थनाएँ पूरा करती हैं वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पवित्र आत्मा जो उसके जीवन देनेवाली सामर्थ्य को छोड़ने के लिए करता है बहुत स्पष्ट है।
उत्पत्ति 1:1 कहता है, "आदि में...पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी।" "बेडौल" के लिए इब्रानी शब्द "tohuw", का अर्थ है: "विध्वंस; उजाड़ना; रेगिस्थान; बेकार चीज।" Tohuw का अर्थ यह भी है: "गड़बड़; खाली; "एक निराकार, बेजान ढेर।" यहाँ मूल विचार निर्जीवता और अस्तव्यस्तता का है। आयत 2 हमें आगे बताती है, "परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।" इसका क्या अर्थ है जब यह कहता है कि पवित्र आत्मा "मण्डराता" था? हम यह शब्द आज भी इस्तेमाल करते हैं जब हम कहते हैं कि पवित्र आत्मा सभा में मण्डरा रहा था। हम इस प्रकार की चीजें कहते हैं, "प्रभु ने आज वास्तव में कार्य किया (मण्डराया)", या "पवित्र आत्मा सामर्थ्य के साथ कार्य कर रहा था।" परन्तु इन वक्तव्यों का अर्थ क्या है? हमें इन चीजों के बारे में अस्पष्ट विचार ही है। हम कह रहे हैं कि परमेश्वर कुछ कर रहा था। परन्तु वह क्या कर रहा था? क्या वह एक स्थान से दूसरे स्थान में जा रहा था? क्या वह लोगों के हृदयों में कार्य कर रहा था? इन स्थितियों में "कार्य करने" या "मण्डराने" का अर्थ क्या है?
असल में, आज के "मण्डाराने" शब्द का उपयोग उत्पत्ति अध्याय 1 में से निकला है। "मण्डराने" के लिए इब्रानी शब्द "rachaph" है। इसका अर्थ है "सेना"। मादा पक्षी जब उसके अंडों पर बैठती तब वह "अंडे सेती" है। तब बाद में अपने नए जन्में बच्चों पर सेती है जब तक वे उड़ने योग्य नहीं हो जाते। वह नया जीवन लाती है। तो, rachaph किसी चीज पर मँडराना या सेना है। पवित्र आत्मा सृष्टि का वर्णन करने के लिए शब्द को इस्तेमाल करता है। वह कुछ को जन्म देने की तस्वीर इस्तेमाल कर रहा है। वह जीवन ला रहा था। एक इब्री विद्वान् ने मुझे बताया कि rachaph को पती का उसकी पत्नी पर मँडराने का वर्णन करने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। यह हमें निश्चित रूप से बताता है कि rachaph नया जीवन बनने का वर्णन करता है।
यूहन्ना 1:13 और कुलुस्सियों 1:16 हमें बताते हैं कि सब चीजें यीशु ने जो वचन है रचीं थीं। इन वचनों से पता चलता है कि जैसा उत्पत्ति अध्याय एक में वर्णन किया गया है, यीशु जीवन उत्पन्न कर रहा था। परन्तु यह पवित्र आत्मा था जो पृथ्वी पर मँडरा रहा था। जब यीशु ने आज्ञा के रचनात्मक शब्द बोले थे तो यह पवित्र आत्मा था जो उसकी रचनात्मक सामर्थ्य को कार्य में ला रहा

था। आत्मा ने उसे जन्म दिया जिसे यीशु बोलता था। भजन 90:2 असल में कहता है कि पवित्र आत्मा ने सृष्टि के समय जन्म दिया था। यह आयत, दो महत्त्वपूर्ण शब्द "yalad" और "chuwl" उपयोग करती है। यह कहती है, "इससे पहले पर्वत उत्पन्न हुए (yalad), या तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की (chuwl), वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है।" Yalad और chuwl इब्रानी भाषा के प्रसव-पीड़ा के लिए दो प्रमुख शब्द हैं। उनका अनुवाद किया गया है: "उत्पन्न करना", "बच्चे देना" (व्यवस्थाविवरण 32:18; अय्यूब 15:7; 39:1 देखो)। उन में सदा किसी को जन्म देने का विचार होता है। यह सदा एक शारीरिक जन्म नहीं होता, परन्तु यह किसी प्रकार की रचना होती है।

मँडराना और उत्पन्न करना

अब, आओ हम इन सब को प्रार्थना से जोड़ें। ये सब वही इब्रानी शब्द हैं जिन्हें यशायाह 66:7 में इस्तेमाल किया गया है, "उसकी प्रसव-पीड़ा (chuwl) उठने से पहले ही उसने जन्मा (yalad) दिया; उसको पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा।" यह बड़े महत्त्व का है। उत्पत्ति में पवित्र आत्मा ने संसार को उत्पन्न किया था। यही वह हमारी प्रार्थनाओं के द्वारा करना चाहता है। वह पुत्रों और पुत्रियों को जन्म देना चाहता है। वह आगे जाकर लोगों पर मँडराना चाहता है। वह अपने विस्मयकारी सामर्थ्य को पापों का एहसास कराने, और बन्धन तोड़ने के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। वह लोगों को अपने पास खींचना चाहता है ताकि उनमें नया जन्म उत्पन्न कर सके। **हाँ, पवित्र आत्मा हमारे द्वारा जन्म देना चाहता है।**

पवित्र आत्मा का उत्पन्न करने और मँडराने का एक दूसरा उदाहरण व्यवस्थाविवरण 32:10-18 में है। चारों इब्रानी शब्द जिनका हम ने जिक्र किया है इस अनुच्छेद में इस्तेमाल किए गए हैं: tohuw, rachaph, yalad और chuwl। इस अनुच्छेद में मूसा इस्राएलियों को उनका इतिहास और आरम्भ बता रहा है। वह देश को उत्पन्न करने में आत्मा की भूमिका को दोहराता है।

आयत 10 कहती है कि परमेश्वर ने इस्राएल को tohuw स्थिति में पाया था। हमारी बाइबल में, इस्राएल नाम दो चीजों के बारे में है। यह नाम सबसे पहले अब्राहम के पोते को दिया गया था। उसके जन्म के समय उसका नाम याकूब रखा गया था - फिर परमेश्वर ने उसका नाम इस्राएल रख दिया (उत्पत्ति 32:28)। दूसरा, इस्राएल के बारह बेटों की सन्तानें इस्राएल के बारह गोत्र बन गए और उनको एक देश के रूप में इस्राएल कहा गया था। अब्राहम देश का कुलपति था; अर्थात् उसी में से देश उत्पन्न हुआ था। तो व्यवस्थाविवरण 32 में यह अनुच्छेद जो अब्राहम के साथ हुआ था उसकी बात कर रहा है। अब्राहम सृष्टि के पहले पृथ्वी के समान था। दूसरे शब्दों में, अब्राहम निर्जीव और बाँझ था। उस समय वह और उसकी पत्नी जीवन उत्पन्न नहीं कर सकते थे। वे दोनों बाँझ और निर्जीव थे (उत्पत्ति 17)। व्यवस्ताविवरण 32:11 हमें बताता है कि, जैसे एक उकाब अपने बच्चों पर मँडराता (rachaph) है, प्रभु उनके ऊपर मँडराया। पवित्र आत्मा अब्राहम और सारा के ऊपर मँडराया और और अपना जीवन और सामर्थ्य उन पर छोड़ा। हालाँकि सारा 90 वर्ष की और अब्राहम 100 वर्ष का था (उत्पत्ति 17:17) - दोनों जन्म देने की आयु काफी पार कर गए थे - परमेश्वर ने उन्हें एक बच्चे को जन्म देने की योग्यता दी! वे अब नया जीवन उत्पन्न कर सकते थे!

हम इब्रानियों 11:11 में पढ़ते हैं कि सारा को एक पुत्र उत्पन्न करने के लिए पवित्र आत्मा की चमत्कारी सामर्थ्य मिली थी। उसने यह "विश्वास से" किया था। जैसे आत्मा मँडराया था, परमेश्वर असल में अब्राहम और सारा में एक देश को जन्मा रहा था। जैसे वह मँडराया था, तब पवित्र आत्मा ने उनके शरीरों को नया किया और जवान लोगों जैसा बना दिया था। हम जानते हैं कि यह नवीनीकरण असली था क्योंकि उत्पत्ति 20 में हम पढ़ते हैं कि गरार का राजा सारा को उसकी पत्नी बनाना चाहता था। एक पूर्वी राजा केवल सुन्दर स्त्री को ही अपनी पत्नी चुनता था। वह अवश्य ही बहुत जवान और सुन्दर दिखती होगी। नहीं तो वह उसे नहीं चाहता। और, अब्राहम में भी स्थाई परिवर्तन हुए थे क्योंकि सारा की मृत्यु के बाद उसके कतूरा के द्वारा भी कई दूसरे सन्तान हुए थे।

व्यवस्थाविवरण 32:18 में yalad और chuwl दोबारा उपयोग किए गए हैं: "जिस चट्टान से तू उत्पन्न हुआ उसको तू भूल गया, और ईश्वर जिससे तेरी उत्पत्ति हुई उसको भी तू भूल गया है।" जिस चट्टान का यहाँ जिक्र है आत्मिक चट्टान थी जो जंगल में मूसा और इस्राएलियों के साथ-साथ चलती थी। यह मसीह की तस्वीर थी। <u>जिस मँडराने ने स्वाभाविक इस्राएल को उत्पन्न किया था वही आत्मिक इस्राएल को भी जो कलीसिया है, उत्पन्न करेगा!</u>

स्वर्गदूत और मरियम

पवित्र आत्मा का जीवन उत्पन्न करने का एक और उदाहरण जैसे उसने मँडराया और सेया था, लूका 1:35 में पाया जाता है। यह कुँवारी मरियम में मसीह के साथ गर्भ धारण करना था। प्रभु के स्वर्गदूत ने मरियम के पास आकर उसे बताया था कि वह एक बच्चे को जन्म देगी।

उसने कहा था, "यह कैसे होगा। मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।" (लूका 1:35)

स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी।" "छाया करेगी" के लिए यूनानी शब्द "episkiazo" का अर्थ है: परछाई डालना। इसका अर्थ यह भी है: चमकदार धुन्ध से ढाँपना; किसी में अलौकिक सामर्थ्य

डालना। यह इब्रानी शब्द "rachaph" के समान है। यह दिखाता है कि पवित्र आत्मा ने मरियम पर रचनात्मक सामर्थ्य डाली थी। "छाया करना" (episkiazo) शब्द को बाइबल में तीन बार उपयोग किया गया है। मत्ती 17:5 में यीशु के रुपान्तरण के समय, प्रभु के बादल ने लोगों को छा लिया था। इसका उपयोग प्रेरितों 5:15 में भी है जहाँ लोग पतरस की परछाई में आने की कोशिश करते हैं ताकि वे चंगे हो जाएँ। क्या आपने कभी सोचा है कि पतरस की परछाई कैसे लोगों को चंगा कर सकती थी? इसने नहीं किया था। असल में क्या हो रहा था कि पवित्र आत्मा पतरस में से मँडरा रहा था। आत्मा मँडरा रहा था। जब लोग छाया में आते थे तो वे चंगे हो जाते थे।

सम्भवतः आपने इस प्रकार की चीज होते हुए देखी है। मैं ने देखी है। मैं ऐसी सभाओं में था जहाँ परमेश्वर एक बहुत सामर्थी तरीके से मँडरा रहा था। लोगों के लिए प्रार्थना किए जाने या उन्हें छूए जाने से पहले ही वे उद्धार पा रहे, चंगे हो रहे और छुटकारा पा रहे थे। वे पवित्र आत्मा की episkiazo या मँडराने वाली छाया के नीचे आए थे। सम्भवतः आप ऐसी सभाओं में थे जहाँ परमेश्वर का आत्मा सारे कमरे में मँडराने लगा था। कभी-कभी परमेश्वर ने ऐसा सारे समाजों पर भी किया है।

पूर्व की अनेक बेदारियों में, कहानियाँ बताई जाती हैं कि जब लोग कलीसिया की इमारत के निकट आते थे जहाँ परमेश्वर सामर्थी तरीकों से मँडरा रहा था, तो वे रोने लगते, कलीसिया के अन्दर आते, और कहते, "मुझे कुछ यहाँ खींच लाया है और मैं उद्धार पाना चाहता हूँ।" क्या हुआ था? पवित्र आत्मा का मँडराना इतना अधिक हो गया था कि वह सारे क्षेत्र पर मँडराने लगा था। उसने ऐसा जीवन लाने के लिए किया था। मेरा विश्वास है कि यह छाया करना देशों पर भी होगा, जैसे जैसे पृथ्वी के लोगों के लिए प्रार्थना बढ़ती जाएगी। यह इतिहास का एक महान समय होगा। खोए हुओं के लिए परमेश्वर से इतनी सारी प्रार्थना पहले कभी नहीं की गई है।

प्रभु का आत्मा शहरों और सारे देशों पर मँडराने के लिए कार्य कर रहा है। यह मध्यस्थता से हो रहा है। जैसे यह मँडराना सन्तों की प्रार्थनाओं से होता रहेगा, हम नाटकीय बेदारियाँ देखेंगे।

क्या एक देश एक दिन में उत्पन्न हो सकता है?

यूरोप में साम्यवादी सरकार के पतन के थोड़ी ही बाद मैं प्रचार कर रहा था। यह ऐसा समय था जब अधिकाँश सरकारें गिर रही थीं। सामान्यतः इन चीजों को घटनें में वर्षों लग सकते थे। यह बहुत ही असाधारण समय था। मैं ने एक बहुत शक्तिशाली अभिषेक में प्रचार किया था। पवित्र आत्मा मुझ पर उतरा और मैं भविष्यद्वाणी करने लगा, "तुम ने देशों को एक दिन में राजनीतिक रूप से गिरते देखा है। इसी तरीके से, तुम देशों को मेरे सामने आत्मिक रूप से गिरते देखोगे। फिर वे एक दिन में जन्म लेंगे।" जबकि मैं ने ऐसा कहा, परन्तु मैं सोच रहा था कि क्या ऐसा वास्तव में हो सकेगा। सभा के बाद मैं प्रभु के पास प्रार्थना में गया। मैं ने उससे कहा, "पिता, मैं आपके नाम में बोलना नहीं चाहता हूँ यदि यह आप नहीं हैं। न ही मैं आपके लोगों को मेरे बोलने के द्वारा उत्तेजित करना चाहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या वह आप मेरे द्वारा आज बोल रहे थे।" प्रभु का उत्तर आश्चर्यजनक था। उसने मुझे यशायाह 66:7-8 याद दिलाया: "उसकी प्रसव-पीड़ा के उठने से पहले ही उसने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा।" प्रभु मुझे आश्वासन दे रहा था कि वह मेरे द्वारा उसका वचन बोल रहा था। वह मुझे कह रहा था कि देश एक दिन में जन्मा जाएँगे। उसने मुझे आश्वासन दिया कि आत्मा का एक सामर्थी मँडराना होगा। परमेश्वर के आत्मा द्वारा ऐसा सामर्थ्य कार्य करेगा कि रात भर में सारा का सारा देश मसीह में आ जाएगा। मैं नहीं जानता कि "रात भर में" असली समय होगा, या यह केवल तस्वीर चित्रित करता है। परन्तु मैं कोई भी स्वीकार करूँगा, क्या आप नहीं करेंगे? जकर्याह 2:11 में, यह भविष्यद्वाणी है: "उस समय बहुत सी जातियाँ यहोवा से मिल जाएँगी...।" मेरा विश्वास है परमेश्वर ऐसा करेगा। क्या आपका नहीं? यशायाह 66:7 का अनुच्छेद कहता है कि यह सिय्योन की प्रसव-पीड़ा के द्वारा होगा। सिय्योन कलीसिया का प्रतीक है (भजन 87; इब्रानियों 12:12; 1 पतरस 2:4-10 देखो)। जो जन्म लेंगे सिय्योन के पुत्र और पुत्रियाँ कहलाएँगे। यह प्रतिज्ञा न केवल इस्राएल के लिए है, परन्तु हम, मसीह की देह के लिए भी है। हम प्रसव-पीड़ा के द्वारा पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न कर सकते हैं।

जन्म देने की भावना

हमारी मण्डली की एक महिला एक अनुभव का जिक्र करती है जो उसे कई वर्ष पहले हुआ था। उस समय, वह एक मसीही काऊँस्लर के रूप में काम करती थी। वह जिन लोगों को काऊँसलिंग करती थी उनके लिए प्रार्थना में समय व्यतीत करती थी। वह उनकी समस्याओं और उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करती थी। एक दम्पति जिनकी वह काऊन्सलिंग कर रही थी उन्हें बहुत समस्याएँ थीं: व्यसन, भोजन में अव्यवस्था, और परिवारिक समस्याएँ। दोनों में से कोई भी विश्वासी नहीं था; असल में, पत्नी एक नास्तिक थी। उसने बताया वह महसूस करती थी कि जैसे वह उनसे "गर्भवती" थी। उसे लगता था वह उन्हें अपनी आत्मा में लिए फिरती है। वह रोजाना उनके लिए प्रार्थना करती, और अकसर घंटों कराहती और रोती थी। यह कई महिनों तक होता रहा। उसके प्रार्थना के समयों में, प्रभु उसे इस दम्पति के बारे में चीजें बताता था। वह उनको इन दोनों से अकेले-अकेले बताती थी। परन्तु, प्रभु उनको उद्धार के लिए तैयार कर रहा था। एक दिन जब वे उसके पास थे आत्मा बड़े सामर्थ्य के साथ उन पर मँडराने लगा।

जैसे वह उनको साथ वचन बताने लगी वे आखिरकार समझने लगे थे। अगली बार जब वह उनसे मिली तो दोनों ने प्रभु को स्वीकार किया। उसे गहरा आभास हुआ था कि जन्म हो रहा था। फिर उनके बढ़ने और परिपक्व होने का समय आया। उसने उनकी अच्छी बाइबल की शिक्षा और मसीही संगति पाने में सहायता की।

मेरा विश्वास है कि प्रसव-पीड़ा कुछ उत्पन्न करने, रचने या जन्म देने के लिए पवित्र आत्मा का छोड़ा जाना है। प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना यह होने देती है। इसलिए, प्रसव-पीड़ा की मध्यस्थता एक प्रकार की मध्यस्थता है जो किसी चीज को उत्पन्न करने, रचने या जन्म देने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ्य छोड़ती है। मैं ने "उत्पन्न करना" और "रचना" शब्द इस्तेमाल किए हैं क्योंकि प्रसव-पीड़ा बाइबल में न केवल किसी के नया जन्म लेने में उपयोग होती है। परन्तु इसे दूसरी चीजें उत्पन्न करने में भी उपयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ, जब पवित्र आत्मा पतरस के द्वारा मँडरा रहा था तब वह चंगाई ला रहा था (प्रेरितों 5:15 देखो)। जब आत्मा एलिय्याह के द्वारा मँडराया था तब उसने वर्षा लाई थी (1 राजा 18:45 देखो)। पौलुस के द्वारा उसने कमज़ोर गलातियों के विश्वासियों में परिपक्वता लाई थी (गलातियों 4:19 देखो)।

मसीह की प्रसव-पीड़ा

आओ हम मसीह की सेवा में से दो उदाहरण देखें जहाँ वह प्रसव-पीड़ा या जन्म देनेवाली प्रार्थना में था। पहला यूहन्ना 11:33-44 में, लाज़र का पुनरुत्थान है।

कब्र की ओर जाने से पहले, आय. 33 बताती है कि यीशु "आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ।" इसे अधिक सही तरीके से कहा जा सकता है कि यीशु "आत्मा में बहुत ही क्रोधित, और बहुत व्याकुल हुआ।" "व्याकुल" शब्द यूनानी में "tarasso" है। इसका अर्थ है: "उत्तेजित करना"। यीशु अपने भीतर अभिषेक को उत्तेजित कर रहा था। आय. 38 दोबारा कहती है, वह क्रोधित हुआ। इन आयतों के अनुसार, जो आँसू मसीह ने बहाए थे केवल सहानुभूति के आँसू ही नहीं थे, वे क्रोध के आँसू थे (आय. 35 देखो)। उसके आँसू उसकी आत्मा के क्रोधित होने के कारण थे। हम यह भी जानते हैं कि उसके आँसू प्रार्थना से जुड़े हुए थे। आय. 41 हमें बताती है कि लाज़र को मरे हुओं में से जीवित करने से पहले यीशु ने पिता से प्रार्थना की थी। उसने कहा, "मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।" फिर उसने आज्ञा दी, "हे लाज़र, निकल आ।"

मैं विश्वास नहीं करता कि पवित्र आत्मा की जन्म देनेवाली सामर्थ्य को छोड़ने के लिए रोना और कराहना अवश्य है। परन्तु, जब हम गहरी मध्यस्थता में जाते हैं तब रोना और कराहना हो सकता है। मेरा विश्वास है इस स्थिति में यीशु के साथ यही हुआ था।

जब मैं ने अपनी आँटी के लिए मध्यस्थता की थी, तब मैं प्रसव-पीड़ा की एक प्रकार में था। हालाँकि मैं कराह नहीं रहा था, मैं बहुत आँसू बहा रहा था। यह भावना नहीं थी जिसने उसका उद्धार आया था। यह पवित्र आत्मा की ओर मेरी प्रतिक्रिया थी जिसने उसे मेरे द्वारा कार्य करने दिया था। इससे वह मेरी आँटी के ऊपर मँडरा सका, और उसे अपनी सामर्थ्य और जीवन से ढाँप सका था। उसने उसे पाप का एहसास कराया, और सम्भवतः कुछ गढ़ भी ढाए थे।

कभी-कभी हम मध्यस्थता के परिणाम तुरन्त देखते हैं। परन्तु, यह अकसर शीघ्र नहीं होता। पहले जिस दम्पति की बात की गई थी और उनके बेटे के साथ प्रार्थना का एक समय आवश्यक था। प्रार्थना का एक समय वह होता है जहाँ हम पवित्र आत्मा को अपने द्वारा एक समय तक मध्यस्थता करने देते हैं। इससे वह एक व्यक्ति पर उसकी जीवन देनेवाली सामर्थ्य के साथ मँडरा सकता है। तब वह व्यक्ति को नया जन्म देने के लिए जो आवश्यक है करता है।

यीशु के प्रसव-पीड़ा का दूसरा उदाहरण गतसमनी के उद्यान में था। लूका 22:44 हमें बताता है कि यीशु लहू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराने लगा था। ऐसा नहीं था कि यीशु को इतना पसीना आ रहा था कि लग रहा था कि लहू बह रहा हो। उसकी चमड़ी के छिद्रों में से लहू बह रहा था। यह एक चिकित्सा की स्थिति है। उसके लहू के बहने के द्वारा ही हमें पापों से शुद्धता मिली है (इब्रानियों 9:22)। इसलिए, जब मसीह का लहू उद्यान में बहने लगा था तब उद्धार आरम्भ हुआ था। मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि उद्यान में उद्धार आरम्भ हो रहा था क्योंकि यीशु ने कहा: "मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है" (मत्ती 26:38)। प्राण निकल जाने के लिए यूनानी शब्द "thanatos" है। यह शब्द अकसर इस्तेमाल होता है जब पाप का परिणाम और दण्ड मृत्यु है। यह वही मृत्यु थी जिसे आदम ने जब उसने पाप किया था अनुभव किया। दो दूसरे शब्द इस्तेमाल किए जा सकते थे जो शारीरिक मृत्यु के लिए हैं। परन्तु, जब thanatos इस्तेमाल होता है तो इसका अर्थ पाप के कारण मृत्यु है। यीशु का अर्थ होगा कि संसार का पाप उसी समय उद्यान में उस पर रखा जा रहा था।

इसलिए, हम देखते हैं कि जो उद्धार क्रूस पर हुआ था उद्यान की प्रसव-पीड़ा में आरम्भ हुआ होगा। मेरा विश्वास है कि प्रसव-पीड़ा शब्द का उपयोग इसलिए नहीं हुआ क्योंकि यीशु घोर परिश्रम कर रहा था। यह इसलिए हुआ क्योंकि वह नया जन्म ला रहा था। हमारी मध्यस्थता को भी प्रसव-पीड़ा कहा जाता है क्योंकि यह जो यीशु ने जन्मा है उसका फल लाती है।

कलवरी का फल उत्पन्न करना

पवित्र आत्मा हमारे द्वारा उसकी रचनात्मक, जन्म देनेवाली सामर्थ्य को प्रकट करना चाहता है। वह कलवरी के फल को उत्पन्न करना चाहता है। वह हमें निर्जीव, फलहीन स्थितियों में उपयोग करना चाहता है। वह अपनी जीवन निर्जीव स्थितियों में लाना चाहता है...

- ... जैसे उसने सृष्टि के समय किया था।
  हमारी मध्यस्थता के द्वारा, वह मसीह यीशु में "नई सृष्टि" उत्पन्न करना चाहता है।
- ... जैसे अब्राहम और सारा के साथ, एक देश के जन्माने में किया था। वह हमारे द्वारा "आत्मिक इस्राएल" उत्पन्न करना चाहता है।
- ... जैसे मरियम के साथ, उसमें यीशु मसीह लाया था। वह हमारी मध्यस्थता के द्वारा आज लोगों में मसीह उत्पन्न करना चाहता है।
- ... जैसे लाज़र के पुनरुत्थान के साथ हुआ था। वह हमारी मध्यस्थता के द्वारा, मृत्यु में से जीवन लाना चाहता है।
- ... जैसे गतसमनी में, जब मसीह में हमारे उद्धार का उत्पन्न हुआ था। वह हमारी मध्यस्थता के द्वारा उस काम को दोबारा उत्पन्न करना चाहता है।
- ... जैसे पतरस के द्वारा लोग चंगे हुए थे। वह हमारी मध्यस्थता के द्वारा लोगों को चंगा करना चाहता है। वह उनमें जीवन लाने के लिए उन पर मँडराना चाहता है।

न केवल पवित्र आत्मा उद्धार और चंगाई के लिए प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना के द्वारा कार्य करना चाहता है; बल्कि विश्वासियों को परिपक्व और विकसित करने के लिए भी प्रसव-पीड़ा की जानी चाहिए। पौलुस ने गलातियों 4:19 में कहा, "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।" वह गलातियों को अपने बच्चे पुकार रहा था। यह इसलिए था क्योंकि वह पहले भी एक बार उनके प्रसव-पीड़ा सह चुका था। उसकी पहली प्रसव-पीड़ा से उनका नया जन्म हुआ था। तब उसने कहा वह दोबारा प्रसव-पीड़ा में है ताकि उन में मसीह का रूप बन जाए। वे लोग पहले ही नए जन्मे हुए थे। पौलुस उनके परिपक्व होने के लिए दोबारा प्रसव-पीड़ा में था। यह ऐसी मध्यस्थता है जिसे हम भी कर सकते हैं। हम अपनी प्रार्थनाओं द्वारा विश्वासियों को परिपक्व होने में सहायता कर सकते हैं।

कई अस्पतालों में "आईसीयू" होता है। कभी मरीज होते हैं जो बहुत बीमार हैं, या जिनकी गम्भीर शल्यक्रिया हुई है। कभी-कभी शल्यक्रिया शरीर के प्राणाधार अंगों का प्रतिरोपण होता है, जैसे कि लिवर, किडनी या हृदय। इस स्थान पर विशेष प्रशिक्षण पाए हुए कर्मचारी होते हैं जो मरीजों पर करीबी नज़र रख सकते हैं। जब शल्यक्रिया सफल भी होती है तब भी मरीज "नाजुक परन्तु स्थिर स्थिति" में होते हैं। उन्हें तब तक आईसीयू में रखा जाता है जब तक उनकी शक्ति लौट नहीं आती।

प्राणाधार अंगों का आत्मिक प्रतिरोपण भी होता है, जब लोग मसीही बनते और नए हृदय प्राप्त करते हैं। प्रभु में बढ़ने के लिए, उन्हें गहरी देखभाल मिलनी चाहिए। जन्माने की प्रक्रिया का एक अंश होना उत्तेजक बात है। लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रार्थना द्वारा लाना रोमाँचक होता है। परन्तु, उनकी "नाजुक, परन्तु स्थिर स्थिति" में उनके लिए मध्यस्थता करना भी आवश्यक है। जब प्रभु ने मुझे यह सत्य सिखाया, उस समय मैं चार लोगों के साथ काऊन्सलिंग कर रहा था जो काफी कठिनाई में थे। उन में से तीन आत्महत्या की धमकी दे रहे थे। मैं इन लोगों के साथ हर दिन कई घंटे खर्च कर रहा था। मैं उनकी समस्याओं में उनकी सहायता कर रहा था। कभी-कभी वे मुझे फोन करते और कहते कि वे अभी अपनी जान लेने वाले हैं। मुझे याद है एक ने मुझे रात दो बजे फोन किया। उसने कहा, "मैं ने अपने सिर पर बन्दूक लगा रखी है। मैं इसी समय अपने सिर को उड़ाने वाला हूँ।" हालाँकि उसने अपने को मारा तो नहीं परन्तु यह मेरे लिए तनावपूर्ण था। इसी समय के दौरान, प्रभु ने मुझे दिखाया कि हमारी प्रार्थनाएँ पवित्र आत्मा को लोगों पर मँडराने, और उन में जीवन डालने देती हैं। उसने इन शब्दों को मेरे हृदय में बिलकुल साफ-साफ कहा: "मेरे पवित्र आत्मा के लिए उनके ऊपर मँडराने और उनमें जीवन लाने के लिए प्रार्थना में समय बिताओ। उनके साथ बहुत बात करने के बजाय ऐसा करो। तब तुम कहीं अधिक परिणाम देखोगे।"

मेरी आत्मा ने "हाँ" कहा। मैं हर दिन उनके लिए प्रार्थना में कुछ घंटे बिताने लगा। मेरी अधिकाँश प्रार्थना आत्मा में थी। मैं कुछ इस प्रकार कहता था, "पिता, मैं जय को तेरे पास लाता हूँ। मैं माँगता हूँ कि पवित्र आत्मा जाकर उस के ऊपर मँडराए और उस में जीवन लाए।" फिर मैं आत्मा में प्रार्थना करने लगता था (अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना - 1 कुरिन्थियों 14:14 देखो)। मैं तुरन्त परिणाम देखने लगा। परिपक्वा शीघ्र आई। लगभग रात भर में बन्धन टूट कर गिरने लगे। इन लोगों के जीवनों में विजय मिलने लगी। यह अदभुत था। क्या हो रहा था? मेरी प्रार्थनाओं के द्वारा पवित्र आत्मा इन लोगों के जीवनों पर मँडरा रहा था और उनमें उसका सामर्थ्य और जीवन डाल रहा था।

आत्मा की बारिश छोड़ना

बाइबल दूसरी चीजों के लिए भी प्रसव-पीड़ा की बात करती है। 1 राजा 18 में, एलिय्याह ने सात बार बारिश के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना करते समय जो मुद्रा उसने अपनाई थी प्रसव-पीड़ा में एक स्त्री की थी। प्रतीकार्थ स्पष्ट है। एलिय्याह प्रसव-पीड़ा में था। वह किसी चीज को जन्म दे रहा था। एलिय्याह की मुद्रा हमारे लिए जन्माने वाली प्रार्थना का प्रतीक है। नहीं तो बाइबल हमें एलिय्याह की प्रार्थना के समय की मुद्रा के बारे में क्यों बताती? बारिश लाना परमेश्वर की इच्छा थी। बारिश का समय भी परमेश्वर का समय था। परन्तु, किसी को पृथ्वी पर प्रार्थना के द्वारा बारिश को "जन्म" देना था।

इस उदाहरण में, प्रवस-पीड़ा ने बारिश लाई। इस कहानी में तस्वीर को देखो। आकाल इस्राएल के आत्मिक सूखेपन का प्रतीक है। बारिश परमेश्वर की आशीष का प्रतीक है। हम कह सकते हैं हमारी प्रसव-पीड़ा आत्मिक रूप से सूखे लोगों और स्थितियों पर आत्मा की "बारिश" लाती है। वही सामर्थ्य जिसने आत्मा के मँडराने के द्वारा सृष्टि की रचना की थी कलीसिया में रखी गई है। एलिय्याह के समान, हमें विश्वास करना चाहिए कि मात्र मनुष्यों की प्रार्थनाएँ काफी कुछ कर सकती हैं।

करोड़ों खोए हुए लोग हैं जो परमेश्वर के राज्य में उनके जन्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें अपनी मध्यस्थता के द्वारा पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को कार्य करने देना है। हमें आत्मा को मँडराने देना है। हम परमेश्वर के राज्य में पिता के जन्माने की प्रक्रिया के एक महत्त्वपूर्ण अंश हैं। जैसे हम प्रसव-पीड़ा की प्रार्थना करेंगे, पवित्र आत्मा मसीह के समाप्त कार्य का फल उत्पन्न करेगा।

मनन के लिए प्रश्न

1. प्रसव-पीड़ा के हमारे कमज़ोर विचार ने मध्यस्थता में कैसे बाधा डाली है?
2. उत्पत्ति 1:1-2, व्यवस्थाविवरण 32:10-18, लूका 1:35 और प्रसव-पीड़ा में सम्बंध समझाइए।
3. जब हम पवित्र आत्मा के मँडराने की बात करते हैं हमारा क्या अर्थ है?
4. कब और कहाँ एक व्यक्ति प्रसव-पीड़ा में हो सकता है? किस चीज के लिए कोई प्रसव-पीड़ा में हो सकता है? क्या आप कोई स्थिति सोच सकते हैं जिसमें परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं के द्वारा कुछ जन्माना चाहेगा?
5. क्या परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनता है?

अध्याय 9 – पेशावर पहलवान

अदभुत "भाई" और उसका दुभाषिया

मैं विदेश में प्रचार कर रहा था और एक दुभाषिए के द्वारा बोल रहा था। मैं अँगरेजी में एक वाक्य बोलता और वह उसे स्थानीय भाषा में अनुवाद कर देती। मुझे लगा मैं प्रचार का एक बहुत अच्छा काम कर रहा था। मुझे लगा मैं वन्डरफुल ब्रदर्स फ्रटरनिटी आफ वर्ल्ड चेन्जर्स इन्टरनेश्नल में परमेश्वर की नवीनतम जोड़ी गई चीज हूँ। लोग मेरे हर शब्द को लपक ले रहे थे। तब मैं ने अपनी अच्छी आवाद में जोर से कहा, "यदि तुम शैतान का सामना करोगे तो वह भाग जाएगा! आप में से कितने अन्धकार के राज्य से कभी-कभार बात करते हैं?" मैं ने सोचा मैं अच्छा काम कर रहा हूँ। परन्तु, एक समस्या थी। मेरी दुभाषिया मेरी धर्मविद्या से सहमत नहीं लग रही थी। उसने मेरी ओर क्रोध के साथ देखा और कहा, "मैं इसे अनुवाद नहीं करूँगी!"

उसके शब्दों ने जो मैं बोल रहा था उसके प्रवाह में रुकावट डाली, "क्या?" मैं ने कहा।

"मैं इसे नहीं कहूँगी", अपने चेहरे पर तेवर के साथ, उसने कहा।

"तुम्हारा क्या अर्थ है तुम इसे नहीं कहोगी? तुम्हें वही कहना है जो मैं कह रहा हूँ।"

"नहीं, मैं नहीं कहूँगी।"

"क्यों नहीं?" मैं ने पूछा।

"मैं इसमें विश्वास नहीं करती", उसने दृढ़ता के साथ कहा।

"परन्तु, बाइबल इसे करने को कहती है।"

"कहाँ?", उसने चुनौती दी।

"याकूब 4:7", मैं ने उसे बताया।

"देख लो, यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करती।"

अब, ध्यान में रखिए कि हम कलीसिया से भरे लोगों के सामने खड़े थे। वे अदभुत भाई और उसके दुभाषिए के बीच हो रही इस अप्रिय बातचीत को देख रहे थे।

बाइबल स्कूल में शिक्षकों ने मुझे इसके लिए तैयार नहीं किया था। जैसे मैं खड़ा सोचने लगा कि आगे क्या करूँ, वह बाइबल में याकूब 4:7 खोजने लगी। उसे खोजने में सदियों लग गईं। तब उसने अपनी भाषा में लोगों के लिए पढ़ा ... मुझे लगता है। वह सम्भव है उन्हें बता रही होगी कि मैं कितना मूर्ख हूँ। हम ने जारी रखने का प्रयास किया। परन्तु, वह मुझे कोई और वचन उद्धरण करने नहीं दे रही थी। जैसे मैं एक वचन बोलता, वह उसे खोजने में अपना समय लेती। तब उसे पढ़ती ... मुझे लगता है। मुझे पता लगाने में अधिक समय नहीं लगा कि वह बाइबल से भली-भाँति परिचित नहीं थी। इसलिए मैं वचनों को बिना उनका संदर्भ दिए बोलने लगा। मैं नहीं चाहता था वह उन्हें पहचाने कि वे बाइबल के वचन हैं। वह अनजाने में आयत बोलती थी। तब मैं उसकी ओर देखकर मुस्कुराता और कहता, "यह ... इसमें था", और संदर्भ बता देता। इस पर मुझे बड़ी ही गैर-आत्मिक आँखों से घूरती। हम सभा का प्रवाह वापस नहीं ला सके! क्या आप या आपकी मण्डली मध्यस्थता और आत्मिक युद्ध की ओर ऐसा की रवैया रखते हैं ? यदि हाँ तो, यह शिक्षा आपको स्वतंत्र करेगी और परमेश्वर की मध्यस्थता की सेना में जोड़ देगी।

मध्यस्थता में क्या हो रहा है?

हमारी परिभाषा के अनुसार, मध्यस्थता में दो बहुत ही भिन्न क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। एक **मेल-मिलाप कराना** है, दूसरा **अलग करना** है। एक **तोड़ना** है, दूसरा **जोड़ना** है। एक **दूर करना** है, दूसरा **मिलाना** है। ये वह चीजें हैं जिन्हें मसीह ने उसके मध्यस्थता के काम के द्वारा किया है। यह वह है जो हम उसके काम के अपने क्रम में करते हैं। इसे समझना महत्त्वपूर्ण है कि हमारी अधिकतर मध्यस्थता दोनों का संयोजन होना चाहिए।

अनेक मसीहियों का प्रार्थना का विचार यह है कि उन्हें पिता से केवल कुछ करने को कहना है। परन्तु मध्यस्थता की प्रार्थना उससे कहीं अधिक है। अनेक बार प्रार्थना में आत्मिक "युद्ध" या "कुश्ती" सम्मिलित होती है। इस प्रकार की प्रार्थना यीशु की कलवरी की विजय को लागू करती है। या जैसा किसी ने कहा है: "यीशु के दोनों पहलू देखना प्रार्थना के दोनों पहलू देखना है। यह दया की आवश्यकता को देखना है क्योंकि लोगों को कितनी कठिनाइयाँ होती हैं। यह, जब हम शैतान के विनाशक तरीकों को देखते हैं, क्रोध के स्थान और समय को सीखना भी है। जब पवित्र आत्मा आक्रमण करने को कहता है, तब हमें साहस को सीखना है।"

मेरे दुभाषिए को सिखाया नहीं गया था कि आत्मिक युद्ध कैसे करना है। इसलिए, वह इसमें विश्वास नहीं करती थी। कई मसीही भी वैसे ही हैं। वे विश्वास करते हैं कि यीशु ने शैतान से निपट लिया है; इसलिए हमें उसके विषय में परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरे विश्वास करते हैं कि हमारे कार्य, पवित्र जीवनशैली और आज्ञापालन शैतान को बाँध देते हैं। वे विश्वास करते हैं कि हमें शैतान या उसकी दुष्टात्माओं से बात नहीं करनी है। दूसरे विश्वास करते हैं कि हम दुष्टात्माओं से बात कर सकते हैं परन्तु केवल लोगों में ही। वे कहते हैं, हम दुष्टात्माओं को स्थानों या स्थितियों में आज्ञा दे या डाँट नहीं सकते हैं। इस अध्ययन में मेरी मनसा आत्मिक युद्ध और मध्यस्थता का सम्बंध समझाना है। अगले अध्याय में, हम अविश्वासियों के लिए युद्ध पर विशेषकर बात करेंगे।

पागा में युद्ध सम्मिलित है

मध्यस्थता (पागा) शब्द को युद्ध से अलग करना असम्भव है। बाइबल में पागा को युद्ध के सम्बंध में 15 बार उपयोग किया गया है। हिंसा और युद्ध शब्द के मूल में जुड़े हुए हैं।

पागा को युद्ध के सम्बंध में भिन्न तरीकों से अनुवाद किया गया है। इसका अर्थ हो सकता है: "आक्रमण", "टूट पड़ा" या "मार गिराना" (न्यायियों 8:21; 1 शमूएल 22:11-19; 2 शमूएल 1:11-16 देखो)। इसे कभी भी मत भूलना - मध्यस्थता (पागा) में युद्ध सम्मिलित है!

"असम्भवता का सामना करने का एक तरीका है। इस पर आक्रमण करो!... सकारात्मक शब्द बोलकर नहीं... क्रोध में नहीं... संयम के द्वारा नहीं। असम्भवता का हिंसा के साथ आक्रमण करो!" यह आत्मिक शत्रुओं के विरुद्ध मानवीय शक्ति की हिंसा नहीं है। यह प्रार्थना में हिंसक होना है। युद्ध को मध्यस्थता से अलग करने का प्रयास मत करो। कई स्थितियों में समस्या का असली कारण आत्मिक या शैतानी होता है। "क्योंकि हमारा मल्लयुद्ध लहू और मांस के साथ नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं" (इफिसियों 6:12)।

हम शैतान और दुष्टात्माओं पर अधिक बल देने के विरुद्ध रखवाली करने की बुद्धि को मानते हैं। दूसरी ओर, हमें बहाना करने की गलती नहीं करनी है कि ऐसी चीजें बाधा डालने, अत्याचार करने, बाँधने और यातना देने के लिए नहीं हैं। इफिसियों 6:12 पढ़ते समय कई लोग "हमारा मल्लयुद्ध... नहीं है" ही देखते हैं। वे युद्ध नहीं चाहते इसलिए वे बाकी की आयत नहीं पढ़ते।

अज्ञानता कीमती है

आओ हम शैतान और उसकी युक्तियों से अज्ञानी न रहें। 2 कुरिन्थियों 2:11 हमें बताता है, "कि शैतान का हम पर दाँव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।" यूनानी भाषा में "अनजान" शब्द "agnoeo" है। इसका अर्थ है: "ज्ञान या समझ के

बिना।" अनदेखा करना शब्द भी वहीं से मिलता है। इस आयत में हम से आग्रह किया गया है कि हम, जहाँ शैतान का सम्बंध है अनजान न रहें या अनदेखा न करें या समझ के बिना न रहें। यूनानी में "युक्तियाँ" है "noema"। इसका अर्थ है: "विचार"। दूसरे शब्दों में, आयत कह रही है, "शैतान जिस प्रकार सोचता है उसके बारे में नासमझ मत रहो - उसकी योजनाओं, षड्यन्त्रों और युक्तियों के बारे में अनजान मत रहो।" नहीं तो वह हमारा लाभ उठाएगा। क्या यहाँ एक सूक्ष्म प्रतिज्ञा नहीं ? यदि परमेश्वर कहता है कि हम शैतान की युक्तियों से अनजान न रहें, तब तो वह उन्हें हम पर प्रकट करना चाहता होगा। क्या होगा यदि हम उसकी युक्तियों से अनजान हैं ? वह हमारा "लाभ" उठाएगा। "लाभ" के लिए यूनानी शब्द "pleonekteo" है। इसका अर्थ है: "बड़ा भाग लेना या पकड़ना।" किस चीज का बड़ा भाग ? लगभग सब चीजों का - हमारा घर, विवाह, समाज, रुपया-पैसा, सरकार, देश और भी दूसरी चीजें। क्या आपको कभी छोटा भाग मिला है ? Pleonekteo का अर्थ यह भी है: "अधिक पहुँच।" मुक्केबाजी में, जिस व्यक्ति की लम्बी पहुँच है लाभ में होता है और अकसर अधिक प्रहार कर सकता है। शब्द का अनुवाद "लाभ कमाना" भी किया गया है। शैतान उनसे बहुत लाभ कमा लेता है जो उसके अतिक्रमण या युक्तियों से अनजान हैं।

पौलुस का लाभ उठाया गया

प्रेरित पौलुस का लाभ उठाया गया था। एक समय सुसमाचार के फैलाने पर चल रहे युद्ध में शैतान ने लाभ उठाया था। 1 थिस्सलुनीकियों 2:18 में पौलुस कहता है: "हम ने... तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा।" हम जानते हैं पौलुस ने जितने युद्ध हारे हैं उनसे अधिक जीते थे। परन्तु कभी-कभी शैतान उसकी योजनाओं को व्यर्थ करने में सफल हुआ था। कृपया ध्यान दो कि आयत यह नहीं कहती कि पौलुस को जहाँ जाना था उसके विषय में परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया था। यह स्पष्ट कहता है कि शैतान ने उसे रोका था।

ऐसे लोग भी हैं जो विश्वास करते हैं कि शैतान वही कर सकता है जो परमेश्वर उसे करने देता है। वे कहते हैं कि हमें शैतान को अनदेखा करना है। ऐसों को 2 कुरिन्थियों 2:11 और 2 थिस्सलुनीकियों 2:18 पढ़ना चाहिए। परमेश्वर शैतान को अनदेखा नहीं करता, और न ही हमें करना चाहिए। शैतान निश्चित रूप से ऐसा बहुत कुछ करता है जिसे करने की अनुमति परमेश्वर ने नहीं दी है।

परमेश्वर ने नियम और सिद्धान्त बनाए हैं जो पृथ्वी का संचालन करते हैं। इनमें से कुछ बोने और काटने, कारण और प्रभाव और मनुष्यों की स्वतंत्र इच्छाशक्ति के नियम हैं। हमें इन नियमों का सम्मान करना चाहिए। हम उन्हें कैसे इस्तेमाल करते हैं दिखाएगा कि हम कितना काटेंगे और क्या अनुभव करेंगे। शैतान भी इन नियमों को समझता है और जहाँ सम्भव हो उसके लाभ के लिए इस्तेमाल करता है।

शैतान की छिपी हुई युक्तियाँ सफल होती हैं

मैं ने एक सेवक को एक नौजवान के छुटकारे के बारे में बताते सुना जिसके लिए उसने अनेक बार प्रार्थना की थी। ऐसा लगता था कि इस जवान का एक बहुत ही कठिन जीवन था। उसे एक नौकरी मिलती, फिर उससे शीघ्र ही छूट जाती। वह कुछ समय प्रभु के साथ चलता, फिर मुड़ जाता। यह चक्र बारम्बार होता रहता था। कितनी भी प्रार्थना उसके लिए कोई अन्तर नहीं ला रही थी। एक दिन जब यह सेवक उस जवान के लिए प्रार्थना कर रहा था, प्रभु ने उसे तीन दुष्टात्माओं की तस्वीर दिखाई। वे उसके पीछे-पीछे हर स्थान पर जाते थे। वे उसके अन्दर नहीं थे, परन्तु उसे प्रभावित करने के लिए सदा उसके साथ-साथ रहते थे। सेवक ने उन तीनों पर लिखे नाम देखे, जो उनके काम का वर्णन करते थे। एक-एक करके, उसने उनको यीशु के नाम में बाँधा और नौजवान को अकेला छोड़ देने की आज्ञा दी। तब से लकर, सब कुछ बदल गया। जवान का जीवन ठीक हो गया। सफलता मिली। आखिरकार वह एक धनी व्यवसायी बन गया, और सेवा में भी था। वह आज भी प्रभु के साथ चल रहा है।

मसीहियों को शक्ति देने और परिपक्व करने के लिए पिता से कहना अच्छा और सही भी है। परन्तु, इस जवान को कुछ अधिक की आवश्यकता थी। दुष्टात्माओं के प्रभाव ने उसकी सारी समस्याओं को उत्पन्न किया था। वह अपने आप विजयी नहीं हो पा रहा था। उसके लिए अवश्य था कि कोई अधिकार उपयोग करता और उनके प्रभाव से छुटकारा लाता। इस मामले में शैतान को लाभ मिला हुआ था। जब तक उसकी युक्तियाँ छिपी हुई थीं, वह काफी हद तक उस जवान का जीवन वश में किए हुए था।

<u>निम्नलिखित चीजें निश्चित हैं:</u>

- हम एक बहुत ही असली युद्ध में हैं (2 कुरिं. 10:4; 1 तीमु. 1:18)।
- हम इस युद्ध में सिपाही हैं (भजन 110:2-3; 2 तीमु. 2:3-4)।
- हमें अन्धकार के राज्य के हर स्तर के साथ युद्ध करना है (इफि. 6:12)।
- हमें शैतान (और उसकी दुष्टात्माओं) का सामना करना है और वह हम से भाग जाएगा (याकूब 4:7; 1 पतरस 5:9)।

- हमें शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को पैरों तले रखना है। इसका अर्थ उन पर अधिकार उपयोग करना है (लूका 10:19; रोमियों 6:20)।
- हमें दुष्टात्माओं को निकालना है (मरकुस 16:17)।
- हमें शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से निपटते समय उन्हें बाँधने (रोकने) और खोलने (अनुमति देने) का अधिकार है (मत्ती 16:19)।
- हमारे पास अन्धकार के राज्य के जीतने के लिए सामर्थी हथियार हैं (2 कुरिं. 10:4; इफि. 6:10-20)।

परमेश्वर हमें इस सारे युद्ध के कार्यों को करने के लिए विस्तार से तरीके नहीं देता है। वह हमें विस्तार से निर्देश नहीं देता है। बदले में, उसने हमें एक paraklete - सहायता के लिए बगल में बुलाया हुआ: पवित्र आत्मा दिया है, जो "जैसे उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो" (1 यूहन्ना 2:17)।

इसलिए, जो सिद्धान्त उसने हमें दिए हैं, उन्हें जैसे पवित्र आत्मा हमें सामर्थ्य देता, अगुआई करता और सिखाता है हमें उपयोग करने हैं। उदाहरणार्थ, प्रभु हमें एक आराधना सभा को करने का एक विशेष तरीका नहीं देता है। यह महत्त्व का नहीं कि हम सब बिलकुल उसी तरीके से आराधना करें। परन्तु यह महत्त्व का है कि हम आत्मा और सच्चाई में आराधना करें। वह कलीसिया का प्रबंध करने का एक निश्चित तरीका नहीं देता। मसीह की देह के विभिन्न अंग इसे भिन्न-भिन्न तरीकों से करते हैं। बात यह नहीं कि हम सब उसी तरीके से शासन करें, परन्तु यह कि हमारी भक्त सरकार हो। <u>पवित्रशास्त्र में कुछ बहुत ही निश्चित निर्देश दिए गए हैं। परन्तु, बाइबल बिरले ही हमें कुछ करने को कहती है। बदले में, हमें सिखाया गया है कि हम पवित्र आत्मा को प्रभावित करने और मार्गदर्शन करने दें।</u> बहुत से तरीकों के बारे में कुछ भी पवित्र नहीं है। परन्तु महत्त्व का यह है कि हम अपनी मध्यस्थता और आत्मिक युद्ध पवित्रशास्त्र के अनुसार करें और कि हम इसे पवित्र आत्मा के नियंत्रण में करें। केवल वह ही जानता है कि हर स्थिति में क्या करना है।

एक पेशावर पहलवान बनो

आत्मिक युद्ध में यह इतने महत्त्व का नहीं कि हम कैसे मल्लयुद्ध करते हैं। महत्त्व का यह है कि हम मल्लयुद्ध करें। हमें अन्धकार की शक्तियों से जहाँ कहीं भी हम उनका सामना करें उत्साह के साथ निपटना है।

इफिसियों 6:12 कहता है: "क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेना से है जो आकाश में हैं।"

यूनानी शब्द "pros" यहाँ "से" अनुवाद किया गया है। यह "pro" शब्द से मिलता है। Pro का अर्थ है: दूसरों "के सामने" या "से श्रेष्ठ"। "Pros" का अर्थ यह भी है: "आगे कदम रखना; किसी चीज या किसी व्यक्ति के सामने होना।" इफिसियों 6:12 में एक पहलवान का आगे कदम रखने या अपने विरोधी का सामना करने का विचार है। परमेश्वर हम से कह रहा है, "आगे कदम बढ़ाओ और अन्धकार की शक्तियों का सामना करो। एक पेशावर पहलवान बनो!" वेट-लिफ्टिंग बॉडी-बिल्टर के समान जो विदेश भी गया था मत बनो। उसे एक गाँव के मुखिया ने पूछा कि उसने उसकी सारी पेशियों के साथ क्या किया। बॉडी-बिल्डर ने सोचा वह मुखिया को प्रभावित करेगा। उसने अपने फूली हुई पशियों को आकुंचन किया, और दिखाया कि उसने प्रतियोगित में कैसे प्रदर्शन किया था। उसके आश्चर्यजनक प्रदर्शन की प्रशंसा करके, मुखिया ने पूछा, "तुम ने इन्हें और किस काम लाया?" "बस इतना ही था", पेशीय पुरुष ने कहा। "इन बड़ी-बड़ी पेशियों का बस इतना ही उपयोग है?" मुखिया ने पूछा। "हाँ!" "क्या व्यर्थ है", मुखिया ने निराश होकर बुदबुदाया। "क्या व्यर्थ है!"

हम में से कितने इस बॉडी-बिल्डर के समान हैं। हम प्रभु में शक्तिशाली हैं। हम अपने विरोधी से निपटने के लिए लिए अच्छी तरह सज्जित हैं। परन्तु, हम अपनी शक्ति या अपने हथियार इस्तेमाल नहीं करते। प्रभु की बाट जोहो। वह आपको सिखाएगा और दिखाएगा कि अन्धकार की शक्तियों के साथ आपको मल्लयुद्ध में जीतने के लिए कौन सी नीति उपयोग करनी है।

मसीह की भक्ति

युद्ध अकसर भक्ति में से निकलता है। <u>क्या आपकी मसीह की ओर सच्ची और शुद्ध भक्ति है। यह हर चीज का जो हम करते हैं आरम्भ बिन्दु होना चाहिए।</u> "परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ" (2 कुरिन्थियों 11:3) जितना अधिक परमेश्वर के बारे में प्रकटीकरण हमें मिलेगा, उतनी अधिक सच्ची और शुद्ध मसीह की ओर भक्ति की आवश्यकता है। जितना बड़ा पेड़ होगा, उतनी गहरी उसकी जड़ें होनी चाहिए। जितना अधिक हम अपने आपको परमेश्वर के राज्य में ऊपर की ओर और बाहर की ओर फैलाएँगे, उतना अधिक गहरा मसीह के साथ हमारा सम्बंध होना चाहिए। हमें इन गहरी "जड़ों" की आवश्यकता है।

शैतान हमें मसीह के साथ हमारे सम्बंध से ध्यान भंग करना चाहता है। यदि वह ऐसा करने में सफल होता है तो हम पाएँगे कि हम धोखे में चल रहे हैं।

प्रतीक्षा करना सीखना – कार्य करने से पहले

"प्रभु की बाट जोहने" के बारे में पुराने नियम में तीन शब्द हैं जिनके भिन्न अर्थ हैं। पहला है "dumiyah", जिसका अर्थ है: "एक शान्त भरोसे के साथ चुपचाप बाट जोहना।" इसमें प्रभु में एक मजबूत, शान्त, भरोसे का विचार है। दाऊद भजन 62:1-2 में कहता है, "सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ, मेरा उद्धार उसी से होता है। सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है, मैं अधिक न डिगूँगा।"

दूसरा शब्द "chakah" का अर्थ है: "पालन करना" या "लालायित होना"। भजन 33:20 कहता है, "हम यहोवा का आसरा देखते आए हैं; वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है।" दाऊद यही महसूस कर रहा था जब उसने कहा, "मेरा मन तेरा प्यासा है।" (भजन 42:2; 63:1 देखो)। वह परमेश्वर की संगति के लिए लालायित था।

तीसरा शब्द "qavah" का अर्थ है: "उत्सुक अपेक्षा के साथ बाट जोहना।" इसका अर्थ: "मरोड़कर या गूथकर किसी चीज को इकट्ठा बाँधना।" Qavah का विचार "एक होने की उत्सुकता; इकट्ठा जुड़ना या गूथना" है। निम्नलिखित आयतें इसका उदाहरण हैं: "यहोवा की बाट जोहता रह; हियाब बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह" (भजन 27:14)। "परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे" (यशायाह 40:31)।

आओ अब तीनों शब्दों का अर्थ <u>"प्रभु की बाट जोहने"</u> के लिए लगाएँ: <u>एक मजबूत, शान्त भरोसे के साथ चुपचाप प्रभु की बाट जोहना - उसकी उपस्थिति के लिए लालायित होना और उत्सुकता से उसकी अपेक्षा करना, और यह जानना कि वह प्रकट होगा - तब जैसे तुम्हारा हृदय उसके साथ गूथकर जुड़ जाता है तो उसके साथ एक हो जाना।</u>

बाट जोहना और युद्ध

भजन 37:34, 40 में उनके लिए विजय की प्रतिज्ञा है जो प्रभु की बाट जोहते हैं।

"यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा; जब दुष्ट काटे जाएँगे, तब तू देखेगा ... यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है; वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्धार करता है, इसलिए कि उन्होंने उसमें शरण ली है।"

अच्छा दिखना, अभिषेक की कमी

लूका 10:40 में मरियम यीशु के पैरों के पास बैठी हुई थी, और मार्थ "सेवा करते करते घबरा गई।" घबरा गई के लिए अनुवाद किया गया यूनानी शब्द "perispao" है। इसका अर्थ है: "चक्र में घिसटते रहना।" यीशु के लिए सेवा भी "चक्र में घिसटना" हो सकती हैं - बहुत सारी गति... परन्तु कोई प्रगति नहीं। हमारी प्रार्थना और आत्मिक युद्ध भी एक बोझ बन सकता है जिसे हम घसीटते रहते हैं। यह कर्मकाण्डवाद और एक काम बन सकता है। यह ऐसा कुछ बन सकता है जिसे करना है और सहना है। <u>हम उसके लिए इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उसके साथ होने का समय नहीं मिलता।</u> हम अपनी सेवा को चक्रों में घसीटते रहते हैं। हम कहीं नहीं जाते और परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ प्राप्त नहीं करते।

कई वर्ष पहले मैं अपने जीवन में एक कठिन स्थान से गुज़र रहा था। मेरे एक प्रिय मित्र ने मुझे कहा, "मैं अपने मित्र के साथ तुम्हारे लिए आज प्रार्थना कर रहा था और परमेश्वर ने मेरे मित्र को एक तस्वीर दी।" मैं ने सोचा, "यीशु, धन्यवाद। मेरी समस्या का उत्तर आ रहा है।" वह बोलता रहा, "तस्वीर में, जमीन पर एक चक्र था। तुम उस चक्र पर चल रहे थे। तुम केवल चक्रों में चल रहे थे।" "यह परमेश्वर का वचन है मेरे लिए?" मैं ने पूछा। उसने उत्तर दिया, "हाँ, यही है। मुझे खेद है।" मैं ने कहा, "मुझे लगता है यह सही है। प्रभु, मैं यही कर रहा हूँ - चक्रों में घूम रहा हूँ। मैं व्यस्त हूँ, परन्तु कहीं नहीं जा रहा हूँ।" उसी समय मैं ने चलना बंद कर दिया और बाट जोहना आरम्भ कर दिया। तुरन्त, मैं प्रभु की उपस्थिति में आ गया।

अब आओ हम यीशु की मार्था और मरियम की कहानी में चलें। यीशु ने मार्था को देखा और कहा, "परन्तु एक बात आवश्यक है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा" (लूका 10:42)। "उत्तम भाग" यूनानी शब्द "agathos" से मिलता है। इसका अर्थ है: अच्छा और लाभकारी, उपयोगी, लाभकारी। Agathos उस अच्छे को बताता है जिसे मरियम ने चुना था। प्रभु कह रहा है, "यदि तुम मेरी बाट जोहने में समय बिताओ, मेरे पैरों के पास बैठो, तो मेरा अभिषेक तुम पर आएगा। तुम अच्छा न दिखोगे, परन्तु तुम कुछ लाभ के होगे - मेरी सेवा में लाभदायक।"

हम अकसर अच्छे दिखते हैं, परन्तु अभिषेक की कमी होती है। हमें उसकी उपस्थिति में बाट जोहनी और जो अभिषेक उससे बहता है उसे सोख लेना है। सब सेवा को परमेश्वर के साथ अपने प्रेम-सम्भंध में से निकलने दो। आपका युद्ध भी प्रभु की बाट जोहने के समयों में से, उसके पैरों के पास बैठने और उसके शब्द सुनने में से उत्पन्न होना चाहिए।

परमेश्वर का समय, परमेश्वर की शर्तें, परमेश्वर का तरीका

प्रभु की बाट जोहना हमें शैतान को प्रतिक्रिया दिखाने से रोके रखेगा। हमें शैतान की शर्तों या समयों पर कुछ नहीं करना है। युद्ध का समय और शर्ते परमेश्वर चुनता है। यरीहो में, यहोशू प्रभु के सामने आराधना में था (यहोशू 6 देखो)। परमेश्वर ने उससे कहाः आक्रमण करने से पहले छः दिन चलो। सातवें दिन तक प्रतीक्षा करो। एक क्षण भी पहले मत करो। तब तक कुछ मत जब तक मैं नहीं कहता। युद्ध का समय मैं चुनूँगा।"

शर्ते भी परमेश्वर ने चुनीं। "किसी को कैदी मत बनाओ। केवल राहाब जीवित रहेगी। लूट मेरी होगी। शर्तें मैं प्रभु चुनता हूँ; तुम नहीं: शैतान नहीं चुनता; कोई दूसरा नहीं चुनता। यदि तुम मेरे तरीके से करोगे, तुम सदा जीतोगे। यदि तुम अपने तरीके से या शैतान के तरीके से करोगे तो अपने आप को चक्रों में घूमते पाओगे।"

परमेश्वर ने समय, शर्ते और तरीका चुना। युद्ध आज्ञापालन से, न कि आवश्यकता से उत्पन्न होना चाहिए। हम अपने कप्तान के पीछे चलते हैं, पैर के अँगूठे के नहीं। कभी-कभी, परमेश्वर कहेगा प्रमुख चीज आराधना है, जैसा यहोशापात के साथ हुआ था (2 इतिहास 20:1-30 देखो)। आराधना फिलिप्पी जेल में पौलुस और सीलास के लिए भी कुंजी थी (प्रेरितों 16:16-36 देखो)।

रंगरलियाँ समय – शारीरिक समय

कई वर्ष पहले हम रंगरलियों के समय में एक शोरगुलवाली भीड़वाली सड़क पर सेवा कर रहे थे। रंगरलियाँ एक बेलगाम और पापी उत्सव है जिसमें अधिक शैतानी कार्य होता है। प्रभु ने हम 200 लोगों को चुपचाप सड़क पर चलने को कहा था। सारे क्षेत्र पर प्रभु का विस्मयकारी भय और परमेश्वर की उपस्थिति मँडराने लगी थी। प्रभु की विस्मयकारी उपस्थिति ने उसके शत्रुओं को चुप करा दिया था। सड़कों पर एक बहुत ही असली चुप्पी छा गई थी। परन्तु, दूसरे समय, प्रभु हमें एक भिन्न तरीके से ले गया था। हमें सड़क के बीच में से एक अच्छा आराधना का गीत गाते हुए चलना था। इस समय पापों के एहसास की एक आत्मा सड़क पर मँडराने लगी थी। पहले के समान, एक चुप्पी छा गई थी। ऐसा लगा था जैसे प्रभु ने नियंत्रण ले लिया था। एक समय पर हम अपने घुटनों पर होकर गाते रहे थे। जैसे हम घुटनों पर आराधना कर रहे थे, एक अजनबी दौड़कर हमारे चक्र में आया। वह चिल्लाकर बोला कि वह परमेश्वर को जानना चाहता है।

यह स्तुति युद्ध है! यह मध्यस्थता (पागा) भी है। याद रहे इस शब्द का अर्थ है: "शत्रु पर आक्रमण करना।" जैसे मसीह आराधना में विराजमान होता है, शत्रु स्वर्गीय स्थानों में सिंहासन से उतारा जाता है (भजन 22:3 और भजन 149:5-9 देखो)। जैसे हम प्रभु को ऊपर उठाते हैं, हम साँप को नीचे गिराते हैं।

क्षमा करने के द्वारा युद्ध करना

दूसरे समयों में, पवित्र आत्मा दया के कार्यों, देने या क्षमा करने के द्वारा युद्ध जीतने में हमारी सहायता कर सकता है। मैं एक बार समूह अ और समूह ब के कई लोगों के बीच एक मेलमिलाप के उत्सव का एक भाग था। हमारी योजना बहुस सरल थी। समूह ब के लोगों को पश्चाताप करना और समूह अ के लोगों से उनकी जमीन चुराने के लिए क्षमा माँगनी थी। समूह ब के पूर्वजों ने प्रतिज्ञाओं को तोड़ा था और उनके पूर्वजों की हत्या भी की थी। हमें क्षमा किया जाना था। समूह अ का एक व्यक्ति उसके लोगों के प्रतिनिधि के रूप में खड़ा हुआ। उसने हमें क्षमा किया और हमें इस देश में स्वागत किया। इसने आत्मिक क्षेत्र में कुछ तोड़ा। यह एक ठँडा, नीरस दिन था, परन्तु जैसे ही समूह अ के हमारे भाई ने क्षमा के शब्द बोले, सूर्य बादलों में से निकल आया और हम पर चमकने लगा। वह दिन दो जातियों के बीच मेलमिलाप के एक महान कार्य का आरम्भ था। क्यों? हमारा दीनता और प्रेम का कार्य भी युद्ध का एक कार्य था। इसने आत्मिक गढ़ों को ढा दिया। यह दीनता के द्वारा युद्ध था। यह उत्कट प्रेम था।

युद्ध में एकता

कभी-कभी पवित्र आत्मा एक व्यक्ति की अगुआई दूसरों के साथ जुड़ने में करती है ताकि वे शत्रु की पीठ तोड़ने के लिए सहमत हों। इस सदी के पहले भाग का एक प्रसिद्ध कलीसिया स्थापक निम्नलिखित कहानी बताता है जिस में एक बुखार की महामारी ने उस क्षेत्र की एक चौथाई जनसंख्या का नाश कर दिया था। आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त शवपेटियाँ नहीं थीं। इसलिए लोगों को कम्बलों में दफनाया जा रहा ता। यह एक भयंकर महामारी थी। एक सामर्थी मध्यस्थ प्रार्थना करने लगा। कई दिनों तक यह मध्यस्थ एक पेड़ के नीचे बैठे महामारी के विरुद्ध प्रार्थना करता रहा। कई बार उसने व्यक्ति को पूछा, "क्या समाधान मिल रहा है?" वह उत्तर देता, "अभी नहीं।" परन्तु एक दिन उसने कलीसिया स्थापक को कहा, "मुझे आज लगता है कि यदि मुझे विश्वास में थोड़ी

सहायता मिले तो मेरी आत्मा पार हो जाएगी।" वह अपने घुटनों पर हो गया और प्रार्थना में उस व्यक्ति के साथ जुड़ गया। जो आगे हुआ आश्चर्यजनक है। उसने कहा जैसे हम प्रार्थना करने लगे, प्रभु का आत्मा हम पर उतरा। मैं ने पाया कि मैं पेड़ के नीचे घुटनों पर नहीं हूँ। बदले में, मैं आत्मा में होकर पेड़ से दूर जा रहा था। मेरी आँखें धीरे-धीरे खुल गईं, और मैं ने आत्मा में एक भयानक दृश्य देखा। भेड़ो के झुण्ड के समान दुष्टात्माओं की एक विशाल भीड़ थी। मध्यस्थ पर भी आत्मा उतरा था। वह मुझ से आगे निकला, दुष्टात्माओं की सेना को शाप देने लगा, और उन्हें वापस नरक में खदेड़ रहा था। आगली सुबह जब हमारी नींद खुली, तो बुखार की महामारी जा चुकी थी।

चिल्लाने का समय

सच में, आक्रमणशील मध्यस्थता का एक समय होता है। आत्मिक युद्ध में उत्कट होना ठीक है। मैं समझता हूँ कि कई प्रार्थना में ऐसे चरम की क्रिया से पीछे हटेंगे। कुछ के लिए शत्रु पर दौड़ना और चिल्लाना सामान्य नहीं है। परन्तु ऐसी आत्मिक तीव्रता का एक समय है। एक से अधिक बार मैं ने अपने आप को मध्यस्थता में शत्रु पर चिल्लाते पाया है। मैं नहीं मानता कि दुष्ट शक्तियों को डाँटने के लिए एक निश्चित आवाज के स्तर की आवश्यकता है। परन्तु, पवित्रशास्त्र ऊँची आवाज की गुँजाइश रखता है। बाइबल तो बताती है कि कभी-कभी ऊँची आवाज आत्मा में कुछ खोलती है।

- ज़रूब्बाबेल पर्वत के लिए अनुग्रह चिल्लाया था (जकर्याह 4:7)।
- इस्राएल यरीहो पर चिल्लाया था (यहोशू 6:16)।
- गिदोन की सेना युद्ध से पहले चिल्लाई थी (न्यायियों 7:20)।
- यीशु क्रूस पर चिल्लाया था (मत्ती 27:50)।
- यीशु ने जब लाज़र को मरे में से जीवित किया था तब वह जोर से चिल्लाया था (यूहन्ना 11:43)।
- पौलुस ने लूस्त्रा में एक अपंग व्यक्ति को चंगा होने की आज्ञा जोर से दी थी (प्रेरितों 14:8-10)।

मैं यह दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ कि कभी-कभी ऊँचा, तीव्र युद्ध आवश्यक है। इस्राएल के राजा, यहोआश पर चिल्लाया गया और वह हारा था। यह उसके तीर मारने में आत्मिक तीव्रता की कमी के कारण था (2 राजा 13:14-19)। दूसरे समयों में, प्रभु की योजना उसके वचन को तलवार के समान बोलने की हो सकती है। वह चाहेगा कि हम स्थितियों में आत्मिक वचन बोलें। जब यह पवित्र आत्मा की अगुआई में होता है, तब यह कार्य शत्रु के लिए विनाशकारी होता है।

एक बार मैं तीन लोगों के बीच शान्ति लाने का प्रयास कर रहा था। उन में से एक ने मुझे बताया कि वह इतना क्रोधित है कि वह दूसरों के साथ जिनके साथ उसका झगड़ा था हिंसक होने की योजना कर रहा है। मैं जानता था वह सच बोल रहा है। यदि वह ऐसा करता है तो कोई बहुत घायल हो जाएगा और दूसरे जेल में होंगे। मैं रात देर तक परमेश्वर से उसे रोकने के लिए विनती करता रहा। दो बजे प्रभु ने इन शब्दों से मुझे झटका दिया: "तुम मुझे यह करने के लिए याचना क्यों कर रहे हो? तुम इस स्थिति में मेरी इच्छा जानते हो। समस्या क्रोध और हिंसा की एक आत्मा पैदा कर रही है। इसे बाँधो! स्थिति में मेरा वचन और इच्छा घोषित करो।" मैं ने वही किया जो उसने कहा था और सोने चला गया। अगली सुबह, सबके हृदय बदल गए थे। जहाँ पिछली रात क्रोध और हिंसा का राज्य था, अब शान्ति और मेल काम कर रहे थे। क्या हुआ था? मध्यस्थता (पागा) ने कार्य किया था। भजन 110:2 हुआ था: "तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।"

अपनी मीरास को पकड़ लेना और सुरक्षित करना

इस स्थान पर सावधानी का एक शब्द आवश्यक है। आत्मिक युद्ध में, हमें याद रखना है कि हम शैतान को हराने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। वह पहले ही हारा हुआ है। हमें उसे दोबारा हराने की आवश्यकता नहीं है। हम क्रूस की विजय का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारी सारी प्रार्थना और मध्यस्थता जो मसीह ने **उसकी** मध्यस्थता के द्वारा किया है उसे जारी रखती हैं। मसीह ने शैतान पर आक्रमण किया और उसके सिर को कुचल दिया। वैसे ही जैसे उद्यान में प्रतिज्ञा की गई थी: "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)। इब्रानी शब्द "rosh" यहाँ "सिर" अनुवाद किया गया है। इसका अर्थ प्रभुता या अधिकार है। भजन 2:9 मसीह की शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर विजय की भविष्यद्वाणी है: "तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े टुकड़े करेगा, तू कुम्हार के बर्तन के समान उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।"

उत्पत्ति 3:15 और भजन 2:9 दोनों एक ही संदेश लाते हैं। जब मसीहा आएगा तो वह शैतान और अन्धकार की शक्तियों के अधिकार को कुचलेगा और चकनाचूर कर डालेगा, और उन्हें बिखेर देगा। इब्रानियों 2:14 यीशु के बारे में कहता है, "...वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर

दे।" हाँ! मसीह आया और उसने वही किया - शैतान के अधिकार को काँच के टुकड़ों के समान तोड़ डाला और बिखरा दिया। शैतान और नरक की सारी सेना सम्पूर्ण रूप से हरा दी गई थी।

तीमुथियुस को 1 तीमुथियुस 6:12 में कहा गया था, "विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले...।" तीमुथियुस के पास पहले ही अनन्त जीवन था फिर भी उसे पकड़ लेने को कहा गया। उसी प्रकार, हमें भी मसीह की विजय को जो उसने पहले ही जीती है "पकड़ लेना" है। जो उसने हमें दिया है, उसे हमें विश्वास के द्वारा पकड़ लेना है और आत्मिक हथियारों द्वारा उस विजय को अन्धकार की शक्तियों पर लागू करना है।

पुराने नियम में, इस्राएल को परमेश्वर ने उनकी मीरास दी थी। परन्तु, उन्हें फिर भी वहाँ जाकर उसे कब्जे में लेना था। इस्राएल की मीरास तब तक उनकी नहीं थी जब तक वे वहाँ जाकर उसके लिए लड़े नहीं थे। हमारे लिए भी वैसा ही है। हमारी मीरास हमारी झोली में नहीं गिर पड़ेगी। हमें भी इसके लिए लड़ना होगा। हमें युद्ध में विश्वास और धैर्य के साथ मल्लयुद्ध करना, सामना करना और प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करना होगा। शारीरिक युद्ध में, सेना क्षेत्र को लड़ कर अपने कब्जे में करती है। हमें भी मसीह में अपनी मीरास को पकड़ कर अपने कब्जे में करना है। हमें इसे किस से पकड़ना है? निश्चय ही, परमेश्वर से नहीं! हमें इसे संसार, शरीर और शैतान से लेना है।

आपका अकसर ऐसी किसी स्थिति से सामना होगा जो सीधी नरक से आई है। जब आपका सामना होगा, तब आपको फैसला करना होगा कि क्या आप इससे निपटेंगे या नहीं निपटेंगे। जो आप करने का फैसला करेंगे परिणाम के लिए अत्यावश्यक है। परमेश्वर आपको पृथ्वी पर नारकीय स्थितियों से सीधे-सीधे और जानते हुए निपटने देता है। आप उसे पृथ्वी पर बाँध सकते हो जिसे पहले ही स्वर्ग में बाँधा गया है! (मत्ती 16:19; लूका 10:18 देखो)

यह आश्चर्यजनक है! कितना कुछ हमारे आज्ञापालन और व्यक्तिगत क्रिया पर निर्भर करता है। मसीह में हमारी मीरास अपने आप नहीं आती। हमें युद्ध करना है!

उसने आगे कदम बढ़ाया

एक जवान स्त्री ने उसके शहर के आत्मिक युद्ध के विषय में निम्नलिखित गवाही बताई।

मुझे लगा कि प्रभु मुझे, मध्यस्थों के एक दल के साथ, चलते हुए प्रार्थना करने को कह रहा था। इसका अर्थ था शहर के एक भाग में एक मसूह के रूप में चलना और प्रार्थना करते जाना। हमें एक विशेष मार्ग लेना था। कुछ तैयारी आवश्यक थी। पहला, मैं ने इसके विषय में अपने पास्टर से बात की। फिर, मैं उस मार्ग को अपनी कार में देखने गई जिस पर हम चलने वाले थे। जो हम अपनी चलते हुए प्रार्थना में करने वाले थे, यह उसका अभ्यास था। मैं एक सिनेमा के पास पहुँची जो अश्लील चलचित्र दिखाते थे। पवित्र आत्मा मुझे निश्चित निर्देश देने लगा। उसने मुझे अश्लील चित्रों और कामुकता की आत्मा को निकालने को कहा। मैं ऐसा ही किया। उसने मुझे आत्मा में प्रार्थना करने को भी कहा। कुछ समय के बाद उसने मुझे प्रार्थना करने से छुट्टी दे दी, और मैं आगे बढ़ गई।

दो दिन के बाद प्रभु ने मुझे बताया क्या हुआ था। मैं ने रेडियो पर सुना कि शहर ने इस चलचित्र को उसके दरवाजे बंद करने की आज्ञा दी थी। मेरे प्रार्थना करने के दूसरे दिन, शहर ने आकस्मिक निरीक्षण किया था। सिनेमा के मालिक कानून के विरुद्ध गए थे और उन्हें स्थाई रूप से बंद करने की आज्ञा दी गई थी। इसमें विशिष्ठ बात यह थी कि शहर ने कुछ की समय पहले निरीक्षण किया था। उस समय सिनेमा निरीक्षण में खरा उतरा था। परन्तु बिना चेतावनी के दोबारा निरीक्षण हुआ था। मैं जानती थी कि पूर्व में इस सिनेमा की दिवारों पर पवित्र आत्मा के "डाइनेमाइटों" के कई "परिवर्तन" लगाए हुए थे। परन्तु, अब "kairos" का समय था। दिवार परमेश्वर के सामर्थ्य के नीचे "गिर पड़ी" थी।

इस जवान स्त्री के समान हम सब भी आत्मा का कहना मानें। हम पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा कई "दिवारों" को गिरा दें!

प्रभुता का एक कानूनी तोड़ा जाना

कई कहते हैं, "यदि मसीह ने शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को हराया है तो हमें युद्ध की क्या आवश्यकता है? क्या मसीह ने शैतान की शक्ति ले नहीं ली है? क्या उसने शैतान को निहत्था और उसके कार्यों को नष्ट नहीं किया? क्या हम पहले ही शैतान की सामर्थ्य से छूट नहीं गए हैं?"

इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए हमें दो यूनानी शब्दों को देखना होगा। वे "exousia" और "dunamis" हैं। Exousia को अकसर अधिकार (हक) और dunamis को सामर्थ्य (शक्ति) अनुवाद किया जाता है।

अन्तर क्या है?

Exousia (अधिकार) का अर्थ है: तुम्हें कुछ करने का कानूनी अधिकार है।

Dunamis (सामर्थ्य) का अर्थ है: जो करने का तुम्हें अधिकार है, उसे करने की तुम्हें योग्यता है।

एक उदाहरणः एक 70 किलो का पोलीसवाला एक बॉर में जाता है जहाँ एक 125 किलो का पेशावर पहलवान पियक्कड़ झगड़े में लगा हुआ है। पोलीसवाले के पास शराबी पहलवान को गिरफ्तार करने का अधिकार (कानूनी अधिकार - exousia) है। प्रश्न यह है कि क्या उसके पास उसे गिरफ्तार करने की योग्यता है। सम्भवतः नहीं, यदि दूसरे उसकी सहायता करते हैं।

दूसरा उदाहरणः आप शहर में कार चला रहे हो। आप सिगनल के पास पहुँचते हो जो लाल है। यातायात का नियम कहता है सब ड्रायवरों को लाल सिगनल पर रुकना होता है। क्या सिगनल लाइट के पास आपको रोकने की सामर्थ्य है? नहीं! सिगनल के पास केवल अधिकार है - परन्तु सामर्थ्य नहीं है। जब सिगनल हरा जो जाता है तब आपको वहाँ से आगे बढ़ने का अधिकार (हक) है। परन्तु, उसी क्षण कार की मोटर बंद हो जाती है। आप पेट्रोल की टँकी में देखते हो और पता चलता है खाली है। आपके पास आगे बढ़ने का अधिकार (exousia) है परन्तु आपके पास सामर्थ्य (dunamis) नहीं है। आपकी कार बिना पेट्रोल के नहीं चलेगी - तो आपने अपनी सामर्थ्य खो दी है।
हमें अधिकार और सामर्थ्य चाहिए - और यीशु ने दोनों की प्रतिज्ञा की है। "देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि नहीं होगी" (लूका 10:19)।
"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" (प्रेरितों 1:8)।
उसे ले लो जो उसने दिया है। आप यीशु द्वारा दिए exousia और dunamis के साथ लड़ सकते और जीत सकते हो।

मसीह और शैतान

हमें उसे समझने की आवश्यकता है जो मसीह ने किया है जब उसने शैतान को हराया था। शैतान का विनाश उसकी प्रभुता या अधिकार का कानूनी तोड़ा जाना था। बाइबल कहीं नहीं कहती कि मसीह ने हमें शैतान की **शक्ति** से छुड़ाया है। यह कहती है कि उसने हमें उसके **अधिकार** (यूनानीः exousia) से छुड़ाया है। दूसरे शब्दों में, शैतान के पास उसकी शक्ति (dunamis) को हम पर उपयोग करने का अधिकार (exousia) नहीं है।
कुलुस्सियों 1:13: "उसी ने हमें अन्धकार के वश (exousia) से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।"
कुलुस्सियों 2:15: "और उसने प्रधानताओं और अधिकारियों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।"
सामर्थ्य, परमेश्वर और शैतान के बीच, न कभी समस्या थी और न होगी। समस्या अधिकार की थी। यह अधिकार शैतान ने आदम के पाप में गिरने से ले लिया था। यीशु किसी सामर्थ्य को वापस लेने नहीं आया था। वह शैतान के सामर्थ्य को हटाने नहीं आया था। वह उस अधिकार को वापस लेने आया था जिसे आदम ने साँप को खो दिया था। वह पृथ्वी पर शैतान की प्रभुता को तोड़ने आया था।

शैतान के पास अभी भी वह सामर्थ्य (dunamis) है जो उसके पास पहले से था। वह "गरजनेवाले सिंह के समान ..खोज में रहता है" (1 पतरस 5:8)। उसके पास अभी "जलते हुए तीर" हैं (इफि. 6:16)। यदि तुम इसमें विश्वास नहीं करते, तो बिना हथियार के उसके विरुद्ध जाने का प्रयास करो (इफि. 6:13-17)। शैतान ने उन लोगों पर जो यीशु को उनके जीवन का प्रभु बनाते हैं अपने सामर्थ्य को इस्तेमाल करने का अधिकार (exousia) खो दिया है। परन्तु, शैतान एक चोर और व्यवस्था तोड़नेवाला है। वह किसी भी प्रकार से हम पर अपना सामर्थ्य इस्तेमाल करने का प्रयास करेगा।
हमें समझने की आवश्यकता है कि मसीह के द्वारा हमें शैतान और उसकी शक्ति पर अधिकार है। **विवाद-वस्तु अधिकार है।** सामर्थ्य काम करता है, परन्तु अधिकार सामर्थ्य को वश में रखता है।

यह सत्य निर्गमन 17:8-13 में इस्राएल और अमालेक के बीच युद्ध में अच्छी तरह चित्रित किया गया है। इस प्रसिद्ध अनुच्छेद में मूसा परमेश्वर की छड़ी अपने हाथ में लेकर पर्वत पर गया। इसी बीच, यहोशू नीचे सेना को युद्ध में ले गया। जब तक मूसा छड़ी को उठाए रखा, इस्राएल जीतता रहा। जब उसने इसे नीचे किया, अमालेक जीतने लगा। विजय का फैसला उनके मनोबल से नहीं हो रहा था; वे युद्ध में से उनको प्रेरित करने के लिए मूसा को नहीं देख रहे थे। बदले में, स्वर्गीय स्थानों में एक अदृश्य युद्ध चल रहा था। इस युद्ध ने अमालेक के साथ हो रहे युद्ध के परिणाम का फैसला किया था।
मूसा की छड़ी परमेश्वर का शासन या अधिकार चित्रित करती है। इसे मूसा ने जो इस्राएल के लिए परमेश्वर का अगुवा था, उठाई थी। जब मूसा ने छड़ी उठाई थी, यहोशू और सेना जीत रहे थे।
दूसरे शब्दों में, यह युद्धक्षेत्र पर सामर्थ्य नहीं था जो विजय का फैसला कर रहा था। यह पर्वत पर अधिकार था। अधिकार ही प्रमुख विषय-वस्तु है; सामर्थ्य कभी भी नहीं रहा है।

पिता के पास पहुँच

यह जानना महत्त्व का है कि हमारे मल्लयुद्ध में, हम परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध नहीं करते।

कई लोगों ने सिखाया है कि हमें परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध करना है। वे उत्पत्ति 32:22-32 से सिखाते हैं। इस अनुच्छेद में याकूब प्रभु के दूत के साथ सारी रात मल्लयुद्ध करता है।

याकूब के शब्दों: "जब तक तू मुझे आशीष न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा" - को लेकर कई प्रवचन दिए गए हैं। इन्हें उदाहरण के रूप में रखा गया है कि हमें प्रार्थना में क्या करना चाहिए। परन्तु, पवित्रशास्त्र याकूब के मल्लयुद्ध को हमारे प्रार्थना करने के एक उदाहरण के रूप में पेश नहीं करता है। दो कारण थे कि मल्लयुद्ध इतनी देर तक क्यों चला:

(1) परमेश्वर ने होने दिया। यदि दूत चाहता तो याकूब को पीट सकता था।

(2) परमेश्वर और याकूब भिन्न चीजों के पीछे थे। याकूब को एसाव से सुरक्षा चाहिए थी; परमेश्वर को याकूब के चरित्र में परिवर्तन चाहिए था।

उस प्रश्न पर ध्यान दो जो स्वर्गदूत ने पूछा: "तेरा नाम क्या है ?"

यह एक बेकार का प्रश्न लगेगा। परमेश्वर याकूब को उसके अपने स्वभाव और चरित्र की सच्चाई को दिखाना चाहता था। याकूब का स्वभाव उसके नाम से वर्णित था, जिसका अर्थ था "चालबाज, षड्न्त्रकारी, ठग।" प्रभु चाहता था कि याकूब समझ जाए कि उस का दोषपूर्ण चरित्र परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है। उसका नाम उसके अभक्त चरित्र को चित्रित करता था। उसे इसे स्वीकार करना और मान लेना था ताकि परमेश्वर उसके नाम और चरित्र को बदल सकता। जैसे ही याकूब ने अपना नाम बोला, परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया और उसका स्वभाव बदल दिया। उसका नाम बदल कर इस्राएल कर दिया, जिसका अर्थ था: "परमेश्वर का एक शासक।" इस समय ले आगे याकूब का अध्ययन उसके स्वभाव में महान अन्तर प्रकट करता है। याकूब हारने के द्वारा ही इस मल्लयुद्ध में विजयी हुआ था। परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध जीतने का तरीका है हारना। यदि आप जीतते हो तो हार जाओगे। यदि आप हारते हो तो जीतोगे।

अपने जीवनों को पाने का एक ही तरीका है उन्हें हारना (मत्ती 16:24-26 और लूका 9:23-25 देखो)। याकूब ने याकूब को खो दिया और इस्राएल को पा लिया। कितनी मधुर हार!

याकूब की कहानी, हमें अपने स्वर्गीय पिता से कैसे विनती करनी है उसका उदाहरण नहीं है। हमें परमेश्वर के पास साहस के साथ आना है (इब्रानियों 4:16 देखो), यह जानते हुए कि वह हमारा मित्र और पिता है। हमें "उसकी इच्छा के अनुसार" माँगना है (1 यूहन्ना 5:14)। हमें उस चीज के लिए उसके साथ मल्लयुद्ध नहीं करना है जिसे वह हमें देना चाहता है। हम उसके साथ संगी मजदूर हैं (2 कुरिं. 6:1), उसके साथ युद्ध में नहीं। हम नरक के फाटकों पर आक्रमण करते हैं (यशायाह 28:6; मत्ती 16:18), स्वर्ग के पाटकों पर नहीं।

सारांश

इस अध्याय का सारांश यह है कि हमारी मध्यस्ता में कभी-कभी युद्ध या मल्लयुद्ध की आवश्यकता होती है। परन्तु हमें "...परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध..." नहीं करना है, और "हमारा मल्लयुद्ध लहू और मांस के साथ नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दृष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" हमें इसे सन्तुलन और समझ के साथ करना है, परन्तु हमें करना है!

मनन के लिए प्रश्न

1. वे दो विरोधी क्रियाएँ क्या हैं जिनकी मध्यस्थता में आवश्यकता होती है। दोनों की आवश्यकता क्यों है।
2. 2 कुरिं. 2:11 को समझाओ। यह आयत इस सच्चाई को कैसे मजबूत करती है कि हमें शैतान को अनदेखा नहीं करना है ?
3. क्या आप आराधना, बाट जोहना और युद्ध में सम्बंध समझा सकते हो ? यहोशू इसकी एक तस्वीर कैसे है ? इससे विषय में मार्था और मरियम से क्या सीखा जा सकता है ?
4. यदि मसीह ने अन्धकार की शक्तियों को हराया और नाश किया है तो आत्मिक युद्ध की आवश्यकता क्यों है ?
5. अधिकार और सामर्थ्य के बीच क्या अन्तर है ?
6. क्या हमें प्रार्थना में परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध करना चाहिए ?

अध्याय 10 – अति महान मनुष्य

यह अध्याय खोए हुओं के लिए आत्मिक युद्ध के विषय में है। यह सम्भवतः इस शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण अध्याय है। पिछले अध्याय का मुख्य कारण इसके लिए हमें तैयार करना था।

परदा हटाना

मैं ने एक बार टीवी पर एक बच्चे का "शल्यक्रिया द्वारा प्रसव" देखा था। यह तब किया जाता है जब माँ सामान्य तरीके से बच्चे को जन्म नहीं दे पाती है। यह माँ और बच्चे दोनों का जीवन बचाता है। टीवी पर बच्चे का जन्म देखकर मैं मोहित हो गया। मैं सदा सोचता था कि बस चमड़ी को काटों और बच्चा बाहर आ जाता है। नहीं! ऐसा लगा था जैसे उन्हें बेचारी स्त्री को अन्दर से बाहर कर दिया था। जब वे आखिरकार बच्चे तक पहुँचे, तब भी उन्हें उसे निकालने में कठिनाई हो रही थी।

मेरे मन में, इसका कुछ सम्बंध मध्यस्थता से था। बाइबल कहती है कि एक परदा है जो अविश्वासियों को सुसमाचार को देखने से रोकता है। "परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों ही के लिए पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उनके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके" (2 कुरिं. 4:3-4)।

यूनानी शब्द "kalupsis" का अनुवाद है: परदा और अर्थ है: छिपाना, ढकना या लपेटना।

पेड़ का भीतर का भाग छाल से छिपा होता है। एक मनुष्य का शरीर का भीतर का भाग चमड़ी से छिपा होता है।

प्रकटीकरण के लिए नए नियम का शब्द "apokalupsis" है। उपसर्ग "pro" का अर्थ है: "अलग या दूर।" तो एक प्रकटीकरण प्रकट करना या उघारना है।

जैसे मैंने उस बच्चे का शल्यक्रिया से प्रसव देखा, तो मुझे एक मनुष्य के शरीर के भीतर प्रकटीकरण मिला।

अविश्वासियों में परदा

अविश्वासियों के मनों पर से परदा हटाने में हमारी भूमिका है। 2 कुरिन्थियों 10:4 गढ़ों की बात करती है। इसका अविश्वासियों के मनों पर परदा डालने में योगदान है। ये गढ़ हैं जिन्हें शैतान ने अविश्वासियों के मनों में बना रखा है। हम इन गढ़ों के विनाश में भाग लेते हैं। ये स्थान हैं यहाँ से दुष्टात्माएँ शासन करती हैं। 2 कुरिन्थियों 4:3-4 अविश्वासियों के मनों पर इस परदे या आवरण का आगे वर्णन करता है। यह उन्हें सुसमाचार के प्रकाश को स्पष्ट रूप से देखने से दूर रखता है। यह जानना महत्त्व का है कि वे सुसमाचार को समझ नहीं पाते हैं क्योंकि वे इसे देख नहीं पाते। उन्हें एक प्रकट करना - एक प्रकटीकरण चाहिए।

हाल में, मेरा एक मसीही भाई से मिलना हुआ जिसने बताया कि वह एक मित्र को सुसमाचार सुना रहा था। उसने कहा, "पास्टर, आप जो सिखाते हो मुझे अच्छा लहता है। उस व्यक्ति ने मुझ से कहा, 'मैं जानता हूँ तुम जो कह रहे हो उसमें कुछ है। यह प्रकट है इससे आपको क्या लाभ हुआ है। परन्तु मैं इसे पूरी तरह देख नहीं सकता हूँ।'" यह बात मुझे समझ नहीं आती थी कि कैसे हो सकता है कुछ लोग सुसमाचार के सामर्थी प्रचार को सुनते परन्तु अस्वीकार करते हैं। अब मैं जानता हूँ। जब वे सुन रहे थे, तब वे वास्तव में जो मैं कह रहा था उसे सुन नहीं रहे थे। वे उसे नहीं देख पा रहे ते जिसे मैं देख रहा था। वे उसे समझ नहीं पा रहे थे जिसे मैं समझा था।

जो अविश्वासी सुनते थे वह उनके पास उनकी धारणाओं से आता था। यह परदा था जिसके कारण वे कुछ भिन्न ही सुन रहे थे। 2 कुरिन्थिों 4:4 इसे स्पष्ट कहता है: "ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उनके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।" वे मसीह के उसी रूप को नहीं देख पाते हैं जिसे हम देखते हैं। उसे स्पष्ट देखने का अर्थ है उससे प्रेम करना और उसे चाहना।

परदा पड़ा हुआ दृश्य

अविश्वासी को यीशु का परदा पड़ा हुआ दृश्य मिलता है। यह एक कहानी से चित्रित है। एक स्त्री एक शाम अकेले कार से घर आ रही थी कि उसने देखा कि एक पुरुष एक बड़े ट्रक में उसका पीछा कर रहा है। वह डरने लगी। उसने रफ्तार बढ़ाई कि अपने पीछा करनेवाले से आगे बढ़ जाए, परन्तु ऐसा हो नहीं सका। तब उसने महामार्ग को छोड़, एक सड़क की ओर गाड़ी मोड़ ली। परन्तु ट्रक उसके पीछे ही रहा। आतंकित होकर, वह एक पेट्रोल पम्प में चली गई। वह अपनी कार से कूदकर, चिल्लाती हुई अन्दर भागी। ट्रक चालक दौड़ कर उसकी कार के पास आया और छटके से पीछे का दरवाजा खोला। उसने उसके पीछे से एक व्यक्ति को फर्श पर से खींच कर निकाला जो उसकी कार में छिपा हुआ था। वह गलत व्यक्ति से भाग रही थी। वह अपने उद्धारक से भाग रही थी! चालक इतनी ऊँचाई पर बैठा था कि वह उसकी कार के पीछे से अन्दर देख सकता था। उसने दबककर बैठे हुए होनेवाले-बलात्कारी पर नज़र रखी हुई थी। ट्रक चालक, अपने को खतरे में डालते हुए, उसे बचाने के लिए उसके पीछे आ रहा है। विश्वासियों के दृश्य के साथ भी ऐसा ही है। लोग एक ऐसे परमेश्वर से भाग रहे हैं जो उनकी खोज में है। वह उन्हें विनाश से बचाना चाहता है।

हम में से जो परमेश्वर को जानते हैं उससे प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया है। वह एक प्रेमी परमेश्वर है जो केवल हमारा भला चाहता है, और उसे पूरा करने के लिए मरा भी था। परन्तु, जब पापी इस प्रेमी परमेश्वर के बारे में सुनते हैं तो वे अकसर हानि ही देखते हैं। वे केवल पूर्ति की एक कमी देखते हैं। वे डरते हैं कि विश्वासी बनकर उन्हें सारा सुख त्याग देना पड़ेगा।

प्रकाश आने देना

2 कुरिन्थियों 4:4 में "सुसमाचार का प्रकाश" यूनानी शब्द "photismos" से आया है जिसका अर्थ है: प्रदीप्ति। यह शब्द फोटो शब्द से काफी मिलता जुलता है। क्या होता है जब हम फोटो लेते हैं ? कैमरे का शटर खुलता है, और प्रकाश अन्दर आता है। प्रकाश फिल्म पर चित्र लाता है। यदि कैमरे का शटर नहीं खुलेगा तो कोई चित्र नहीं बनेगा। दृश्य चाहे कितना भी सुन्दर क्यों न हो, फोटो नहीं होगा। मनुष्यों के प्राणों में भी ऐसा ही है। 2 कुरिन्थियों 4:3-4 में बिलकुल यही बात कही जा रही है। यह फोटोग्राफी की भाषा लगती है। यदि परदा (कैमरे का शटर) हटाया नहीं जाता है तो मसीह का सच्चा चित्र (फोटो) नहीं बनेगा।

इससे कोई अन्तर नहीं होता कि हमारा यीशु कितना यशस्वी है या हमारा संदेश कितना अदभुत है। कभी-कभी हम बिना एक सच्चा प्रकटीकरण (परदा हटना) हुए लोगों को समझाकर उद्धार की प्रार्थना करवाने के लिए राजी कर लेते हैं। परन्तु, अकसर कोई सच्चा परिवर्तन नहीं होता। इसी कारण से कुछ देशों में 10 प्रतिशत् से भी कम लोग ही जो यीशु को अपनाते हैं, मसीह के सच्चे चेले बनते हैं। कारण यह है कि सच्चा पश्चाताप नहीं होता जो केवल प्रकटीकरण से ही आता है। जिस पश्चाताप की बाइबल बात करती है केवल बाइबल के प्रकटीकरण से ही आ सकता है।

पश्चाताप का अर्थ मुड़ना और दूसरे मार्ग पर जाना नहीं है। यह दिशा का परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन यूनानी शब्द "epistrepho" है। इसे अक्सर: बदलना या घूमना अनुवाद किया जाता है। यह पश्चाताप का परिणाम है।

पश्चाताप यूनानी शब्द "metanoia" है। इसका अर्थ है: एक नया ज्ञान या समझ। यह मन का परिवर्तन है।

बाइबल में, पश्चाताप एक नई समझ है जो एक प्रकटीकरण के द्वारा परमेश्वर से आती है। यह आदम के पाप में गिरने के प्रभावों को उलटना है। मानवजाति ने उनकी अपनी बुद्धि, भले और बुरे के उनके अपने ज्ञान को चुना था। उन्होंने सही और गलत का उनका अपना विचार चुना था। मानवजाति को अब नए ज्ञान की आवश्यकता है - परमेश्वर से ज्ञान। पौलुस प्रेरितों 26:18 में कहता है, उसे बुलाया गया कि वह "उनकी आँखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर फिरें।"

जानकारी बनाम प्रकटीकरण

हमें जानकारी और प्रकटीकरण के बीच अन्तर को समझना चाहिए। <u>**जानकारी** मन की है। **प्रकटीकरण** मन को सम्मिलित करती और प्रभावित करती है, परन्तु हृदय से आती है।</u>

आत्मिक सामर्थ्य केवल प्रकटीकरण द्वारा आता है। बाइबल के **लिखे हुए** वचन को **जीवित** वचन बनना है। इसी लिए विश्वासियों को भी केवल परमेश्वर के वचन को पढ़ना ही नहीं है। हमें वचन पर मनन करना चाहिए। हमें भजनकार के समान प्रार्थना करनी है: "मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदभुत बातें देख सकूँ (भजन 119:18)। इब्रानी शब्द खोलना "galah" है। इसका अर्थ है: प्रकट करना या उघारना। भजनकार प्रार्थना कर रहा है, "मेरी आँखों को प्रकटीकरण दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदभुत बातें देख सकूँ।" यह प्रकटीकरण के लिए एक प्रार्थना है।

पौलुस ने इफिसियों के लिए प्रार्थना की थी, "कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे" (इफि. 1:17)।

जानकारी तुरन्त आ सकती है, परन्तु प्रकटीकरण कभी-कभी एक प्रक्रिया है। जैसे बीज बोनेवाले का दृष्टान्त दिखाता है, बाइबल का सत्य बीज के रूप में आता है। प्रभु के साथ मेरे जीवन के आरम्भ के दिनों में, जिन अदभुत सत्यों को मैं ने विशिष्ट शिक्षकों से सुना था मेरे लिए काम नहीं कर रहे थे। जब मैं ने शिक्षाओं को सुना था तब वे बड़ी सामर्थी लगती थीं। मैं सभाओं में से निकलता और कहता, "मैं वैसा नहीं रहूँगा!" परन्तु कुछ सप्ताह और महिनों बाद, मैं वैसा ही था। मैं ने जो सुना था उस सत्य पर संदेह प्रकट करता। मैं परमेश्वर से शिकायत करता। तब <u>उसने मेरे जीवन में शब्द बोले जिससे मेरा जीवन बदल गया: "बेटा, सब सत्य तेरे पास बीज के रूप में आता है। जो व्यक्ति बता रहा है उसके लिए फल होगा, परन्तु तेरे लिए बीज है। यह फल लाएगा या नहीं, तुम इसके साथ क्या करते हो उस पर निर्भर करता है।" आत्मिक जानकारी के बीजों को फल लानेवाले प्रकटीकरण में बढ़ना होगा।</u>

पतन से लेकर मनुष्यों ने ज्ञान या जानकारी को महिमा दी है। यह भले और बुरे के **ज्ञान** का पेड़ था जिसकी ओर हव्वा (और बाद में आदम) आकर्षित हुई थी। किताबी ज्ञान उद्धार नहीं ला सकता है। यह परमेश्वर के सच्चे ज्ञान में नहीं ले जा सकता है। बाइबल का अध्ययन भी सदा परमेश्वर का प्रकटीकरण नहीं लाता है। यीशु ने फरीसियों को कहा, "तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते हो, क्योंकि

समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है" (यूहन्ना 5:39)। फरीसी सम्भवतः आप से और मुझे से बेहतर पवित्रशास्त्र को जानते थे। परन्तु, वे परमेश्वर को नहीं जानते थे। कई धर्मविज्ञानी पवित्रशास्त्र को पूरी तरह जानते हैं। परन्तु, वे परमेश्वर को ठीक से नहीं जानते। कुछ तो उसे जानते ही नहीं। वे उसकी उपस्थिति में बिना उबे दो घंटे भी शान्ति से बैठ नहीं सकते हैं। उनके पास काफी जानकारी है, परन्तु कुछ भी प्रकटीकरण नहीं। प्रकटीकरण पवित्रशास्त्र को "आत्मा और जीवन" बनाता है (यूहन्ना 6:63)। प्रकटीकरण पवित्रशास्त्र को जीवित करता है। यह इतना महत्त्व का क्यों है ? क्योंकि हम सहा परमेश्वर की प्रक्रिया को बीच में रोकते रहते हैं। ऐसा करने से, हम परिणाम रोक देते हैं। यह प्रकटीकरण है जो विश्वास और सच्चा परिवर्तन लाता है।

प्रकटीकरण के बिना हम केवल पतित, स्वार्थी मन को अनुरोध करते हैं। वह मन सदा पूछता रहता है, "इसमें मेरे लिए क्या है ?" हम एक ऐसा सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं जो बताता है "इसमें मेरे लिए क्या है।" ऐसा प्रचार केवल मानववादी, आत्म-केन्द्रित धर्मान्तरित उत्पन्न करता है।

दूसरी ओर, हम ऐसा सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं जिसमें पश्चाताप और व्यक्तिगत जीवन का अर्पित करना सम्मिलित है। यह मसीह की प्रभुता का प्रचार करना है। अविश्वासी निश्चय ही इसे अस्वीकार करेंगे - जब तक उन्हें बाइबल का प्रकटीकरण नहीं मिलता। हमारा सुसमाचार अविश्वासियों को लिए बेतुका है: "परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिं. 2:14)।

सच्चा पश्चाताप उत्पन्न करना

<u>तो सच्चा पश्चाताप कैसे हो सकता है ? समाधान क्या है ? हमें अविश्वासियों में सच्चे पश्चाताप को जन्म लेने देने के लिए पवित्र आत्मा को समय देना चाहिए। यह परमेश्वर-केन्द्रित, न कि आत्म-केन्द्रित मसीही उत्पन्न करता है।</u>

दो वर्ष पहले सारा नामक एक स्त्री ने अपनी बहन और जीजा के लिए प्रार्थना करने की गवाही सुनाई। वे सामान्यतः अच्छे लोग थो। परन्तु, सारा ने बताया, "वे मसीही विरोधी थे। वे आत्मिक रूप से मेरे पति और मुझे सताते थे। वे हमारा मजाक उड़ाते थे।" सारा उनके लिए 20 वर्ष से प्रार्थना कर रही थी, परन्तु उन्होंने सुसमाचार में कोई रुचि नहीं दिखाई थी। सारा ने माना कि, परमेश्वर और सुसमाचार की ओर उनके रवैये के कारण, मैं ने उनकी ओर कठोर हृदय बना लिया था। मैं गलत अभिप्राय से प्रार्थना करती थी।" सारा ने मध्यस्थता पर इस शिक्षा को सुना। उसके रिश्तेदारों के लिए उसकी आशा दोबारा जाग्रत हो गई थी। पवित्र आत्मा ने उससे यह प्रश्न पूछा: "तुम अपने परिवार के लिए यह कब करनेवाली हो ? तुम उनके लिए कब प्रार्थना करोगी ?" उसने अपने रवैये के लिए प्रश्चाताप किया, और उन्हें भी उनके रवैये के लिए क्षमा किया। तब वह जैसे मैं ने निर्देश दिए थे प्रार्थना करने लगी। सारा की अपने लिए पश्चाताप करने और अपने रवैये को बदलने के की आवश्यकता हमारे लिए एक बहुमूल्य शिक्षा है। हमारे अपने हृदयों के रवैयों के कारण परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं नहीं सुन सकता है। क्या यह दुख की बात नहीं कि हमारा अपना पाप दूसरे पापी के लिए हमारी प्रार्थना में बाधा डाल सकता है ? यीशु ने कहा, "पहले अपनी आँख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा" (मत्ती 7:5)। इससे पहले परमेश्वर आप को उन्हें छुड़ाने के लिए लिए इस्तेमाल करे, आपको सम्भवतः अपने पती/पत्नि, बच्चे या रिश्तेदार को क्षमा करना होगा। सारा को याद है वह इस प्रकार निश्चित रूप से प्रार्थना कर रही थी: "पिता, उनकी आँखों पर से परदा हटा दे ताकि वे सुसमाचार के सत्य को देख और समझ सकें।" उसने यह भी प्रार्थना की, "दोनों को एक साथ मसीह में ला, ताकि एक दूसरे को सताए नहीं।"

कुछ महिनों के बाद सारा ने अपनी बहन से बात की, और उसने यह आश्चर्यजनक बात सुनी: उसी दिन सुबह उसका जीजा जब जागा तो उसे लगा कि उसे कलीसिया जाना चाहिए। वे पहले कभी भी कलीसिया नहीं गए थे! तो उन्होंने एक छोटी कलीसिया का पता लगाया और वहाँ गए। उद्धार के बुलावे के समय दोनों ने उनका जीवन मसीह को दे दिया। फिर बहन ने सारा से जिस प्रकार का उसके साथ उसने बर्ताव किया था उसके लिए क्षमा माँगी। उनका रवैया पूरी तरह बदल गया था। वे अभी भी प्रभु के साथ चल रहे हैं। लगभग नौ महिनों के बाद, सारा का पिता भी प्रभु में आ गया। याद रहे, सारा ने इससे पहले 20 वर्ष तक प्रार्थना की थी, जब उसने मध्यस्थता के इन सिद्धान्तों को काम में लाया था। अपने हृदय से निपटने से पहले और बिना कोई परिणाम देखने से पहले, उसने 20 वर्ष तक प्रार्थना की थी!

यह आपके लिए भी कार्य कर सकता है!

घमण्ड ने अंधा किया

शैतान अविश्वासियों के मन अंधा कैसे करता है ? अविश्वासियों की आँखों पर यह परदा कैसे आता है ?

मेरा विश्वास है प्रभु ने मुझे एक बहुमूल्य सुराग दिया है। "अंधी कर दी" के लिए यूनानी शब्द "tuphloo" है। इसका अर्थ है: बुद्धि को मन्द कर देना; अंधा करना। यह एक मूल शब्द, "tupho" से आता है, जिसका अर्थ है: धूँआ बनाना। इस आयत (2 कुरिं. 4:4)

में अंधापन एक धूमपट के समान है। यह हवा को धुँधला या काला करता है जिससे एक व्यक्ति देख नहीं सकता है। उसी मूल से दूसरा शब्द आता है: "tuphoo"। इसका अर्थ है: "उच्चाशय, अभिमानी या अहंकार से फूला हुआ।" यह उस व्यक्ति की तस्वीर है जो "फूला हुआ" है, वैसे ही जैसे धूँआ ऊपर उठता है या लहराता है।

तब मैं ने "अंधापन" और "घमण्ड" शब्दों में सम्बंध देखा। मैं समझा कि यह घमण्ड का पाप है जिसे शैतान उन्हें अंधा करने के लिए इस्तेमाल करता है। यह वही घमण्ड है जो उद्यान में लूसीफर (शैतान) से मनुष्यजाति को मिला था। मसीह का अधिकाँश अस्वीकरण घमण्ड के कारण है। यह घमण्ड कर्मो के द्वारा उद्धार में विश्वास से आ सकता है। यह इस तथ्य से आ सकता है कि अधिकाँश लोग उनके जीवन की प्रभुता दूसरे को नहीं देना चाहते हैं।

घमण्ड मसीह का अन्तिम शत्रु है। इसके साथ अन्त में निपटा जाएगा। यह तब होगा जब हर घुटना झुकेगा और हर जीभ स्वीकार करेगी कि मसीह प्रभु है (फिलिप्पियों 2:10-11 देखो)। तब घमण्ड पर अन्तिम प्रहार होगा!

नर अभिमान

एक अंधेरी रात में एक जहाज के कप्तान ने दूर एक मन्द प्रकाश देखा। उसने अपने सिगनलन को संदेश भेजने को कहा: "अपना मार्ग 10 अंश दक्षिण को बदलो।" तुरन्त उसे उत्तर मिला: "अपनी दिशा 10 अंश उत्तर को बदलो।" अभिमानी कप्तान क्रोधित हुआ कि उसे चनौती दी जा रही है। इसलिए उसने दूसरा संदेश भेजा: "अपना मार्ग 10 अंश दक्षिण को बदलो। यह कप्तान बोल रहा है!" उसे उत्तर मिला: "अपना मार्ग 10 अंश उत्तर को बदलो। मैं नाविक तीसरा दर्जा हूँ।" अभिमानी कप्तान ने सोचा वह इस अवज्ञाकारी नाविक को डराएगा, तो उसने तीसरा संदेश भेदा: "अपना मार्ग 10 अंश दक्षिण को बदलो। मैं युद्धपोत हूँ।" अन्तिम उत्तर आया: "अपना मार्ग 10 अंश उत्तर को बदलो। मैं प्रकाशग्रह हूँ।"

परमेश्वर संसार का "प्रकाशग्रह" है। वह सदा से पतित मनुष्यजाति का मार्ग बदलने का प्रयास कर रहा है। अभिमानी मनुष्यों ने उनके जीवन स्वयं चलाने का फैसला किया है। वे अकसर उनके विनाश की ओर चले जाते हैं। अभिमान के विषय में इन चीजों को समझने से मुझे निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर मिला: मैं सब जगह पुरुषों से अधिक स्त्रियों को उद्धार पाता क्यों देखता हूँ ? मैं जानता था यह इसलिए नहीं है क्योंकि वे चतुर हैं! कारण यह है कि अभिमान की जड़ पुरुषों में स्त्रियों से अधिक शक्तिशाली है।

पुरुषों में अभिमान का शक्तिशाली होने का एक कारण है - पतन से पहले हमारी सबसे शुद्ध शक्ति पतन के बाद हमारी सबसे भ्रष्ट शक्ति बन गई। पतन से पहले, मनुष्य में जो उसके चारों ओर था उसको ढकने, विकसित करने, रक्षा करने और देखभाल करने की एक महान इच्छा थी। यह एक सेवक होने की गहरी इच्छा से निकला था। पतन के समय यह इच्छा अपनी ओर फिर गई और वह स्वार्थी बन गया। अगुआई करने की इच्छा अधिकार में रखने की इच्छा बन गई। देने का स्वभाव लेने का स्वभाव बन गया। एक सुरक्षित दीनता एक असुरक्षित अभिमान में बदल गई। यह देखने के लिए कि हम पुरुषों को अगुआई कैसे करनी है, हमें केवल यीशु की ओर देखना है। वह आश्चर्यजनक अधिकार और सामर्थ्य में जीया था। फिर भी उसने सेवा करने की एक शुद्ध इच्छा थी।

काऊन्सलर्स पुरुषों से अधिक महिलाओं के साथ काम करते हैं। यह इसलिए है क्योंकि पुरुषों को "मुझे सहायता चाहिए" कहना कितना कठिन होता है। स्त्रियाँ अकसर "मुझे खेद है" या "मैं गलत थी" कहने में पहल करती हैं। पुरुष अकसर एक दूसरे के साथ मुकाबला करते हैं। महिलाएँ अकसर अकसर प्रोत्साहित करने, देने और निस्वार्थी होने में अधिक इच्छुक होती हैं। ये चीजें सत्य क्यों हैं ? यह पुरुषों में बड़े अभिमान के कारण है।

खोए हुओं के लिए प्रार्थना करना

अभिमान की अंधा करनेवाली इस योग्यता की यह समझ एक जबरदस्त संकेत हैं कि खोए हुओं के लिए प्रार्थना कैसे की जाए। इस का 2 कुरिन्थियों 10:3-5 में दोबारा उल्लेख है, "क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"

कुछ मसीही सोचते हैं कि ये आयतें हमें अपने लिए कुछ करने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। परन्तु, हम यहाँ दूसरों के लिए आत्मिक युद्ध से निपट रही हैं। इन आयतों को इस प्रकार भी कहा जा सकता है: "यह सत्य है कि मैं एक साधारण, निर्बल मनुष्य हूँ, परन्तु मैं अपनी लड़ाइयों को जीतने के लिए मानवीय योजनाओं और तरीकों को उपयोग नहीं करता। मैं शैतान के गढ़ों को ढाने के लिए, मनुष्यों द्वारा बनाए हथियारों को नहीं, परन्तु परमेश्वर के सामर्थी हथियारों को उपयोग करता हूँ। ये हथियार परमेश्वर के विरुद्ध हर अहंकारी तर्क को और हर दीवार को जो मनुष्यों को उसे पाने से रोकती है तोड़ सकते हैं। इन हथियारों के साथ मैं विद्रोहियों को पकड़ सकता और उन्हें परमेश्वर के पास वापस ला सकता हूँ, और उन्हें ऐसे मनुष्यों में बदल सकता हूँ जिनकी हार्दिक इच्छा मसीह के आज्ञाकारी होना है।"

आओ हम इन आयतों को अधिक ध्यान से देखें। हम देखेंगे कि प्रभु हमें अभिमान की समस्या का एक हल देता है। वह गढ़ों को ढाने का परमेश्वर का तरीका भी देता है।
पहला: परमेश्वर हमें बताता है कि हमारे युद्ध के हथियार सांसारिक या शारीरिक नहीं हैं। इसका सरल अर्थ है कि वे मानवीय नहीं हैं। परमेश्वर जानता है कि हम उन चीजों को अकसर अनदेखा कर देते हैं जो देशने में सरल हैं। इसलिए वह सत्य को स्पष्ट रूप से बताता है। हमें लोगों की बुद्धि तक पहुचने के द्वारा उन्हें कभी भी जीत नहीं सकेंगे। न ही हम केवल दिलचस्प तरीकों से कर सकते हैं। हम उन्हें तंग करके निश्चय ही नहीं जीत सकते हैं। उनके सैंडविच में पर्चे लिख कर रखने से कोई लाभ न होगा। "तुम परमेश्वर के साथ ठीक कब होने वाले हो ?" इस प्रकार की बातें से उन्हें डाँटना कभी काम नहीं करेगा।
जब हम लोगों के पास मानवीय स्तर पर जाते हैं तो हम उन्हें अधिक खराब कर देते हैं। यदि उन्हें लगता है कि हम उन पर दबाव डाल रहे हैं तो वे दीवार खड़ी कर देते हैं। यह उनमें अभिमान की जड़ के कारण होता है। अभिमान कहता है, "मैं नहीं चाहता कोई दूसरा मुझ पर नियंत्रण करे या मुझे बताए क्या करना है।" अभिमान सदा उठ खड़ा होगा और अपना बचाव करेगा। यदि हम मानवीय स्तर पर इस अभिमान पर आक्रमण करेंगे तो हम केवल उसे शक्तिशाली ही करेंगे।

परमेश्वर के पवित्र विस्फोटक

दूसरी ओर, हमारे पास ऐसे हथियार हैं जो गढ़ों को ढाने के लिए "परमेश्वर के द्वारा सामर्थी" हैं। "... हमारी लड़ाई के हथियार ... गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।" "Dunatos" सामर्थी के लिए यूनानी शब्द है। यह शब्द चमत्कार का वर्णन भी करता है। परमेश्वर द्वारा सामर्थी हथियार चमत्कार भी करेंगे। Dunatos का अनुवाद: सम्भव भी है। मुझे यह अच्छा लगता है। क्या आप किसी को जानते हैं जो असम्भव लगता है ? क्या इसमे चमत्कार लगेगा ? डुनाटोस सामर्थ्य के साथ, वे सम्भव होते हैं।
और, निस्संदेह, डुनाटोस वह यूनानी शब्द है जिसमें से डाइनेमाइट शब्द मिलता है। हमारे युद्ध के हथियार "गढ़ों को ढा देने" के लिए विस्फोटक हैं। वे "गढ़ों को ढा देने" के योग्य हैं।
"ढा देना" यूनानी शब्द "kathairesis" से मिलता है। इस महत्त्वपूर्ण और सामर्थी शब्द के कुछ एक अर्थ हैं। उन में एक है: "बल प्रयोग के साथ गिराना, या कुछ नष्ट करना।" हम इस सामर्थी, चमत्कार करनेवाले डाइनेमाइय को इस्तेमाल कर सकते हैं और प्रतिनिधि बन सकते हैं जो शैतान के गढ़ों को बलप्रयोग के द्वारा गिरा सकते हैं।
मुझे याद है जब मैं छोटा था मैं ने स्कूल की इमानत को गिराते देखा था। मैं मोहित होकर देख रहा था जब बड़ा सा सीमेंट का गोला जो एक विशाल क्रेन को लगा हुआ था, बार बार आकर इमानत से टकराता था। यह दीवारों और छतों से टकराता, और अविश्वासनीय विनाश कर रहा था। मैं सोचता हूँ यह हमारे युद्ध की एक अच्छी तस्वीर है। हम उस विशाल सीमेंट के गोले के समान है। एक के बाद एक ईश्वरीय प्रहार के साथ, हम अन्धकार के गढ़ों का विनाश कर सकते हैं। यह शैतान के गढ़ों के विरुद्ध एक चलता रहनेवाला, एक-एक प्रहार का युद्ध है।
फिर भी, मैं ने कई वर्ष पहले एक विशाल इमानत को नष्ट होते देखा था। यह इमानत उस स्कूल की इमानत से कहीं अधिक बड़ी थी। यह एक शाहर के पूरे ब्लाक में फैली हुई थी। लोगों ने इसके लिए क्रेन में लगे एक सीमेंट गोले का उपयोग नहीं किया था। इसमें दिन नहीं - सेकन्ड लगे थे। उन्होंने डाइनेमाइट उपयोग किया, जिन्हें विशेषज्ञों ने सावधानी से लगाया था। सारी इमारत को जब डाइनेमाइटों से फोड़ा गया था, दस सेकन्ट के भीतर गिरा दी गई थी। मैं सोचता हूँ कि यह भी हमारी मध्यस्थता की एक तस्वीर है। इस शारीरिक इमारत के विपरीत, हम परिणाम अकसर सेकन्डों में नहीं देखते।
हर बार जब हम शत्रु के गढ़ों के विरुद्ध अपने आत्मिक हथियारों को उपयोग करते हैं, हम कुछ स्थानों में डाइनेमाइटों को लगा रहे होते हैं। हमें दिनों, हफ्तों या महिनों में डाइनेमाइटों को लगाना पड़ता है। शीघ्र ही परमेश्वर कहेगा, "बस!", आत्मा में बड़ा विस्फोट होने वाला है। एक गढ़ भूमि पर गिरेगा - और एक व्यक्ति उसके आत्मिक अंधेपन से स्वतंत्र-घुटनों पर गिर पड़ेगा।

शैतान के गढ़ तोड़े गए!

एक विश्वासी बहन ने निम्नलिखित गवाही मुझे बताई। यह एक मध्यस्थ की एक गढ़ को गिराने के लिए विस्फोटक लगाने का एक उदाहरण है। मेरी मित्र और मैं जब एक नर्सिंग होम में गए थे, हम ने मेरी नामक एक महिला को देखा। वह दुष्टात्मा-ग्रस्त थी। जब कभी हम हाल में मेरी के पास आते, वह काँपने लगती थी। वह उग्र आवाज करती, और इस प्रकार कहती, 'मैं जानती हूँ तुम कौन हो। मैं जानती हूँ तुम किसके प्रतिनिधि हो। मैं नहीं चाहती तुम यहाँ आओ।' वह गालियाँ बकती और बुरे-बुरे शब्द कहती।
नर्सिंग होम के सब लोग उससे डरते थे। कोई भी उसके कमरे में अकेले नहीं जाता था, सफाई कर्मचारी और नर्सें भी नहीं। उसके हिंसक स्वभाव के कारण कोई भी उसकी देखभाल नहीं करना चाहता था। इस प्रकार उसकी अच्छी देखभाल नहीं हो रही थी। जब उसके कमरे में जाना बहुत आवश्यक होता था तब कई कर्मचारी मिलकर जाते थे। मेरी किसी को भी उसके पास आने या उसे छू ने नहीं देती थी। कुछ महिनों के बाद ही उसने हमें उसके कमरे में आने दिया था। हम नियमित उसके लिए प्रार्थना और उपवास

कर रहे थे। हम प्रार्थना कर रहे थे कि परमेश्वर उसके हृदय से सारा दर्द निकाल दे। ताकि दुष्टात्माओं को उसमें कोई भी चीज वहाँ रहने को न मिले।

परमेश्वर ने हमें दिखाया कि मेरी के साथ बचपन में बुरी तरह दुर्व्यवहार किया गया था। हम शैतान को उस पर शक्ति उपयोग करने से रोकने के लिए बाँधते। हम घोषित करते कि वह उससे बात नहीं कर सकेगा। हम ने उसके चारों ओर "सुरक्षा का बाड़ा" बाँधने की माँग की। हम ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे दर्शन और स्वपन देगा, और कि स्वर्गदूत उसकी सेवा करेंगे। हम ने उन दुष्ट शक्तियों को बाँध दिया जो पहले से उसमें थीं कि वे काम न कर सकें।

उसके कमरे में पहली बार जाने के बाद आठ महिने बीत गए। हम उसके लिए निरन्तर प्रार्थना और उपवास करते रहे। हम ने उसकी सेवा भी की। "उसी समय मैं ने अपनी कलीसिया में मेरी की गवाही दी। मैं ने सब से उसके लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया। हम ने उस सभा में मिलकर मेरी के लिए प्रार्थना की। उसके बाद भी कई लोग मेरी के लिए प्रार्थना करते रहे। हम ने पास्टर को प्रार्थना करने के लिए मेरी का एक फोटो दिया। हम प्रार्थना करते रहे कि परमेश्वर की सिद्ध इच्छा मेरी के जीवन में पूरी हो। हम ने शैतान को बाँधा, और प्रार्थना की कि उसके लिए मेरी के जीवन के सब द्वार बंद हो जाएँ।

हम मेरी की सेवा करते रहे। अन्त में उसने विश्वास के एक कार्य के द्वारा अपनी चोटों को छोड़ दिया। उसने उसके जीवन में परिवर्तन होने की इच्छा दिखाई। अब उसके जीवन में शैतान के लिए कुछ नहीं बचा था। लगभग दो सप्ताह बाद मेरी ने अपना जीवन प्रभु को दे दिया। आज वह बिलकुल भिन्न है। वह लोगों को उसे प्रेम दिखाने और छूने देती है। उसकी आवाज अधिकाधिक नरम और कोमल हो रही है। उसके रूप में भी स्पष्ट अन्तर है। ऐसा लग रहा है कि असली मेरी अब आखिरकार प्रकट हो रही है। परमेश्वर की उपस्थिति उस पर है।

प्रमुख नर्स ने जो हम ने मेरी के लिए किया था उसके लिए धन्यवाद का उपहार देने के लिए हमें अपने आफिस में बुलाया। उसने हमें बताया सारे कर्मचारी पूछे रहे हैं कि हम मेरी के साथ क्या कर रहे थे? वह कितनी बदल गई है! क्योंकि वह अब हिंसक नहीं है, वे उससे अब डरते नहीं हैं। इसलिए अब वे उसकी सही देखभाल कर पा रहे हैं। हालेलुया! यह मध्यस्थता है! यह गढ़ों का सम्पूर्ण विनाश है!

गढ़, शैतान का कैदखाना

"गढ़" शब्द का असल में अर्थ क्या है? "गढ़" या "किला" के लिए यूनानी शब्द "ochuroma" है। यह मूल शब्द "echo" से आता है, जिसका अर्थ है: "पास होना या पकड़ना।" तो, "गढ़" या "किले" का अर्थ है: एक स्थान जहाँ से किसी चीज को मजबूती से पकड़ना। यह शब्द कैदखाने के लिए भी है। मैं ने युद्ध के समय शीघ्रता से खोदी गई खाइयों को देखा है। उन्हें वहाँ कैदियों को कुछ समय के लिए रखने के लिए बनाया जाता है। दूसरी ओर, कई वर्ष पहले मैं एक पर्वती पर बने एक विशाल किले को देखने गया था। यह एक गढ़ है!

इसी प्रकार, अविश्वासियों के अन्दर शैतान के लिए शक्ति का एक स्थान है जहाँ से वह उन्हें पकड़े रह सकता है। वे कैदी, बन्धुए और गुलाम हैं।

मसीह को "बन्दियों को छुटकारे का" प्रचार करने भेजा था (लूका 4:18)। जैसे परमेश्वर के लोग मसीह का प्रचार करेंगे, कलीसिया के मुँह से बन्दियों का छुटकारा होगा! 2 कुरिन्थियों 10:5 कहता है कि " इसलिए हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।" यह जानना महत्त्व का है कि आय. 4 में "ढा देने" और इस आयत में "खण्डन करते" एक ही यूनानी शब्द है। अनुवाद के समय दोनों आयतों में भिन्न शब्द उपयोग किया है परन्तु यह एक ही शब्द है। हमें देखने की आवश्यकता है कि पवित्र आत्मा एक ही विचार लिए हुए है। आय. 4 कहती है कि हमारे परमेश्वर द्वारा दिए हथियार गढ़ों को ढा सकते हैं। आय. 5 समझाती है कि वे गढ़ क्या हैं।

दूसरे शब्दों में, आत्मा हमारे लिए वर्णन करता है कि ये गढ़ या कैदखाने किस चीज के बने हुए हैं! जैसे हम खोए हुओं के लिए युद्ध आरम्भ करते हैं तो यह अत्यावश्यक जानकारी है। पवित्र आत्मा हमें किले के तीन प्रमुख भाग दिखाता है। ये वे चीजें हैं जिनसे हमें अपने आत्मिक युद्ध में बोलना है और नष्ट करना है।

⇒ गढ़ों का पहला भाग: मनोदशा

गढ़ का पहला भाग जो बताया गया है वह है "कल्पनाएँ"। यह यूनानी शब्द "logismos" है। यह बात करता है: सावधान मनवीय तर्क, या मनुष्य की बुद्धि। Logismos समय के साथ सीखी गई सम्पूर्ण बुद्धि और जानकारी है। यह बन जाती है जो हम वास्तव में विश्वास करते हैं।

आदम और हव्वा ने, पतन से पहले, उनकी बुद्धि और विश्वास परमेश्वर से पाए थे। बाइबल हमें बताती है कि मानवीय बुद्धि और विश्वास पृथ्वी और मनुष्यों के मनोभावों से आते हैं। वे दुष्टात्माओं से भी आते हैं। "यह ज्ञान वह नहीं जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है" (याकूब 3:15)।

इन "कल्पनाओं" (logismos) में सम्मिलित हैः तत्त्व-ज्ञान, धर्म, मानववाद, नास्तिकता, हिन्दुधर्म, बुद्धधर्म, इसलाम, प्रजातिवाद, बुद्धिवाद, भौतिकवाद, अस्वीकरण की जड़ें और विकृतियाँ। उनमें वे सब चीजें हैं जो व्यक्ति को एक प्रकार से सोचने में मजबूर करती हैं।

ये कल्पनाएँ (logismos) लोगों को अंधा कैसे करती हैं ? वे सत्य पर परदा कैसे डालती हैं ?

मनुष्य का मन एक प्रकार से कार्य करता है। जब लोग पहले सुसमाचार सुनते हैं, उनके पास इसके विषय में सोचने या तर्क करने के लिए समय नहीं होता। यह उनके पास अवचेतन मन के द्वारा आता है। यहाँ पर बाकी की सब जानकारी भी जमा होती है। इस जानकारी में ऊपर बताई "कल्पनाएँ" भी सम्मिलित हैं। इसका अर्थ है कि अविश्वासी न केवल उसे सुनते हैं जिसे हम कह रहे हैं, परन्तु उसके साथ-साथ उसे भी सुनते हैं जिस पर वे पहले ही विश्वास करते हैं।

उदाहरणार्थ, मैं एक लड़की को सुसमाचार सुना रहा था जिसके साथ भयंकर दुर्व्यवहार किया गया था। "परमेश्वर प्रेम है," मैं ने कहा, "वह तुम से इतना प्रेम करता है कि उसने तुम्हारे लिए अपना पुत्र मरने भेजा।" उसने केवल वही नहीं सुना जो मैं ने कहा था। उसने मुझे कहा, "हे, यदि वह प्रेम है, तो उसने मेरे साथ इतना दुर्व्यवहार क्यों होने दिया? यह मुझे एक प्रेमी परमेश्वर जैसा तो नहीं लगता।" उसका प्रश्न उसके मन की कल्पनाओं को प्रकट कर रहा था जो पहले ही उसके मन में थीं। यह उसका logismos था - एक विश्वास, एक तत्त्व-ज्ञान, उसकी बुद्धि। किसी को उसके लिए प्रार्थना करनी और उन्हें ढाना होगा।

दूसरे अवसर पर मैं एक व्यक्ति को सुसमाचार सुना रहा था जिसका लॉजिस्मोस भिन्न ही था। वह इतना अच्छा व्यक्ति था कि उसे नहीं लगता था उसे उद्धार की आवश्यकता है। "मैं काफी अच्छा व्यक्ति हूँ," उसने कहा, "मैं अपनी पत्नी की ओर विश्वासघाती नहीं हूँ। मैं अपने बच्चों को नहीं मारता, झूठ नहीं बोलता, गाली नहीं देता, या चोरी नहीं करता। मुझे नहीं लगता परमेश्वर मुझे नरक भेजेगा।" सुसमाचार इन तर्कों को कैसे भेद सकता है? निश्चय ही सुसमाचार में स्वयं इन में से कुछ को तोड़ने की शक्ति है। परन्तु, यदि तुम उन्हें सुना सको तो - इसमें अकसर काफी लम्बा समय लगता है।

मध्यस्थता के द्वारा भूमि पर पहले ही हल चलाना काफी बुद्धिमानी की बात है। प्रार्थना में इन गढ़ों को ढा कर आप बीज के लिए तैयारी कर सकते हो। सम्भव है आप पहले ही जानते हो कि जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर रहे हो उसके लॉजिस्मोस क्या हैं। यदि नहीं जानते, तो पवित्र आत्मा से पूछिए कि वह आपको बताए। वह बताएगा। जब वह बताएगा, तो उनका नाम ले लेकर, और 2 कुरिन्थियों 10:3-5 के अनुसार प्रार्थना करोः "प्रभु यीशु के नाम में, ... का गढ़, मैं तुझे नष्ट करता हूँ।" तब तक रोजाना करते रहो जब तक व्यक्ति मसीह में न आ जाता।

⇒ गढ़ों का दूसरा भागः सब अभिमान जो सिर उठाता है

गढ़ का दूसरा भाग जिसे हमें ढाना है "हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है" है (2 कुरिं. 10:5)। Hupsoma वह मूल शब्द है जो "परमप्रधान" परमेश्वर के लिए उपयोग किया जाता है। यह अभिमान का वही मूल है जिसे हमें 2 कुरिन्थियों 4:3-4 में "अंधी कर दी" में छिपा पाया था। यह यही "अति महान" विशेषता थी जो मनुष्य के पास पतन के समय आई थी। उस समय जब आदम और हव्वा ने झूठ पर विश्वास किया थाः "परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे" (उत्पत्ति 3:5)। शैतान के समान, मनुष्यजाति भी अपने आपको परमप्रधान के तुल्य स्थान में बैठाने का प्रयास करती है। परन्तु, हम परमप्रधान परमेश्वर नहीं बनते हैं। बदले में, हम अपने "परमप्रधान", अभिमान से भरे हुए बन जाते हैं। अच्छी खबर यह है कि हम इस गढ़ को लोगों में नष्ट कर सकते हैं हम ऐसा अपने युद्ध के हथियारों के द्वारा कर सकते हैं। तब वे अपने आप को दीन कर सकते और मसीह के सामने उनका घुटना झुका सकते हैं। इस आयत का एक और अनुवाद कहता हैः "ये हथियार परमेश्वर के विरुद्ध उठने वाले हर अहंकारी तर्क को गिरा सकते हैं। वे हर उस दीवार को तोड़ सकते हैं जो लोगों को उसे खोजने से दूर रखती है।" "इन हथियारों के साथ मैं विद्रोहियों को पकड़कर परमेश्वर के पास वापस ला सकता हूँ। मैं उनको ऐसे मनुष्यों में परिवर्तित कर सकता हूँ जिनके हृदय के इच्छा मसीह का आज्ञाकारी होना है।"

ध्यान दो कि प्रभु केवल यह नहीं चाहता कि हमारे साथ भला हो। वह नहीं कह रहा है कि हम कभी-कभार कुछ युद्ध जीत लेंगे। वह हमें बता रहा है कि हम हर अहंकारी विचार और हर दीवार को ढा सकते हैं। हम विद्रोहियों को पकड़ सकते हैं! और हमें पकड़ना है!

⇒ गढ़ों का तीसरा भागः विचार और परीक्षाएँ

अब हम गढ़ का तीसरा भाग देखेंगे। प्रभु हमें बताता है कि हम "हर एक भावना ("noema") को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं" (2 कुरिं. 10:5)। Noema है: आकस्मिक विचार और परीक्षाएं जिन्हें शैतान अविश्वासियों पर आक्रमण करने के लिए उपयोग करता है। Noema का अर्थ यह भी है: योजना या षड्यन्त्र - वे षड्यन्त्र और योजनाएँ हैं जिन्हें शैतान उन्हें अंधकार में रखने के लिए उपयोग करता है।

मध्यस्थता में हमें साहस के साथ घोषित करना चाहिए कि शैतान का कोई भी हथियार कार्य नहीं करेगा। हम प्रार्थना में उसकी योजनाओं को बाँधते और उनका विरोध करते हैं। हमें प्रार्थना करनी है कि जिस अविश्वासी के लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं शैतान के विचारों और परीक्षाओं से बचा रहेगा।

एक महिला अपने भाई केविन के लिए बारह वर्षों से प्रार्थना कर रही थी कि उसका उद्धार हो। कोई परिणाम नहीं मिल रहा था। वह इस प्रकार प्रार्थना कर रही थी: "प्रभु, उसके जीवन में आ - प्रभु, अपने आप को उस पर प्रकट कर।" उसे पता नहीं था कि प्रार्थना करने के अधिक निश्चित तरीके थे। हम में से कइयों में यह समस्या है।

और हम बाकियों के समान, वह कभी-कभी परेशान हो जाती और चीजों को अपने हाथों में लेने का प्रयास करती। वह केविन को इस प्रकार की चीजें कहती: "तुम्हें अपना जीवन प्रभु को देना चाहिए - तुम्हें उन चीजों को करना छोड़ना होगा जिन्हें तुम कर रहे हो।" इससे उसे केविन में उठता हुआ अभिमान और विद्रोह दिखाई पड़ता। इससे वास्तव में खराबी ही हो रही थी। उसने मुझे बताया, "तब मुझे लगता मैं ने बहुत बड़ी गलती है। केविन एक पत्थीरी सड़क पर चल रहा था। उसमें बड़ी-बड़ी समस्याएँ, जैसे नशीले पर्दाथ, उदासी और अत्यधिक क्रोध थीं।

तब उसने मेरी यह शिक्षा ली जिसमें मैंने खोए हुओं के लिए प्रार्थना करने के सिद्धान्त सिखाए थे। उसने इन्हें अपने पति और उनके बच्चों को बताया। उन्होंने इन सिद्धान्तों से केविन के लिए प्रार्थना करना आरम्भ किया।

उन्होंने निम्नलिखित प्रार्थना की:

- परमेश्वर, उस पर से परदा हटाओ, उसे प्रकटीकरण और ज्ञानोदय दो।
- पवित्र आत्मा, उस पर मँडराओ और उसकी रक्षा करो।
- हर दिन उसके मार्ग में भक्त लोगों को भेजो।
- विश्वास के द्वारा, हम हर उस चीज को गिरा देते हैं जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध सिर उठाएगी - विशेषकर अभिमान और विद्रोह;
- विश्वास के द्वारा, हम हर ज्ञात गढ़ को ढाते हैं - गलत सोचने के तरीके, धर्म के विषय में विचार, भौतिकवाद और भय;
- यीशु के अधिकार से, हम शैतान का सामना करते हैं कि वह केविन को बन्धुवा न बना सके - हम सब दुष्ट विचारों और झूठ को गिराते हैं जो शैतान केविन के मन में बनाने का प्रयास करेगा;
- परमेश्वर, उस पर परमेश्वर का हथियार रखो।

इस प्रकार दो सप्ताह प्रार्थना करने के बाद, केविन ने गर्द की अधिक मात्रा ले ली। उसकी आवश्यकता के समय उसने परमेश्वर को पुकारा। महिला ने मुझे बताया, "प्रभु उससे एक सामर्थी तरीके से मिला। परदा तो निश्चित रूप से उठ गया और उसे परमेश्वर का प्रकटीकरण मिला। अब उसे वचन की समझ है और प्रतिक्रिया दिखाता है। गड़बड़ समाप्त हो गई है! केविन ने अपने आप को संसार और अपने पुराने मित्रों से अलग कर लिया है। वह अब परमेश्वर और मसीही सम्बंधों की खोज में है। उसका ध्यान परमेश्वर को प्रसन्न करना और उसे अधिकाधिक जानना है। वह प्रभु की पूरे समय सेवा करने का भी विचार कर रहा है।"

"हम जानते हैं कि हम संसार से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में है" (1 यूहन्ना 5:19)। फिर भी हमें अधिकार दिया गया है। हम अविश्वासियों को अंधकार से ज्योति और शैतान के वश से परमेश्वर में ला सकते हैं (प्रेरितों 26:18)। हमें मसीह की स्वतंत्रता जो उसने प्राप्त की है लागू करने के लिए बुलाया गया है।

अविश्वासी अपने लिए युद्ध नहीं कर सकता है। वह अंधकार के गढ़ों को जीत नहीं सकता और न ही जीतेगा। वह तब तक सुसमाचार ग्रहण नहीं करेगा जब तक परदा हटता नहीं। हमें अपने ईश्वरीय हथियारों को लेकर लड़ना है। अंधकार की शक्तियाँ विरोध करेंगी, परन्तु "उनसे मत डरो; प्रभु जो महान् और भययोग्य है, उसी को स्मरण करके, अपने भाइयों, बेटों, बेटियों, स्त्रियों और घरों के लिए युद्ध करना" (नहेम्याह 4:14)।

मनन के लिए प्रश्न

1. 2 कुरिं. 4:3 में परदा शब्द का क्या अर्थ है? यह अविश्वासियों पर कैसे लागू होता है? क्या आप समझा सकते हो कि यह एक सच्चे प्रकटीकरण से कैसे सम्बंधित है?
2. शैतान ने "अविश्वासियों की बुद्धि अंधी कर दी है" का क्या अर्थ है? यह मनुष्यजाति के पतन से कैसे जुड़ा हुआ है?
3. ज्ञानोदय का अर्थ समझाइए। वर्णन कीजिए कि ज्ञानोदय फोटोग्राफी से कैसे सम्बंधित है।

4. पश्चाताप का सच्चा अर्थ क्या है?
5. गढ़ की परिभाषा दीजिए। अब अविश्वासियों में गढ़ के तीन भागों का वर्णन कीजिए।
6. मध्यस्थता एक गढ़ के तीनों भागों में कैसे लागू हो सकती है?
7. अविश्वासी किस चीज के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना करनेवाले हैं?

अध्याय 11 – परमेश्वर की बिजली

निशाने पर मारो

जब मैं पाँचवीं कक्षा में था जो मुझे आवर्धक शीशा मिला था। मैं इसके बारे में बहुत खुश था। मैं ने पाया कि मैं इसे सूर्य के सामने एक पेपर से सही दूरी पर रखकर पेपर को आग लगा सकता हूँ। एक दिन, मैं ने खेल के मैदान में एक पेपर के टुकड़े को आग लगा दी। तब मुझे लगा मुझे एक शानदार विचार मिला है। मैं ने अपने मित्रों को बुलाया और उन्हें बताया कि मैं उन्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ। मैं ने डन्कन को प्रदर्शन के लिए चुना जो कक्षा में सबसे कमीना लड़का था। मैं ने कहा, डन्कन, अपना हाथ आगे बढ़ाओ। मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ। जब उसका हाथ जलने लगा, तो वह सारे मैदान में मेरे पीछे भागने लगा।
क्या इस कहानी में कहीं मध्यस्थता की कोई तस्वीर छिपी है? हाँ, है।
मध्यस्थता के लिए इब्रानी शब्द पागा का "निशाने पर मारो" भी अनुवाद किया जाता है। अय्यूब 36:32 कहता है, "वह बिजली को अपने हाथों में लेकर उसे आज्ञा देता है कि निशाने पर गिरे।"
जब परमेश्वर अपना प्रकाश देता है तो वह इसे अपनी उपस्थिति से बीजली की तरह भेजता है। मध्यस्थता के समान, यह निशाने पर लगती है। हबक्कूक 3:4 भी परमेश्वर के हाथ से किरणों के निकलने की बात करता है: "उसकी ज्योति सूर्य के तुल्य थी, उसके हाथ से किरणें निकल रही थीं; और इनमें उसका सामर्थ्य छिपा हुआ था।" एक दूसरा अनुवाद अच्छी तरह वर्णन करता है: "और उसकी चमक सूर्य की किरणों के समान थी; किरणें उसके हाथ से निकल रही थीं, और सूर्य के समान चमक में उसके सामर्थ्य के छिपने का स्थान था।"
हम एक प्रकार से आवर्धक शीशे हैं। हम परमेश्वर के सामर्थ्य को बढ़ाते नहीं, परन्तु हम "पुत्र" को अपने में से चमकने देते हैं। हम उसके प्रकाश को कुछ स्थितियों की ओर "निशाने पर लगने" देते हैं।
मैं पास के जंगल में काफी समय प्रार्थना में बिताता हूँ। कभी-कभी मुझे कुछ पेड़ मिलते हैं जिन पर बिजली गिरी होती है। बिजली इतनी गर्म होती है कि यह तनों को मोड़ देती है जो गोलाकार पट्टियों के समान दिखते हैं। बिजली के गाज का तापमान 30,000 डिग्री तक हो सकता है। यह तो सूर्य की सतह से भी गर्म है। परमेश्वर अपने न्यायों को चित्रित करने के लिए बिजली को उपयोग करता है!
सृष्टिकर्त्ता उसकी सृष्टि से बड़ा है। परमेश्वर में जो सामर्थ्य या उर्जा है वह बिजली के गाज से भी बड़ी है। इसमें कोई अचरज नहीं कि पवित्रशास्त्र कहता है, "जैसे मोम आग की आँच से पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नष्ट हों ... पर्वत यहोवा के सामने, मोम के समान पिघल गए ... वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई" (भजन 68:2; 97:5; 46:6)। "हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है" (इब्रानियों 12:29)।

परमेश्वर ज्योति है

निम्नलिखित आयतें परमेश्वर को ज्योति या बीजली से जोड़ती हैं। असंख्य दूसरे भी हैं जिन्हें दिया जा सकता है:
1 यूहन्ना 1:5, "जो समाचार हम ने उससे सुना और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं।"
1 तीमुथियुस 6:16, "और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है। उस की प्रतिष्ठा और राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।" (याकूब 1:17; निर्गमन 19:16; यहेजकेल 1:14; प्रकाशितवाक्य 4:5 देखो)
कभी-कभी परमेश्वर की ज्योति, या इसका निकलना, उसकी महिमा से जुड़ा होता है। निम्नलिखित आयतें इसका उदाहरण:
लूका 9:29, 32, "जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा...।"

"पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उसकी महिमा और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा।" "चमकने लगा" शब्दों का अक्षरशः अर्थ है: "बिजली के समान चमकना।" कोई अचरज नहीं कि पतरस जहाँ यीशु का रूपान्तर हुआ था तम्बू बनाना चाहता था।

प्रकाशितवाक्य 21:23, "उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है।" (2 कुरिन्थियों 3:7 देखो)

कभी-कभी यह ज्योति, बिजली या परमेश्वर की महिमा उसके मुँह से निकलती है। उसे अकसर तलवार कहा जाता है। नीचे दी गई पहली चार आयतें परमेश्वर के शब्दों या मुँह को उसकी तलवार के रूप में दिखाती हैं। बाकी की आयतें ज्योति या बिजली से जुड़ी हुई हैं।

इफिसियों 6:17, "और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।"

प्रकाशितवाक्य 2:16, "अतः मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।"

प्रकाशितवाक्य 19:15, "जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।" (इब्रानियों 4:12 भी देखो)

भजन 29:7, "यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है।"

यहोजकेल 21:9-10, 15, 28: "हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: देख, सान चढ़ाई हुई तलवार, और झलकाई हुई तलवार। वह इसलिए सान चढ़ाई गई कि उससे घात किया जाए, और इसलिए झलकाई गई कि बिजली के समान चमके। ... मैं ने घात करनेवाली तलवार को उनके सब फाटकों के विरुद्ध इसलिए चलाया है कि लोगों के मन टूट जाएँ, और वे बहुत ठोकर खाएँ। हाय, हाय! वह तो बिजली के समान बनाई गई, और घात करने को सान चढ़ाई गई है। ... फिर हे मनुष्य के सन्तान, भविष्यद्वाणी करके कह कि प्रभु यहोवा अम्मोनियों और उनकी की हुई नामधराई के विषय में यों कहता है; तू यों कह, खींची हुई तलवार है, वह तलवार घात के लिए झलकाई हुई है कि नाश करे और बिजली के समान हो।"

व्यवस्थाविवरण 32:41, "इसलिए यदि मैं बिजली की तलवार पर सान धरकर झलकाऊँ, और न्याय अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने द्रोहियों से बदला लूँगा, और अपने बैरियों को बदला दूँगा।" (भजन 18:13-14; होशे 6:5)

हम ने परमेश्वर को ज्योति या बिजली से जुड़ा दिखाया है। यह कभी-कभी उसकी महिमा के समान चमकता है। और कभी-कभी उसके मुँह से निकलता है, एक सामर्थी तलवार बनता है।

निम्नलिखित वचन, परमेश्वर का उसके शत्रुओं से निपटने के संदर्भ में, परमेश्वर की ज्योति की बात करते हैं।

भजन 97:3-4, "उसके आगे-आगे आग चमकती हुई उसके विरोधियों को चारों ओर भस्म करती है। उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ, पृथ्वी देखकर थरथरा गई है।"

प्रकाशितवाक्य 8:5, "तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग ली और पृथ्वी पर डाल दी; और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे।"

प्रकाशितवाक्य 16:18, "फिर बिजलियाँ चमकीं, और शब्द और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भूकम्प कभी न आया था।" (भजन 78:48; प्रकाशितवाक्य 11:19 भी देखो)

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र परमेश्वर की ज्योति के निकलने को उसके लोगों के छुटकारे से जोड़ते हैं।

भजन 18:14, "उसने अपने तीर चला चलाकर उनको तितर बितर किया, वरन् बिजलियाँ गिरा गिराकर उनको परास्त किया।"

भजन 77:17-18, "मेघों से बड़ी वर्षा हुई; आकाश से शब्द हुआ; फिर तेरे तीर इधर उधर चले। बवण्डर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था; जगत बिजली से प्रकाशित हुआ; पृथ्वी काँपी और हिल गई।"

भजन 144:6, "बिजली कड़काकर उनको तितर बितर कर दे, अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे।" (भजन 21:1 भी देखो)

इन वचनों के अनुसार, परमेश्वर ज्योति है। कभी-कभी यह ज्योति या महिमा उसमें से बिजली की गाजों के समान निकलती है। उसके शत्रुओं के साथ निपटने के लिए परमेश्वर केवल उसकी महिमा या ज्योति को एक स्थिति में छोड़ता है। यह बिजली के समान चमकती है और मध्यस्थता (पागा) होती है! परमेश्वर का सामर्थ्य "निशाने पर लगता है।" यह कई हजार वर्ष पहले हुआ था जब स्वर्ग पर कब्ज़ा करने का प्रयास किया गया था। अभिमानी लूसीफर ने सोचा कि वह खुद को परमेश्वर की स्थिति में खड़ा कर लेगा। यह एक बहुत ही बुरा विचार सिद्ध हुआ! यह लड़ाई अधिक देर नहीं चली लगभग उतनी ही देर जितनी एक बिजली के गाज को आकाश में चमकने में लगता है। यीशु ने इसके विषय में लूका 10:18-20 में बताया, "मैं शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।" वह कह रहा था कि उन्हें इससे खुश नहीं होना है कि दुष्टात्माएँ मसीह में उनके अधिकार के

आगे काँपते हैं। वैसे भी, उसने शैतान को स्वर्ग से गिरते देखा है। उन्हें इस बात से खुश होना है क्योंकि उनका परमेश्वर के साथ सम्बंध है।

ज्योति अन्धकार को जीत लेती है

हमें पता नहीं है कि बिजली की गाज कैसी दिखती होगी जब शैतान को स्वर्ग में से निकाला गया था। परन्तु, यीशु इस तस्वीर को उपयोग करता है। उसने कहा, यह "बिजली के समान" था। इससे वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह चमकी थी या नहीं। विचार निश्चित रूप से ज्योति का अन्धकार को जीत लेने का है। मैं नहीं सोचता कि पहले के दिए वचन बिजली के गाजों की बात करते हैं। सम्भवतः वे मनुष्य की आँखों से नहीं दिखे होंगे। कभी-कभी वे दिखे होंगे, जैसे मसीह के रूपान्तर के समय उसके कपड़े चमक रहे थे। परन्तु, बात यह नहीं है कि आँखों से क्या देखा जा सकता है। बात यह है कि आत्मिक स्थानों में क्या हुआ था। ज्योति अन्धकार को जीत लेती है। ज्योति परमेश्वर की भलाई या शुद्धता के प्रतीक से अधिक है। यह उसकी सामर्थ्य और शक्ति दिखाती है।

बिजली अन्धकार के राज्य को जीतनेवाली परमेश्वर की सामर्थ्य की बात करती है। अन्धकार और ज्योति की यह तस्वीर सारे पवित्रशास्त्र में पाई जाती है।

परमेश्वर की ज्योति की शैतान के अन्धकार पर विजय का एक और सामर्थी उदाहरण क्रूस पर पाया जाता है। यूहन्ना 1:4,5 कहता है, "उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण (katalambano) न किया।" यूनानी शब्द katalambano का अर्थ है: "समझना" या "पकड़ना"। कई विद्वान विश्वास करते हैं कि इसे आयत में "पकड़ना" अनुवाद किया जाना चाहिए। यह इसलिए है क्योंकि अन्धकार की शक्तियाँ मसीह को समझने का प्रयास नहीं कर रही थीं। वे उसे पकड़ने या जीतने का प्रयास कर रही थीं। यूहन्ना 1:5 को अनुवाद करने का एक तरीका है: "और ज्योति अन्धकार में निरन्तर चमक रही है। और अन्धकार उसे पराजित नहीं कर सका।" एक और अनुवाद है: "अन्धकार में ज्योति चमकी, परन्तु अन्धकार उसे वश में नहीं कर सका।" क्रूस ज्योति और अन्धकार के बीच युद्ध था। ज्योति जीत गई और परमेश्वर के शत्रु तितर बितर हो गए (भजन 68:1 देखो)।

एक दम्पति की कहानी है जो उनके छोटे बेटे और बेटी को एक विशाल भूमिगत गुफा में ले गए। वे एक पर्यटन समूह के साथ गए। जब पर्यटन गुफा के सबसे गहरे स्थान में पहुँचा, मार्गदर्शक ने सब लाइटें बंद कर दीं। यह दिखाने के लिए कि पृथ्वी की सतह के नीचे कितना सम्पूर्ण अन्धकार और चुप्पी थी।

छोटी लड़की बहुत डर गई और रोने लगी। तुरन्त उसके भाई की आवाज अन्धकार में सुनाई दी, "मत रो, यहाँ किसी को पता है लाइटें कैसे खोलनी हैं।" आदम के पाप के बाद सारी सृष्टि बहुत डर गई थी, और पाप के अन्धकार में टटोल रही थी। दो हजार वर्ष पहले, परमेश्वर ने उसके भयभीत मनुष्यों को कहा, "रोओ मत। यहाँ किसी को पता है लाइटें कैसे खोलनी हैं।"

मेरा विश्वास है कि शैतान के पास कुछ दुःस्वपन हैं जो बारम्बार आते हैं। उन में से एक है जब स्वर्ग में बिजली चमकी थी और उसे वहाँ से निकाला गया था। वह सम्भवतः गरजनवाले तूफान से घृणा करता है। वे तो परमेश्वर के प्रतापी आवाज के समान भी लगते हैं!

"तब यहोवा आकाश में गरजा, और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई, ओले और अँगारे। उसने अपने तीर चला चलाकर उनको तितर बितर किया; वरन् बिजलियाँ गिरा गिराकर उनको परास्त किया" (भजन 18:13-14)।

"यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुनाई पड़ती है; प्रतापी ईश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है" (भजन 29:3)।

शैतान के भय की कल्पना करो जब क्रूस पर परमेश्वर की ज्योति चमकी थी। यह वही ज्योति थी जिसने उसे स्वर्ग से निकाला था। मैं उसे चिल्लाते हुए सुन सकता हूँ, "अने, नहीं। दोबारा आ गई! परमेश्वर ने मुझे स्वर्ग तो लेने नहीं दिया और वह मुझे पृथ्वी भी लेने नहीं दे रहा है।"

बिजली का अभिषेक

हम कह सकते हैं कि परमेश्वर स्वयं "श्रीमान् ज्योति" है। हाँ, क्रूस पर झूठे "ज्योति के स्वर्गदूत" (2 कुरिं. 11:14) की श्रीमान् ज्योति से मुलाकात हुई। तब से कुछ भी वैसा नहीं रहा है! परमेश्वर ने तो अपने लिए बहुत सारी छोटी छोटी "ज्योतियाँ" रची हैं - "क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो" (इफि. 5:8)। उसने इन छोटी छोटी "ज्योतियों" को अपनी महिमा से भर दिया। जब यह हुआ तब शैतान यशायाह 60:1-3 को पहली बार समझाः "उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिए और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे।"

पहली बार शैतान को पता चला कि पुराने नियम का मन्दिर हमारी तस्वीर था। मसीही ("छोटे अभिषिक्त लोग") एक लोगों की नई जाति थी। परमेश्वर की महिमा उन में से हर एक में थी।

मध्यस्थता परमेश्वर की बिजली का निशाने पर लगने के द्वारा चित्रित की गई है। मसीह का मध्यस्थता का काम जब वह शैतान से मिला था ज्योति का अन्धकार को जीतना था। हमारी मध्यस्थता की प्रार्थना मसीह के मध्यस्थता के काम को दोबारा प्रस्तुत करना है।

हमारी मध्यस्थता परमेश्वर की बिजली को स्थितियों में छोड़ती है। हमारी मध्यस्थता के कुछ परिणाम हैं:

- अन्धकार की शक्तियों का सर्वनाश;
- जगत की ज्योति दोबारा चमकती है (यूहन्ना 8:12 और मत्ती 5:14 देखो);
- राज-पदधारी याजकों का समान परमेश्वर के गुण प्रकट करते हैं जिन्हें उसने अन्धकार में से बुलाया है (1 पतरस 2:9);
- आत्मा की विद्युत् तलवार चमकती है;
- यीशु और पिता की कलीसिया में महिमा होती है (इफिसियों 3:21 देखो)।

यूहन्ना 1:5 में का वाक्याँश "ज्योति अन्धकार में चमकती है" को ऐसे भी पढ़ा जा सकता है "ज्योति निरन्तर चमक रही है"। कुछ अनुवाद इस प्रकार कहते भी हैं।

जिस ज्योति ने अन्धकार को जीत लिया था अभी भी चमक रही है - विजय बनी हुई है। फिर भी इसे कलीसिया के द्वारा छोड़ा जाना चाहिए। हम अकसर भूल जाते हैं कि पवित्र आत्मा हम में कितना सामर्थी है। हम भूल जाते हैं कि चमकती हुई तलवार अन्धकार के लिए कितनी विनाशक है। उसकी तलवार में, जब हम इसे विश्वास के साथ काम में लाते हैं, अन्धकार के कार्यों को जीतने के लिए अलौकिक सामर्थ्य है।

रंगरलियों के उत्सव के समय गोलियत से मिलन

मैं कुछ वर्ष पहले बाइबल स्कूल के विद्यार्थियों को एक प्रसिद्ध रंगरलियों के उत्सव में ले गया था। हम ने अपनी अधिकाँश सेवा एक विशेष सड़क पर केन्द्रित की थी जहाँ अधिक रंगरलियाँ मनाई जा रही थीं। मैं ने कुछ स्थान देखें हैं जहाँ अन्धकार का जबरदस्त शासन होता है। इस बुराई के निरन्तर उत्सव पर शैतान का शासन होता है।

वहाँ जाने से पहले हम ने कई घंटे प्रार्थना में बिताए थे। हम ने अपने हृदयों में आश्वासन पा लिया था कि आत्मा में विजय हमारी है। ज्योति हम से पहले जा चुकी थी। हमें लगा कि हम तो वहाँ केवल लूट समेटने जा रहे हैं। हमारे पहुँचने के बाद हम ने दर्जनों लोगों को मसीह में आते देखा। हम ने कई लोगों को पवित्र आत्मा में नाटकीय घटनाएँ अनुभव करते देखा। बार-बार ज्योति अन्धकार पर विजय हुई।

परन्तु, यह बिना जाँच के नहीं हुआ। एक घटना ने विशेषकर मेरे हृदय को छू लिया। यह एक दुष्टात्माग्रस्त पुरुष के साथ हमारा मिलन था। उसकी मनसा हमें चोट पहुँचाने और कुछ को घात करने की भी थी। मैं अपना अधिकाँश समय सड़क पर आगे-पीछे चलते हुए अपने दल के लोगों के लिए प्रार्थना करने में बिता रहा था। वे लोगों को सुसमाचार सुना रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे। एक शाम मेरा साथी और मैं सड़क पार कर अपने दो विद्यार्थियों से बात करने गए। उन्होंने एक चिन्ह उठा रखा था जिस पर लिखा था "परमेश्वर आप से प्रेम करता है!"

जैसे हम खड़े बात कर रहे थे, कि एक भीमकाय पुरुष अचानक हमारी ओर लपका। हम उसे "गोलियत" कहेंगे। वह साढ़े छः फुट लम्बा और कम से कम 130 किलो भारी रहा होगा। उसने रोमी सिपाही के वर्दी पहन रखी थी और उसके हाथ में एक चाबुक भी था। उसके होठों पर लाल झाग लगी हुई थी। उसके मुँह के कोनों से लहू टपक रहा था। वह हमारे निकट अपना चाबुक चटकते और एक पागल कुत्ते के समान गुर्राते हुए आया। हमारे आसपास के लोग पीछे हट गए और खड़े तमाशा देखने लगे। फिर गोलियत एक भारी, किरकिरी आवाज से बोला, "परमेश्वर तुम से प्रेम करता है, अहं? मैं तुम्हें मार डालूँगा!"

मैं ने तुरन्त सोचा यह ठीक नहीं हैं। मैं कोई सामर्थी वचन एक तलवार के समान बोलना चाहता था। मेरे मन में एक ही वचन आया "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ" (फिलि. 1:21)। यह ऐसा वचन नहीं लग रहा था जिसे उस समय बोला जाना चाहिए था! मैं खड़ा, सोचने लगा कि बाकी के तीन कुछ क्यों नहीं कर रहे हैं। अचानक मुझे लगा कि इसका एक कारण था - मैं अगुवा था!

मैं "सब अपने आप को देखो!" बोलकर भागना चाहता था। परन्तु मैं ने ऐसा किया नहीं। मेरे भीतर एक डर उठने की कोशिश करने लगा। मैं ने असल में क्या किया? मैं - सामर्थ्य के साथ - मध्यस्थता करने लगा। जब मैं ने बाकी के तीनों पर नज़र डाली तो देखा कि उनके होंठ हिल रहे थे। वे भी मध्यस्थता कर रहे थे! अब तो चार गुणा मध्यस्थता हो रही थी। मेरे मन में, मैं ने अपनी प्रार्थना की तुलना अपने बचपन के आवधर्क शीशे से की। इससे सूर्य की रोशनी में पृथ्वी की चीजें जल सकती थीं - हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर के सामर्थ्य को इस स्थिति में ला सकती थीं। हम ने खड़े रहकर इस व्यक्ति में अन्धकार की शक्तियों को बाँध

दिया। सेकन्डों के भीतर वह बदलने लगा। उसके चेहरे का रुख बदलने लगा। उसकी आवाज बदल गई और उसका रवैया बदल गया। उसे वश में करनेवाली दुष्टात्माओं को जीत लिया गया था। ज्योति विजयी हुई थी। व्यक्ति असल में चकराया हुआ लगा। उसने हमारी ओर अजीब मुद्रा से देखा। कुछ बुदबुदाया, और लोगों के आश्चर्यचकित होकर देखते-देखते, फिर धीरे धीरे चलता हुआ चला गया।

ज्योति ने अन्धकार को जीत लिया था। परमेश्वर का सामर्थ्य निशाने पर लगा था। दुष्टात्माएँ शान्त हो गई थीं, और हम लगभग निश्चय चोट, या मृत्यु से भी बच गए थे। हम गोलियत से डर गए थे, परन्तु हमें मध्यस्थता करनी आती थी, और प्रभु ने हमारी रक्षा की।

जीवित मन्दिर जो महिमा उठाए फिरते हैं

मेरे पिता ने विदेश की एक यात्रा के दौरान ज्योति को अन्धकार को जीतते देखा था। वह प्रचार कर रहा था और मरकुस 16:15-18 के अनुसार बीमारों के लिए प्रार्थना कर रहा था। उस देश का राष्ट्रीय धर्म जादू-टोना (वूडू) था। इसलिए, वहाँ दुष्टात्माओं का काम अधिक होता है। अन्धकार की शक्तियों को मुक्त अधिकार मिला हुआ था। एक सभा में, पिता को लगा कि उसे अंधे लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, इसलिए उसने उन्हें आगे बुलाया। 20 लोग आगे आए। वह एक-एक के सामने खड़ा होता, और पवित्र आत्मा के निर्देश की प्रतीक्षा करता। उसे उनमें से 19 के लिए वैसा ही निर्देश मिलाः "अंधी करनेवाली आत्मा को निकाल दो। हर बार जब उसने किया, वे तुरन्त चंगे हो गए। वे बिलकुल साफ-साफ देख सकते थे।

यह ज्योति का निशाने पर लगने का एक उदाहरण है। इसने अंधी आँखों को भेदा, और ज्योति लाई।

यहाँ कुछ ऐसा है जिसे कई विश्वासी जानते नहीं हैं। हम परमेश्वर की महिमा और ज्योति से भरे हुए हैं। प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा में कहा था, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है ?" (1 कुरिं. 3:16)। यूनानी शब्द "naos" का अर्थ होता हैः मूसा के तम्बू और सुलेमान के मन्दिर का अति पवित्र स्थान। पौलुस असल में कह रहा था, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम अति पवित्र स्थान हो ?" "वास करता" शब्द पुराने नियम के शब्द "shakan" से लिया गया है, जिसका अर्थ हैः "बने रहना या निवास करना।" इब्रानी शब्द "shekinah" shakan से मिलता है। "shekinah" थाः बनी रहनेवाली महिमा जो अति पवित्र स्थान में निवाल करती थी। पौलुस कह रहा था कि "shekinah" हम में है (1 शमूएल 4:4 और 6:12-19)। हम नए अति पवित्र स्थान हैं। हम जीवित पत्थरों से बना एक मन्दिर हैं, जो मनुष्य के हाथों से नहीं परन्तु स्वयं परमेश्वर से बना है (प्रेरितों 7:48 देखो)।

2 कुरिन्थियों 4:6-7 इस प्रकार कहता हैः "इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, 'अन्धकार में से ज्योति चमके,' और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। परन्तु हमारे पास वह धन मिट्‌टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।"

इस्राएल वाचा का सन्दूक युद्ध में ले जाते थे। सन्दूक परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा चित्रित करता था (यहोशू 6:6 देखो)। जब सन्दूक निकलता था, तब "हे यहोवा, उठ, तेरे शत्रु तितर बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ!" (गिनती 10:35) की पुकार गूँज उठती थी। वही उपस्थिति और महिमा अब हम में रहती है। हमें समझना है कि विजय की कुंजी इसी परमेश्वर की उपस्थिति को युद्ध में अपने साथ ले जाना है। वह उठता और उसके शत्रुओं को तितर बितर करता है क्योंकि हम उसकी महिमा अपने भीतर ले जाते हैं। हम अब उसके सन्दूर के उठानेवाले हैं!"

ज्योति छोड़ो

उठ, प्रकाशमान हो, कलीसिया, क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और प्रभु का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। निस्संदेह, पृथ्वी पर तो अन्धकार छाया हुआ है। लोगों पर गहरा अन्धकार छाया हुआ है, परन्तु यह तो हराया हुआ अन्धकार है। देश ज्योति की खोज में हैं। शासक हमारे तेज की प्रतीक्षा कर रहे हैं (यशायाह 60:1-3 देखो)। हम ज्योति के सिपाही हैं। हमें परमप्रधान की सामर्थ्य को साहस के साथ स्थितियों में छोड़ना चाहिए। मसीह ने हमें उसकी ज्योति दी है। उसने हमें उसकी तलवार दी है। उसने हमें उसका नाम दिया है। उन्हें उपयोग करो! अपना मुख पुत्र की ओर करो और उसे अपने द्वारा चमकने दो। निशाने पर मारो! आत्मा की तलवार हाथ में ले लो।

हम अकसर भूल जाते हैं कि जो पवित्र आत्मा हम में है, कितना सामर्थी है। हम भूल जाते हैं कि उसकी चमकती तलवार अन्धकार के लिए कितनी विनाशक है। इसमें, जब हम इसे विश्वास के साथ कार्य में लाते हैं, अन्धकार के कामों को जीत लेने की अलौकिक सामर्थ्य है।

माता-पिता, अपने आप को अपने विद्रोही बच्चों के सामने आत्मिक रूप से खड़े करो। परमेश्वर से माँगो कि वह उनमें दीनता का गाज भेजे। उनके व्यसनों पर स्वतंत्रता की ज्योति डालो। आत्मा में आक्रमणशील बनो।

विवाहितो, परमेश्वर से माँगो कि वह आपके साथी पर चमके। उससे माँगो कि वह धोखे के अन्धकार को भेदे और उन्हें स्वतंत्र करे।
पास्टरो, पवित्र आत्मा को चमकने के लिए बुलाओ। उससे माँगो कि वह आपकी मण्डलियों में झगड़ों और विभाजनों को तोड़े। प्रभु के लिए उनके उत्साह की कमी को तोड़े। जबकि आप प्रतीक्ष कर रहे होंगे कि परमेश्वर कुछ करे, वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा। ज्योति को छोड़ो! इसे यीशु के नाम में बुलाओ।
जैसे इस्राएली परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा युद्ध में ले जाया करते थे, उसी प्रकार हमें भी करना है। सब कुछ जो वाचा के सन्दूक में था हम में है। इसमें मन्ना (जीवन की रोटी), याजकीय अधिकार की छड़ी और परमेश्वर की व्यवस्था थी।
जो महिमा सन्दूक पर थी हम में से चमकती है। इसके समान कार्य करो! तलवार से वार करो - वचन के साथ बोलो! अपनी मध्यस्थता के द्वारा परमेश्वर को उठने दो, और उसके शत्रु तितर बितर हो जाएंगे।

मनन के लिए प्रश्न

1. पागा (मध्यस्थता के लिए इब्रानी शब्द) का बिजली से क्या सम्बंध है ?
2. परमेश्वर की ज्योति (या बिजली) और उसके न्यायों में सम्बंध समझाओ। उसकी ज्योति ने क्रूस पर क्या किया था ?
3. परमेश्वर की ज्योति, उसकी तलवार और हमारी मध्यस्थता में क्या सम्बंध है ?
4. अति पवित्र स्थान आज कहाँ है ? इसका मध्यस्थता से क्या सम्बंध है ?
5. किसी पूर्व की घटना के बारे में सोचो जहाँ ज्योति ने अन्धकार को जीत लिया था। परमेश्वर ने इसे कैसे किया था ? अब, एक वर्तमान की स्थिति के बारे में सोचो - वैसे की परिणामों को पाने के लिए मधयस्थता को कैसे उपयोग किया जा सकता है ?

अध्याय 12 – प्रार्थना का तत्त्व

2 शमूएल 23:8-12 में दाऊद के तीन शूरवीरों की एक कहानी है: शम्मा, अदीनो और एलीआज़र। शम्मा में एक साधारण काम के सामने भी अटल दृढ़ता थी। उसे मसूर के एक खेत को पलिश्तियों से बचाने की आज्ञा मिली हुई थी। अदीनो ने अत्यधिक कठिनाइयों के सामने दृढ़ता दिखाई। उसने अकेले 800 पलिश्तियों को मार गिराया। एलिआज़ार में अत्यधिक थकान के सामने भी अत्यधिक दृढ़ता थी। कई घंटों तक लड़ने के बाद, उसके हाथ को तलवार पर से जोर लगाकर निकालना पड़ा था। ये तीन शूरवीर मुझे दृढ़ता के महत्त्व को सिखाते हैं। मैं इसे सबसे महत्त्वपूर्ण आत्मिक गुणों की सूची के ऊपर रखता हूँ।
दृढ़ता पवित्र आत्मा के नौ फलों में भी पाई जाती है। यूनानी शब्द "makrothumia" का गलातियों 5:22 में अनुवाद किया गया है: "धीरज"। यह वो गुण है जो किसी को किसी काम या स्थिति पर एक लम्बे, लम्बे समय तक टिकाए रखता है। Makrothumia के साथ निराश हो जाना नहीं होता।
आजकल संसार में लोग "सबकुछ तात्कालिक" की अपेक्षा करते हैं। "फास्ट-फूड्स" - शीघ्र अमीर बनने के तरीके - रातों रात शहर में सबसे बड़ी कलीसिया बनाने के तरीके - अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर पाने के सरल तरीके। ये सब चीजें अति लोकप्रिय हैं। इस प्रकार के सोचविचार के कारण, हम दृढ़ता के चरित्र के गुण को तेजी से खो रहे हैं। हम तेजी से पकाते, तेजी से सफर करते, तेजी से उत्पन्न करते और तेजी से खर्च करते हैं। किसी तरह हम परमेश्वर से अपेक्षा करते हैं कि वह हम से पिछड़े नहीं। यह प्रार्थना के क्षेत्र में विशेषकर सत्य है। हम काफी कुछ अफ्रीका के चीता के समान हैं जो अपने शिकार को खाने के लिए उसे दौड़कर पकड़ लेता है। यह इस काम के लिए बिलकुल उपयुक्त है। यह 70 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है। परन्तु चीता की एक समस्या है। इसका दिल बहुत छोटा है, जिससे वह जल्दी थक जाता है। यदि यह अपने शिकार को शीघ्र पकड़ नहीं लेता तो इसे पीछा करना त्यागना पड़ता है।
कितनी बार प्रार्थना की हमारी पहुँच चीता जैसी होती है। हम अपने प्रार्थना की कोठरी में बड़ी शक्ति के साथ घुसते हैं। हम कलीसिया के पास दौड़ते हुए पहुँचते हैं। हम किसी दूसरे के पास प्रार्थना के लिए फुर्ती से पहुँचते हैं। परन्तु हम में लम्बे समय के प्रयत्न की कमी होती है। हमें जो पूरा करना होता है उसे पूरा करने से पहले ही हम रुक जाते हैं। हमें प्रार्थना के लिए एक बड़े हृदय की आवश्यकता है।
जॉर्ज म्यूलर प्रार्थना में दृढ़ रहनेवाला एक व्यक्ति था। उसने कहा, "उत्तर आने तक हिम्मत मत हारो। मैं 63 वर्षों से एक व्यक्ति के मसीह में आने की प्रार्थना कर रहा था। उसका अभी उद्धार नहीं हुआ है, परन्तु होगा। उसका उद्धार कैसे नहीं हो सकता है ? - मैं प्रार्थना जो कर रहा हूँ।" वह दिना आया, जब म्यूलर के मित्र ने मसीह को ग्रहण किया। परन्तु यह तब आया जब म्यूलर की

शवपेटिका भूमि में उतारी जा रही थी। वहाँ, उसकी खुली कब्र के पास, इस मित्र ने अपना हृदय मसीह को दे दिया। म्यूलर की सफलता संक्षेप में इन चार सामर्थी शब्दों के द्वारा समझाई जा सकती है: उसने छोड़ नहीं दिया!

संक्षिप्त और सरल प्रार्थना में काम नहीं करता है

यीशु ने उसकी सेवा को पूरा करने के लिए कई रातें प्रार्थना में बिताई थीं। क्रूस का सामना करने के लिए उसे गतसमनी में तीन कठिन घंटे लगे थे। "यीशु ने .. ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर .. प्रार्थनाएँ और विनती की" (इब्रानियों 5:7)।

दूसरी ओर, हम संक्षिप्त प्रार्थनाओं की कला के विशेषज्ञ बन गए हैं। "संक्षिप्त और सरल" कुछ स्थितियों में एक अच्छी सलाह हो सकती है, परन्तु अधिकाँश जीवन के लिए, "सरल" काम नहीं करता है। इसमें प्रार्थना भी सम्मिलित है।

एक विमान चालक, उड़ान के समय, विमान के पीछवाड़े यह पता लगाने गया कि पीछे के दरवाजे की चेतावनी लाइट क्यों जली हुई है। समस्या एक प्रवेश द्वार की थी जो ठीक से बंद नहीं था। जैसे वह उसे बंद करने का प्रयास कर रहा था, यह पूरा खुल गया। वह तुरन्त उस दरवाजे से बाहर खींच लिया गया। सह-चालक ने देखा कि एक दरवाजा खुला है। उसने तुरन्त विमान को हवाई अड्डे की ओर मोड़ा। उसने क्षेत्र की खोजबीन करने के लिए एक हेलिकॉप्टर को सूचना भेजी। "मुझे लगता है हमारा विमान चालक विमान के एक खुले द्वार से बाहर खींच लिया गया है" उसने कहा। सह-चालक ने विमान भूमि पर उतारा, और तब जो उसने देखा उससे वह आश्चर्यचकित रह गया। चालक विमान से लगी एक सीढ़ी के डण्डे को पकड़े हुए था, जिसे वह चमत्कारी तरीके से पकड़ सका था। वह उसे 15 मिनट तक पकड़े हुए था। उससे भी आश्चर्यजनक, उसने अपने सिर को भूमि पर लगने से बचाए रखा था। भूमि उसके सिर से केवल छः इन्च दूर ही थी। जब हवाई अड्डे के परिचारियों ने चालक को पाया, तब उन्हें उसकी अँगुलियों को सीढ़ी पर से जोर लगाकर निकालना पड़ा था। यह दृढ़ता है!

कलीसिया में हमारी समस्याएँ जानकारी या शारीरिक शक्ति की कमी का परिणाम नहीं हैं। यदि हम उसे पूरा करने में असफल रहते हैं जो परमेश्वर हम से चाहता है, तो यह हृदय और आत्मा की असफलता है। प्रार्थना में दृढ़ता की आवश्यकता क्यों है? क्या परमेश्वर कुछ स्थितियों के लिए प्रार्थनाओं की कुछ मात्रा की माँग करता है? क्या हम उसे मनवा लेते हैं? क्या परमेश्वर कभी कुछ करने का फैसला करता है? क्या हम कठिन परिश्रम या दृढ़ता के द्वारा उत्तर कमाते हैं? इन सब प्रश्नों के उत्तर नहीं में हैं।

कुछ पूछेंगे, "आग्रही व्यक्ति की कहानी के बारे में क्या कहते हो?" (लूका 11:5-13 देखो)। क्या यह सिखाती नहीं कि हमें परमेश्वर के सामने तब तक डटे रहना है जब तक वह हमें देता नहीं जो हम माँग रहे हैं?

उत्तर है जोरदार नहीं। हम परमेश्वर के विरुद्ध डटे नहीं रहते।

इस कहानी का विचार वही है जो इब्रानियों 4:16 का है। वहाँ हमें अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाब बाँधकर आने को कहा गया है। हमें अयोग्यता या लज्जा की भावना के साथ नहीं आने को कहा गया है। हम लूका 11 की कहानी के व्यक्ति के समान हैं। हम परमेश्वर के पास कभी भी जा सकते हैं, यह जानते हुए कि हम स्वीकार किए गए हैं।

क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं के उत्तर देने की देरी को हमें कुछ सिखाने के लिए उपयोग कर रहा है? कभी-कभी यह निश्चित रूप से होता है। दूसरी स्थितियों में देरी इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के पास प्रार्थना के उत्तर का एक सही समय है। "हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे" (गला. 6:9)।

प्रार्थना में दृढ़ता आवश्यक क्यों है? मेरी पत्नी के पेट में रसोली को गायब कराने के लिए मुझे 30 घंटों की प्रार्थना क्यों लगी थी? कोमा में पड़ी लड़की के लिए एक चमत्कार पाने में एक वर्ष क्यों लगा था? कभी-कभी किसी को उद्धार पाते देखने में कई वर्षों की मध्यस्थता क्यों लगती है? बारिश लाने के लिए एलिय्याह को सात बार प्रार्थना क्यों करनी पड़ी थी? दानिय्येल को 21 दिन क्यों लगे थे इससे पहले स्वर्गदूत उत्तर के साथ उसके पास पहुँच सका था?

उसका सिंहासन हमारे हृदय में

मेरे पास निश्चय ही प्रार्थना के विषय में इन प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं। फिर भी, मैं आपके सोचने के लिए एक स्पष्टीकरण देना चाहता हूँ। मुझे एक चीज का निश्चय हो गया है जिसे प्रार्थना का "तत्त्व" कहते हैं। विचार यह है कि हमारी प्रार्थनाएँ पिता को कार्य करने में प्रेरित करने से कुछ अधिक करती हैं। वे असल में चीजों को पूरा करने के लिए हम से पवित्र आत्मा की सामर्थ्य छोड़ती हैं। कुछ प्रकार की प्रार्थनाए ऐसा दूसरों से अधिक करती हैं।

उदाहरणार्थ, प्रसव-पीड़ा के हमारे अध्याय में हम ने कहा था कि जैसे हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं तो सामर्थ्य का यह छोड़ा जाना होता है। इसके होने का एक दूसरा तरीका हो सकता है जब हम स्थितियों में परमेश्वर का वचन बोलते हैं। सामान्य घोषणाएँ या आज्ञाएँ दूसरी क्रियाएँ हैं जो पवित्र आत्मा के सामर्थ्य को छोड़ती हैं (मत्ती 17:20; मरकुस 11:23 देखो)। हाथ रखने का अभ्यास सामर्थ्य को छोड़ने का बाइबल का दूसरा तरीका है (मरकुस 16:18; इब्रानियों 6:2 देखो)।

पवित्र आत्मा में एक असली सामर्थ्य है जिसे हमारे लिए छोड़ा जा सकता है। परमेश्वर का सामर्थ्य जो जीवन और चंगाई और सम्पूर्णता लाता है कलीसिया में से उमड़ना चाहिए। कृपया ऐसा मत सोचिए कि स्वर्ग में कोई सिंहासन है और सारा सामर्थ्य वहाँ पर है। उसने अब अपना सिंहासन हमारे हृदयों में बनाया है। हम पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं। हम अब अति पवित्र स्थान हैं, पृथ्वी पर परमेश्वर की निवास स्थान हैं (1 कुरिन्थियों 3:16 और 6:19 देखो)। जब वह पृथ्वी पर सामर्थ्य के काम करना चाहता है तो उसे कहीं आकाश से छोड़ना नहीं पड़ता है। यह उसके लोगों से आता है। वहीं पर उसका आत्मा निवास करता है।

कलीसिया, पृथ्वी पर परमेश्वर का गर्भाशय

जब पृथ्वी पर परमेश्वर का सामर्थ्य उमड़ने लगता है, तो यह मानवीय पात्रों में से उमड़ता है। इसे करने के कुछ तरीके हैं बोलना, छूना, आराधना या प्रार्थना।

हम मसीह की देह पृथ्वी पर परमेश्वर का गर्भाशय हैं। हमारे द्वारा, पृथ्वी पर उसका जीवन जन्माया या छोड़ा जाता है। जो जीवन मसीह उत्पन्न करता है कलीसिया के गर्भाशय में से उमड़ता है।

यूहन्ना 7:38 में यीशु ने कहा, "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।'" हृदय में से के लिए यूनानी शब्द "koilia" है जिसका अर्थ है: "गर्भाशय"। हम कह सकते हैं, "उसके गर्भाशय में से जीवन जल की नदियाँ बह निकलेंगी।" "गर्भाशय" शब्द उत्पन्न करने की बात करता है। यह जन्म देने की बात करता है।

वैसे ही शब्द प्रकाशितवाक्य 22:1-2 में पाए जाते हैं: "फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे।" यहाँ यीशु की जीवन के स्रोत के रूप में तस्वीर है। उसमें से नदी बहती है जिसके दोनों ओर वृक्ष लगे हैं। वृक्षों पर पत्ते लगे हैं, जिसे नदी से जीवन मिलता है, जिसे यीशु से जीवन मिलता है। लोग - देश - पत्ते खाते हैं और वे चंगे होते हैं।

मैं यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि दोनों स्थानों पर, अर्थात् यूहन्ना 7:38 और प्रकाशितवाक्य 22:1-2, "जीवन जल की नदी" शब्द ही हैं। जीवन के जल की नदी जो मेम्ने से निकलती है और जीवन जल की नदी जो कलीसिया के गर्भाशय से निकलती है दोनों में कोई अन्तर नहीं है। दोनों को पृथ्वी पर चंगाई और सम्पूर्णता लाना है। हम यीशु के जन्म देनेवाले पात्र हैं। इससे हमें आश्चर्य क्यों हो? क्या हमें पृथ्वी पर यीशु के जीवन की सेवा नहीं करनी है? यूहन्ना 7:39 हमें बताता है, "उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा था।" यह पवित्र आत्मा है जो हमारे हृदय में से उसके सामर्थ्य और उपस्थिति को जीवन जल की नदी के रूप में भेजता है। आत्मा बीमारों पर हाथ नहीं रखता - हम उसके लिए अपने हाथ रखते हैं। हमारे भीतर से आत्मा एक व्यक्ति में नदी बहाता है। यह अभिषेक उनके लिए आशीष लाता है (लूका 4:18 देखो)। सुसमाचार उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य है (रोमियों 1:16 देखो)। जब वह सुसमाचार सुनाना चाहता है तो वह इसे स्वर्ग में से नहीं बोलता है। वह हमारे द्वारा बोलता है। परमेश्वर का जीवन, सामर्थ्य और शक्ति हमारे मुखों में से उमड़ते हैं और अविश्वासियों के हृदयों को भेदते हैं। तब उनका नया जन्म होता है। हम ही हैं जो आत्मा की तलवार उठाते हैं जो परमेश्वर का बोला गया वचन है। जब परमेश्वर का आत्मा स्थितियों में न्याय लाना चाहता है, तो वह बादलों में से नहीं बोलता। वह अपने लोगों में से बोलता है। हम परमेश्वर के जीवन को उमड़ने दे सकते हैं। हम परमेश्वर का गर्भाशय हैं जिसमें से नदी बहनी चाहिए।

मापने योग्य सामर्थ्य

यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर का सामर्थ्य मापा जा सकता है। इसकी मात्रा हमारे प्रार्थना करने के अनुसार बढ़ सकती है। विश्वास के स्तर भी होते हैं जिन्हें मापा जा सकता है। रोमियों 12:3 कहता है, "परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है।" परमेश्वर ने हर विश्वासी को विश्वास का एक अंश या बीज माप कर दिया है। यहाँ से इसे बढ़ाया जाना चाहिए। धार्मिकता और पाप के अंश हैं जिन्हें मापा जा सकता है।

उत्पत्ति 15:16 में परमेश्वर ने अब्राहम को कहा कि वह उसके वंश को देश चार पीढ़ियों में देने वाला है। वह उसे अभी नहीं दे सकता था क्योंकि "अब तक एमोरियों का अधर्म पूरा नहीं हुआ है।" परमेश्वर ने एमोरियों के पाप को मापा, और पाया कि यह अभी पर्याप्त नहीं है। इससे पहले परमेश्वर एमोरियों का न्याय करने और जो उनका है उसे इस्राएल को देने में उचित अनुभव करता और अधिक पाप एकत्र होना था। उसने बताया कि इसमें 400 वर्षों का और पाप लगेगा। परमेश्वर दयालु है।

अनुग्रह के स्तर भी हैं जिन्हें मापा जा सकता है। 2 कुरिन्थियों 9:8 कहता है, "परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है।" प्रेरितों 4:33 में, "प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन पर बड़ा अनुग्रह था।" अनुग्रह, बड़ा अनुग्रह और सब प्रकार का अनुग्रह होता है!

प्रेम की कोटी होती है जिसे मापा जा सकता है। यूहन्ना 15:13 बड़े प्रेम की बात करता है। मत्ती 24:12 ऐसे प्रेम की बात करता है जो ठण्डा हो गया है। फिलिप्पियों 1:9 ऐसे प्रेम की बात करता है जो और भी बढ़ता जाता है।
परमेश्वर के सामर्थ्य की कोटियाँ होती हैं जिन्हें मापा जा सकता है। मरकुस 6:5 में परमेश्वर के सामर्थ्य की मात्रा की कमी थी। आयत कहती है कि नासरत के लोगों के अविश्वास के कारण "वह वहाँ कोई सामर्थ्य के काम न कर सका।" यूनानी भाषा में नहीं लिखा है, "उसने नहीं करने का फैसला किया" या "उसने नहीं किए।" लिखा है, "वह कर न सका।" यह इसलिए था क्योंकि उनके विश्वास के निम्न स्तर ने परमेश्वर के सामर्थ्य के उमड़ने में बाधा डाली थी। हालाँकि यीशु कुछ लोगों को चंगा कर सका था, परन्तु वह वहाँ कोई चमत्कार नहीं कर सका था। वही आयत जो बड़े अनुग्रह की बात करती है बड़े सामर्थ्य की भी बात करती है (प्रेरितों 4:33)। प्रेरितों में बड़ा सामर्थ्य था क्योंकि उन पर बड़ा अनुग्रह था! स्वाभाविक में आपको विभिन्न चीजों के लिए विभिन्न स्तर के सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। आत्मा के क्षेत्र में भी ऐसा ही है। टॉर्च जलाने में और एक इमारत में रोशनी करने में बिजली की अलग मात्रा लगती है। एक शहर में बिजली करने के लिए शहर की एक इमारत से कहीं अधिक बिजली लगती है। आत्मा में भी यही बात सत्य है। कुछ चीजों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के परमेश्वर के सामर्थ्य की मात्रा की आवश्यकता होती है।

सामर्थ्य की विभिन्न मात्राएँ

आओ हम दोबारा मरकुस 6 को देखें जहाँ नासरत में यीशु के लिए चमत्कार करने के लिए पर्याप्त विश्वास नहीं था। कुछ चंगाइयों के लिए पर्याप्त सामर्थ्य उमड़ रहा था। लोगों का विश्वास का स्तर बहुत कम था। आयत दिखाती है कि चंगाइयों और चमत्कारों में एक अन्तर है। एक के लिए पर्याप्त विश्वास और सामर्थ्य थे, परन्तु दूसरे के लिए नहीं थे। इसका अर्थ है कि विभिन्न चीजों के लिए विभिन्न मात्रा की आवश्यकता होती है। मत्ती 17:14-21 में चेले दुष्टात्माओं को निकाल और बीमारों को चंगा कर रहे ते। यीशु ने उन्हें ऐसा करने का अधिकार और सामर्थ्य दिया था। परन्तु, एक दुष्टात्मा-ग्रस्त लड़का उनके पास लाया गया था और वे दुष्टात्मा को निकाल न सके थे। यीशु वहाँ आया, और उसके लिए लड़के में से दुष्टात्मा को निकालना कोई समस्या नहीं थी। चेलों के पास अधिकाँश दुष्टात्माओं और बीमारियों से निपटने के लिए उनकी सेवा में पर्याप्त सामर्थ्य था, परन्तु अब उनका सामना ऐसे से हुआ जिसके लिए अधिक विश्वास और सामर्थ्य की आवश्यकता थी। इसे जीतने के लिए उनके पास पर्याप्त नहीं था!
यह विषय को चित्रित करता है। कभी-कभी प्रार्थनाओं के उत्तर आने में कुछ समय लगता है। इन चेलों को बताया गया था कि उनके अपर्याप्त विश्वास का उत्तर उपवास और प्रार्थना था। एक तात्कालिक चमत्कार पाना अकसर नहीं होता है। अकसर यह पिता से कुछ करने के लिए कहने की बात नहीं होती। यह काम को करने के लिए पर्याप्त आत्मिक सामर्थ्य होने की बात होती है। अधिकाँश मसीही इसे जानते नहीं हैं। माँगने के बाद, हम बैठ जाते हैं और परमेश्वर की बाट जोहते हैं। अकसर वह हमारी बाट जोह रहा होता है! हमें कभी-कभी ऐसी प्रार्थनाएँ करनी होती हैं जो उससे माँगने से कुछ अधिक करती हैं। जब परमेश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है तो अकसर ऐसा लगता है कि आखिरकार उसने कुछ करने का फैसला कर लिया है। सत्य यह है कि इसे पूरा करने के लिए आखिरकार पर्याप्त सामर्थ्य छोड़ा गया है।

भविष्यद्वक्ता जो सामर्थ्य के लिए दृढ़ रहते थे

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह विधवा के बेटे के पास आया जो मरा हुआ था। उसने अपने आप को लड़के के शरीर पर लेटा दिया। तब उसने तीन बार प्रार्थना की (1 राजा 17:21 देखो)। उसने तीन बार प्रार्थना क्यों की? क्या यह इसलिए था कि परमेश्वर का जन अधिक आत्मिक नहीं था? क्या यह इसलिए था कि उसमें अधिक विश्वास नहीं था? क्या यह इसलिए हुआ क्योंकि वह पहली दो बार ठीक से नहीं कर पाया था? मेरा विश्वास है कि हर बार जब उसने प्रार्थना की, तो उसने अपने आत्मिक "गर्भाशय" में से अधिक जीवन लाया था। मरे हुए को जीवित करने में जीवन की एक अच्छी मात्रा लगती है। पिछले अध्यायों में, हम ने 1 राजा 18 को देखा था जहाँ एलिय्याह ने बारिश के लिए प्रार्थना की थी। हम ने परमेश्वर का मनुष्य के द्वारा कार्य करने के महत्त्व की चर्चा की थी। हम ने मनुष्य का परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए प्रसव-पीड़ा के महत्त्व को देखा था। आओ हम इस अनुच्छेद को दोबारा देखें। 1 राजा 18:1 में प्रभु ने एलिय्याह को कहा, "जाकर अपने आप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूँगा।" परमेश्वर ने "मैं मेंह भेज सकता हूँ" नहीं कहा। उसने "यदि तू जोर के साथ प्रार्थना करेगा तो मैं मेंह भेजूँगा" नहीं कहा। उसने कहा, "मैं मेंह बरसा दूँगा।" यह परमेश्वर का समय, परमेश्वर का विचार और परमेश्वर की इच्छा थी। परन्तु फिर भी, इससे पहले बारिश आती, एलिय्याह को सात बार प्रार्थना में परिश्रम करना था। वह यों ही पर्वत पर नहीं चढ़ गया और कहने लगा, "प्रभु, बारिश भेज दे।" याकूब हमें बताता है कि एलिय्याह ने उत्साह के साथ प्रार्थना की कि बारिश रुक जाए और फिर उत्साह के साथ प्रार्थना की कि बारिश आए (याकूब 5:16-18 देखो)। यदि यह परमेश्वर की इच्छा थी तो एलिय्याह को सात बार प्रार्थना क्यों करनी पड़ी तब बारिश आई? मेरा विश्वास है कि दृढ़ रहना आवश्यक था।

एलिय्याह को पर्याप्त प्रार्थना पूरी करनी थी कि पर्याप्त सामर्थ्य छोड़ा जाता। यह सामर्थ्य उसकी मध्यस्थता से छोड़ा गया था। दानिय्येल को अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए 21 दिन क्यों लगे थे? वैसे भी, परमेश्वर ने पहले ही दिन जब दानिय्येल ने प्रार्थना करना आरम्भ किया था एक स्वर्गदूत को भेज दिया था (दानिय्येल 10:10-13 देखो)। मेरा विचार है कि यदि परमेश्वर एक स्वर्गदूत को भेजना चाहता था, तब तो यदि वह चाहता तो उसे तुरन्त पार करवा सकता था। उसके पास पर्याप्त सामर्थ्य है, है ना? तब यह स्वर्गदूत दानिय्येल तक पहुँचने में 21 दिन तक क्यों रुका रहा? मेरा विश्वास है कि दानिय्येल के हर दिन विश्वासयोग्यता के साथ प्रार्थना करने से आत्मा के क्षेत्र में सामर्थ्य छोड़ा जा रहा था। अन्त में, शैतानी विरोध को भेदने के लिए पर्याप्त सामर्थ्य छोड़ा गया था। तब परमेश्वर स्वर्गदूत को दानिय्येल के पास आने के लिए उसे छुड़ा सका था! कृपया समझिए कि मैं परमेश्वर के सामर्थ्य को सीमित नहीं कर रहा हूँ। मैं पूरी तरह जानता हूँ कि परमेश्वर से एक शब्द नरक के हर दुष्टात्मा को कुचल सकता है। पृथ्वी पर मनुष्य के द्वारा कार्य करने के लिए परमेश्वर के फैसले को समझा जाना चाहिए। स्वर्गदूत को भेजे जाने के लिए एक मनुष्य की प्रार्थनाएँ जिम्मेवार थीं। स्वर्गदूत का परमेश्वर के संदेश के साथ पार होने के लिए भी एक मनुष्य की प्रार्थनाएं कुंजी थीं। जैसे किसी ने कहा है, "दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर दे दिया गया और भेज दिया गया था। परन्तु, यदि दानिय्येल ने आशा छोड़ दी होती, तो हम मान सकते हैं कि यह कभी भी पहुँचता नहीं।"

सामर्थ्य की नदी को छोड़ना

यीशु को गतसमनी के उद्यान में जय प्राप्त करने के लिए तीन घंटे क्यों लगे थे? स्वर्गदूत तुरन्त क्यों नहीं आए और उसे सान्त्वना दी? आत्मा में जय प्राप्त करने के लिए सामर्थ्य छोड़ी जा रही थी। मैं यहाँ आपसे प्रार्थना में बक-बक करने की बात नहीं कर रहा हूँ (मत्ती 6:7 देखो)। मैं परमेश्वर से बार-बार, बार-बार माँगने की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं उस समझ की बात कर रहा हूँ कि जैसे हम अपने ऊपर पवित्र आत्मा के कार्य में समर्पित होते हैं जिसे पवित्र आत्मा हम पर डालता है और हमारी प्रार्थनाओं को समर्थ करता है। "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलताओं में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिए विनती करता है" (रोमियों 8:26)। जैसे हम इस प्रार्थना की नदी को छोड़ते हैं, जिसका स्रोत पवित्र आत्मा में है - तब हम अपने आत्मिक गर्भाशय से चीजों को जन्म देते हैं।
जब हम परमेश्वर के आत्मा के साथ सहयोग करते हैं, तब यह हम में से निकलकर एक स्थिति पर मँडरा सकता है। उसकी जीवन प्रदान करनेवाली शक्तियाँ छोड़ी जाती हैं। तब वह जिसकी हम माँग कर रहे थे सामने आता है। मेरी पत्नी के पेट में से रसोली के निकलने में एक महिना क्यों लगा? जब मैं उसके लिए हर दिन एक घंटा प्रार्थना करता था तब मैं क्या कर रहा था? मैं अपने गर्भाशय में से नदी छोड़ रहा था। कुछ कहेंगे कि क्योंकि मैं दृढ़ रहा था आखिरकार परमेश्वर ने इसे कर दिया। नहीं, यह गलत है। सारे महिने भर उसका दर्द कम हो रहा था। हमारे डाक्टर के अनुसार, इसका अर्थ था कि रसोली सिकुड़ रही थी। यह अचानक नहीं हुआ था। आत्मिक क्षेत्र में सामर्थ्य छोड़ा जा रहा था। यह उसके भीतर कुछ कर रहा था। हर दिन प्रार्थना के द्वारा सामर्थ्य छोड़ा जा रहा था। हर दिन यह रसोली को थोड़ा, और थोड़ा... और थोड़ा नष्ट कर रहा था। मुझे कोमा में पड़ी उस लड़की के लिए एक वर्ष प्रार्थना क्यों करनी पड़ी थी? मैं कम से कम सप्ताह में एक बार उसे देखने जाता था। मैं उस के ऊपर परमेश्वर का वचन बोलता, मैं रोता, उसके सिर में एक नया दिमाग आने के लिए पुकारता था। मैं विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ रहा था (2 तीमु. 4:7 देखो)। इसके लिए एक वर्ष क्यों लगा? क्योंकि एक नया दिमाग बनाने के लिए काफी सारा सामर्थ्य लगता है। परमेश्वर ने इसे तुरन्त क्यों नहीं किया? मैं नहीं जानता। वह ऐसा करता उसके लिए मैं जो कुछ भी जानता मैं किया। मैं ने उन सब चीजों को किया जो मैं ने पढ़ा था कि विश्वास के नायक करते थे। विश्वास में, मैं ने उसे बिस्तर पर बैठाया और उसे जागने की आज्ञा दी। परन्तु वह एक गुड़िया के समान पीछे तकिए पर गिर पड़ी। मैं नहीं जानता कि परमेश्वर ने उसे एक तात्कालिक चमत्कार के साथ चंगा क्यों नहीं किया। क्योंकि उसने नहीं किया, मुझे इस का निश्चय है: नदी की एक मात्रा उमड़नी आवश्यक थी इससे पहले कि चमत्कार के लिए यह पर्याप्त उमड़ चुका होता।
इफिसियों 3:20-21 कहता है: "अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।" कहीं अधिक के लिए शब्द वही है जो रोमियों 5:20 में अनुग्रह कहीं अधिक के लिए है। शब्द है "huperperissos"। "Perissos" का अर्थ है: "अत्यधिक"। "Huper" का अर्थ है: "के परे" या "से अधिक"। उनका इकट्ठा अर्थ होगा: "अधिक अत्यधिक"। यह "से अधिक से अधिक" कहने जैसा है। इफिसियों 3:20 कहता है, उसके पास जो हम माँगते या सोचते हैं उससे अधिक और उससे भी अधिक करने की पर्याप्त सामर्थ्य है। तो, हमारे पास अकसर पर्याप्त क्यों नहीं होता?

क्रियात्मक सामर्थ्य

सामर्थ्य स्रोत की समस्या नहीं है। बाकी का इफिसियों 3:20 हमें सुराग देता है। यह हमें बताता है कि वह इसे "अत्यधिक से कहीं अधिक" "...उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है" कर सकता है। इस वाक्यॉंश का दूसरा अनुवाद है: "उस सामर्थ्य की

परिमाण में जो हम में क्रियात्मक हो सकता है।" "मात्रा" शब्द यूनानी शब्द "kata" है, जिसका अर्थ है: "वितरण"। परमेश्वर हमारे माँगने से अत्यधिक से अधिक करने वाला है। वह इन्हें उस सामर्थ्य के परिमाण के अनुसार करने वाला है जिसका हम से वितरण होता है। क्या आप सामर्थ्य का वितरण कर रहे हो? क्या आप नदी का वितरण कर रहे हो? कृपया ऐसा मत सोचिए कि यों ही प्रार्थना करके आप चमत्कारों के लिए पर्याप्त सामर्थ्य छोड़ सकते हो। केवल कभी-कभी प्रार्थना करके काम नहीं हो सकता है! आपको अपने भीतर परमेश्वर के सामर्थ्य को एक निरन्तर के रूप में छोड़ना होगा। याकूब 5:16 कहता है, "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।" इसे इस प्रकार भी अनुवाद किया जा सकता है: एक धर्मी जन की एक प्रार्थना जब काम करती है तो काफी कुछ कर सकती है।" ध्यान दीजिए कि आयत यह नहीं कहती, "एक धर्मी जन की प्रार्थना जब परमेश्वर काम करता है तो बहुत कुछ कर सकती है।" यह ऐसा तो करती ही है। परन्तु, यह आयत हमें ऐसा नहीं कह रही है। यह कहती है, "एक धर्मी जन की प्रार्थना जैसे यह काम करती है जो बहुत कुछ करती है।" कितना अदभुत! हमारी निरन्तर प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामर्थ्य को छोड़ने के लिए काम करती हैं। यह वह प्रार्थना है जो चलती रहती है।

हमारे भीतर वही सामर्थ्य है जिसने सृष्टि की रचना की थी। हमारे भीतर वही सामर्थ्य है जो पृथ्वी के गहरे स्थानों में गया और अन्धकार के राज्य से कुंजियों को ले आया! सामर्थ्य छोड़ो! नदी छोड़ो! इसे छोड़ो, और इसे छोड़ो, और इसे छोड़ो, और इसे कुछ और-और-और-और छोड़ो!

स्वर्ग के प्रार्थना के कटोरों को उलटना

जैसे हम इस सामर्थ्य को छोड़ते हैं, हमारी प्रार्थनाएँ जमा होने लगती हैं। स्वर्ग में कटोरे हैं जिसमें हमारी प्रार्थनाएँ जमा की जाती हैं। सबके लिए एक कटोरा नहीं परन्तु "कटोरे" हैं। हमें पता नहीं कितने कटोरे हैं। मैं सोचता हूँ कि ऐसा सम्भवना है कि हम सबका एक-एक कटोरा है। मुझे पता नहीं कि आपका कटोरा असली है या प्रतीकात्मक है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है। सिद्धान्त वही है। परमेश्वर के पास कुछ है जिसमें वह हमारी प्रार्थनाओं को जमा करता है ताकि उचित समय पर उपयोग किया जाए। हम इसके विषय में प्रकाशितवाक्य 5:8 में पढ़ते हैं: "जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े। उनमें से हर एक के हाथ में वीणा और धूप, जो परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाएँ हैं, से भरे हुए सोने के कटोरे थे।" प्रकाशितवाक्य 8:3-5 भी: "फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर, जो सिंहासन के सामने है, चढ़ाएँ। उस धूप का धुआँ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच गया। तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर उसमें वेदी की आग भरी और पृथ्वी पर डाल दी; और गर्जन और शब्द और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे।"

इन आयतों के अनुसार, पृथ्वी पर परमेश्वर के सामर्थ्य का छोड़ा जाना स्वर्ग में तैयार किए नुसखे का परिणाम है। इसमें काफी धूप, जो सन्तों की प्रार्थनाएं हैं और स्वर्गीय आग है। यह वही आग थी जो सिनै पर गिरी थी। यह वही आग है जिसने जब एलिय्याह पर्वत पर था सबकुछ भस्म कर दिया था। यह वही आग है जो पिन्तेकुस्त के दिन गिरी थी। यह वही आग है जो परमेश्वर के शत्रुओं को नष्ट करती है। यह सर्वशक्तिमान की आग है! इस नुसखे का पूरा होना पर्याप्त प्रार्थना पर आश्रति हो सकता है कि पर्याप्त संघटक हों जिससे यह ईश्वरीय बम बन सके। जब पर्याप्त प्रार्थना एकत्र हो जाती है तब परमेश्वर उनमें उसका धूप और आग मिलाता है! तब वह उसे पृथ्वी पर उँडेल देता है। बिजली कड़कने लगती है, गर्जन होता है और भूकम्प। स्वर्गीय स्थानों में कुछ विस्मयकारी होता है, जो फिर पृथ्वी को प्रभावित करता है। यही हुआ था जब पौलुस और सीलास कैद में थे और देर रात तक स्तुति के गीत गा रहे थे। प्रार्थनापूर्वक आराधना परमेश्वर के पास पहुँचने लगी थी। कटोरे भर गए और परमेश्वर ने उन्हें उँडेल दिया। पृथ्वी काँपने लगी। कैदखाने के द्वार खुल गए, और पौलुस और सीलास और दूसरे कैदियों की जंजीरें खुल गईं। कैदखाने के द्वार खुल गए और कैदी स्वतंत्र किए गए। दारोगा और उसके परिवार ने मसीह पर विश्वास किया। इस प्रकार सुसमाचार ने एशिया में पहला कदम रखा।

हाल में, मेरा विश्वास है प्रभु ने मुझे बताया कि जब हम एक आवश्यकता लेकर उसके पास आते हैं तो क्या होता है। हम उसे वह करने को कहते हैं जो उसने अपने वचन में कहा है। हमारी विनती के उत्तर में, वह स्वर्गदूत को हमारी प्रार्थना का कटोरा लेने भेजता है। स्वर्गदूत हमारी प्रार्थनाओं में धूप और वेदी की आग मिलाता है। परन्तु अभी कटोरे में हमारी आवश्यकता पूरी करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हम सम्भवतः परमेश्वर को दोष दें। हम सम्भवतः सोचें कि यह उसकी इच्छा नहीं है। या हम सम्भवत सोचें कि उसके वचन का अर्थ वास्तव में वह नहीं है जो यह कहता है। असल में इसी कारण से वह कभी-कभी नहीं कर सकता है जो हमें माँगा है। क्यों? क्योंकि हम ने अपनी प्रार्थनाओं में उसे पर्याप्त संघटक नहीं दिए हैं। उसने सबकुछ उँडेल दिया जो उँडेलने के लिए था, और यह पर्याप्त नहीं था। यह केवल विश्वास का मामला नहीं है, यह मात्रा या परिमाण का मामला है। परमेश्वर का सामर्थ्य जो नीचे आता है और पृथ्वी पर फूटता है, यह उस पर निर्भर करता है कि हम ने कितनी प्रार्थना स्वर्ग में भेजी है। याद है राजा दाऊद ने कहा "... तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले!" (भजन 56:8)। जब मैं कोमा में की लड़की के पास खड़े होकर प्रार्थना करता या आँसू बहाता था, तो उन्हें एक कुप्पी या कटोरे में जमा किया जाता था। परमेश्वर देख रहा था कि कुप्पी

कितनी भर गई है। मेरे आँसुओं के साथ जिन्हें परमेश्वर अपनी कुप्पी में जमा किया था, स्वर्गीय धूप और आग मिलाई गई। तब, स्वर्गदूत ने इस ईश्वरीय अमृत को पृथ्वी पर उँडेल दिया। एक शनिवार की सुबह, जो लड़की एक वर्ष से अधिक कोमा में थी चंगा हो गई! यह ऐसा था जैसा कि परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत से कहा, "क्या तुम उस लड़की को देख रहे हो? इस कटोरे को लो जो भर गया है। इसमें मेरा धूप और आग मिलाओ और उसके दिमाग पर उँडेल दो।"

अतिवादी बनो – सामर्थ्य उँडेल दो

इसका प्रयाल करोः यदि आपके बच्चे का नया जन्म नहीं हुआ है, उसके कमरे में जाओ। ऐसा तब करो जब वह कमरे में नहीं है। हर उस चीज में प्रार्थना का सामर्थ्य डाल दो जिसे वह छूता है। यह सामर्थ्य कपड़ों, पर्स या टुथब्रश जैसी चीजों में जा सकता है। तब यह इसके मालिक की सेवा करता है।

पौलुस के हृदय में से परमेश्वर का अभिषेक और सामर्थ्य निकलता और उसके कपड़ों को छूता था। यह उसके अँगोछों ("soudarrion") में चला जाता था। उन अँगोछों में इतना सामर्थ्य था कि जब लोग उन्हें छूते थे वे चंगे हो जाते थे (प्रेरितों 19:12 देखो)। यीशु के कपड़ों में सामर्थ्य था। जब बीमार स्त्री ने उसके कपड़े के आँचल को छूआ, तो उसमें से सामर्थ्य निकला था।

तेल से अभिषेक

पुराने नियम का शब्द "अभिषेक" का अर्थ हैः "तेल उँडेलना या लगाना।" सबकुछ जो आपके बच्चे का है उस पर तेल लगाकर अभिषेक करो! विश्वास में असाधारण चीजों को करना ठीक है। यीशु को अच्छा लगा था जब लोगों ने बीमार को उसके पास लाने के लिए छत को उखाड़ दिया था। उसे अच्छा लगा था कि लोग भीड़ को चीरकर उसके वस्त्र को छूने आए थे। उसे अच्छा लगा था जब जक्कई उसे देखने के लिए गूलर के पेड़ पर चढ़ा था (लूका 19)। उसने कनानी स्त्री और अँधे व्यक्ति की पुकार सुनी जब उन्होंने दया के लिए पुकारा था (मत्ती 15:22; मरकुस 10:47)। उसे अच्छा लगा था जब वेश्या ने उसके पैरों को उसके आँसुओं से धोया और अपने बालों से पोछा था (लूका 7:38-44)। वह उनसे प्रेम करता है जो अपने सम्पूर्ण हृदय से उसे दया और सहायता के लिए पुकारते हैं।

एक जंगली घोड़े का प्रशिक्षण

किसी ने एक जंगली घोड़े को सधाने की एक दिलचस्प कहानी बताई है। घोड़े एक गधे के साथ बाँध दिया जाता है। शक्तिशाली घोड़ा उछलकर खेत से बाहर निकलने लगता। इससे गधे को अन्धाधुन्ध झटके लगते हैं। क्या दृश्य होता है! घोड़ा, गधे को अपने साथ लिए, दौड़ेगा। वे कभी-कभी कई दिनों तक गायब हो जाते हैं। तब वे छोटे गधे के नियंत्रण में लौट आते हैं। घोड़ा गधे की उपस्थिति से लड़ते-लड़ते थक चुका होता है। जब वह इतना थक जाता है कि लड़ नहीं सकता, तो गधा अगुवे का पद ले लेता है। प्रार्थना के साथ भी कई बार ऐसा होता है। विजय दृढ़ को मिलती है, क्रोधी को नहीं। विजय समर्पित को मिलती है, उनको नहीं जो भावनाओं और शक्ति का बड़ा प्रदर्शन करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम प्रार्थना में आत्मिक अनुभव करते या आत्मिक दिखाते हैं। बात यही है कि हम इसे करें, विश्वास करते हुए कि यह कार्य करती है। जब हम प्रार्थना करते हैं हम बड़े साधारण शब्द उपयोग कर सकते हैं। परन्तु हमें दृढ़ रहना है। परमेश्वर समर्पित, दृढ़, निरन्तर प्रार्थना को सुनता है, किसी उत्तेजक प्रार्थना को नहीं जो कभी-कभी की जाती है।

पिता हमें क्षमा कर

पिता, ऐसा क्यों है कि जिस चीज की हमें सबसे अधिक आवश्यकता है, उसे हम सबसे कम करते हैं? हम में से अधिकाँश इतने व्यस्त क्यों हैं कि हमारे पास प्रार्थना करने को समय नहीं है? आपको काफी कठिन दिन गुज़ारने पड़ते होंगे जब आपकी आँखें पृथ्वी पर इधर-उधर घूमती हैं। वे उसकी खोज करती हैं जिसका हृदय पूरी तरह आपका है। (2 इतिहास 16:9)। आप अकसर रोते होंगे जब आप किसी को दरार में खड़ा होने के लिए खोजते हैं परन्तु पाते नहीं (यहेजकेल 22:30)। आपका हृदय हमारे लिए दुखता होगा। आपकी कितनी इच्छा है कि आपके लोग उठ खड़े हों और वह बन जाएँ जो बनने के लिए आपने उन्हें बुलाया है! हम अपने आप को आपके सिंहासन के सामने दीन करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप हमें हमारी प्रार्थना की कमी के लिए क्षमा करें। हम अगुवों को क्षमा कर, पिता, हम ने तेरे लोगों को सत्य सिखाया नहीं है।

हम, मसीह की देह को क्षमा कर क्योंकि हम ने देश में बुराई को शासन करने दिया है। हम ने ऐसा तब किया जब तेरे पास संसार को बदलने के लिए हमारे गर्भाशय में "अत्यधिक से अधिक" सामर्थ्य है।

प्रभु हमें क्षमा कर। हमें शुद्ध कर और उन शापों को तोड़ जिन्हें हम ने अपने ऊपर नियंत्रण करने दिया है। हमें उदासीनता, अज्ञानता और अविश्वास के पाप से क्षमा कर और शुद्ध कर। हम ने इस आलसी प्रार्थना-हीनता का हज़ारों तरीकों से सफाई देने का प्रयास किया है। हम प्रार्थना करते हैं इसे हम से दूर कर। हमारी समस्या असल में अवज्ञा, अविश्वास और पाप हैं।

पिता, हमें क्षमा कर और हमें छुड़ा। हमें केवल वचन के सुननेवाले और करनेवाले नहीं होने से स्वतंत्र कर (याकूब 1:23 देखो)। हमें ऐसे घर और कलीसियाएँ दे जो तेरे वचन की आज्ञापालन की चट्टान पर बने हुए हैं। अपने लोगों में उस दृढ़ता के साथ उठ जो प्रारंभिक कलीसिया में थी। हमें हर उस चीज को उतार फेंकने में सहायता कर जो तेरी आत्मा का विरोध करती है। हमें ऐसे क्षेत्र में ले चल जो कीमत देता है और परमेश्वर के राज्य को ले लेता है। हमें अपने पवित्र आत्मा से भर दे। हमें आग से बपतिस्मा दे। हमें अनुग्रह और विनती का आत्मा दे। ऐसा अभिषेक दे जो तेरे सिंहासन से आता है।

हम भूखे हैं। हम थक गए हैं। हम मृत्यु और विनाश से थक गए हैं। हम एक हारे हुए शत्रु से हारते-हारते थक गए हैं। हम अपनी नियती से रोके जाने से थक गए हैं। हम कमी और बीमारी से थक गए हैं। हम पाप से थक गए हैं। हम किसी चीज के लिए भूखे हैं - जो आप हैं, पिता, बाइबल के सामर्थी परमेश्वर!

मनन के लिए प्रश्न

1. लूका 11:5-13 में दी गई कहानी से असली सबक जो सिखाया गया है उसे समझाइए?
2. प्रार्थना के "तत्त्व" का क्या अर्थ है? इसका दृढ़ बने रहने से क्या सम्बंध है?
3. कुछ वचन बताओ जो दिखाते हैं कि आत्मिक चीजें मापी जा सकती हैं। अब इफिसियों 3:20-21 और याकूब 5:16 को उपयोग करके इस सत्य को प्रार्थना में लगाओ।
4. क्या आप किसी स्थिति के विषय में सोच सकते हो जहाँ आप कटोरा भरने से पहले ही रुक गए हो? क्या इस समय आपके जीवन में ऐसी कोई स्थिति है जहाँ आपको उत्तर पाने के लिए अधिक सामर्थ्य छोड़े जाने की आवश्यकता है?

अध्याय 13 – कार्य जो बोलते हैं और शब्द को कार्य करते हैं

विश्वास छोड़ना

मध्यस्थता का एक दिलचस्प हिस्सा है जिसे कम ही लोग समझते हैं। उससे भी कम करते हैं। यह भविष्यसूचक क्रिया और घोषणा है।

इससे हमारा तात्पर्य क्या है? जब हम कहते हैं कि कुछ "भविष्यसूचक" है तो हमारा अर्थ है: पहले से बताना या सामने से बोलना है। यह एक ही समय में दोनों चीजें हो सकता है।

पहले से बताने का अर्थ है भावी चीजों को बताना। सामने से बोलने का अर्थ है कार्य या शब्द जो परमेश्वर से कुछ घोषित करते हैं। सामने से बोलना हो सकता है भावी घटनाओं से बिलकुल न निपटता हो।

पहले से बताना और सामने से बोलने का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को जो परमेश्वर करनेवाला है उसके लिए तैयार करना हो सकता है। भविष्यसूचक कार्य या शब्द परमेश्वर के लिए मार्ग तैयार करते हैं। हम इसे यूहन्ना बपतिस्मादाता में देखते हैं जिसने मसीहा के लिए मार्ग तैयार किया था। उसने अपने शब्दों और कार्यो से उस महिमा को दिखाया जो यीशु में प्रकट होनेवाली थी (यशायाह 40:1-5)।

भविष्यसूचक सेवा प्रभु की महिमा के लिए मार्ग तैयार करती है। यह यीशु की सेवा को कार्य करने देती है। भविष्यसूचक कार्य और घोषणाएँ पृथ्वी पर कार्य करने के लिए परमेश्वर के लिए मार्ग तैयार करते हैं। एक भाव से वे परमेश्वर को कुछ करने के लिए छोड़ते हैं। परमेश्वर ने पहले ही कार्य करना चुना है, और वह अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए भविष्यसूचक को उपयोग करता है।

भविष्यसूचक कार्य और घोषणाएँ उसे इस भाव से नहीं छोड़तीं है कि वह बंधा हुआ है। प्रकट है परमेश्वर बंधा हुआ नहीं है। परन्तु, वे उसे निम्नलिखित भाव में छोड़ती हैं:

1. परमेश्वर का आज्ञापालन परमेश्वर से उत्तर लाता है। भविष्यसूचक कार्य और घोषणाओं का कोई अर्थ नहीं है यदि परमेश्वर ने उन्हें करने को नहीं कहा है। परन्तु, जब वह आज्ञा देता है उसका पालन किया जाना चाहिए। परमेश्वर चीजों को एक प्रकार से करना चाहता है। जब वह तरीका उपयोग किया जाता है, तब परमेश्वर उसके को उद्देश्य पूरे कर सकता है। वह सदा स्पष्टीकरण नहीं देता कि कोई चीज इस तरीके से क्यों की जाए। परमेश्वर होने के नाते, वह सही है। परन्तु जब उसका चुना हुआ तरीका उपयोग किया जाता है, तब वह उसे करता है जो उसने करना चुना है।

2. विश्वास परमेश्वर को छोड़ता है। विश्वास "जो परमेश्वर ने हम से कहा है उसकी ओर आज्ञाकारी कार्य" है। जब वह कहता है, "इसे करो", तब हमें आज्ञापालन करना चाहिए और वह कार्य करना चाहिए जो उसने हमें करने को कहा है। यह उसे कार्य करने के लिए छोड़ता है।

3. जब परमेश्वर छोड़ा जाता है, तब पृथ्वी पर उसकी रचनात्मक सामर्थ्य भी छोड़ी जाती है। हम जानते हैं परमेश्वर में अत्यधिक नचनात्मक सामर्थ्य, शक्ति और योग्यता हैं। ये उसके शब्दों से कार्य करते हैं। भविष्यसूचक घोषणाओं के द्वारा पृथ्वी पर उसकी सामर्थ्य, शक्ति और योग्यता कार्य करते हैं!

यह इस प्रकार कार्य करता है: परमेश्वर हमें स्वाभाविक स्थान में भविष्यसूचक कार्य करने या घोषणा करने का निर्देश देता है। हमारा आज्ञापालन परमेश्वर को आत्मिक स्थान में कार्य करने के लिए मार्ग तैयार करता है। जब परमेश्वर आत्मिक स्थानों में कार्य करता है, तो इससे स्वाभाविक स्थानों में परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर और मनुष्य साझेदार बन जाते हैं। परमेश्वर हमें कुछ करने या कहने को कहता है। हम आज्ञापालन करते हैं। हमारे शब्द या कार्य आत्मिक स्थानों को प्रभावित करते हैं। स्वर्गीय स्थान तब स्वाभाविक स्थान को प्रभावित करता है।

भविष्यसूचक क्रिया

मूसा ने लाल समुद्र के ऊपर अपनी छड़ी बढ़ाई (निर्गमन 14:21 देखो)। यह भविष्यसूचक क्रिया का एक उदाहरण है। मूसा को अपनी छड़ी आगे क्यों करनी पड़ी थी? क्योंकि परमेश्वर ने कहा था। परमेश्वर चाहता था कि अधिकार की प्रतीकात्मक छड़ी लाल समुद्र पर बढ़ाई जाए। यदि समुद्र पर छड़ी बढ़ाई नहीं जाती थी तो समुद्र के दो भाग नहीं होते थे। ऐसा था कि परमेश्वर को किसी की आवश्यकता थी कि वह भविष्यसूचक क्रिया करे, और फिर वह लाल समुद्र के पानी के दो भाग कर सकता था। भविष्यसूचक क्रिया का एक और उदाहरण मूसा का उसकी छड़ी को ऊपर उठाए रखना था जब इस्राएल अमालेकियों के साथ युद्ध कर रहा था (निर्गमन 17:9-13 देखो)। यह भविष्यसूचक क्रिया का एक शक्तिशाली प्रदर्शन है। आपको कहानी याद होगी। मूसा अधिकार की छड़ी के साथ पर्वत पर था। जब उसने छड़ी को ऊपर उठाया, इस्राएल युद्ध में जीतने लगा। जब थक गया और उसने हाथ नीचे किए, अमालेक इस्राएलियों के विरुद्ध जीतने लगा। मूसा छड़ी को स्वर्ग की ओर ऊपर करके उसके लोगों का हौसला नहीं बढ़ा रहा था। आपको क्या लगता है युद्ध क्षेत्र से सिपाही मूला को पर्वत पर देख रहे थे? वे लड़ने में इतने व्यस्त थे कि उसे देख पाते। छड़ी का ऊपर उठाए जाने का हौसला बढ़ाने से कोई सम्बंध नहीं था। सिपाही सम्भवतः छड़ी को ऊपर-नीचे होते देख भी नहीं रहे थे। छड़ी के ऊपर उठाए जाने से आत्मा के स्थानों में कुछ हो रहा था। भविष्यसूचक क्रिया स्वर्गीय स्थानों में कुछ छोड़ रहा था। जैसे यह हुआ, परमेश्वर का अधिकार नीचे पृथ्वी पर उमड़ने लगा और इस्राएली सिपाही अमालेकियों के विरुद्ध जीतने लगे।

परमेश्वर का तरीका, जब समझ नहीं आता है तब भी

निर्गमन 17:6 में मूसा का चट्टान को मारना भविष्यसूचक क्रिया का एक और उदाहरण है। उसने अधिकार की छड़ी ली, चट्टान को मारा और पानी बहने लगा! क्यों? क्योंकि परमेश्वर चाहता था ऐसा हो। जब वह कुछ एक प्रकार से करना चाहता है तब किसी को पृथ्वी पर उसे करना होता है। यह क्रिया अकसर समझ नहीं आती है। परन्तु, जब इसे किया जाता है तब आत्मा में कुछ छूटता है। यह, बदले में, पृथ्वी पर कुछ छोड़ता है। लोग जब चट्टान को छड़ी से मारते हैं तो पानी नहीं निकलता है - जब तक परमेश्वर नहीं कहता ऐसा करो। आपको याद होगा कुछ वर्षों के बाद जब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि वह चट्टान से बातें करे, परन्तु मूसा ने चट्टान को दो बार मारा। परमेश्वर की आज्ञा का ठीक-ठीक पालन करने में मूसा की असफलता के कारण, पानी तो मिला परन्तु मूसा का न्याय भी हुआ (गिनती 20:7-12 देखो)।

जब परमेश्वर कुछ करने को कहता है तब आत्मा के क्षेत्र में और स्वाभाविक क्षेत्र दोनों में कुछ होता है। हमारा आज्ञापालन परिणाम लाता है - जैसे कि चट्टान में से पानी लाना। इस मामले में, चट्टान को मारना भविष्यसूचक क्रिया थी।

पवित्रशास्त्र में भविष्यसूचक क्रियाओं के अनेक उदाहरण हैं। 2 राजा 13:4-19 में, एलीशा मरने पर था। अराम इस्राएल के विरुद्ध छावनी लगाए हुए था, और राजा यहोआश वृद्ध एलीशा से कुछ सलाह चाहता था। एलीसा ने यहोआश से कहा, "अपना तीर ले और उसे खिड़की में से शत्रु की छावनी की ओर छोड़!" यह युद्ध की घोषणा थी। राजा और भविष्यद्वक्ता दोनों ने उनके हाथ धनुष पर रखे। उन्होंने तीर छोड़ा। तब एलीशा ने कहा, "यह प्रभु के छुटकारे का तीर है। अब, यहोआश, इन तीरों को ले और भूमि पर मार।" राजा की परीक्षा होने वाली थी, उसके कार्य भविष्यसूचक होनेवाले थे। उसने तीर लिए और तीन बार भूमि पर मारा। भविष्यद्वक्ता दुखी और क्रोधित हुआ। उसने कहा, "तीन बार तू अपने शत्रुओं पर विजयी होगा, और तब वे तुझे जीत लेंगे। तुम्हें कम से कम पाँच या छः बार मारना चाहिए था, तब तू उन्हें जीत सकता था।" कहानी मुझे ठीक नहीं लगती। राजा यहोआश को बताया नहीं गया था कि उसे कितनी बार तीरों को मारना होगा। उसे कैसे पता होता कि उसे मारते रहना है? मुझे लगता है बात तो यही है: यदि परमेश्वर कहता है तीरों को तीन बार मारो, तब तुम्हें तीन बार मारना है। परन्तु यदि परमेश्वर केवल कहता है

मार, तब तुम मारते रहो जब तक वह कहता नहीं रुको! परमेश्वर भविष्यसूचक क्रिया के पीछे था, परन्तु उसे वह नहीं मिला जो उसे चाहिए था। न ही राजा यहोआश को सम्पूर्ण विजय मिली जो उसे चाहिए थी।

जब परमेश्वर तुम से बात करता है, तब बल, उत्साह और विश्वास के साथ उत्तर दो। जो उसने कहा है उसे करते रहो, जब तक वह कुछ और करने को नहीं कहता। पवित्रशास्त्र में लोग भविष्यसूचक क्रिया के द्वारा चंगे हुए थे। यीशु ने अपने थूक से मिट्टी बनाई थी। उसने अंधे की आँखों पर उसे रगड़ा और उसे शीलोह के कुण्ड में जाकर धोने को कहा (यूहन्ना 9:6-7 देखो)। मनुष्य ने धोया और देखने लगा! दूसरे अवसर पर, उसने विश्वास का शब्द बोला और व्यक्ति चंगा हो गया (मरकुस 10:49-52)। यह तरीका नहीं था जिसने चंगा किया था परन्तु यह आज्ञाकारी क्रिया थी। उसने वह किया था जो उसने पिता को करते और निर्देश देते देखा और सुना था। यूहन्ना 5:19 में यीशु ने कहा, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।" "उसी रीति से" ये महत्त्वपूर्ण शब्द चित्रित करते हैं कि यीशु जो पिता को करते देखता था उसे करने में छोटी-छोटी बातों में ध्यान देता है। उसने पिता के निर्देशों में परिवर्तन नहीं किया। उसने मूसा के समान स्वतंत्रता नहीं ली और निर्देशों में फेर-बदल नहीं किए। यीशु ने पिता की इच्छा को ठीक-ठीक पूरा किया। हमें भी वैसा ही करना चाहिए।

नामान कोढ़ी को यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाने को कहा गया था (2 राजा 5:10-14 देखो)। "मैं नहीं करूँगा", उसने कहा। "तब तुम अपने कोढ़ से चंगे नहीं होओगे", नामान के सेवक ने कहा। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने इस प्रकार कार्य करने का फैसला किया था। और जब परमेश्वर एक तरीके से कार्य करने का फैसला करता है, तो कोई दूसरा तरीका काम नहीं करेगा।

परमेश्वर उसके लोगों को अकसर कुछ करने को कहता है जो केवल भविष्यसूचक ही नहीं है। उसमें मध्यस्थता की प्रकार के रूप में बड़ा सामर्थ्य भी होता है। आज्ञापालन होने पर यह गहरे परिवर्तन लाएगा। अनेक बार हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने उसके बच्चों को एक मध्यस्थता का, भविष्यसूचक कार्य करने को कहा था। तब उसके परिणामस्वरूप उसने सामर्थ्य का कार्य किया था। दोबारा, मैं आपसे आग्रह करता हूँ। यदि प्रार्थना में, आपको लगता है परमेश्वर आप से कुछ करने को कह रहा है, तो उसे करके देखो! जब तक आप या कोई दूसरे को शारीरिक चोट लगने का खतरा नहीं है, तो करके देखो! परन्तु कोई भी अक्खड़ ऊँची दीवारों से कूदने वाले कार्य या जीवन-संकट कार्य मत करो। परन्तु, यदि परमेश्वर जो करने को कह रहा है उससे किसी को भी खतरे की कोई सम्भावना नहीं है, तब उसे करके देखो। इससे हानि नहीं होगी। हम केवल अपना अभिमान ही खोएँगे - और यह खोने के लिए अच्छी चीज है। इसलिए, भविष्यसूचक कार्य करो। यदि आपको लगता है परमेश्वर आपसे करने को कह रहा है और आप जानते हैं उसे करने से किसी को शारीरिक या आत्मिक हानि नहीं होगी, तब उसे करके देखो। इससे बड़ी विजय मिल सकती है।

भविष्यसूचक घोषणा

आओ हम कुछ बाइबल के उदाहरणों को देखें जहाँ परमेश्वर के कुछ करने से पहले भविष्यसूचक शब्द होते हैं।

यिर्मयाह 6:18-19 में, यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की और कहा, "इसलिए हे जातियो, सुनो... हे पृथ्वी सुन।" दोबारा, यिर्मयाह 22:29 में उसने भविष्यद्वाणी की और कहा, "हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन!" कई लोग सोचेंगे मैं पक्का मूर्ख हूँ यदि वे मुझे यह कहते सुनें, "सारी पृथ्वी, मेरी सुनो! सारे देखो, मैं तुम से बात कर रहा हूँ!" परन्तु यिर्मयाह ने ऐसा ही किया। यह एक भविष्यसूचक घोषणा थी जिसका स्वाभाविक में कोई अर्थ नहीं था।

भविष्यसूचक घोषणा अकसर वह नहीं है जिसे हम साधारणतः बोलेंगे। यह परमेश्वर की ओर से बोलना है। यह कुछ करने के लिए उसके सामर्थ्य को छोड़ती है। जब हम प्रचार करते हैं तो क्या ऐसा ही नहीं होता? जब हम प्रचार करते हैं तब हम घोषणा कर रहे होते हैं कि सुसमाचार उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य है (रोमियों 1:16 देखो)। हमारे मुँह परमेश्वर का वचन बोलते हैं - उसका सामर्थ्य छोड़ा जाता है। तब भी ऐसा होता है जब हम आत्मिक युद्ध में उसका वचन बोलते हैं। वह हमारे शब्दों में ईश्वरीय सामर्थ्य डालता है। यिर्मयाह ने कहा, " हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन!" यह बिलकुल वैसा ही था जैसे कि परमेश्वर स्वयं कह रहा हो, " हे पृथ्वी, पृथ्वी, हे पृथ्वी, यहोवा का वचन सुन!"

परमेश्वर ने यिर्मयाह को कहा वह उसे "... गिराने और ढा देने के लिए, नष्ट करने और काट डालने के लिए, या उन्हें बनाने या रोपने के लिए" इस्तेमाल करना चाहता है (यिर्मयाह 1:10)। बाद में, यिर्मयाह 31:28 में परमेश्वर कहता है कि उसने वही किया। परमेश्वर ने गिराया और ढाया, नष्ट किया, काट डाला और सत्यानाश किया है। यह बात महत्त्व की है कि ऐसा परमेश्वर ने उसके भविष्यद्वक्ता के शब्दों के द्वारा किया। मीका 1:2 में भविष्यद्वक्ता कहता है, "हे जाति-जाति के सब लोगो, सुनो! हे पृथ्वी तू उस सब समेत जो तुझ में हैं, ध्यान दे!" क्या आप ऐसा कहते हुए मूर्ख नहीं महसूस करेंगे, "हे पृथ्वी और सबकुछ जो उसमें हैं, परमेश्वर तुम से बात करना चाहता है। क्या तुम सुन रहे हो?" परन्तु, मीका ने वैसा ही किया। प्रकट है सारी पृथ्वी ने उसे सुना नहीं। क्या तूफान ने यीशु को शान्त हो कहते सुना था? क्या अंजीर के पेड़ ने यीशु को "अब से तुझ में फिर कभी फल न लगें" कहते सुना

था। प्रकट है सुना था क्योंकि "...अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया" (मत्ती 21:19)। चाहे कोई हमें सुनता है या नहीं, मायने नहीं रखता। पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित घोषणाएँ पृथ्वी पर स्थितियों और परिस्थितियों में परमेश्वर के सामर्थ्य को छोड़ती हैं।

हम उसकी आवाज बनते हैं

"परन्तु वे तो भविष्यद्वक्ता और यीशु थे", कोई तर्क करेगा। हाँ, परन्तु तूफान को डाँटने के बाद, यीशु ने चेलों को उनके डर और अविश्वास के लिए डाँटा। उसका तात्पर्य था कि उन्हें तूफान को डाँटना चाहिए था! अंजीर के पेड़ को शाप देने के तुरन्त बाद, यीशु ने एक प्रतिज्ञा दी कि हम भी एक पर्वत को बोल सकते हैं और उसे समुद्र में फेंक सकते हैं (मत्ती 21:18-22)। यीशु पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित घोषणाओं की सामर्थ्य का वर्णन कर रहा था। हम पृथ्वी पर परमेश्वर की आवाज बनते हैं।

प्रार्थना निश्चय ही परमेश्वर को प्रभावित करती है। यह उसके उद्देश्य को प्रभावित नहीं करती, परन्तु यह उसके कार्य को अवश्य ही प्रभावित करती है। हर सही चीज जिसके लिए कभी प्रार्थना की गई है परमेश्वर ने पहले ही उसे करने का इरादा किया हुआ है। परन्तु वह हमारी अनुमति के बिना कुछ नहीं करता। परमेश्वर उसके उद्देश्यों में हमारी उत्सुकता के बिना रुकावट अनुभव करता है। जब हम उसके उद्देश्यों को सीखते और उन्हें अपनी प्रार्थनाओं के विषय बनाते हैं, तब हम उसे कार्य करने का अवसर देते हैं।

होशे 6:5 परमेश्वर का न्याय लाने के विषय में एक सामर्थी वचन है। "इस कारण मैं ने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा मानो उन पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें काट डाला, और अपने वचनों से उनको घात किया, और मेरा न्याय प्रकाश के समान चमकता है।" उसने ऐसा कैसे किया? उसके भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों के द्वारा। परमेश्वर के शब्द उसके लिए मनुष्यों ने बोले थे।

प्रभावशाली होने के लिए, घोषणाएँ वे शब्द या कार्य होने चाहिए जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। "उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा" (यशायाह 55:11)। जब परमेश्वर ने यह कहा, वह अपने वचन का बादलों में से आने की बात नहीं कर रहा था। वह यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा बोलने की बात कर रहा था। परमेश्वर कह रहा था, "यशायाह के शब्द मेरे शब्द हैं। यशायाह मेरी आवाज है। मेरे शब्द मेरे पास खाली नहीं लौटेंगे। जो कुछ मैं उन्हें इस मनुष्य के द्वारा करने को भेजूँगा उसे वे करके लौटेंगे!"

असली उदाहरण

कई वर्ष पहले एक सेवक ने मुझे यह कहानी बताई। जितनी अच्छी तरह मुझे याद है मैं बताने का प्रयास करूँगा। उसने कहा:

"मैं एक शहर में एक कलीसिया की इमारत में एक दिन मध्यस्थता करने में बिताने के लिए गया था जिसकी मण्डली उसके प्रमुख अगुवे की नैतिक असफलता के कारण बिखर गई थी। कुछ घंटों की मध्यस्थता के बाद, प्रभु का आत्मा मेरे ऊपर उतरा और मैं भविष्यद्वाणी करने लगा। इमारत में और कोई नहीं था। परन्तु प्रधान और अधिकारी और अन्धकार के हाकिम सुन रहे थे। "मैं भविष्यद्वाणी कर रहा था कि यह स्थान एक बार फिर परमेश्वर की महिमा से भर जाएगा और मण्डली पुन:स्थापित होगी। भविष्यद्वाणी कोई 15 मिनट तक चलती रही और सबकुछ जो परमेश्वर इस कलीसिया में पुन:स्थापित करने में करने वाला था जिसे शत्रु के प्रभाव ने नष्ट कर दिया था घोषित किया गया।

"अगले 6 महिनों में, परमेश्वर ने पुन:स्थापना का काम आरम्भ किया। एक नया पास्टर आया और उसने बंद इमारत को खोला। उसके तुरन्त बाद, परमेश्वर कलीसिया में आया और छः महिनों के बाद उनके पास पहले से बड़ी कलीसिया थी। हर सभा में चंगाई के चमत्कार और लोगों का प्रभु में आना आम बात थी।"

क्या हुआ था? ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर ने शत्रु की कलीसिया को बंद करने की इच्छा को हराने के लिए आत्मा द्वारा समर्थ भविष्यसूचक घोषणा को उपयोग किया था। यदि आप प्रार्थना करते हैं और आत्मा की प्रेरणा का पालन करते हैं तो परमेश्वर आपको इसी प्रकार उपयोग कर सकता है। निस्संदेह, कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं कि परमेश्वर आज हम से सीधे बात नहीं करता है। वे कहते हैं वह केवल बाइबल इस्तेमाल करता है। इसका अर्थ होगा कि हम उसके लिए पवित्रशास्त्र ही बोल सकते हैं। मैं आपको स्थितियों में बाइबल के शब्द बोलने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ! परन्तु, जब हम प्रार्थना करते हैं हम उसके निर्देशों को सुन सकते हैं। जब वह आपको कुछ करने को कहता है, तब साहस के साथ बोलो और करो। निस्संदेह, सबकुछ जो हम करते हैं पवित्रशास्त्र द्वारा परखा जाना चाहिए। इसे कभी भी बाइबल का उल्लंधन नहीं करना है। सबके सामने कुछ बोलने या करने से पहले सदा परिपक्व अगुवों से जाँच लें। ऐसा कुछ करने से पहले जो अत्यधिक विचित्र लगता है भक्तिपूर्ण सलाह ले लें। भविष्यद्वक्ता यशायाह के समान शहर में नंगे मत भागते रहो (यशायाह 20:2-4 देखो)। सम्भवतः उसने धोती पहनी हुई थी! बुद्धि उपयोग करो। जब संदेह हो, सदा उससे जाँच लो जिसका आप प्रभु में आदर करते हो। वह शायद सम्भव न हो। इसलिए, जब आप को संदेह होता है, तो ऐसा कुछ मत करो या कहो जो बहुत ही विचित्र लगता है। ऐसा कुछ मत करो जिससे प्रभु का नाम बदनाम हो।

वह कहना जो परमेश्वर कहता है

नए नियम में "स्वीकृति" के लिए यूनानी शब्द "homologia" है। इसका अर्थ है: "वही बात कहना।" बाइबल की स्वीकृति वह कहना है जो परमेश्वर कहता है - न अधिक, न कम। यदि कुछ शब्द वे नहीं हैं जो परमेश्वर स्थिति के विषय में कह रहा है, तो वे कुछ नहीं है। परन्तु यदि वे वही हैं जो वह कह रहा है, तब वे काफी कुछ करेंगे। परमेश्वर के वचन को पवित्रशास्त्र में "बीज" कहा जाता है। यूनानी में मूल शब्द "speiro" है। "Spora" और "sperma" उस मूल शब्द के रूपान्तर हैं। इन शब्दों को नए नियम में "बीज" अनुवाद किया गया है। परमेश्वर उसके वचन को उत्पन्न करने या जीवन लाने के लिए उपयोग करता है। उसके वचन से हमः नया जन्म पाते (1 पतरस 1:23), शुद्ध होते (यूहन्ना 15:3), परिपक्व होते (मत्ती 13:23), स्वतंत्र होते (यूहन्ना 8:31-32), और चंगे होते (भजन 107:20) हैं। परमेश्वर के वचन के हम में और भी अनेक परिणाम होते हैं।

जब परमेश्वर उसका वचन बोलता है तो वह "बीज" बो रहा होता है जो जीवन लाएगा। परमेश्वर का वचन सदा प्रभावशाली होता है। यह सदा उत्पन्न करेगा। जब हम स्थितियों में परमेश्वर का वचन बोलते हैं, जैसे पवित्र आत्मा हमें निर्देश देता है, तब हम परमेश्वर के बीज छिड़क रहे होते हैं। तब इससे उसे जीवन लाने का अवसर मिलता है!

अय्यूब 22:28 कहता है, "जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा।" "ठाने" शब्द का असल में अर्थ है: एक चीज का फैसला करना और फिर आदेश देना। इस आयत में "जो बात" के लिए इब्रानी शब्द है "omer"। इसका अर्थ यह भी है: "आज्ञा का एक शब्द; एक प्रतिज्ञा।" "बन भी पड़ेगी" के लिए इब्रानी शब्द है "qum"। इसका अर्थ है: "उठना या खड़े होना। मेरा विश्वास है परमेश्वर अय्यूब 22:28 में यह कह रहा है, "तुम परमेश्वर की प्रतिज्ञा का आदेश दोगे और यह उठ खड़ी होगी। तुम मेरा बीज बोओगे। यह उगेगा और पृथ्वी पर कुछ स्थापित करेगा।"

आप उद्धार के बीजों को छितराकर पृथ्वी पर कुछ उद्धार स्थापित क्यों नहीं करते? स्वतंत्रता के बीज घोषित करके किसी के लिए स्वतंत्रता स्थापित करो। एकता के बीजों को आदेश देकर अपनी कलीसिया में एकता स्थापित करो। परमेश्वर के बीज बोकर अपने बच्चों में परमेश्वर का भविष्य स्थापित करो। परमेश्वर के बीजों के साथ अपना व्यक्तिगत बगीचा लगाओ। उसकी देखभाल करो। परमेश्वर के वचन को फसल उत्पन्न करते देखो। अपने मुँह से कलवरी की विजय घोषित करो। अय्यूब 6:25 कहता है: "सच्चाई के वचनों में कितना प्रभाव होता है।" प्रभाव का इब्रानी शब्द "marats" है, जिसका अर्थ है: दबाना। पुराने दिनों में, शासक एक अँगूठी पहनते थे जिसे "मुद्रिका" कहते थे। जब एक राजा कोई आदेश जारी करना चाहता था जिसे उसने लिखा होता था, तब वह पेपर पर गर्म लाख गिराता था, और उस पर अपनी मुद्रिका को दबाता था। तब जो चित्र या शब्द मुद्रिका पर अंकित होते थे लाख पर प्रकट होते थे। और जब लाख सूखता था, तब पेपर पर राजा की स्थाई छाप उत्पन्न हो जाती थी। हमारे शब्द प्रभावी या आग्रही हैं। जिस प्रकार राजा की मुद्रिका छाप छोड़ती थी, उसी प्रकार हमारे शब्द भी चीजों पर छाप छोड़ते हैं। वे हमारा उद्धार, परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ, और हमारा भविष्य मुहरबन्द करते हैं।

सभोपदेशक 12:11 हमें बताता है : "बुद्धिमानों के वचन अंकुश के समान होते हैं, और सभाओं के प्रधानों के वचन गाड़ी हुई कीलों के समान हैं।" हमारे शब्द कीलों के समान हैं, वे आत्मा में चीजों को बनाते हैं। जैसे एक कीले को चीज को स्थान पर रखने के लिए उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार शब्दों को परमेश्वर की प्रतिज्ञा को स्थान में रखने के लिए उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, हमारे शब्दों को आत्मिक स्थानों में चीजों को बनाने और स्थापित करने दिया जाता है।

हड्डियों और साँस को भविष्यद्वाणी करना

यहेजकेल और सूखी हड्डियों की वादी की कहानी भविष्यसूचक घोषणा का एक दूसरा उदाहरण है (यहेजकेल 37:1-14 देखो)। "इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कह", परमेश्वर ने यहेजकेल को आज्ञा दी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं यहेजकेल ने क्या सोचा होगा? "उनसे बोलूँ" परमेश्वर, यदि तू चाहता है हड्डियों से कुछ कहा जाए, तो तू स्वयं क्यों नहीं कह लेता? परन्तु यहेजकेल ने आज्ञापालन किया और कहा, "हे सूखी हड्डियो, यहोवा का वचन सुनो।" और उन्होंने सुना! हड्डी हड्डी से जुड़ गई और उन पर माँस चढ़ गया। परन्तु, उन में कोई जीवन न था। यहेजकेल का अगला काम हड्डियों से भविष्यद्वाणी करने से भी अधिक विस्मयकारी था। प्रभु ने कहा, "साँस से भविष्यद्वाणी कर।" मेरा विश्वास है जिस साँस को उसे भविष्यद्वाणी करने को कहा गया था पवित्र आत्मा था। यदि ऐसा है तो, परमेश्वर ने कहा था, "पवित्र आत्मा से भविष्यद्वाणी कर" (आय. 9)। यहेजकेल ने कहना माना, और परमेश्वर के आत्मा ने वह किया जो यहेजकेल ने उसे करने को कहा था। क्या भविष्यद्वक्ता ने असल में पवित्र आत्मा को आज्ञा दी थी? असल में तो नहीं - वह परमेश्वर को आज्ञा नहीं दे रहा था; वह परमेश्वर की ओर से आज्ञा दे रहा था। मनुष्य के साथ मिलकर काम करना सृष्टि से ही परमेश्वर की योजना रही है। परमेश्वर की इच्छा एक मनुषय की भविष्यसूचक घोषणा के द्वारा काम करने की है। कौन इस अदभुत चीज को पूरी तरह समझ सकता है?

जो कुछ वह कहता है, उसे करो!

परमेश्वर कलीसिया को भविष्यसूचक कार्य और घोषणा की एक नई समझ में बुला रहा है। वह हमें सिखा रहा है कि पृथ्वी पर उसकी आवाज और देह के रूप में कैसे काम करना है। जब वह हमें अपनी योजना बताता है, तब हमें उसे करने की आवश्यकता

होती है! इससे फर्क नहीं पड़ता कि यह कितना मूर्खता का काम लगे जैसे कि एक छड़ी आगे बढ़ाना, या आत्मिक रूप से मरे हुओं से बात करना। वह हमें हमारे पड़ोस में या सड़कों पर चलने-फिरने को कह सकता है। हमें चट्टानों को मारने, पृथ्वी को आदेश देने या दीवारों से बात करने को कहा जा सकता है। वह हमें अपने देश में चलने, या उनसे बोलने को कह सकता है जो हमारी आवाज सुन पाने से दूर हैं। प्रभु आपको विद्रोही बच्चे के कमरे में जाने और उसकी चीजों को तेल से अभिषेक करने को कह सकता है। आपको बच्चे के कपड़ों पर प्रार्थना करना, उसके बिस्तर पर बोलना, या कोई दूसरा प्रतीकात्मक कार्य करना पड़ सकता है। आप में से कुछ को आपके शहरों और सरकारों पर घोषणाएँ करने को कहा जा सकता है। कुछ को देश में घूमने-फिरने और उसे परमेश्वर के राज्य के लिए माँग लेने को कहा जा सकता है। जो कुछ भी वह तुम से कहता है, उसे करो! स्थितियों पर प्रभु का वचन घोषित करने में साहस दिखाओ। उसके वचन का बीज पृथ्वी पर बिखेरो और फसल की अपेक्षा करो। यह स्थापित होगा। यह उठेगा! जीवन आएगा!

मनन के लिए मनन

1. भविष्यसूचक कार्य और घोषणाएँ क्या हैं ? वे परमेश्वर को कैसे "छोड़ते" हैं समझाओ। अब कुछ बाइबल के उदाहरण दो।
2. परमेश्वर के वचन, बीज और हमारी पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित घोषणाओं में सम्बंध समझाओ।
3. पवित्रशास्त्र की कुछ आयतें क्या हैं जो किसी के उद्धार के लिए आज्ञा देने के लिए अच्छी हैं ?
4. चंगाई के लिए कुछ आयतें कौन सी होंगी ?
5. आप अपने शहर पर कौन से वचन घोषित करोगे ?

अध्याय 14 – पहरेदार का अभिषेक

चौकन्ने रहो

बाइबल जागते रहने की बात करती हैः "...जागते और प्रार्थना करते रहो..." (मरकुस 13:33)। यह अध्याय "पहरेदार के अभिषेक" के विषय में है। यह विशेष अभिषेक उनके लिए है जिन्हें मध्यस्थ होने के लिए बुलाया है। इस अभिषेक के द्वारा हमें शैतान की योजनाओं की चेतावनी पाने के लिए बुलाया और सज्जित किया जाता है। इस बुलावे का उद्देश्य यह है कि हम शैतान की इच्छाओं के विरुद्ध उसी प्रकार प्रार्थना कर सकें जैसे यीशु ने पतरस के लिए प्रार्थना की थी। "शमौन, हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि गेहूँ के समान फटके, परन्तु मैं ने तेरे लिए विनती की कि तेरा विश्वास जाता न रहे..." (लूका 22:31-32)। इफिसियों 6:18 कहता है, "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी प्रकार जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो।" 1 पतरस 5:8 हमें हमारे शत्रु के विषय में चेतावनी देता है। इसमें लिखा है, "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।" इन आयतों में विचार यह है कि हमें सर्तक रहना है और मध्यस्थता के द्वारा शत्रु को निष्प्रभाव करना है। हर आयत में हमारा शत्रु कहा गया है। हर एक हमें, अपने लिए और मसीह में अपने भाई और बहन के लिए सतर्क रहने या जागते रहने को कहती है।

दूसरी सम्बंधित आयत है 2 कुरिन्थियों 2:11, "कि शैतान का हम पर दाँव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।" अध्याय 9 में इस आयत को अच्छी तरह समझाया गया है। अध्याय 9 में दी इस आयत का अर्थ मैं दोहराता हूँ। इसे मैं ने इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द पर आधारित किया है। "जिस हद तक हम शत्रु कैसे सोचता और कार्य करता है से अनजान हैं - जिस हद तक हम उसकी योजनाओं, षड्यन्त्रों और युक्तियों से अनजान हैं - उस हद तक वह हमारा लाभ उठाएगा और जो हमारा है उसे लेने का प्रयास करेगा।" दूसरे शब्दों में, शैतान के तरीकों से अनजान रहना खतरनाक है!

मैं इफिसियों 6:18, 1 पतरस 5:8 और 2 कुरिन्थियों 2:11 से चार निष्कर्ष निकालना चाहता हूँ :-

1. हमारे शत्रु के आक्रमणों से सुरक्षा स्वचालित नहीं है। यह विश्वासियों पर भी लागू होता है। सुरक्षा अपने आप होती नहीं है। हमें भी निभाने के लिए एक भूमिका होती है। हालाँकि परमेश्वर प्रधान है, इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सबकुछ जो होता है उसके नियंत्रण में है। उसने बहुत सारे फैसलों और कार्यों को मनुष्यों पर छोड़ दिया है। यदि परमेश्वर हमें शैतान के आक्रमणों से चाहे हम कुछ भी करें बचाने वाला है तो ये आयतें अर्थहीन हैं। हमारी धर्मशिक्षा में कहीं हमें मनुष्य की जिम्मेवारी का स्थान खोजना होगा। कभी न कभी हमें विश्वास करना होगा कि हमारी भी कुछ कीमत है।

2. परमेश्वर की योजना हमें शैतान की युक्तियों की ओर चौकन्ने करने की है। परमेश्वर कहता है शैतान की युक्तियों की जानकारी रखो। इसलिए वह हमें उनकी जानकारी देने का इच्छुक होगा। वह कहता है चौकन्ने रहो। इसका अर्थ हो सकता है यदि हम जाग रहे हैं तो वह हमें चौकन्ना करेगा। परमेश्वर हमें ऐसा कुछ करने को नहीं कहेगा जिसे करने के लिए वह हमें योग्यता नहीं देगा।

3. हमें जागते रहना है, नहीं तो हम शैतान की युक्तियों की जानकारी देने के परमेश्वर के प्रयासों पर ध्यान नहीं दे पाएँगे। यदि ये आक्रमण देख पाने के लिए सदा सरल होते तो चौकन्ने होने की आवश्यकता नहीं थी। यशायाह 56:10 अंधे पहरेदारों की बात करता है। क्या चित्र है! मुझे डर है कि यह हम में से कइयों का एक अच्छा वर्णन तो नहीं। हम अकसर, पहले के चेलों के समान हैं। "आँखें रखते हुए भी नहीं देखते, और कान रखते हुए भी नहीं सुनते" (मरकुस 8:18 देखो)। अब समय है कि हम देखने से कुछ अधिक करें। हमें चौकन्ने और जागते रहना है!

4. यदि हम चौकन्ने और जाग नहीं रहे हैं तो शैतान हमारी ओर उसके शैतानी इच्छाओं में सफल हो सकता है। वह हमारी अज्ञानता का लाभ उठा सकता है। हम अपनी अज्ञानता के कारण नष्ट हो सकते हैं (होशे 4:6 देखो)। उस रोगिस्थान के खानाबदोश के समान मत बनो जो भूख के कारण एक रात को उठा और उसने सोचा वह कुछ खाएगा। उसने एक मोमबत्ती जलाई, एक खजूर लिया और काटा। जब वह खजूर को मोमबत्ती के पास लाया तो उसमें एक कीड़ा देखा। उसने खजूर को तम्बू में से बाहर फेंक दिया। दूसरे खजूर में काटने के बाद उसने उसमें भी कीड़ा देखा, और उसे भी फेंक दिया। उसने सोचा यदि ऐसा होता रहा तब तो वह कुछ भी खा नहीं पाएगा। इसलिए, मोमबत्ती बुझा दी और खजूर खा लिए।

5. कभी-कभी हम भी सत्य की ज्योति के स्थान पर अस्वीकृति के अन्धकार को पसन्द करते हैं, हालाँकि सत्य कभी-कभी चोट पहुँचाता है, यह फिर भी सत्य है। सत्य का इन्कार करने से यह बदलता नहीं है। जहाँ शैतान ने विजय प्राप्त की है, आओ हम स्वीकार करें और जो उसने चुराया है उसे वापस लेने का फैसला करें!

जागते रहने के लिए दो यूनानी शब्द

"जागते रहने" के लिए दो यूनानी शब्द हमें पुराने नियम के पहरेदार के विचार की याद दिलाते हैं। वे "gregoreuo" और "agrupneo" हैं। दोनों का अर्थ है: "जागते रहना"। यह रखवाली पर खड़े सिपाही का विचार है जिसे जागते रहने की आवश्यकता है।

- "प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जाग्रत रहो" (कुलु. 4:2)।
- यीशु ने कहा, "मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ: तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो ... जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो..." (मरकुस 14:34, 38)।
- "सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए" (1 पतरस 5:8)।
- "जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त बनो" (1 कुरिं. 16:13)।
- "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार विनती किया करो" (इफि. 6:18)।
- "इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो" (लूका 21:36)।

अन्तिम दो आयतें agrupneo को कायरोस के साथ जोड़ती हैं। (कायरोस, जिसका अर्थ है "सही समय", पर चर्चा के लिए अध्याय 6 देखो।)

ये आयतें हमें कायरोस समय के लिए चौकन्ने रहने की चुनौती देती हैं। तब हमें प्रार्थना करनी है।

बाइबल के पहरेदार

बाइबल के पहरेदारों का उद्देश्य क्या था?

"पहरेदार" शब्द पुराने नियम से मिलता है। यह संतरी, गार्ड या पहरेदार के लिए उपयोग होता था। ये पुरुष दो चीजों की रक्षा के लिए जिम्मेवार होते थे। वे खेतों की चोरों और पशुओं से रक्षा करते थे। वे शहरों की शत्रु की सेनाओं से रक्षा करते थे। जो पुरुष फसल के खेतों की रखवाली करते थे चट्टानों, इमारतों या टावरों पर खड़े रहते थे। यह उन्हें बेहतर दृश्य देता था। खेतों के टावरों में अकसर सोने का स्थान होता था। यह इसलिए था क्योंकि कटनी के दौरान रात और दिन पहरा देने की आवश्यकता होती थी। पहरेदार अकसर पाली में काम करते थे - एक काम करता तो दूसरा सोता था। इस प्रकार, चौबीसों घंटे रखवाली की जा सकती थी।

इसका हमारे लिए महान प्रतीकार्थ है। फसल के समय में, पहरेदारों की अधिक आवश्यकता होती है। चोर चोरी करने के लिए सबकुछ जो वह कर सकता है करेगा। मेरा विश्वास है कि यह समय संसार में फसल का सबसे महान समय है जिसे संसार ने कभी देखा है। परमेश्वर इस फसल से पहले इतिहास की प्रार्थना की सबसे बड़ी जाग्रती ला रहा है।

फसल का प्रभु बुद्धिमान है। उसने फसल पर रखवाली के लिए 24-घंटे के पहरेदार लगा रखे हैं। हम भी प्रभु के साथ कह सकें, "जो तू ने मुझे दिया है उनकी रक्षा की। मैं ने उनकी चौकसी की ... उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ" (यूहन्ना 17:12)।

पुराने नियम के पहरेदारों को शहरपनाह पर भी खड़ा किया जाता था।

निम्नलिखित पुराने नियम के कुछ संदर्भ हैं:

- "क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है, 'जाकर एक पहरूआ खड़ा कर दे, और वह जो कुछ देखे उसे बताए। जब वह सवार देखे जो दो-दो करके आते हों, और गदहों और ऊँटों के सवार, तब बहुत हो ध्यान देकर सुने।' और उसने सिंह के से शब्द से पुकारा, 'हे प्रभु, मैं दिन भर खड़ा पहरा देता रहा और मैं ने पूरी रातें पहरे पर काटीं।'" (यशायाह 21:6-8)
- "बेबीलोन की शहरपनाह के विरुद्ध झण्डा खड़ा करो; बहुत पहरुए बैठाओ; घात लगानेवालों को बैठाओ।" (यिर्मयाह 51:12)।
- "हे यरूशलेम, मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करानेवालो, चुप न रहो।" (यशायाह 62:6)

शहरपनाह पर से ये पहरेदार दो चीजों पर ध्यान रखते थे: संदेशवाहक और शत्रु।

संदेशवाहकों की खोज में पहरेदार

पहरेदार संदेशवाहकों को देखते थे और द्वारपालों को सूचना देते थे कि कब द्वार खोलने हैं और कब नहीं खोलने हैं। उन दिनों में एक शहर से दूसरे शहर संदेश ले जाने के लिए हरकारों को उपयोग किया जाता था। अनुकूल हराकारों को देख कर पहरेदार पुकार उठते थे। निपुण पहरेदार दूर से हरकारों की चाल देख कर भी उन्हें पहचान लेते थे। 2 शमूएल 18:27 में पहरेदार ने कहा, "पहले का दौड़ना सादोक के पुत्र अहीमास का सा है।"

जिस तरीके से कुछ किया जाता है उसे पहचानने से हम हमारे आत्मिक शत्रु से आनेवाले खतरे के लिए चौकन्ने हो सकते हैं। शत्रु के तरीकों को जानना महत्त्वपूर्ण है। अनुभवी "पहरेदारों" को पवित्र आत्मा अकसर चौकन्ने कर देता है। उन्हें कोई प्रमाण मिलने से पहले ही कि कोई "संदेशवाहक" भरोसेमंद नहीं हैं पवित्र आत्मा उन्हें चेतालनी दे देता है। वे झुण्ड को फाड़ खाने के लिए भेजे "भेड़ियों" को पहचान लेते हैं। उन्हें पता चल जाता है कि वे "भाड़े" के हैं जिनके अभिप्राय गलत हैं। वे अगुआई को चेतावनी देते हैं। वे "उनकी चाल से" शत्रु के प्रतिनिधियों को पहचान लेते हैं। कुछ ठीक नहीं है। वे भाते और परख लेते हैं।

हमें मानवीय संदेह और शरीर के अनुसार न्याय के प्रति सावधान रहना होगा। परन्तु मैं ने अपने भरोसेमंद "पहरेदारों" को सुनना सीख लिया है। उनमें से एक मेरी पत्नी है। मेरे पहरेदार मुझे बताते हैं कि कब वे किसी के प्रति बेचैनी महसूस कर रहे हैं। वे अकसर सही होते हैं।

पहरेदारों को जागते रहना और अगुवा को सुनना है। यदि वे ऐसा करते हैं तो मसीह की देह में अधिकाँश झूठी शिक्षा और फूट से बचा जा सकेगा। पतरस 2 पतरस 2:1-2 में इस आवश्यकता की बात करता है, "जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे, उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, तो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपाकर करेंगे, और उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे, और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।" पौलुस ने प्रेरितों 20:28-31 में इफिसियों को जागते रहने की चेतावनी दी थी, "इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।" प्रकट है कि इफिसियों ने पौलुस की सलाह मानी थी, क्योंकि प्रभु प्रकाशितवाक्य 2:2 में उनकी प्रशंसा करता है, "मैं तेरे काम, और तेरे परश्रिम, और तेरे धीरज को जानता हूँ; और यह भी कि तू बुरे लोगों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया है।"

पहरेदार शत्रु का ध्यान रखते हैं

शहरपनाह पर तैनात पहरेदार शत्रु पर भी निगाह रखते थे। जब वे कोई सम्भावित खतरा अनुभव करते थे तो वे चेतावनी देते थे। यह चेतावनी एक पुकार या तुरही का फूँका जाना होता था। तब सिपाही युद्ध कर सकते थे और शहर का बचाव कर सकते थे।

आत्मिक भाव में, पहरेदार ऐसा आज भी करते हैं। वे चेतावनी देकर, मसीह की देह को शत्रु के आक्रमणों से बचाते हैं। जब पहरेदार चौकन्ने रहते हों तो शैतान और उसकी शक्तियाँ हमें धोखे से फँसा नहीं सकेंगी। अच्छे पहरेदारों के रूप में, हम अपने शत्रु के डर या अज्ञानता में नहीं जीते हैं। अकसर शत्रु मसीहियों को एक गलत बल के कारण दोष लगाएगा। वह उन्हें उस पर

ध्यान देने से रोकने का प्रयास करेगा। यह विचार अकसर अच्छे-तात्पर्यवाले मसीही ही सिखाते हैं। वे कहते हैं कि शैतान को अनदेखा करना चाहिए। वे कहते हैं कि उस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु, एक अच्छा सिपाही शत्रु के विषय में अच्छी जानकारी रखता है।

यीशु पर ध्यान केन्द्रित करो। उससे विस्मित रहो, परन्तु शत्रु की जानकारी भी रखो! हमारी पहला प्राथमिकता उसे प्रेम करना है जिसकी आराधना हम करते हैं - शत्रु के साथ युद्ध से प्रेम नहीं करना है जिस पर हम निगाह रखते हैं। परन्तु जब आवश्यक हो, हम युद्ध में जाते हैं।

एक स्त्री थी जो अपनी कलीसिया में आत्मिक युद्ध के विषय में सिखा रही थी। उसके पास्टर ने उसे कहा, "मुझे नहीं लगता हमें आत्मिक युद्ध के विषय में सिखाना चाहिए। यीशु पर न कि शैतान पर ध्यान केन्द्रित करो।" उसके आदरणीय उत्तर ने उसी बुद्धि और अनुभव को प्रकट किया। "पास्टर, मैं यीशु पर और उसकी विजय पर ध्यान लगाती हूँ। यीशु ने सिखाया है कि हमें दुष्ट पर अधिकार है। परन्तु, जब तक मैं आत्मिक युद्ध में यीशु का अधिकार उपयोग नहीं कर रही थी, मेरे चार बच्चे नरक जा रहे थे। मैं ने शत्रु के काम को मेरे परिवार के जीवन बाँधना सीख लिया है। आज मेरे सारे बच्चे और पोते-पोतियाँ प्रभु की सेवा करते हैं। मैं ने आत्मिक युद्ध के परिणाम देखे हैं, और मैं दूसरों की भी सहायता करना चाहती हूँ।"

पहरेदार आगे देखते हैं

पहरेदार पवित्रशास्त्र में केवल शहरों और खेतों की ही रखवाली नहीं करते थे। इब्रानी शब्द जिनका "जागना या चौकसी करना" अनुवाद किया गया है वे हैं "natsar", "shamar" और "tsaphah"। उनका अर्थ है: "चौकसी करके रखवाली करना या रक्षा करना।" उनका अर्थ यह भी है: "किसी चीज के चारों और बाड़ा बाँधना" या "कुछ छिपाना"। पहरेदार - मध्यस्थता के द्वारा - सुरक्षा का गुप्त स्थान बनाता है (भजन 91 देखो)। "Tsaphah" का एक और दिलचस्प अर्थ है: "आगे झुकना और दूर तक ताकना।" यह अर्थ पूरी शक्ति से प्रार्थना की बात करता है। पहरेदार आगे, दूर तक ताकता है। वह शत्रु के आक्रमणों को पहले से देख सकता है। वह प्रतिक्रिया करने के बजाय, क्रिया करता है। भविष्यसूचक मध्यस्थता में ऐसा ही होता है!

आओ कुछ वचनों को देखें जहाँ "जागने या चौकसी करने" के लिए ये शब्द उपयोग किए गए हैं। हर अनुच्छेद कुछ भिन्न की रखवाली करने या रक्षा करने की बात करता है।

पहला उत्पत्ति 2:15 में है, "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।" "रक्षा" करने के लिए शब्द "जागते रहने" के लिए उपयोग किया एक शब्द है। यह पहला स्थान है जहाँ बाइबल में यह शब्द उपयोग किया है। भाष्य-विज्ञान में (बाइबल का सही अर्थ निकालने के सिद्धान्त) "पहले उल्लेख का नियम" जैसी एक चीज है। यह सिद्धान्त सुझाव देता है: बाइबल में दिए किसी प्रमुख विषय के पहले उल्लेख पर हमें निकट से ध्यान देना है। जब एक विषय का पहली बार उल्लेख है तब इसके विषय में महत्त्वपूर्ण तथ्य दिए होते हैं। ये तथ्य बाकी की बाइबल में उस विषय के संदर्भ समझने में हमारी सहायता करते हैं। उदाहरणार्थ, साँप - शैतान - का पहला उल्लेख उत्पत्ति 3:1 में है, "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था...।" यहाँ कार्य कर रहे "पहले उल्लेख के नियम" को देख पाना सरल है। यह आयत शैतान के कपट या धूर्तता की बात करती है। परमेश्वर हमें शैतान के विषय में एक सबसे महत्त्वपूर्ण बात बता रहा है जिसे हमें याद रखना है। वह हमारे लिए एक धूर्त साँप के रूप में एक गर्जनेवाले सिंह से भी अधिक खतरनाक है।

पहरेदार साँप को बाहर रखते हैं!

आदम को उत्पत्ति 2:15 में वाटिका की रक्षा करने (रखवाली करने या निगाह रखने) को कहा गया था। किससे? यह साँप से ही होनी चाहिए थी!

साँप से क्यों? निम्नलिखित कारण समझा सकते हैं क्यों:

(1) आदम को चेतावनी देना परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार ही था।

(2) जब एक साँप ने उनसे बात की, तब न आदम और न हव्वा को अजीब लगा था। यह उनके लिए कोई आश्चर्य नहीं था।

(3) वाटिका में क्या दुष्ट उपस्थिति हो सकती थी जिससे रक्षा की जाती? केवल साँप।

पवित्रशास्त्र में "रक्षा" शब्द का पहला उल्लेख पहरेदार की एक प्रमुख जिम्मेवारी को स्पष्ट करता है: साँप को बाहर रखना! जिसे परमेश्वर ने तुम्हारी देखभाल में सौंपा है उसका धूर्त साँप से रखवाली या रक्षा करो। उसे अपनी वाटिका से बाहर रखो। उसे अपने घर, परिवार, कलीसिया, शहर, देश से बाहर बाहर रखो! उसे बाहर रखो!

शब्द "रक्षा" का उल्लेख उत्पत्ति 3:24 में दोबारा पाया जाता है जब परमेश्वर ने वाटिका के द्वार पर करूबों को पहरा देने के लिए खड़ा किया था। यह मनुष्य को जीवन के वृक्ष तक पहुँचने से रोकने के लिए था। आदम ने साँप को बाहर नहीं रखा इसलिए एक स्वर्गदूत को मनुष्य को बाहर रखना पड़ा था।

पहरेदार भेड़ों की रक्षा करते हैं

उत्पत्ति 30:31 में पहरेदार भेड़ों के झुण्ड की रखवाली कर रहे थे। हम परमेश्वर के झुण्ड की मध्यस्थता के द्वारा रखवाली कर सकते हैं।

सभोपदेशक 12:3 एक घर की रखवाली की बात करता है।

भजन 127:1 एक शहर की रखवाली का विचार उपयोग करता है।

1 शमूएल 26:15 और 28:2 एक व्यक्ति की चौकसी करने की बात करते हैं।

नीतिवचन 4:23 हमें हमारे हृदयों की रक्षा करने का निर्देश देता है।

इन तीन इब्रानी शब्दों का अनेक प्रकार से अनुवाद किया गया है:

1. रक्षा करना या रखवाला: यह इन शब्दों का सबसे अधिक उपयोग है - कम से कम 250 बार।
   पहरेदार चीजों, स्थानों और व्यक्तियों को सुरक्षित रखते हैं। वे खोने, चोरी होने या नष्ट होने से बचाव करते हैं।
2. पहरा देना: पहरेदार रक्षक हैं। यह शब्द प्रकट रूप से अगले शब्द के समान है।
3. अंगरक्षक: पहरेदार व्यक्तिों की खतरों और हानि से उनकी रक्षा करते हैं। वे ढाल के समान हैं। पहरेदार दूसरों की रक्षा करने में यीशु के प्रतिनिधि हैं।

हमारी मण्डली के मध्यस्थ अकसर मुझे बताते हैं कि उन्होंने प्रार्थना में मेरी रक्षा करने में समय बिताया है। अनेक बार मुझे बताया गया है, "पास्टर, मैं लगभग सारी रात आपके लिए प्रार्थना करता रहा।" कभी-कभार वे पूछते हैं, "क्या कुछ गड़बड़ थी?" "नहीं", मेरा उत्तर होता है, "सम्भवतः आपकी प्रार्थना के कारण!" अकसर मेरी समस्याएँ दूसरों पर लाद दी जाती हैं और वे उन्हें उठा ले जाते हैं। मैं काफी कृतज्ञ हूँ क्योंकि जानता हूँ कि मेरी अधिकतर सफलता उनकी विश्वासयोग्यता के कारण है। यह जानना कितनी सान्त्वना की बात है कि मेरे आत्मा में अंगरक्षक हैं! मसीही अगुवों में दुर्घटनाएँ कम होतीं यदि हमारे पास अधिक विश्वासयोग्य पहरेदार होते।

एक प्रमुख प्रोफेसर पाँच कारण देता है कि क्यों पास्टरों और दूसरे मसीही अगुवों को मध्यस्थता करने के लिए पहरेदारों की आवश्यकता है:

1. अगुवों की अधिक जिम्मेवारी और उत्तरदायित्व होता है।

याकूब 3:1, "हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे।"

2. अगुवे परीक्षाओं के अधिक जोखिम में होते हैं।

जितना अधिक आप मसीही अगुआई की सीढ़ी पर चढ़ोगे, उतना ऊँचा आप शैतान की सूची में बढ़ोगे।

3. अगुवे आत्मिक युद्ध का अधिक लक्ष्य होते हैं।

जादूगरनियों और अन्धकार के दूसरे सेवकों ने एक दुष्ट वाचा बाँधी है। वे मसीही अगुवों के विवाहों के टूटने के लिए शैतान से प्रार्थना करते हैं।

4. अगुवों का दूसरे मसीहियों की तुलना में दूसरों पर अधिक प्रभाव होता है।

5. अगुवों के जीवन पर दूसरे मसीहियों की तुलना में अधिक ध्यान दिया जाता और दिखते हैं।

पास्टर अकसर लोगों के सामने खड़े होते हैं। वे समाज में भी नज़र में रहते हैं। इसलिए वे निरन्तर गपशप और आलोचना का लक्ष्य होते हैं।

इस प्रकार, जिस हद तक मध्यस्थ प्रार्थना करते हैं, अगुवों को सुरक्षा मिलती है। हाँ, अगुवे परमेश्वर का सारा हथियार पहनने के लिए जिम्मेवार हैं (इफिसियों 6:11-17 देखो)। परन्तु, मध्यस्थों की प्रार्थनाएँ उनकी हथियार से अधिक रक्षा करती हैं।

<u>आत्मिक अगुवों के लिए प्रार्थना करने की एक दैनिक मार्गदर्शिका सुझाव के रूप में दी गई है।</u>

- **रविवार:** परमेश्वर के साथ अनुग्रह (आत्मिक प्रकटीकरण, अभिषेक, पवित्रता मिले)।
- **सोमवार:** दूसरों के साथ अनुग्रह (मसीहियों / विश्वासियों और अविश्वासियों के साथ)।
- **मंगलवार:** दर्शन बढ़े (दर्शन को लागू करने के लिए बुद्धि, उपयुक्त क्रिया और मार्गदर्शन मिले)।
- **बुधवार:** आत्मा, प्राण और शरीर (रवैये, इरादे, अभिप्राय, प्रवृत्ति, स्वास्थ्य)।
- **गुरूवार:** सुरक्षा (परीक्षा, धोखे और शत्रु के विरुद्ध)।
- **शुक्रवार:** रुपया-पैसा (प्रबंध और आशीष)।
- **शनिवार:** परिवार (पत्नी और बच्चे)।

परमेश्वर साँप को बाहर रखने के लिए भविष्यसूचक मध्यस्थ - पहरेदार - खड़े कर रहा है! परमेश्वर ऐसे पुरुषों और स्त्रियों की खोज में है जो "आगे झुकेंगे, दूर तक देखेंगे", शत्रु के आक्रमणों पर नज़र रखेंगे। यह निस्संदेह एक ऊँचा बुलावा है!

आक्रामक बनो – घेराबन्दी करो!

जब मैं "जागते रहने" या "रक्षा" के लिए इन इब्रानी शब्दों का अध्ययन कर रहा था, तब मैं ने एक आश्चर्यजनक खोज की। उनके न केवल सुरक्षात्मक या रक्षात्मक अर्थ हैं, उनके आक्रामक अर्थ भी हैं। शब्दों का अर्थ यह भी है: "एक शहर को घेरा डालना।" यह विचार शहर में लोगों और भण्डार को आने-जाने से रोकने पर नज़र रखना है। एक अर्थ "ताक रखना" या "किसी की घात में बैठना है।" इसे 2 शमूएल 11:16, यशायाह 1:8, यिर्मयाह 4:16-17, यिर्मयाह 51:12 और न्यायियों 1:24 में इसी प्रकार अनुवाद किया गया है।

कुछ वर्ष पहले परमेश्वर ने मेरे हृदय में स्पष्ट रूप से कहा था कि वह कलीसिया पर पहरेदार का अभिषेक डाल रहा है। इससे व्यक्ति शहरों और देशों पर प्रार्थना के द्वारा "घेराबन्दी कर सकेंगे"। शैतान ने लाभ उठाया है और उसे पकड़े हुए है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर के लोगों से की गई है। परन्तु, परमेश्वर के लोगों को स्थितियों की घेराबन्दी कैसे करनी है उसके निर्देश दिए जाएँगे। वे शैतान के भण्डार मार्ग बन्द कर देंगे। वे उससे लोगों, शहरों और देशों को वापस ले लेंगे। मसीह की देह अन्धकार के गढ़ों को तरीके से ढाना सीखेगी। उसके आत्मा के द्वारा, परमेश्वर हमें शत्रु की योजनाओं को पहचानने की योग्यता देगा। हम उसे देशों, शहरों और व्यक्तियों से काट डालना और उससे छीन लेना सीखेंगे। अन्धकार के गढ़ ढा दिए जाएँगे। जो शैतान के किलों में कैद हैं स्वतंत्र किए जाएँगे। आत्मा के स्थानों में घेराबन्दी की जाएगी। परमेश्वर हमें दिखाएगा क्या बाँधना और खोलना है, और इसे कैसे करना है।

विरोध होता है परन्तु विजयी हैं

निस्संदेह विरोध होता है। कभी-कभी परमेश्वर से उत्तर पाने के लिए एक लम्बा समय लग जाता है। यह लोगों को प्रार्थना करने से निरुत्साहित कर सकता है। घेराबन्दी करने के विचार का तात्पर्य समय की अवधि है। इसमें विजय प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन मध्यस्थता के दिन, हफ्ते या वर्ष लग सकते हैं। मुझे निश्चित रूप से विश्वास है कि प्रार्थना कैसे करनी है की बेहतर जानकारी से इसकी गति बढ़ाई जा सकती है। जब कई मध्यस्थ सहमत होते हैं तब सामर्थ्य में वृद्धि होती है। इससे उत्तर में भी तेजी हो सकती है। परन्तु, यह सच्चाई बदलती नहीं कि कुछ स्थितियों में समय लगता है। मैं ने अपने पत्नी की रसोली की 30 दिन की घेराबन्दी की थी। जिस बहन की हम ने अध्याय 10 में बात की थी, अपने बेटे के बन्धनों की चार वर्ष तक घेराबन्दी की थी। परमेश्वर ने उसे और उसके मित्रों को कई चीजें करने को दीं जैसे वे प्रार्थना करते रहे थे। उसने उन्हें दिखाया क्या "काटना" है और किन चीजों को "बुलाना है"। उन्होंने शैतान की योजनाओं का पता लगाया। क्या इतना प्रयास और इतनी प्रतीक्षा लाभ की थी? बिलकुल!

घेराबन्दी करने के इस विचार की एक कहानी थेरेसा नामक एक मध्यस्थ की है। उसने और उसके मित्र ने उनके पड़ोस में कुछ समय तक चलते हुए प्रार्थना की थी। वे हर घर के सामने रुकते थे, फिर एक दूसरे का हाथ पकड़कर उनमें रहनेवाले हर व्यक्ति के उद्धार के लिए सहमत होते थे। शीघ्र ही सूचना आने लगी.... एक कर्नल की पत्नी ने मसीह को अंगीकार किया; एक गैर मसीही परिवार के जवान बेटी ने मसीह को अंगीकार किया; एक गठिया की रोगी ने मसीह को स्वीकारा; एक दूसरे परिवार की बेटी मसीह में आई। यह घेराबन्दी करना है! यह पहरेदार के अभिषेक का उत्तम काम है और इसे कोई भी कर सकता है।

शहरों और देशों को परमेश्वर के लिए लेना

"मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूँगा" (भजन 2:8)। इस शिक्षा में मैं ने व्यक्तियों के लिए मध्यस्थता पर अपना अधिकाँश ध्यान लगाया है। मैं अब शहरों और देशों के लिए मध्यस्थता के विषय में बताना चाहता हूँ। यह भी "घेराबन्दी करना" है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से बताता है कि परमेश्वर व्यक्तियों से सम्बंध बनाता है। परन्तु वह न केवल व्यक्तियों से, परन्तु जातियों से भी निपटता है। क्यों? जितने भी फैसले हम करते हैं वे उन लोगों के साथ किए होते हैं जिनसे हम सम्बंध में हैं। उदाहरणार्थ, मैं ने मेरे व्यक्तिगत जीवन के विषय में कई फैसले अकेले किए हैं। परन्तु, मेरी पत्नी और मैं ने अपने बच्चों, रुपये-पैसे और घर के फैसले मिलकर किए हैं। साझे अधिकार का यही सिद्धान्त एक देश के स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। लोगों के समूह उनके इकट्ठे कार्यों के लिए जिम्मेवार होते हैं। जिस तरीके से भी लोगों के एक समूह को अधिकार और फैसले करने की सामर्थ्य हो, उसके साथ जिम्मेवारी भी होती है। उदाहरणार्थ, मैं गर्भपात करने देने वाले नियमों के पक्ष में नहीं हूँ। परमेश्वर अन्त में इस प्रकार के कत्ल के लिए देशों पर न्याय भेजेगा। हालाँकि मैं गर्भपात के विरुद्ध हूँ, मैं खुद परमेश्वर के न्याय के प्रभाव से बच नहीं सकता हूँ। यदि परमेश्वर अकाल भेजता है जिससे फसल नष्ट होती है तो मुझे भी अनाज की कमी के कारण ज्यादा कीमत देनी पड़ेगी। यदि न्याय युद्ध का है, तो मुझे भी अधिक कर देना पड़ेगा, और खोई हुए जीवनों के दुख में भागी होना पड़ेगा।

कोई भी व्यक्ति द्वीप के समान, अपने चारों ओर की हर चीज से अलग, नहीं जी सकता है। हम विश्वासी इन न्यायों से सुरक्षा की कुछ मात्रा का आनन्द ले सकते हैं। परन्तु, साझे की जिम्मेवारी से सम्पूर्ण रूप से बचने का कोई तरीका नहीं है।

लोगों के समूहों के साथ परमेश्वर का बरताव

कई तरीकों से परमेश्वर ने लोगों के समूहों के साथ बरताव किया था:

1. योना 1:2; नहूम 3:1; मीका 6:9; प्रकाशितवाक्य 2 औ 3 में शहरों को भविष्यद्वाणियाँ की गई थी।
2. शहरों और देशों का न्याय हुआ था: नीनवे, सदोम, अमोरा, सूर, सैदा, बैतसैदा, कफरनहूम, यरीहो, यरूशलेम और दूसरे।
3. शहर और देश जिनको क्षमा किया गया या न्याय से बच गए: नीनवे और इस्राएल।
4. शहर और देश जिनका ईश्वरीय उद्देश्य या बुलावा था: इस्राएल, यरूशलेम, सात शरण नगर और कई दूसरे।
5. शहरों के विषय में कहा गया था कि उन्हें परमेश्वर ने सुरक्षित रखा है: भजन 127:1।
6. शहर और देश जिन पर प्रधानताओं का शासन था। सूर (यहेजकेल 28:12); फारस (दानि. 10:13); इफिसुस (प्रेरितों 19:28); पिरगमुन (प्रकाशित. 2:12)।
7. समूहों में लोग धार्मिकता या पाप की सामान्य मात्रा में साझे होते हैं। कोई भी देश (नीतिवचन 14:34); सदोम और अमोरा (उत्पत्ति 18:20-21); अम्मोरी (उत्पत्ति 15:16)।
8. एक शहर के लोगों का सामान्य विश्वास या अविश्वास का स्तर हो सकता है। नासरत (मरकुस 6:5-6)।
9. एक शहर के लोग में सामूहित शान्ति हो सकती है (यिर्मयाह 29:7)।
10. शहरों में बेदारी हो सकती है: नीनवे (योना 3:5-10)।
11. शहर बेदारी से चूक सकते हैं: यरूशलेम (लूका 19:41-44)।

परमेश्वर ने लोगों के साथ केवल व्यक्तियों के रूप में ही नहीं, परन्तु समूहों के रूप में व्यवहार किया था। यह सत्य समूहों के रूप में लोगों के लिए मध्यस्थता करने का आधार है।

अब्राहम ने एक शहर के लिए सफलतापूर्वक मध्यस्थता की थी (उत्प. 18:22-33)।
मूसा ने एक देश के लिए सफलतापूर्वक मध्यस्थता की थी (निर्गमन 32:9-14)।
यरूशलेम के निर्वासितों को जिन शहरों में वे अब रह रहे थे उनके लिए प्रार्थना करने के कहा गया था (यिर्म. 29:7)।
हमारी प्रार्थना, एक देश में चंगाई ला सकती है (2 इतिहास 7:14)।
परमेश्वर आज शहरों और देशों की घेराबन्दी करने और उन्हें परमेश्वर के जीतने के लिए अभिषेक दे रहा है! वह हमें शत्रु की योजनाओं और गढ़ों का पता लगाने के लिए सज्जित कर रहा है। हम भजन 110 में भविष्यद्वाणी किए गए मलिकिसिदक की रीति पर याजक हैं। हम एक याजकीय सेना हैं जिन्होंने विजयी यीशु का राजदण्ड आगे बढ़ाया हुआ है। हम अपने शत्रुओं के बीच राज्य करेंगे। आओ, हम में जुड़ जाओ! हम मध्यस्थता के द्वारा अपने शहरों और देशों को प्रभावित कर सकते हैं। हम उनकी परमेश्वर के लिए घेराबन्दी कर सकते हैं। अन्धकार के गढ़ ज्योति के गढ़ बन सकते हैं।

शहर बदले गए

एक शापित प्रदेश, कनान (उत्पत्ति 9:25 देखो) आशीष का प्रतिज्ञात प्रदेश बन गया। यरूशलेम जो एक समय दुष्ट भीमकाय मनुष्यों का गढ़ था, शान्ति का शहर बन गया।
सात शहर थे जिन पर मूर्तिपूजक और दुष्ट भीमकाय मनुष्य शासन करते थे। वे "शरणनगर" बन गए। जो लोग अनजाने में किसी को घात करते थे, सुरक्षा के लिए वहाँ भाग कर शरण ले सकते थे।
शरणनगरों में से सबसे प्रसिद्ध नगर, हेब्रोन को पहले किर्यतर्बा कहते थे। इसका अर्थ "अर्बा का नगर" है। अर्बा अनाकियों में सब से बड़ा पुरुष था (यहोशू 14:15 देखो)। हेब्रोन इसका नया नाम है। इसका अर्थ है: "मित्रता, संगति, सहभागिता।" परमेश्वर का मित्र, अब्राहम वहाँ दफनाया गया था। कालेब विश्वास और साहस का व्यक्ति था। उसे किर्यतर्बा को एक ऐसे स्थान में परिवर्तित करने के लिए उपयोग किया था जहाँ लोग सुरक्षा के लिए भाग सकते थे। वे वहाँ परमेश्वर के साथ सुन्दर संगति में समय बिता सकते थे। कालेब के विश्वास और साहस के द्वारा, सबसे बड़े अनाक का गढ़ परिवर्तित हो गया था! यह हमारे शहरों के साथ भी हो सकता है!
एक शरणनगर के रूप में भी हेब्रोन मसीह का प्रतीक है। व्यवस्था के अनुसार, यदि कोई किसी का अनजाने में कत्ल करता था तो वह दो स्थानों में सुरक्षा पा सकता था। वह एक लम्बे समय की सुरक्षा के लिए शरणनगर में भाग सकता था। अल्पकालिक सुरक्षा के लिए, वह तम्बू में वेदी के सींगों को पकड़े रह सकता था। इब्रानियों 6:18 में लेखक पुराने नियम के इन दोनों प्रतीकों से अंकित करता है: "ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा, जिसके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, दृढ़ता से हमारा ढाढ़स बंध

जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें।" जो व्यक्ति सुरक्षा के लिए शरणनगर में होते थे वर्तमान महायाजक कती मृत्यु तक वही रहते थे (गिनती 35:28 देखो)। उसके बाद, वे सुरक्षित बाहर जा सकते थे। यह यीशु की कैसी अदभुत तस्वीर है जो हमारे लिए मर गया ताकि हम न्याय और दण्ड से स्वतंत्र होकर जा सकते हैं।

यह यीशु की एक सुन्दर तस्वीर है। परन्तु, मेरा इसे बताने का एक दूसरा कारण है। भीमकायों का एक पुराना गढ़ सुरक्षा के एक स्थान में परिवर्तित हो गया था। यह शरण और परमेश्वर के साथ संगति का एक स्थान था।

क्या परमेश्वर इसे आज भी कर सकता है ? क्या हमारे शहर और देश इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित हो सकते हैं ? हाँ, यदि उसे कुछ कालेब मिल जाएँ - यदि उसे कोई भीमकायों को मारनेवाले मिल जाएँ - यदि उसे ऐसे कुछ मिल जाएँ जिनका रवैया "निस्संदेह हम में ऐसा करने की शक्ति है" जैसा है (गिनती 13:30)। परमेश्वर ने यहेजकेल को इस्राएल की सूखी हड्डियों को देखने को कहा था। वह हमें हमारे अपने देश की सूखी हड्डियों को देखने को कह रहा है। वह चाहता है हम सब प्रकार के लोगों को देखें। पुरुष और स्त्रियाँ, जवान और बूढ़े, अमीर और गरीब, दुखी और जो सोचते हैं वे स्वस्थ्य हैं। वह चाहता है हम उस प्रश्न का उत्तर दें जो उसने भविष्यद्वक्ता से किया था: "क्या ये हड्डियाँ जी सकती हैं ?" (यहेजकेल 37:3)। मैं कहता हूँ वे जी सकती हैं। आप क्या कहते हैं ?

क्या आप तैयार हैं ?

अ और ब नामक दो पुरुष थे। उन्होंने सुना कि भेड़ियों को पकड़ने या मारने के लिए पाँच हजार रुपयों का इमान रखा गया है। इसलिए वे "इनाम के शिकारी" बन गए। एक रात जब अ की नींद खुली तो उसके क्या देखा कि उनके चारों ओर चमकती आँखों के 50 जोड़े हैं! वे पचास बहुत भूखे भेड़ियों की थीं जो उस अंधेरी रात उनके चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। "ब उठो", अ अपने सो रहे साथी के कान में फुसफुसाया। "हम अमीर हो गए!" हमें इन दो इनाम के शिकारियों के समान होना चाहिए। हमें अपने चारों ओर अविश्वासियों के झुण्ड देखने चाहिए। वे खतरा नहीं, अवसर हैं। हो सकता है हमारा काम अभिभूत करने वाला लगे। परमेश्वर की शक्ति और योग्यता के बिना, यह है भी। हम अपनी नहीं, उसकी शक्ति पर निर्भर हो सकते हैं।

- "चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूँगा" (भजन 27:3)।
- गिदोन के 300 पुरुष - और, परमेश्वर उनके साथ था - 135,000 शत्रुओं को हराने के लिए पर्याप्त थे।
- यदि वह हमारी ओर है, तो कौन सफलतापूर्वक हमारा विरोधी हो सकता है (न्यायियों 7:7; रोमियों 8:31 देखो)।
- आओ हम करें! "परमेश्वर उठ, उसके शत्रु तितर-बितर हों" (भजन 68:1)।

दाऊद के समान, आओ हम अपने झोले विजय के पत्थरों से भर लें। तब हम गोलियत से मिलने के लिए दौड़कर जा सकते हैं। आओ हम किर्यतर्बा को ले लें। आओ हम कुछ सेनाओं पर धावा बोलें और कुछ दीवारों को फाँद लें (2 शमूएल 22:30 और भजन 18:29 देखो)। आओ हम अपने परमेश्वर की विस्मयकारिया को प्रकट करें। आओ हम गुर्राएँ! आओ हम गर्जे! आओ हम यीशु को पहने द्वारा जीने दें। वह तैयार है - क्या आप हो ? क्या आप मध्यस्थों के रूप में अपने बुलावे में चलने के लिए तैयार हो ? क्या आप मेलमिलाप करानेवाले और योद्धा के रूप में यीशु के प्रतिनिधि होने के लिए तैयार हो ? क्या आप उसके लाभ और आशीषों को बाँटने के लिए तैयार हो ? क्या आप मिलन करने, उठा ले जाने, सीमाओं को बाँधने के लिए तैयार हो ? क्या आप जन्माने, स्वतंत्र करने, निशाने पर मारने के लिए तैयार हो ? क्या आप कुछ कटोरे भरने, कुछ घोषणाएँ करने, जागते रहने और प्रार्थना करने के लिए तैयार हो ? क्या आप तैयार हो ?

मनन के विए प्रश्न

1. पुराने नियम के पहरेदार की जिम्मेवारियाँ बताओ। वे उनकी जिम्मेवारियों को कैसे निभाते थे ? वे "जागते हुए मध्यस्थता" के प्रतीक कैसे थे ?
2. "रक्षा करने" के लिए इब्रानी शब्द पहली बार पवित्रशास्त्र में कहाँ पाया जाता है ? इससे क्या महत्त्वपूर्ण विचार निकाले जा सकते हैं ?
3. "पहरेदार का अभिषेक" क्या है ? इस अभिषेक के रक्षात्मक पहलू क्या हैं ? आप इसे अपने परिवार और कलीसिया में कैसे लागू कर सकते हो ?
4. पहरेदार के अभिषेक के आक्रामक पहलू का वर्णन करो। इसे एक व्यक्ति के लिए मध्यस्थता में कैसे उपयोग किया जाता है ? इसे एक शहर के लिए कैसे उपयोग किया जाता है ?
5. परमेश्वर केवल व्यक्तियों के बजाय, लोगों के समूह के साथ क्यों बरताव करता है ? तीन या चार बाइबल के उदाहरण बताओ।
6. आप और आपका समूह आपके शहर की घेराबन्दी कुछ किन तरीकों से कर सकते हैं ? अब बाहर जाओ और करो!

कलीसिया में आज भविष्यद्वाणी को समझना

अध्याय 1 – भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वाणी के वरदान को पहचानना

भविष्यद्वाणी का वरदान क्या है?

"भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!" (गिनती 11:29)। जब मूसा ने इन शब्दों को यीशु के जन्म से चौदह सदी पहले बोला था, तब उसने अपने हृदय की इच्छा प्रकट की थी। यही इच्छा परमेश्वर के हृदय में भी थी - परमेश्वर चाहता है उसके लोग भविष्यद्वाणी करें। उसकी सबसे गहरी लालसा उसके लोगों पर उसके आत्मा को उँडेलना है।

मूसा के कुछ सात सदियों के बाद, भविष्यद्वक्ता योएल ने लिखा, "उन दिनों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी... (योएल 2:28)। इसलिए, जो मूसा की लालसा थी उसे योएल ने प्रतिज्ञा के साथ भविष्यद्वाणी में कहा कि यह अन्तिम दिनों में पूरा होगा।

मूसा के चौदह सदियों के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के जन्म पर आश्चर्यजनक घटनाएँ घटी थीं। अलौकिक हवा और आग के मध्य यीशु के चेले भविष्यद्वाणी करने और अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे थे (प्रेरितों 2 देखो)। यीशु के कुछ 120 चेलों, पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर पवित्र आत्मा उँडेला गया था। अपने प्रभु के आज्ञापालन में, वे एक ऊपरी कोठरी में बाट जोह रहे थे। अचानक, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोल रहे और परमेश्वर की महिमा कर रहे थे।

बहुत सारे यहूदी जो सारे संसार भर में तितर-बितर हो कर रह रहे थे, यरूशलेम में आए गुए थे। उन्होंने इन गलीलियों को उनकी भाषाओं में बोलते सुना। जब यहूदी देखनेवालों ने उनसे पूछा इस सब का अर्थ क्या है, तब पतरस ने उत्तर दिया, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी: 'परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी..." (प्रेरितों 2:16-17)। पतरस ने स्पष्ट किया। ये चमत्कारी घटनाएँ - जो फसह के दिन यीशु के क्रूस पर चढ़ने के 50 दिनों के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई हैं - योएल की भविष्यद्वाणी की पूर्ति हैं। पतरस ने मूसा के शब्द पढ़े होंगे और इसलिए निष्कर्ष निकाला: यह वही है जिसकी हम इस्राएली 14 सदियों से उत्सुकता से अपेक्षा कर रहे थे! यह है जिसकी मूसा ने इच्छा की थी और योएल ने भविष्यद्वाणी की कि होगा!"

उस पिन्तेकुस्त के पर्व से लेकर पिछले 2000 वर्षों से परमेश्वर उसकी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा है। उसने अपना आत्मा उँडेला है। सारे संसार भर में मसीही विश्वासी भविष्यद्वाणी कर रहे हैं।

भविष्यद्वाणी क्या है?

मेरा विचार है कि हम में से कई हैं जो भविष्यद्वाणी के विषय में बहुत कम जानकारी रखते हैं। इसलिए, मैं इस वरदान की परिभाषा देते हुए आरम्भ करूँगा। आओ हम 1 कुरिन्थियों 12:8-11 में चलें और पवित्र आत्मा के नौ वरदानों पर एक नज़र डालें।

बोलने के तीन वरदान है:

(1) अनेक प्रकार की भाषा,
(2) भाषाओं का अर्थ, और
(3) भविष्यद्वाणी

जानने या प्रकटीकरण के तीन वरदान हैं:

(1) ज्ञान की बातें,
(2) बुद्धि की बातें, और
(3) आत्माओं की परख

करने या सामर्थ्य के तीन वरदान हैं:

(1) विश्वास,
(2) चंगा करने का वरदान, और
(3) सामर्थ्य के काम करने की शक्ति

भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा का बोलनेवाला तीन में से एक वरदान है।

जैसे हम ने पहले ही भविष्यदावाणी के वचनों से दिखाया है कि पवित्र आत्मा का यह वरदान मसीह में सब विश्वासियों को दिया गया है। हर विश्वासी में पवित्र आत्मा का यह वरदान हो सकता है। प्रेरित पतरस ने इसकी पुष्टि की थी जब उसने कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा" (प्रेरितों 2:38-39)।

पतरस और 120 चेले जो ऊपरी कोठरी में बाट जोहने और प्रार्थना करने को लिए इकट्ठे हुए थे, अभी-अभी पवित्र आत्मा का वरदान पाया था। पवित्र आत्मा का वरदान पाने के भाग के रूप में, वे उन भाषाओं में बोलने लगे थे जो उनके लिए अज्ञात थीं। आत्मा का वरदान और दूसरी भाषाओं में बोलना हर विश्वासी के लिए उपलब्ध है।

किसी भी आत्मा से भरे विश्वासी में ये तीनों बोलनेवाले वरदान हो सकते हैं और वे उन्हें उपयोग कर सकते हैं

भाषाएँ:

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखा, "मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो" (1 कुरिं. 14:5)। पौलुस की इच्छा थी कि हर विश्वासी अन्य भाषाओं में बोले। पौलुस निश्चय ही हमारे लिए ऐसा कुछ नहीं चाहेगा जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हो। और परमेश्वर हमें ऐसा वरदान नहीं देगा जो हमारे लाभ के लिए नहीं होगा। तो इसलिए, हमें आश्वस्त होना चाहिए कि यह वरदान हमें देना परमेश्वर की इच्छा है।

भाषाओं का अर्थ:

1 कुरिन्थियों 14:13 में पौलुस ने कहा, "इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।" यह आत्मा से भरे जीवन की प्रमुख आज्ञा है। यदि हम अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तो हमें आज्ञा है कि हम प्रार्थना करें कि अर्थ बता सकें। इसका अर्थ है कि हर कोई जो परमेश्वर से एक सभा में (छोटी या बड़ी) अन्य भाषा में एक संदेश बोलता है, अर्थ बता सकता है। पौलुस हमें ऐसे कुछ के लिए प्रार्थना करने को नहीं कहेगा जो परमेश्वर हमें देना नहीं चाहता है, या परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध प्रार्थना करने को कहेगा। भाषा का अर्थ बताना हर उस के लिए परमेश्वर की इच्छा है जो परमेश्वर से दूसरों के लिए अन्य भाषा में एक संदेश लाता है। यदि आप अन्य भाषा में परमेश्वर का एक संदेश दूसरों के लिए लाते हो, और अर्थ नहीं निकालते, तो प्रार्थना करो कि ऐसा कर सको! आज से ही प्रार्थना में माँगना आरम्भ करो। यदि आप यह वरदान माँगोगे तो प्रभु आपको दे देगा।

भविष्यद्वाणी:

पौलुस यह भी कहता है, "...तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो..." (1 कुरिं. 14:31)। इस प्रकार, हम सब अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं (दोनों: अपनी उन्नति के लिए व्यक्तिगत, और कलीसिया या समूह में उनके लिए परमेश्वर का संदेश लाने के लिए), हम सब अर्थ बता सकते हैं (अन्य भाषा में दिए परमेश्वर के संदेश का) और हम सब भविष्यद्वाणी कर सकते हैं। यह केवल एक उपयुक्त शिक्षा का मामला है जिससे इन सब वरदानों को पाने के लिए विश्वास आएगा ताकि वे हमारी कलीसियाओं में कार्य कर सकेंगी।

भविष्यद्वाणी की एक सरल परिभाषा

जिस तरीके से हम भविष्यद्वाणी करते हैं अन्य भाषाओं में बोलने के समान है। अन्य भाषाओं में बोलना किसी दूसरी भाषा में बिना पूर्व योजना के होता है, और शब्द पवित्र आत्मा द्वारा दिए जाते हैं। "...और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे" (प्रेरितों 2:4)।

भविष्यद्वाणी भी शब्दों और विचारों का स्वतः बोलना है जिन्हें उसी समय पवित्र आत्मा देता है, परन्तु एक ऐसी भाषा में जिसे आप जानते और समझते हो। दाऊद ने 2 शमूएल 23:2 में कहा: "यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुँह में आया।" आत्मा ने शब्द और विचार दिए, और दाऊद ने उन्हें बोला। इस प्रकार से भविष्यद्वाणी हमारे पास आती है। हमारे पास मूसा और उसके भाई हारून के बीच सम्बंध में भविष्यद्वाणी का एक स्पष्ट उदाहरण है। आपको याद होगा कि मूसा एक छुड़ानेवाला होने के लिए परमेश्वर के बुलावे का विरोध कर रहा था। वह अयोग्य अनुभव कर रहा था। "मूसा ने यहोवा से कहा, 'हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं ... मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ" (निर्गमन 4:10)। परन्तु परमेश्वर के पास मूसा की कमी का इलाज था; वह मूसा को एक प्रवक्ता देगा (निर्गमन 7:1)। "क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है? मुझे निश्चय है वह बोलने में निपुण है ... तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा ... तू उसे ये बातें सिखाना ... जो जो आज्ञा मैं तुझे दूँ वही तू करना, और हारून उसे फिरौन से कहेगा" (निर्गमन 4:14-15, 7:1-2)। मूसा ने हारून के मुँह में शब्द डाले। मूसा ने बोलने के लिए हारून को शब्द दिए

और हारून ने उन्हें फिरौन से कह दिया। उसी प्रकार, आत्मा हमें कहने के लिए शब्द देता है और हम उन्हें विश्वास से बोल देते हैं। इसे "भविष्यद्वाणी" कहा जाता है; या यदि शब्द किसी दूसरी भाषा में हैं जिसे हम समझते नहीं हैं तब उसे "अन्य भाषाओं में बोलना" कह जाता हैं। "...तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो..." (1 कुरिं. 14:31)। हाँ! ये वरदान आपके लिए हैं!

भविष्यद्वाणी प्रचार करना नहीं है

प्रचार सामान्यतः हमारे अध्ययन का परिणाम है, और जिस पर हम ने विचार किया और समय से पहले योजना बनाई है। (परन्तु, ऐसे समय होते हैं जब पवित्र आत्मा हमारे प्रचार को भविष्यसूचक के आयाम तक ले जाता है)। परन्तु भविष्यद्वाणी अकसर पूर्वविमर्शित नहीं होती है। यह पवित्र आत्मा द्वारा दी जाती है और स्वतः बोली जाती है।

दाऊद के अधिकाँश भजन भविष्यद्वाणियाँ हैं। उन्हें प्रभु के आत्मा ने दिया था और दाऊद ने उन्हें लिख लिया था। कुछ सबसे प्रत्यक्ष भविष्यसूचक भजन वे हैं जो यीशु के जीवन, सेवा, मृत्यु, और पुनरुत्थान के विषय में बताते हैं। उनके कुछ अच्छे उदाहरण भजन 2, 16:10, 22, आदि हैं। दूसरे भजनकारों को भी पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित भविष्यसूचक गीत मिले थे।

अन्य भाषाएँ, अर्थ और भविष्यद्वाणी

"मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो परन्तु इससे अधिक यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो : क्योंकि यदि अन्य भाषाएँ बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है" (1 कुरिं. 14:5)

यदि आप इस आयत की ध्यानपूर्वक जाँच करें तो पाएँगे कि पौलुस का स्पष्ट तात्पर्य है कि यदि हम एक सभा में परमेश्वर का संदेश लाने के लिए अन्य भाषा में बोलते हैं, तो हम भविष्यद्वाणी करना या अर्थ बताना भी चुन सकते हैं। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हम पवित्र आत्मा की अगुआई में अन्य भाषाओं में बोलना, अर्थ बताना या भविष्यद्वाणी करना कर सकते हैं। देह के दूसरे सदस्यों को भी अन्य भाषा का अर्थ बताने दिया जा सकता है (1 कुरिं. 12:10; 14:26) - परन्तु, पवित्र आत्मा की अगुआई पर। इस पर भी ध्यान दें: यदि हम अन्य भाषा में बोलते हैं और उसका अर्थ भी बताते हैं तो यह भविष्यद्वाणी जैसा ही है। अन्य भाषा और अर्थ भविष्यद्वाणी के बराबर हैं।

यदि आप समझते हैं अन्य भाषाओं में परमेश्वर का संदेश कैसे बोलना है तब तो भविष्यद्वाणी करना समझना सरल है। वे दोनों पवित्र आत्मा द्वारा दिए सहज कथन हैं।

मुख्य अन्तर यह है कि दूसरी भाषाओं में बोलने में हम ऐसे शब्द बोलते हैं जिन्हें समझते नहीं क्योंकि वे दूसरी भाषा हैं; इसलिए, अर्थ बताने की आवश्यकता होती है, यदि अन्य भाषा का संदेश विश्वासियों के लिए है।

परन्तु, भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा द्वारा दिए शब्दों को बोलना है जिन्हें हम समझते हैं। इसलिए, सभा में, भविष्यद्वाणी अन्य भाषाओं (जब अर्थ बताया नहीं जाता) से अधिक मूल्य की है क्योंकि इसे सब समझ सकते हैं, और सब जो कहा गया है उसका लाभ उठा सकते हैं।

भविष्यद्वाणी की सीमाएँ

"परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है" (1 कुरिं. 14:3)।

उन्नति, उपदेश और शान्ति ये तीन चीजें हैं जो भविष्यद्वाणी के सरल वरदान की सीमाओं को निर्धारित करते हैं। उन्नति बनाना है। उपदेश उत्तेजित करना है। शान्ति ढाढ़स बँधाना है।

कलीसिया में, भविष्यद्वाणी का वरदान लोगों को बनाने, विश्वासियों को (और कभी-कभी अविश्वासियों को) उत्तेजित करने और उन्हें ढाढ़स बँधाने के लिए है जिन्हें शान्ति की आवश्यकता है। भविष्यद्वाणी का सरल वरदान इन सीमाओं के परे नहीं जाता है।

यह वरदान भविष्य की घटनाएँ बताने के लिए नहीं है, और न ही यह मार्गदर्शन देने के लिए है। इसे प्रचार करने की योग्यता से उलझाना नहीं है। ये शब्द हैं जिन्हें पवित्र आत्मा उसी समय विश्वासियों को बनाने, उत्तेजित करने और ढाढ़स बँधाने के लिए देता है। ये भविष्यद्वाणी के सरल वरदान की सीमाएँ हैं। यदि आप भविष्यद्वाणी करते हैं (विशेषकर यदि आप नए विश्वासी हैं या अभी-अभी इस वरदान को कार्य में लाने लगे हैं), तो इस वरदान का प्रदर्शन सामान्यतः इन तीन चीजों तक ही सीमित होना चाहिए।

दीनता के लिए एक सुझाव

एक और सुझाव है जो हम देना चाहते हैं। उस कलीसिया में जहाँ मैं ने अपने कई अच्छे वर्ष बिताए हैं, सभाओं में अकसर विश्वासी खड़े होते थे और भविष्यद्वाणी करते थे। वे भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्त्री नहीं थे (हम इन पदों को इस अध्ययन में आगे परिभाषित करेंगे), परन्तु भविष्यद्वाणी के सरल वरदान को प्रयोग में ला रहे थे। परन्तु, वे उनके भविष्यद्वाणी के शब्दों से पहले "हाँ, हाँ, प्रभु कहता है..." कहते थे। अब यह थोड़ा खतरनाक है, विशेषकर उनके लिए जो हाल में प्रभु में आए हैं। पुराने नियम में, यदि आप ने प्रभु के नाम में धृष्टता से बोला और पता चला कि यह आप ही थे और प्रभु नहीं था जो बोल रहा था (और यह सदा

एक निश्चित सम्भावना है) - तो वे आपको बाहर ले जाकर पत्थरवाह करेंगे। "परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे नहीं दी हो ... वह नबी मार डाला जाए" (व्यवस्था. 18:20)। नए नियम में ऐसा कोई दण्ड निर्धारित नहीं किया गया है। परन्तु यह पुराने नियम का दण्ड गलत भविष्यद्वाणी करने की गम्भीरता को चित्रित नहीं करता है विशेषकर तब जब "प्रभु कहता है" बोलकर प्रभु का नाम लेते हो।

कुछ इस प्रकार खड़े होकर कहना बेहतर होगा: "मुझे लगता है प्रभु ने मुझे आपके लिए कुछ दिया है...", या "मुझे लगता है पवित्र आत्मा मुझे यह कहने के लिए अभिषेक दे रहा है" और फिर अपनी भविष्यद्वाणी बोलो। आपको अपनी भविष्यद्वाणी "प्रभु कह रहा है" से आरम्भ करने और समाप्त करने की आवश्यकता नहीं है। यह तब उचित होगा जब आप भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्त्री हो। और क्योंकि हम में से अधिकाँश नहीं है, तो ऐसी घोषणा नहीं करनी चाहिए कि हमारी भविष्यद्वाणी का लेखक सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। उन शब्दों को बोलो जो उन्नति करते हैं! उन शब्दों को बोलो जो उत्तेजित करते हैं! उन शब्दों को बोलो जो ढाढ़स बाँधते हैं! - और वहीं पर छोड़ दो। यह सुरक्षित होगा। हम प्रभु का नाम लज्जित या बदनाम नहीं करना चाहते हैं। यदि हम से गलती होती है तब हमें दूसरों से जो जाँचते हैं जिसे हम ने बोला है सुधार स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमें, जब हम अपूर्ण हैं तब भी अपने वचन के सेवकों के रूप में इस्तेमाल करता है।

भविष्यद्वाणी और भविष्यद्वाणी के पद में अन्तर

भविष्यद्वाणी के सरल वरदान को समझने के बाद हम इसकी तुलना भविष्यद्वक्ता के वरदान से करना चाहते हैं। जिस शब्द का नए नियम में "भविष्यद्वक्ता" अनुवाद किया गया है, उस यूनानी शब्द का अर्थ "ईश्वरीय इच्छा को बताना" है। यह सरल भविष्यद्वाणी से बिलकुल भिन्न सेवा का आयाम है। इफिसियों 4:11 बाइबल में वह प्रमुख स्थान है जहाँ उन पाँच सेवाओं की सूची है जिसे यीशु ने कलीसिया को दिया है। भविष्यद्वक्ता का वरदान उन में से एक है।

1 कुरिन्थियों 12:9 में पौलुस यूनानी शब्द "charisma" प्रयोग करके आत्मिक वरदानों का वर्णन करता है। यह "charis" शब्द का व्युत्पदित है, जिसका अर्थ है: "अनुग्रह" (ईश्वरीय या अलौकिक योग्यता के भाव से)। जब परमेश्वर के असीम अनुग्रह का एक अंश आत्मा का एक वरदान बनता है तो इसे "charisma" अनुवाद किया जाता है। यह "छोटे अनुग्रह" के समान होता है। आत्मा का एक वरदान जो एक विश्वासी को दिया जाता है एक "छोटा अनुग्रह", या परमेश्वर के असीम, असीमित अनुग्रह और सामर्थ्य का एक छोटा अंश है।

परन्तु, इफिसियों 4:7 "वरदान" के लिए एक बिलकुल भिन्न शब्द उपयोग करता है: "पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।" इस अनुच्छेद में, पौलुस "वरदान" शब्द उपयोग एक साधारण पुरुष या स्त्री को परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्त्री में परिवर्तित करने के लिए प्रयोग होने वाले परमेश्वर के अनुग्रह के परिमाण का वर्णन करने के लिए करता है। यूनानी में यह "dorea" शब्द है, और यह भविष्यद्वाणी के वरदान जैसे आत्मा के एक वरदान (charisma) से कहीं बड़ी चीज की बात करता है। भविष्यद्वक्ता के वरदान के लिए "बड़े अनुग्रह" की आवश्यकता है। कितना बड़ा अंश? एक विश्वासी को भविष्यद्वाणी का एक सरल वरदान देने से कहीं बड़ा?

नए नियम में भविष्यद्वक्ता के इस पद की भूमिका भविष्यद्वाणी के वरदान (1 कुरिन्थियों 12) से काफी भिन्न है जो किसी भी विश्वासी को "वही एक आत्मा करता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है" (1 कुरिं. 12:11)। भविष्यद्वक्ता का पद या कार्य एक व्यक्ति के लिए मसीह द्वारा नियुक्त सेवा है। 1 कुरिन्थियों 12 और 14 में जिस भविष्यद्ववाणी के वरदान का उल्लेख है पवित्र आत्मा द्वारा बाँटा गया वरदान है जो सब को उपलब्ध है।

आप अपने आप को एक भविष्यद्वक्ता नहीं बना सकते हो

किसी के लिए अपने आप को एक भविष्यद्वक्ता घोषित करना असम्भव है और "यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता, जब तक...परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाए" (इब्रानियों 5:4)। आप यह सम्मान अपने आप को दे नहीं सकते।

हाल के वर्षों में, हम ने सैकड़ों स्वयंअभिषिक्त और स्वयंनियुक्त प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को देखा है। यह बड़े दुख की बात है कि लोग जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया नहीं है उसे अपने लिए ले लेते हैं। "यह आदर का पद कोई अपने आप से नहीं लेता" - यह परमेश्वर का बुलावा है। आप एक प्रेरित या भविष्यद्वक्ता बनने की अभिलाषा नहीं रख सकते। यदि परमेश्वर ने आपको बुलाया नहीं है तो आप बन नहीं सकते। आप अपने आप को बुला सकते हो परन्तु यह आपको बनाएगा नहीं।

यह याद रखना बहुत आवश्यक है कि हम सब "एक देह के अंग" हैं (1 कुरिं. 12:12)। यह पवित्र आत्मा है जो हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा के अनुसार हम में से हर एक को वरदान और बुलावा देता है। परमेश्वर के पास उसकी देह के हर सदस्य के लिए विशेष वरदान और कार्य हैं। और वह जानता है कि हम में से किस के लिए क्या वरदान उपयुक्त है। इसलिए हमें कोई विशेष वरदाने पाने का प्रयास करने के बजाय सेवा के लिए अपने आप को समर्पित करने का प्रयास करना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 12:11-30 में पौलुस

हमें शिक्षा देता है कि हम एक वरदान को दूसरे से अधिक मूल्यवान न बनाएँ। परन्तु जैसे देह का हर सदस्य इसके परमेश्‍वर द्वारा नियुक्त भूमिका में कार्य करता है हमें आनन्दित होना है।

ये वरदान परमेश्‍वर देता है। हम यह "आदर" अपने लिए नहीं ले सकते हैं। गलातियों 1:1 में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दो, "पौलुस की - जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्यों के द्वारा, वरन् यीशु मसीह और परमेश्‍वर पिता के द्वारा...।" भविष्यद्वाणी का सरल वरदान सब के लिए है। यदि आप उद्धार पाए हुए और आत्मा से भुरे हुए हैं, तो आप भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, परन्तु यह भविष्यद्वक्ता के पद होने से काफी भिन्न है।

आप एक भविष्यद्वक्ता का पता कैसे लगा सकते हो?

हम कैसे बता सकते हैं कि कोई एक भविष्यद्वक्ता है? उसकी सेवा कैसी होती है?

सारे पवित्रशास्त्र में जाँच करने से हम देख सकते हैं कि भविष्यद्वक्ता तीन मूल तरीकों से कार्य करता है:

- पवित्र और धर्मी जीवन जीने के लिए उपदेश (अर्थात्, यशायाह 58:5-9; मीका 6:7-8)।
- प्रकटीकरण द्वारा सिखाना (अर्थात्, यशायाह 9:2, 6-7; यिर्मयाह 20:11-14)।
- भविष्य की ओर एक संकेत करना (अर्थात्, दानिय्येल अध्याय 7 और 8; यशायाह 46:9-11; प्रेरितों 11:27-30)।

इन तीन कार्यों में से, प्रमुख था वे संदेश देना जो परमेश्‍वर के भावी उद्देश्यों को प्रकट करते हैं। भविष्य के बारे में बताना कुछ ऐसा नहीं है जिसे सब लोग अच्छे से कर सकते हैं। अधिकाँश जो प्रयास करते हैं बड़ी बड़ी गलतियाँ करते हैं, वे भी जो अपने आप को भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्त्री कहते हैं। परन्तु ऐसे समय होते हैं जब एक सच्चा भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्त्री भविष्य की बातें बता सकता है।

एक सच्चा भविष्यद्वक्ता न केवल बोलने के वरदान प्रयोग में लाएगा, वरन् जानने या प्रकटीकरण के वरदान भी प्रयोग में लाएगा। अर्थात्, वह ज्ञान के वचन, बुद्धि के वचन और आत्माओं की परख में भी कार्य करेगा (1 कुरिं. 12:8-11)। ये प्रमुख वरदान हैं जो भविष्यद्वक्ता के पद में प्रकट होते हैं। भविष्यद्वक्ता बोलने के वरदान और प्रकटीकरण के वरदान दोनों में कार्य करेगा।

हम में जो अन्य भाषा, अर्थ बताना और भविष्यद्वाणी के सरल वरदान प्रयोग करते हैं, कभी-कभी प्रकटीकरण के वरदानों में कार्य करेंगे। परन्तु यह सेवा का सामान्य प्रवाह या वरदान नहीं होगा। परन्तु, एक भविष्यद्वक्ता जिसके पास भविष्यद्वक्ता का पद है न केवल अन्य भाषाओं, अर्थ और सरल भविष्यद्वाणी में कार्य करेगा, बल्कि ज्ञान का वचन, बुद्धि का वचन और आत्माओं की परख भी प्रकट करेगा।

ज्ञान के वचन का वरदान

आप सोच रहे होंगे कि प्रकटीकरण के इन तीन वरदानों को परिभाषा कैसे दे सकते हैं। पवित्रशास्त्र उनके कार्य को पहचानने के संकेत देता है।

ज्ञान का वचन कुछ ऐसी बात है जिसे पवित्र आत्मा अलौकिक रूप से प्रकट करता है जो स्वाभाविक मन से जानी नहीं जा सकती है।

एक उदाहरण यह है। यूहन्ना अध्याय 4 में, यीशु सामरिया में से गुज़रता है और कुँए पर खड़ी स्त्री से पीने का पानी माँगता है। जैसे वह उससे बातें करता है, वह उसे कहता है, "जा अपने पति को बुला! मैं उससे भी बात करना चाहूँगा।" वह उत्तर देती है, "मेरा कोई पति नहीं हैं।" अब यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी? "तू सच बोल रही है। तू पाँच पति कर चुकी है, और अभी जिस के साथ रह रही है वह तेरा पति नहीं है।" उसे कैसे पता चला? ज्ञान के वचन के द्वारा। उसे पता चला क्योंकि पवित्र आत्मा ने उस पर प्रकट किया था।

बुद्धि के वचन का वरदान

बुद्धि का वचन क्या है? बुद्धि का वचन एक निर्देश है जिसे पवित्र आत्मा देता है, उस क्रिया से सम्बंधित जो एक समस्या हल करने के लिए आवश्यक है और जिसके लिए कोई स्वाभाविक उत्तर सम्भव नहीं लगता।

प्रेरितों अध्याय 15 में, हम यरूशलेम में कलीसिया के प्रेरितों और प्राचीनों को खतना और दूसरे कठिन मामलों को लेकर संकट में पाते हैं। विचार-विमर्श करने के बाद, याकूब खड़ा होता और बुद्धि का वचन लाता जिससे समस्या हल हो जाती (प्रेरितों 15:19-20 देखो)।

बुद्धि का वचन अकसर ज्ञान के वचन के बाद आता है, और हमें बताता है कि जो हमें ज्ञान के वचन के द्वारा पता चला है उसके लिए क्या कार्य करना आवश्यक है। भविष्यद्वक्ता इन वरदानों में कार्य करते हैं। वे आत्मा के द्वारा चीजें जान लेते हैं। पवित्र

आत्मा उन्हें एक बुद्धि का वचन देता है, उन्हें यह दिखाने के लिए कि जो वह जानते हैं उसके परिणामस्वरूप उन्हें क्या कार्य करना है। जब बुद्धि का वचन आता है तो यह अतिरिक्त आशीष लाता है।

आत्माओं की परख का वरदान

आओ हम एक और वरदान को देखें जिसे कुछ लोग सबसे मूल्यवान् वरदान मानते हैं। यह इसलिए है क्योंकि यह हमें सब प्रकार के खतरों और भ्रम से बचा सकता है। यह आत्माओं की परख का वरदान है। और यह वरदान पवित्र आत्मा के द्वारा सबको उपलब्ध है। परन्तु यह भविष्यद्वक्ता की सेवा के अंश के रूप में एक प्रमुख कार्य है।

आत्माओं के परख के द्वारा, एक भविष्यद्वक्ता को पता चलेगा कि एक अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा से, मनुष्य की आत्मा से या दुष्टात्मा से है। इस वरदान की बहुत ही आवश्यकता है। कलीसिया की अगुआई को भविष्यद्वक्ताओं की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी जिनके पास यह वरदान है, क्योंकि सभाओं में सब प्रकार के प्रदर्शन हो सकते हैं। एक पास्टर अकसर सोचेगा, "क्या यह पवित्र आत्मा है ? क्या व्यक्ति यह अपनी आत्मा से कर रहा है या हमारा सामना किसी दुष्टात्मा से हो रहा है ?"

यदि आप के पास आत्माओं की परख का वरदान है, और भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्त्री हो, तो परमेश्वर आपको अनेक प्रदर्शनों के स्रोत का पता लगाने में सहायता करेगा। परन्तु, अच्छा यह है कि जो आपको किसी व्यक्ति के विषय में महसूस हो रहा है उसे आप दूसरे आत्मिक रूप से संवेदनशील अगुवों से जाँच लें इससे पहले आप उनकी सेवा करें।

दूसरों की सेवा करने के लिए वरदान हमारी सहायता कैसे करते हैं का उदाहरण

कई वर्ष पहले एक सम्मेलन में, व्यक्तिगत सेवा का समय चल रहा था। एक अदभुत भविष्यद्वक्ता था जो हमारे साथ हमारे दल में सेवा करता था। इस सेवा के दैरान, मेरा एक मित्र जिसकी चंगाई की एक अदभुत सेवा है, मेरे साथ विदेश के एक सेवक और उसकी पत्नी के लिए प्रार्थना कर रहा था। उनकी कहानी बड़ी दुखभरी थी।

विदेश जाने से पहले, प्रभु ने पत्नी को चेतावनी देकर बताया कि उसके साथ वहाँ क्या घट सकता है। स्वपनों की एक श्रृँखला के द्वारा, प्रभु ने उसे जिन संकटों का उसे सामना करना पड़ेगा उसके स्पष्ट निर्देश दिए। और फिर उसे बताया कि उसे क्या करना होगा।

जब वह वहाँ पहुँची, तो वहाँ एक दुष्ट व्यक्ति था जिसने उसे देखा और अपनी पत्नी बनाने का लालच किया। उसने उसकी भावनाओं को अपनी ओर फेरने के लिए एक ओझा की सहायता ली। जब इस दुष्ट ने उसकी ओर रोमानी प्रस्ताव रखे तो उसने उसका विरोध नहीं किया - हालाँकि उसे इसकी पहले ही चेतावनी दे दी गई थी! उसने प्रभु का कहना नहीं माना और इसने उसे ओझा के जादू के लिए खुला छोड़ दिया। प्रभु की ओर उसकी अवज्ञा के कारण वह इस व्यक्ति के साथ वशीभूत हो गई और एक व्यभिचारी सम्बंध में फँस गई।

उसने अपने पति का सर्वनाश किया और अपने प्राण की बहुत हानि की। जैसे हम ने इस निराश दम्पती के लिए प्रार्थना की, प्रभु ने मुझे पत्नी की एक तस्वीर दी। मैं ने अपने मन में उसके घायल प्राण को देखा। यह ऐसा था जैसे कि किसी ने एक तलवार उस में भोंक दी थी और गर्दन से पेट तक उसे काट कर खोल रखा था। उसमें एक गहरा भावात्मक घाव था जो मनुष्य की चंगा करने की शक्ति से परे था। राजा सुलेमान ने उसकी स्थिति का और व्यभिचारी पर आनेवाले पर न्याय का वर्णन किया हैः "परन्तु जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निबुद्धि है; जो अपने प्राणों को नष्ट करना चाहता है, वही ऐसा करता है। उसे घायल और अपमानित होना पड़ेगा, और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी" (नीतिवचन 6:32-33)। हम उसकी समस्या के विषय में क्या कर सकते थे ? हम जानते थे कि हमारा सामना जादू-टोना से हैं और हमें सहायता चाहिए। तो इसलिए हम ने अपने दल के एक सदस्य को बुलाया जो भविष्यद्वक्ता था। उसे उनकी समस्या के विषय में कुछ पता नहीं था, परन्तु जैसे ही वह हमारी ओर आया और उन्हें देखा, वह उनकी समस्या के स्रोत को पहचान गया। उसने एक शब्द बोलाः "जादू-टोना!" यह भविष्यद्वक्ता न तो कभी इस दम्पती से मिला था और न ही उसने उनके विषय में कभी सुना था। उसे केवल वही पता चला था जो पवित्र आत्मा उस पर प्रकट कर रहा था, परन्तु उसने जो उनके साथ हुआ था उसकी हर बात दोहरा दी। ने केवल वह आत्माओं की परख के द्वारा समझ गया कि हमारा सामना जादू-टोना से हो रहा है, परन्तु ज्ञान के वचन के द्वारा उसे सबकुछ पता चल गया जो इस दम्पती के साथ हुआ था।

और फिर एक बुद्धि का वचन आया। परमेश्वर ने इस भविष्यद्वक्ता के द्वारा, इस दम्पती को स्पष्ट निर्देश दिए। और इस बार वे आज्ञापालन करने के इच्छुक थे। उस समय, परमेश्वर ने उन दोनों के जीवन में चंगाई का महान कार्य आरम्भ किया। कुछ दिन के बाद, मसीह की चंगाई का सामर्थ्य दिखने लगा। वह भयानक अन्धकार चला गया था और चमक आ गई थी। उनके चेहरों पर मुस्कान, और उनके प्राणों में आनन्द था। पवित्र आत्मा की पुनःस्थापना की सामर्थ्य उनके टूटी हुई आत्माओं और घायल प्राणों को चंगा कर रही थी। हम ने उन्हें विश्राम के समय के लिए भेज दिया कि परमेश्वर को उनके टूटे हुए जीवनों को चंगा करने का समय मिले।

फिलिप्पुस की चार बेटियाँ और भविष्यद्वक्ता अगबुस

प्रेरितों 21:8-11 में एक स्पष्ट कहानी है जो भविष्यद्वाणी के वरदान और भविष्यद्वक्ता के पद में अन्तर प्रकट करती है।

यह कहानी तब हुई थी जब पौलुस एशिया माइनर से यरूशलेम जा रहा था। मार्ग में हर पड़ाव पर आत्मा उसे चेतावनी दे रहा था कि वह यरूशलेम न जाए (प्रेरितों 20:23; 21:4 आदि)। अन्त में पौलुस और उसका दल सुसमाचार प्रचारक, फिलिप्पुस के घर पहुँचे (प्रेरितों 21:8)। फिलिप्पुस की चार बेटियाँ थीं "जो भविष्यद्वाणी करती थीं" (प्रेरितों 21:8)। इन जवान स्त्रियों पर एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक था और वे सन्तों को बनाने, उत्तेजित करने और ढाढ़स बँधाने के लिए भविष्यद्वाणी का वरदान प्रयोग में लाती थीं। परन्तु, इन जवान स्त्रियों के विपरीत जिन में भविष्यद्वाणी का सरल वरदान था, "अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया" (प्रेरितों 21:10)। आप ध्यान देंगे कि पवित्रशास्त्र बेटियों में "जो भविष्यद्वाणी करती थीं" और "अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता" में स्पष्ट अन्तर बताता है।

जब अगबुस आया उसने एक चित्रित भविष्यद्वाणी की। उसने पौलुस का कटिबन्ध लिया और अपने ही हाथों और पैरों को बाँधकर कहा, "पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह कटिबन्ध है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बाँधेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे" (प्रेरितों 21:11)। यहाँ अगबुस कुछ निश्चित बात बता रहा था जो भविष्य में घटेगी। यह उन चार कुँवारियों से बिलकुल भिन्न है जो भविष्यद्वाणी करती थीं। वे उन्नति, उत्तेजित और ढाढ़स बँधा सकती थीं, परन्तु वे भविष्यद्वक्त्री की भूमिका नहीं निभा रही थीं।

[बाइबल में स्त्रियों के जो भविष्यद्वक्त्रियाँ थीं अनेक उदाहरण हैं: मरियम (निर्गमन 15:20-21); दबोरा (न्यायियों 4:4-5); हुल्दा (2 राजा 22:14); हन्ना (लूका 2:36-37)]

जब अगबुस आया, तो उसके पास जो होने वाला था उसका स्पष्ट प्रकटीकरण था। वह होनेवाली घटना बता रहा था, और उसने सही कहा, "पवित्र आत्मा यह कहता है..." (नए नियम में, हमारे पास "पवित्र आत्मा यह कहता है" या "प्रभु यह कहता है" का एक मात्र उदाहरण भविष्यद्वक्ता हैं, और इसी लिए हम सुझाव देते हैं कि दूसरे उनकी भविष्यद्वाणियों से पहले इस उपसर्ग का उपयोग न करें - प्रेरितों 21:11)। अगबुस ने इस चित्रित भविष्यद्वाणी के द्वारा बताया कि पौलुस के साथ क्या घटने वाला है। इससे हम फिलिप्पुस की चार कुँवारी बेटियों में जो भविष्यद्वाणी करती थीं और भविष्यद्वक्ता अगबुस में बड़ा अन्तर देखते हैं। अगबुस एक भिन्न, ऊँचे आयाम में कार्य करता था जिसमें भविष्य की घटनाओं को बताना सम्मिलित था और उसने प्रेरित पौलुस को मार्गदर्शन और चेतावनी के शब्द दिए थे।

हमारे पास प्रेरितों 11:28 में भविष्यद्वक्ता अगबुस के जीवन का एक और अन्तर्दृष्टि है: "उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा..।" यहाँ भी वह भविष्य की एक घटना की भविष्यद्वाणी कर रहा था। और आयत आगे बताती है, "...वह अकाल क्लौदियुस (एक रोमी शहरशाह) के समय में पड़ा।" तो जब आप अगबुस को देखते हो तो एक नए नियम का सच्चा भविष्यद्वक्ता पाते हो। वह पवित्र आत्मा के द्वारा भविष्य में देख सकता था और आनेवाली घटनाओं के विषय में बता सकता था। और उसकी सेवा का प्रमाण इसमें था कि उसने जो कहा था पूरा हुआ था।

बैल को गौशाला में रखो!

सुलेमान ने कहा, "जहाँ बैल नहीं, वहाँ गौशाला स्वच्छ हो रहती है, परन्तु बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।"

भविष्यद्वाणी के वरदान बैलों के समान हैं: बैलों से "बढ़ती" होती है, परन्तु गौशाला गंदी भी होती है। भविष्यद्वाणी के वरदान आशीष लाते हैं, परन्तु कलीसिया में समस्याएँ भी खड़ी कर सकते हैं (अध्याय 2 देखो)। परन्तु हमें एक चुनाव करना है। क्या हमें "बैल का बल" और उसके साथ होनेवाली गन्दगी चाहिए, या "स्वच्छ गौशाला" चाहिए। आप अपनी गौशाला स्वच्छ रख सकते हैं, या बढ़ती पा सकते हैं परन्तु उसके साथ बैलों की थोड़ी बहुत गन्दगी भी आती है। आत्मा के वरदानों के स्वतंत्र कार्य से होनेवाली समस्याओं के कारण, कई कलीसियाओं ने भविष्यद्वाणी की सेवाओं को कलीसिया से बाहर कर दिया है। इससे वातावरण तो अच्छा रहता है और वो समस्याएँ और कठिनाइयाँ भी नहीं होतीं जो बैल लाते हैं। परन्तु जब हम बैलों को फेंक देते हैं काफी हानि उठाते हैं। "बैल के बल से अनाज की बढ़ती होती है।" यदि आपकी गौशाला में एक बैल है तो आपको समय समय पर गोबर साफ करते रहना पड़ेगा।

पास्टर!! यदि हमें पता हो कि आत्मा के वरदानों के साथ क्या समस्याएँ हो सकती हैं और उनसे कैसे निपटना है, तब हमारी मण्डलियों में कम से कम कठिनाइयों के साथ ये अदभुत वरदान कार्य कर सकते हैं। निम्नलिखित बातें आपको सिखा सकती हैं कि कैसे "बैल" को रखना है और कैसे "गौशाला" को साफ रखना है।

भविष्यद्वाणी को परखना

भविष्यद्वाणी के वरदान और भविष्यद्वक्ता के साथ निपटने का पहला सिद्धान्त यह है: भविष्यद्वाणी परखी जानी चाहिए। मैं अब उन से बात कर रहा हूँ जो वरिष्ठ पास्टर और दूसरे अगुवे हैं जिनकी कलीसिया में जिम्मेवारी होती है। पौलुस ने कहा, "भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें" (1 कुरिं. 14:29)। यहाँ एक बहुत ही स्पष्ट सिद्धान्त की रूपरेखा दी गई है। भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बोले गए शब्द, या भविष्यद्वाणी को परिशुद्धता के लिए और पवित्रशास्त्र और पवित्रशास्त्र के सिद्धान्तों के साथ सहमति के लिए ध्यानपूर्वक परखा जाना चाहिए।

पवित्रशास्त्र हमें भविष्यद्वाणियों को परखने के लिए क्यों कहता है? क्योंकि भविष्यवक्ता और भविष्यद्वाणियाँ भ्रमातीत नहीं हैं। वे लोग जो भविष्यद्वाणी के द्वारा बोलते हैं गम्भीर गलतियाँ कर सकते हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 5:19-21 में पौलुस आज्ञा देता है, "आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।" फिर वह आगे कहता है, "सब बातों को परखो।" इसका अर्थ है कि कुछ चीजें जो सच या सही न हों, घट सकती हैं या कही जा सकती हैं। भविष्यद्वाणियों को परखा और प्रमाणित किया जाना चाहिए। और फिर पौलुस कहता है, "जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।" यह संकेत देता है कि कभी-कभी ऐसी कुछ चीजें होंगी जो अच्छी नहीं होंगी। उन्हें मत पकड़े रहो। उन्हें "गौशाला में से निकाल कर फेंक दो।" जो अच्छा है उसे पकड़े रहो।

यदि आप कलीसिया के अगुवे हैं जिनको झुण्ड की रखवाली करने और मार्गदर्शन करने की जिम्मेवारी है, तो आपको सन्दिग्ध भविष्यद्वाणी या भविष्यद्वक्ताओं का निर्णय करना होगा। यह अगुआई का एक बोझ है जिसके लिए परमेश्वर हमें जिम्मेवार ठहराता है। उन फैसलों को करने में, हम गलती कर सकते हैं, और इसीलिए हमें ऐल्डरों या दूसरे अगुवों की आवश्यकता होती है कि वे जिसे हम महसूस कर रहे हैं उसकी पुष्टि करें या चुनौती दें। परन्तु, एक झूठी या असत्य भविष्यद्वाणी के विषय में कुछ नहीं करने से समस्या बढ़ सकती है।

उन सब को जो आत्मा के वरदानों को प्रयोग में लाते हैं, जिनमें भविष्यद्वक्ता भी सम्मिलित हैं, शासन अगुआई की आवश्यकता है जो सन्तुलन बनाए रखने और देह में उलझन आने से रोकने में सहायक होते है। हम सब को इसकी आवश्यकता है। यदि हम इन वरदानों और सेवाओं में शासन नहीं लाते हैं, तो हमें बड़ी समस्या होगी और कलीसिया के सिर, यीशु के साथ संकट होगा। यीशु ने थुआतीरा की कलीसिया को इस मामले में उनके परिश्रम की कमी के लिए फटकारा था: "पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखलाकर भरमाती है" (प्रकाशित. 2:20)। इस स्त्री की शिक्षा और भविष्यद्वाणियों को परखा जाना चाहिए था, क्योंकि वह सिखाती थी कि सांसारिक प्रथाएँ ठीक हैं हालाँकि वे स्वपष्ट रूप से पवित्रशास्त्र के विरुद्ध थीं।

यदि आपके पास भविष्यद्वक्ता हैं जो आपकी मण्डली के अंश हैं, या एक भविष्यद्वक्ता आपकी कलीसिया में आता है, तो आप उनके वरदानों की वैधता का शीघ्रता से पता लगा सकते हैं। दो बिलकुल सरल परीक्षण हैं जो भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वाणियों को परखने में आपकी सहायता करेंगे:

1. "तो पहचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उससे भय न खाना" (व्यवस्था. 18:22)।

यदि एक भविष्यद्वक्ता भविष्य की बातें बताता है और बाद में वे बातें भविष्यद्वाणी के अनुसार घटती नहीं हैं, तो उसने अभिमान से बोला है। आप को इस प्रकार के भविष्यद्वक्ता से निपटना होगा। आपको उसके साथ बात करनी चाहिए और कहना चाहिए, "हम चाहते हैं कि आप कुछ समय सेवा न करें और बदले में प्रभु को खोजें और पता लगाएँ कि आपके भविष्यद्वाणी के वरदान में यह उलझन क्यों आ रही है।"

2. "व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो! यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिए पौ न फटेगी" (यशायाह 8:20)।

यदि, जैसा थुआतीरा की कलीसिया में हुआ था, कोई जो अपने को भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्तिन कहता है, और बाइबल (व्यवस्था और चीतौनी) के विरुद्ध शिक्षा देता है, तो ऐसे को पवित्रशास्त्र के अनुशासन तले लाया जाना चाहिए। (स्थानीय कलीसिया में वर्तमान किसी भी पाप से निपटने के लिए मत्ती 18:15-17 में दिए कदमों को देखिए।) यदि वे सुधार स्वीकार नहीं करते हैं, तो प्रमुख पास्टर को उन्हें बोलने या सिखाने से रोकना चाहिए, जब तक वे सच्चे पश्चाताप के प्रमाण नहीं दिखाते। (2 कुरिन्थियों 11:5-15; 2 पतरस 2:1-32; 1 यूहन्ना 4:1-3 भी देखो)

इन दो सिद्धान्तों पर चलना आसान है।

[1] जो कहा जाता है घटना चाहिए।

[2] जो भविष्यद्वाणी की जाती या सिखाया जाता है बाइबल से सहमत होना चाहिए।

जो कलीसिया के लिए जिम्मेवार हैं (जैसे कि वरिष्ठ पास्टर और उसके शासकीय एल्डर) उनकी इन स्थितियों में जिम्मेवारी है कि वे पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रबंध और अगुआई करें। प्रमुख चरवाहे के रूप में (यिर्मयाह 25:35-36), आप एक विकसित हो रहे भविष्यद्वक्ता या भविष्यद्वक्तिन के वरदान को बचा सकने के योग्य हो सकते हो, यदि वे सुधार और अनुशासन के अधीन होने के इच्छुक हैं तो। यदि वे नहीं हैं तो उन्हें स्थानीय कलीसिया में भविष्यद्वाणी या सेवा नहीं करने दिया जाना चाहिए।

उत्तरदायी बनो!

यदि हम भविष्यद्वक्ताओं के समान अभिमान से बोलते हैं, तब तो जो हम ने बोला है उसके लिए उस कलीसिया की अगुआई में उत्तरदायी होना चाहिए। हमारे लिए यिर्मयाह 28:9 में चेतावनी है: "परन्तु जो भविष्यद्वक्ता कुशल के विषय भविष्यद्वाणी करे, तो जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यद्वक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।" यिर्मयाह न्याय की भविष्यद्वाणी कर रहा था, परन्तु उस समय दूसरे बहुत सारे शान्ति की भविष्यद्वाणी कर रहे थे। अर्थात्, दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के लिए यिर्मयाह का उत्तर था, "समय बताएगा। यदि उनकी भविष्यद्वाणियाँ पूरी होती हैं, तब मैं झूठा भविष्यद्वक्ता हूँ; परन्तु यदि जो मैं कहता हूँ पूरा होता है, तब मैं सच्चा भविष्यद्वक्ता हूँ।" सदा यही परीक्षण है।

परमेश्वर की चिन्ताः झूठे भविष्यद्वक्ता

परमेश्वर झूठे भविष्यद्वक्ताओं और झूठी भविष्यद्वाणियों के विषय में निरन्तर अत्यधिक चिन्ता प्रकट करता आया है। यिर्मयाह ने लिखा, "तब मैं ने कहा, हाय, प्रभु यहोवा, देख, भविष्यद्वक्ता इनसे कहते हैं, न तो तुम पर तलवार चलेगी और न मँहगी होगी, यहोवा तुम को इस स्थान में सदा की शान्ति देगा। तब यहोवा ने मुझ से कहा, ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, मैं ने उनको न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उनसे कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यद्वाणी करते हैं। इस कारण जो भविष्यद्वक्ता मेरे बिना भेजे मेरा नाम लेकर भविष्यद्वाणी करते हैं कि, इस देश में न तो तलवार चलेगी और न मँहगी होगी, उनके विषय यहोवा यों कहता है: वे भविष्यद्वक्ता आप तलवार और मँहगी के द्वारा नष्ट किए जाएँगे। और जिन लोगों से वे भविष्यद्वाणी कहते हैं, वे मँहगी और तलवार के द्वारा मर जाने पर इस प्रकार यरूशलेम की सड़कों में फेंक दिए जाएँगे, कि न तो उनका, न उनकी स्त्रियों का और न उनके बेटे-बेटियों का कोई मिट्टी देनेवाला रहेगा। क्योंकि मैं उनकी बुराई उन्हीं के ऊपर उण्डेलूँगा" (यिर्मयाह 14:13-16)।

एक और अनुच्छेद जो झूठी भविष्यद्वाणी से निपटता है यहेजकेल अध्याय 13 है। सारा अध्याय झूठे भविष्यद्वक्ताओं की भर्त्सना पर है। कलीसिया में बाइबल की अगुआई और सन्तुलन की आवश्यकता है। पास्टरों और दूसरे कलीसिया के अगुवों को झुण्ड की रखवाली और मार्गदर्शन करने की जिम्मेवारी है। यदि भविष्यद्वक्ता झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं तब उन्हें उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा कि हम भी वही करें जो मूसा ने किया था - झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर पत्थराव करना। ऐसा मत करो, परन्तु कम से कम उन्हें भविष्यद्वाणी करने से रोको तो सही। वे आपके झुण्ड को चोट पहुँचाने न पाएँ; उन्हें अपनी भेड़ों को घायल मत करने दो। जब झूठी भविष्यद्वाणियाँ पाई जाती हैं कलीसिया के अगुवों को स्पष्ट दृढ़ कदम उठाना चाहिए। आओ हम जान लें और निरन्तर याद रखें कि "परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है" (1 कुरिन्थियों 14:33)।

समस्या के बावजूद, हम "बैलों" (भविष्यद्वक्ता का वरदान) को न फेंक दें। और न ही हम झूठी भविष्यद्वाणियों के "गोबर" से भरे गन्दी गौशालाओं को सहते रहें। कलीसिया के अगुवो! गड़बड़ी दूर करने में सहायता करो। झूठी भविष्यद्वाणियों का पता लगाओ और अपने झुण्ड की रखवाली करो। इससे जो सुरक्षा मिलेगी उनके लिए स्वतंत्र करने योग्य होगी जिनके आत्मा के वरदानों को प्रयोग में लाने के अभिप्राय सही हैं। उनकी और उनके वरदान की रखवाली करते हुए यदि आप उनको प्रोत्साहित करेंगे तो उनके वरदान वसन्त में फूलों के समान खिल उठेंगे।

निष्कर्ष

"आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो। सब बातों को परखो; जो अच्छी हैं उसे पकड़े रहो" (1 थिस्स. 5:19-21)। "मैं चाहता हूँ कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो..." (1 कुरिं. 14:5)। "...तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके" (1 कुरिं. 14:12-13)। "...आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी कर सको ... तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो..." (1 कुरिं. 14:1, 31)।

अध्याय 2 – भविष्यसूचक की समस्याएँ

"आत्मा को न बुझाओ" (1 **थिस्स.** 5:19)**।**

हम ने पिछले अध्याय में देखा है कि भविष्यद्वाणी के सरल वरदान और भविष्यद्वक्ता के पद में एक निश्चित अन्तर है। सब जो भविष्यद्वाणी करते हैं भविष्यद्वक्ता नहीं हैं। परन्तु, सब भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करेंगे।

हम ने बताया है कि भविष्यसूचक सेवा में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से कैसे निपटना है। यदि हम अगुवे भविष्यसूचक के साथ आनेवाली समस्याओं से निपटने के लिए तैयार हैं, तो कलीसिया के लिए बहुत लाभ और आशीष होगी।

इसलिए, भविष्यद्वाणी की ओर हमारा रवैया क्या होना चाहिए? "आत्मा को न बुझाओ" (1 थिस्स. 5:19)। हमें न तो कभी पवित्र आत्मा की आग को बुझाना है और न उसके काम को रोकना है। परन्तु, इसी के साथ हमें उन पर से शासन हटाना नहीं है जो पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य करने का प्रयत्न कर रहे हैं। परमेश्वर कलीसिया में अगुवों को रखता है, ताकि वे भविष्यसूचक वरदानों के लिए सीमाएँ स्थापित करें, मार्गदर्शन और निरीक्षण दें, और इस प्रकार परमेश्वर के झुण्ड की चोट या भ्रम से रखवाली करें। उनसे समस्याएँ आने के कारण जो आत्मा के वरदानों का प्रयोग करते हैं, हम जो अगुवे हैं भविष्यद्वाणी और भविष्यद्वक्ताओं को तुच्छ जानने की सम्भावना में पड़ सकते हैं। कुछ कलीसिया के अगुवे तो पवित्र आत्मा के प्रदर्शन को मना करने की सीमा तक भी जाते हैं। ऐसा करना पवित्रशास्त्र की अवज्ञा है। "आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो" (1 थिस्स. 5:19-21)। हमें भविष्यसूचक वरदानों के लिए स्थान देना चाहिए, परन्तु इन सीमाओं के भीतरः "सब बातों को परखो; जो अच्छी हैं उसे पकड़े रहो" (1 थिस्स. 5:21)। इसका तात्पर्य है कि कोई भविष्यद्वाणी अच्छी नहीं होगी। इसलिए, कलीसिया के अगुवों को भविष्यद्वाणी को परखना और प्रमाणति करना चाहिए - निश्चित करने के लिए कि यह उन्नति करती, उत्तेजित करती, ढाढ़स बँधाती है, और जो बाइबल सिखाती है उसके अनुसार है। जो परीक्षण में खरी नहीं उतरती छोड़ देनी चाहिए।

समस्या 1: अपनी आत्मा से भविष्यद्वाणी करना

जैसे हम भविष्यसूचक वरदानों की जाँच करते हैं, तो ऐसा हम एक गहरी इच्छा से करते हैं कि भविष्यसूचक हमारी कलीसियाओं में सक्रिय होगा। परन्तु, हम यह भी पहचानते हैं कि अगुआई की जिम्मेवारी है कि कलीसिया में से उन चीजों को निकालें जो अच्छी नहीं हैं, और उनको ध्यानपूर्वक रखें जो अच्छी हैं।

उदाहरणार्थः कुछ उनके हृदय में से भविष्यद्वाणी करते हैं। पवित्रशास्त्र इस भ्रम को सम्भोदित करता है। "तो पहचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे, तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है..." (व्यवस्था. 18:22)। "सेनाओं का यहोवा तुम से यों कहता हैः इन भविष्यद्वक्ताओं की बातों की ओर जो तुम से भविष्यद्वाणी करते हैं कान मत लगाओ...ये दर्शन का दावा करके यहोवा के मुख की नहीं, अपने ही मन की बातें कहते हैं" (यिर्मयाह 23:16)। जब यह होता है, तो अवश्य नहीं यह शैतान की प्रेरणा से है; यह अकसर कोई उसके अपने मन से बोल रहा होता है। परन्तु, हम जो अगुआई में हैं, हमें उनसे (एक कृपालु तरीके से) निपटना चाहिए जो इस प्रकार भविष्यद्वाणी करते हैं, और उन्हें कलीसिया में बोलने से मना करना चाहिए। हमें यह भी याद रखना है कि हमें उनकी जो भ्रम में है सिखाते, प्रशिक्षण देते और अनुशासित करते हुए रखवाली करनी है। हमें ऐसा करना है ताकि वे उनके वरदान में बढ़ सकें और उसे परमेश्वर की महिमा और कलीसिया की आशीष के लिए प्रयोग में ला सकें (गलातियं 6:1)। हमें लोगों को भी बताना चाहिए कि वे बाइबल के विरुद्ध भविष्यद्वाणी को, या जो भविष्यद्वाणी कलीसिया के लिए के किसी सदस्य को चोट पहुँचाती है तो उसे अस्वीकार करें।

समस्या 2: गलत अभिप्राय धोखे में ले जाते हैं

यिर्मयाह ने झूठे भविष्यद्वाक्ताओं के विरुद्ध चेतावनी दी थी जो "लोगों से दर्शन का झूठा दावा करके अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यद्वाणी" कर रहे थे (यिर्मयाह 14:13-16)। उसने बताया कि जो लोग भविष्यसूचक वरदानों में हैं उनके लिए धोखे में पड़ना सम्भव है यदि वे उनके हृदय में मूर्तियाँ रखते हैं। ऐसी धूर्त मूर्ति-पूजा गलत अभिप्रायों का परिणाम होती है।

पौलुस कहता है, "...लोभ जो मूर्तिपूजा के बराबर है" (कुलु. 3:5)। जब हमारे सेवा के पीछे प्रेरणा रुपया-पैसा कमाने, या प्रसिद्धि, या मनुष्यों की प्रशंसा हो, तो हम बिलाम के समान बन जाते हैं, जिसने अपने वरदान को बेच डाला और अधिक बोली वाले को दे दिया था। इसलिए, यह विवेचनात्मक है कि जब हम भविष्यसूचक में कार्य करें तब हमारे अभिप्राय सही हों।

यहेजकेल के तेरहवें अध्याय में झूठे भविष्यद्वक्ताओं की भर्त्सना की गई है। आयत 2 कहती है, "हे मनुष्य के सन्तान, इस्राएल के जो भविष्यद्वक्ता अपने ही मन से भविष्यद्वाणी करते हैं।" आयत 3 में, इन भविष्यद्वक्ताओं को मूढ़ भविष्यद्वक्ता कहा गया है "जो अपनी ही आत्मा के पीछे भटक जाते हैं, और कुछ दर्शन नहीं पाया!" आगे आयत 5 में, यहेजकेल उनकी एक बड़ी असफलता की

बात करता है: "तुम ने दरारों में चढ़कर इस्राएल के घराने के लिए दीवार नहीं सुधारी, जिस से वे यहोवा के दिन युद्ध के लिए स्थिर रह सकते...उन्होंने भावी का व्यर्थ और झूठा दावा किया है...क्या तुम्हारा दर्शन झूठा नहीं है, और क्या तुम झूठमूठ भावी नहीं कहते? तुम कहते हो, यहोवा की यह वाणी है, परन्तु मैं ने कुछ नहीं कहा है। ऐसा कहकर मेरी प्रजा को बहकाया है" (आय. 6,7,10)।

तब यहेजकेल उस न्याय का वर्णन करता है जो आनेवाला है। परमेश्वर इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर उसका प्रकोप भेजने वाला है (आय. 11-16 देखो)। इस अप्रतिरोध्य अध्याय में, प्रभु यहेजकेल के द्वारा, अशुद्ध मूर्तिपूजा और स्वार्थी अभिप्रायों को आत्मा द्वारा सच्ची सेवा में मिलाने के खतरों को बता रहा है। यदि हम अपने जीवनों में धार्मिकता और पवित्रता का एक स्तर नहीं बनाए रखते, तो हम धोखे के लिए द्वार खोलते हैं।

समस्या 3: ज्ञान का वचन बनाम भावी कहना

यहाँ यह अवश्य है कि हम पवित्र आत्मा के ज्ञान के वचन और भावी कहनेवाली आत्मा में अन्तर पहचानें।

जब आप लोगों को आत्मा के द्वारा उनके बारे में समय, घटनाएँ, स्थान और रवैये बताते हो, तो बाहर से यह भावी कहने जैसा लग सकता है। यह प्रेरितों की पुस्तक की एक घटना से अच्छी तरह चित्रित किया गया है। जब पौलुस और सीलास फिलिप्पी में सेवा कर रहे थे, उन्हें एक दासी मिली जो उनके पीछे आकर चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं" (प्रेरितों 16:16-18)। ये शब्द अच्छे लगते हैं। परन्तु, उस दासी की घोषणा एक भावी करनेवाली आत्मा और धन कमाने के उसके गलत अभिप्राय से आए थे। आयत 16 कहती है, "...हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी।" भावी कहनेवाली आत्मा शैतान से है। पौलुस नहीं चाहता था कि उसकी सेवा का समर्थन कोई शैतानी भावी कहनेवाली आत्मा करे, और इसलिए उसने उसमें दुष्टात्मा को निकाल दिया! जिस व्यक्ति में भावी कहने की आत्मा होती है, जो शैतान से आती है, वह लोगों को उनके बारे में ऐसी चीजें बता सकता है जिन्हें मनुष्य खुद से नहीं जान सकता है। पवित्र आत्मा भी ज्ञान के वचन के उसके वरदान के द्वारा एक व्यक्ति को यह योग्यता दे सकता है (1 कुरिं. 12:8)।

<u>सेवा में अभिप्राय अत्यन्त आवश्यक है। अगुवों को लालच (स्वार्थी लाभ की लालसा) के विषय में और किसी भी चीज से अधिक चेतावनी दी गई है।</u> पौलुस कहता है, "क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं" (2 कुरिं. 2:17)।

पौलुस परमेश्वर के वचन के द्वारा धंधा नहीं कर रहा था - जैसे फेरीवाला उसकी चीजों को बेचकर करता है। वह ईमानदार और सच्चा था। हमें भी वैसा होना चाहिए।

जो लोग चाहते हैं उससे प्रेरित नहीं

अपनी सेवा को लोगों के दबाव में मत आने दो। पुराने नियम में बिलाम नामक एक नबी था जिसने कहा, "मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ाकर मानूँ" (गिनती 22:18)। और जब उसे इस्राएल को शाप देने को कहा गया तो वह केवल आशीष दे पाया था (गिनती 22-25)। इससे हमें क्या सीखने को मिलता है? हमें उसे करने का प्रयत्न नहीं करना है जिसे परमेश्वर नहीं कर रहा है। यदि प्रभु ने हमें किसी स्थिति के लिए अभिषेक नहीं दिया है, तो हमें उस सीमा को स्वीकार करना चाहिए।

जब लोग आपके पास आएँ और कहें कि उनके लिए भविष्यद्वाणी करो, और यदि परमेश्वर आपको कोई वचन नहीं देता है तो झूठी भविष्यद्वाणी मत करो। अपने आप को दूसरी आत्मा के हाथ में मत कर दो; वह मत करो जो परमेश्वर नहीं कर रहा है। अपनी भ्रमशीलता को स्वीकार करने में दीन बनो। यदि परमेश्वर नहीं कर रहा है तो हम भी नहीं कर सकते हैं और करने का प्रयत्न भी नहीं करना है।

<u>पवित्र आत्मा द्वारा दिए ज्ञान के वचन और शैतानी भावी कहनेवाली आत्मा में अन्तर कैसे बताया जा सकता है? स्रोत का पता लगाने के लिए इन मूल सिद्धान्तों का उपयोग किया जा सकता है:</u>

1) भावी कहनेवाली आत्मा, मसीह से परे, अपने ऊपर ध्यान और महिमा लाती है।
2) भावी कहनेवाली आत्मा लोगों को मार्गदर्शन और आत्मिक पोषण के लिए पवित्रशास्त्र की निर्भरता और भरोसे से दूर ले जाएगी।
3) भावी कहनेवाली आत्मा जो इसे इस्तेमाल करते हैं और जो इसके प्रभाव में आते हैं, उनके लिए उलझन और बढ़ते हुए धोखे के स्तर लाती है।

पवित्रशास्त्र हमें आत्माओं की परख के वरदान (1 कुरिं. 12:10) को उपयोग करके "आत्माओं को परखने" का उपदेश देता है (1 यूहन्ना 4:1-3) - इसलिए नहीं कि हम अभिमान से दूसरों का न्याय करें, परन्तु कि हम सब दीन होकर "निर्मल आत्मिक दूध" पा सकें (1 पतरस 2:2)।

समस्या 4: अधर्मी भविष्यद्वक्ता धोखा खाएँगे

"इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति करें।" क्यों? पौलुस कहता है "ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, वे सब दण्ड पाएँ" (2 थिस्स. 2:11-12)। इस अनुच्छेद में स्पष्ट किया गया है कि अधर्म धोखा लाता है। परमेश्वर उनमें भटका देनेवाली आत्मा भेजेगा जो अधर्म से प्रसन्न होते और सत्य से प्रेम नहीं करते हैं।

इन आयतों में वर्णित घटनाओं का क्रम क्या है?

1. अगुवे सत्य के लिए उनके प्रेम को खो देते हैं।
2. वे अधर्म में आनन्द लेते हैं।
3. तब परमेश्वर उनके मनों और हृदयों में शक्तिशाली भ्रम (धोखा) भेजता है।
4. वे दूसरों को धोखा देते हैं और नरकदण्ड उनका अन्त होता है।

शब्दकोष में भ्रम (भटका देनेवाली सामर्थ्य) का अर्थ है: "सत्य के लिए अंधा करके गलत विश्वास कराना।" जब आप भ्रम (धोखे) में होते हो, तो आप जो झूठा या गलत है उसे सत्य या सही मानते हो, अर्थात् "...बुरे को भला और भले को बुरा" कहना (यशायाह 5:20)।

हम इस प्रकार की स्थिति में कैसे आ सकते हैं? हम में से कोई भी मूर्ख बनना, भ्रम में पड़ना, या धोखा खाना नहीं चाहता है। परन्तु, जब हमारा अभिप्राय गलत होता है तब हम धोखे में पड़ सकते हैं। एक स्वार्थी अभिप्राय और आत्मकेन्द्रित योजना के साथ भविष्यसूचक में कार्य करते रहना धोखे में ले जाता है।

बिलाम

बिलाम का जीवन यह सब प्रमाणित करता है। बिलाम को इस लिए झूठा नबी नहीं माना गया क्योंकि उसकी भविष्यद्वाणियाँ गलत थीं। उसकी भविष्यद्वाणियाँ सच्ची थीं, परन्तु वह अभिप्राय के कारण एक झूठा भविष्यद्वक्ता था। वह धन के लिए अपने वरदान को बेचने के लिए तैयार था। उसने अपना वरदान अधर्मी लोगों को बेच दिया और उनका साझेदार बन गया।

अन्त में, उसने मोआब और मिद्यान के राजा को सिखाया कि इस्राएल पर परमेश्वर का न्याय कैसे लाना है। उसने कहा, "तुम्हारी स्त्रियाँ इस्राएली पुरुषों को व्यभिचार में फँसाएँ और इस प्रकार परमेश्वर का प्रकोप उन पर उतरेगा।" और इस दुष्ट युक्ति ने काम किया। इस्राएल का न्याय हुआ और "चौबीस हज़ार पुरुष मर गए" (गिनती 25:9)। अन्त में इस्राएलियों ने बिलाम का तलवार से घात किया क्योंकि उसने इस्राएल के लोगों को भटकाने में अधर्म का काम किया था (गिनती 31:8; यहोशू 13:22)।

इजेबेल

यीशु को थुआतीरा की कलीसिया के साथ भी ऐसी ही समस्या थी। "पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तू उस स्त्री इजेबेल को रहने देता है जो अपने आप को भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करना...सिखलाकर भरमाती है" (प्रकाशित. 2:20)। यह इजेबेल एक झूठी भविष्यद्वक्तिन थी जिसका न्याय करके उसे कलीसिया से बाहर किया जाना चाहिए था। परन्तु थुआतीरा के अगुवे उसे बाइबल की नैतिकता और सही शिक्षा को भ्रष्ट करने दे रहे थे। यीशु अप्रसन्न था। "देख, मैं उसे रोगशैय्या पर डालता हूँ; और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएँगे तो मैं उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा। मैं उसके बच्चों को मार डालूँगा..." (प्रकाशित. 2:22-23)। हाँ! पाप की मजदूरी मृत्यु है - पापी, अवज्ञाकारी विश्वासियों के लिए भी। अब चलने के लिए यह एक दुख भरा मार्ग है। मैं आशा करता हूँ कि हम जो अगुआई में हैं, परमेश्वर को पुकारेंगे कि हम सही मार्ग पर रखे जाएँ। मैं नहीं कह रहा कि हमारा निष्पाप सिद्ध जीवन हो सकता है। परन्तु बाइबल सिखाती है कि जब हम पाप करते हैं, तब हमें तुरन्त अपने पाप को मान लेना और त्याग देना चाहिए और सारे अधर्म से शुद्ध हो जाना चाहिए। यीशु के लहू के द्वारा क्षमा और शुद्धीकरण हमारे लिए सदा उपलब्ध हैं। यदि हम सच्चे मन से अपना पाप मान लेते और मन फिराते हैं, तब हम क्षमा किए जाते हैं और अपने जीवनों में शुद्ध और सम्पूर्ण होकर जा सकते हैं (1 यूहन्ना 1:9)। हर दिन, हमें किसी भी पाप से मन फिराना और क्षमा पानी चाहिए। यह हमारे जीवनों में एक निरन्तर, प्रतिदिन का कार्य होना चाहिए।

दूसरी ओर, यदि आप पाप करने की आदत बना लेते हो, उदाहरणार्थ निरन्तर की नैतिकता में सम्मिलित होकर, तब तो आपकी सेवा का अन्त है। धोखा आ जाएगा, और अपने साथ आपके और परमेश्वर के काम को बड़ा विनाश लाएगा। इसलिए, हमें

अन्धकार के इन अविश्वासयोग्य कामों को त्यागना है और ज्योति और पवित्रता में चलना है, और अपने जीवनों को प्रभु के सामने शुद्ध रखना है (इफिसियों 5:8-11 देखो)। यदि हम पवित्र आत्मा के वरदानों में अधर्म की मिलावट करते हैं तो धोखे के लिए द्वार खुल जाएंगे और हम सब प्रकार के अपधर्मों में पड़ सकते हैं। यह किसी के साथ भी हो सकता है। पौलुस ने चेतावनी दी, "इसलिए जो समझता है, मैं स्थिर हूँ, वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े" (1 कुरिं. 10:12)। हमें अपनी भेद्यता की जानकारी में चलना चाहिए!

समस्या 5: जो भविष्यद्वाणी बाइबल का खण्डन करती है

जैसे पहले बताया गया है, यह एक समस्या है जब भविष्यद्वक्ता के शब्द पूरे नहीं होते। मूसा ने कहा कि उस प्रकार के व्यक्ति से डरो मत क्योंकि उसने अभिमान में होकर अपने हृदय की बातें कही थीं (व्यवस्थाविवरण 18:22 देखो)।

परन्तु, एक अधिक खतरनाक भविष्यद्वक्ता भी है जिसका वर्णन व्यवस्थाविवरण 13:1-3 में है: "यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह या चमत्कार दिखाए, और जिस चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिनसे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें, तब तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं ?" यहाँ मूसा हमें एक भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाले की चेतावनी देता है, जिसके चिन्ह और चमत्कार पूरे होते हैं, परन्तु जिसकी शिक्षा बाइबल के विपरीत है। सामान्यतः, जब एक चिन्ह पूरा होता है तो यह भविष्यद्वक्ता की सेवा को मान्य ठहराएगा। उसे सच्चा भविष्यद्वक्ता माना जाएगा।

परन्तु मूसा चेतावनी देता है कि यह सदा सच नहीं होगा:

1. भविष्यद्वक्ता एक चिन्ह या चमत्कार के विषय में एक भविष्यद्वाणी देता और वह पूरा हो जाता है।
2. उसके चिन्ह और चमत्कार के पूरा होने के बाद, वह लोगों को कुछ करना सिखाने लगता है जो बाइबल से मेल नहीं खाता।

इस उदाहरण में भविष्यद्वक्ता लोगों को कहता है, "आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें।" दूसरे देवताओं के विषय में बाइबल की स्पष्ट आज्ञा क्या है ? "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना" (निर्गमन 20:3)।

यह भविष्यद्वक्ता सही भविष्यद्वाणी करता है और जो वह कहता है पूरा होता है। परन्तु बाद में जो वह सिखाता है, वह उससे बिलकुल भिन्न है जो बाइबल में है: "आओ हम दूसरे देवताओं के पीछे चलें।" अब यह सबसे खतरनाक प्रकार की भविष्यद्वाणी है!

इस प्रकार के भविष्यद्वक्ता की ओर हमारी प्रतिक्रिया के बारे में बाइबल बिलकुल स्पष्ट है। "तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना; क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि ये मुझ से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं ?" (व्यवस्था. 13:3)।

यह दिखाता है कि क्यों हम अगुवों को बाइबल का अध्ययन करना और पवित्रशास्त्र को जानना चाहिए, और जो बाइबल कहती है उसकी ओर पूरी तरह दृढ़ता के साथ वचनबद्ध होना चाहिए। अन्यथा, हम धोखा का सकते हैं - और परमेश्वर के झुण्ड को जिसकी रखवाली, खिलाने और रक्षा करने की जिम्मेवारी हमें दी गई है, बहुत हानि उठाएगा।

"उनके शब्दों को परमेश्वर के वचन से जाँचो!" वह कहता है। "यदि उनके संदेश मेरे से भिन्न हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है; उनमें कोई ज्योति या सत्य नहीं है।" (यMIयाह 8:20 देखो)। [इस आयत में परमेश्वर का वचन बाइबल है।]

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता वे कितने चिन्ह और चमत्कार दिखाते हैं, यदि जो वे सिखाते हैं बाइबल जो सिखाती है उससे भिन्न है, तो यह गलत है और अस्वीकार किया जाना चाहिए। इसी कारण से हमें बाइबल पता होनी चाहिए!

- बाइबल का अध्ययन करो!
- बाइबल कंठस्थ करो!
- काफी सारा समय बाइबल में बिताओ!
- वचन में जीओ जब तक वचन तुम में जीने न लगे!

हर दिन प्रार्थना और बाइबल में समय बिताओ और आप सही मार्ग पर बने रहोगे। बाइबल आपके पाँव के लिए दीपक, और आपके मार्ग के लिए उजियाला है (भजन 119:105)। यदि हम उस पर चलते हैं जो बाइबल कहती है, तो हम आशीष पाएँगे। यदि हम शिक्षा से पिछड़ जाते हैं, तो बड़े संकट में है। यीशु ने फरीसियों को कहा, "तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो" (मत्ती 22:29)।

दो चीजें हमें धोखा और भ्रम के लिए भेद्य बनाती हैं:

- पवित्रशास्त्र नहीं जानना, और
- परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानना।

हमें दोनों को जानना है: हमें पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य दोनों को जानना है! जब कोई बाइबल के विरुद्ध सिखाता है (इससे कोई फर्क नहीं पड़ता वे कितने चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्म दिखाते हैं), तो जो वे सिखाते हैं और उनकी सेवा, दोनों को अस्वीकार करना है।

प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, पास्टरों और शिक्षकों की शिक्षा बाइबल से मेल खानी चाहिए!

जब पौलुस और सीलास बिरीया में थे तब उन्होंने लोगों की प्रशंसा की थी जो अराधनालय में उनकी सभाओं में आए थे। "ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढते रहे कि वे बातें योंही हैं कि नहीं" (प्रेरितों 17:11)। पौलुस और सीलास दोनों प्रेरित थे। परन्तु बिरीया के लोगों की प्रशंसा की गई क्योंकि, इन प्रेरितों की सुनने के बाद वे प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढते थे कि जो बातें उन्होंने सुनी हैं वे सही हैं या नहीं। <u>और हमें कैसे पता चलेगा कि जो हम ने सुना है सही है? प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों की खोज करने से। हम सब की यह जिम्मेवारी है, और ऐसा करने से हम सच्चाई और आशीष के मार्ग पर बने रहेंगे।</u>

समस्या 6: अभिमान से भविष्यद्वाणी करना

भविष्यसूचक वरदानों को प्रयोग में लाते समय, कई चीजें हैं जिनका हमें विशेषकर ध्यान देना चाहिए। जब हम भविष्यसूचक वरदानों की बात करते हैं तो हमारा अर्थ है भविष्यद्वाणी, ज्ञान का वचन, बुद्धि का वचन और आत्माओं की परख। भविष्यसूचक दूसरे वरदानों को भी प्रयोग में ला सकते हैं, परन्तु ये उनके वरदानों का प्रमुख गुच्छा है।

पहले, जब भविष्यद्वाणी में ज्ञान का वचन दिया जाता है, तो हमें सावधान रहने की आवश्यकता है। 1 कुरिन्थियों 14:25 में, ज्ञान के वचन का अच्छा वर्णन है: "उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे...।" जब प्रभु आपको एक ज्ञान का वचन देता है, तो इससे आपको एक व्यक्ति (या परिस्थिति या स्थिति) के बारे में चीजें पता चलेंगी जिन्हें आप अपने स्वाभाविक मन से नहीं सकते थे। यदि यह होता है, तो आपको अपने प्रकटीकरण को एक निश्चित सत्य के रूप में मण्डली (या व्यक्ति) के सामने प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। आपको दीन होना चाहिए और पहचानना चाहिए कि आप गलती कर सकते हो। पहले, सोचो कि क्या यह ज्ञान का वचन खुले आम बताया जा सकता है। कुछ चीजें जो हम पर प्रकट की गई हैं, अच्छा होगा सब को न बताई जाएँ। यदि यह बताने के लिए उचित है तो आप को कुछ इस प्रकार कहना चाहिए: "मुझे लगता है प्रभु मुझे यह बता रहा है।" तब आप बता सकते हो, और फिर पता करने के लिए (जब यह सम्भव और उचित हो) कि यह सही था या नहीं, इस प्रकार पूछिए: क्या यह सच है? यदि जिस व्यक्ति के बारे में आपको ज्ञान का वचन मिला था न में उत्तर देता है, तो दीनता का मार्ग अपनाइए और कहिए: मुझे खेद है, मैं गलता था। हमें यहाँ अत्यन्त सावधान रहना है। हमारे शब्द लोगों को फैसले करने या कार्य करने में विवश करेंगे जो उनके जीवनों को गम्भीर हानि पहुँचा सकते हैं। और जो शब्द हम ने कहें हैं परमेश्वर उनके लिए हमें जिम्मेवार ठहराएगा (मत्ती 12:36-37)।

भविष्य बताने में असफलता दीनता से स्वीकार करो

यदि परमेश्वर ने आपको एक भविष्यसूचक वरदान दिया है और आपको अगबुस के समान लगता है कि आप भविष्य की घटनाएँ बता सकते हैं, तो यह भी एक क्षेत्र है जहाँ आपको सावधान रहना है। प्रेरितों 11:27-28 हमें बताता है, "उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से आए। उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा - वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।" अगबुस एक बड़े अकाल के बारे में बता रहा था, और आयत का अन्तिम भाग बताता है कि उसकी भविष्यद्वाणी सच निकली थी। यह सच्ची भविष्यद्वाणी थी।

भविष्यसूचक के साथ सबसे बड़ी समस्या जो मैं ने देखी है वह होती है जब भविष्यद्वक्ता भविष्य बताने के चक्कर में गलत भविष्यद्वाणी करते हैं। यदि आप को लगता है परमेश्वर ने आप को एक प्रकटीकरण दिया है और उसे घोषित करते हो, तो यदि आप गलत साबित होते हो तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो। असफलता स्वीकार करने और अनुग्रह के साथ सुधार स्वीकार करने के लिए दीन होना भी प्रभु का एक वरदान है, सम्भवतः भविष्यद्वाणी के वरदान जितना ही महत्त्वपूर्ण। जब आप गलत हैं, तो आप गलत हैं, इसलिए इसे मान लेने के लिए तैयार रहो! "विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है" (नीतिवचन 16:18)। असफलता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं रहना भविष्यद्वाणी की सेवा का अन्त कर सकता है। हमें उसे बोलने के लिए जो हमें लगता है प्रभु ने दिया है साहसी होने से डरना नहीं है। परन्तु अपने साहस को इस विस्मयकारी जिम्मेवारी से नरम होने और सन्तुलित होने दो, परमेश्वर और उसके वचन को लोगों तक सही-सही पहुँचाने की जिम्मेवारी।

समस्या 7: भविष्यद्वाणी द्वारा मार्गदर्शन को पुष्टीकरण की आवश्यकता होती है

हमें किसी के जीवन में मार्गदर्शन देने के प्रयास में सावधान रहना चाहिए। इस मामले के दो पहलू हैं:

[1] जो भविष्यद्वाणी पा रहे हैं, और

[2] जो भविष्यद्वाणी दे रहे हैं। दोनों को सावधान रहना है।

यदि कोई आपके जीवन या सेवा के लिए भविष्यद्वाणी द्वारा मार्गदर्शन दे रहा है, तो एक सिद्धान्त है जिसे आपको सदा स्वीकार करना और सम्मान करना चाहिए। हर भविष्यद्वाणी के वचन की दो या तीन गवाहों द्वारा पुष्टि की जानी चाहिए। बाइबल इसके विषय में स्पष्ट है: "हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से निश्चित की जाए" (मत्ती 18:16; 2 कुरिं. 13:1)।

यह निश्चित करने के लिए कि मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त पुष्टीकरण उपलब्ध है, मार्गदर्शन की हर भविष्यद्वाणी अकसर भविष्यद्वक्ताओं के धर्मवृद्धों से निकलनी चाहिए। यह सिद्धान्त प्रेरितों 13:1-3 में दिखाया गया है: "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसे: बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लुकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।' तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।"

यहाँ है जिसे हम भविष्यद्वक्ताओं के धर्मवृद्ध कहते हैं, अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं का एक समूह जो मिलकर काम करता है। मार्गदर्शन के पुष्टीकरण के लिए, ऐसे एक भविष्यसूचक दल के विभिन्न सदस्यों की ओर से सहमति और पुष्टीकरण के चिन्ह होने चाहिए।

भविष्यद्वाणी द्वारा मार्गदर्शन देने और पाने का एक और सुन्दर उदाहरण 1 शमूएल 10:1-10 में पाया जाता है। इस अनुच्छेद में:

(1) भविष्यद्वक्ता शमूएल सबसे पहले राजा शाऊल को एक ज्ञान का वचन देता है। फिर,
(2) शमूएल बड़े विस्तार में बताता है कि घटनाओं की श्रृँखला घटने वाली है, और फिर
(3) वह शाऊल को निर्देश देता है।

शाऊल के हृदय का रहस्य पहले एक ज्ञान के वचन के द्वारा प्रकट होता है, जब शमूएल ने उसे बताया, "...जिन गदहियों को तू ढूँढने गया था..।" तब, अपना ज्ञान का शब्द बताने के बाद, शमूएल उसे भविष्य की बातें बताता है और बताता है कि उसके साथ घटनाओं की एक श्रृँखला घटने वाली हैं।

(1) उसने बताया कि शाऊल की दो पुरुषों से मुलाकात होगी जो उसे बताएँगे कि गदहियाँ मिल गई हैं।
(2) उसके बाद, वह तीन बकरियों, तीन रोटियों और एक कुप्पा दाखमधु लिए हुए तीन पुरुषों से मिलेगा, और वे उसे दो रोटियाँ देंगे। यह तो बहुत निश्चित हो रहा है!
(3) उसके बाद उसे ऊँचे स्थान से आता हुआ नबियों का एक दल मिलेगा, वे संगीतवाद्य बजाते होंगे और नबूबत करते होंगे।
(4) और अन्त में, शमूएल ने कहा कि प्रभु का आत्मा शाऊल पर उतरेगा।

आयतें 9 और 10 बताती हैं कि ये सब चिन्ह पूरे हुए थे।

मार्गदर्शन का एक स्पष्ट निर्देश वह था जब शमूएल ने शाऊल को गिलगाल जाने और वहाँ सात दिन उसके आने की प्रतीक्षा करने को कहा। वह बता रहा था क्या करना है और कहाँ जाना है। जब इस प्रकार का मार्गदर्शन दिया जाता है, जिसमें भविष्यद्वाणी के सब चिन्ह पूरे होते हैं, तब भविष्यद्वक्ता के शब्दों को स्वीकार करना कठिन नहीं होता। अन्यथा, नहीं तो कुछ सचेतक चीजें हैं जिनका हमें ध्यान रखना चाहिए। हम ने पहले ही कहा है कि अधिकाँश मामलों में मार्गदर्शन भविष्यद्वाक्ताओं के धर्मवृद्धों से मिलना चाहिए। मार्गदर्शन दो या तीन भविष्यद्वक्ताओं के मुँह से मिलना चाहिए। यदि यह शमूएल जैसे किसी व्यक्ति से आता है जो बहुत सारे चिन्ह देता है, और वो चिन्ह पूरे होते हैं, तब तो यह नियम का अपवाद हो सकता है। परन्तु, यदि कई भविष्यद्वक्ता सम्मिलित नहीं हैं तो हमें उस भविष्यद्वाणी को स्वीकार करने में बहुत सावधान होना चहिए जो मार्गदर्शन देती है।

जो परमेश्वर ने पहले ही बोला है उसका पुष्टीकरण

एक और सिद्धान्त जिसे हमें समझना चाहिए: भविष्यद्वाणी सामान्यतः मार्गदर्शन के लिए उपयोग नहीं की जाती है। विशेषकर नए नियम में, हम पाते हैं कि भविष्यद्वाणी मुख्य रूप से उस चीज की पुष्टीकरण के लिए है जो परमेश्वर ने पहले ही व्यक्ति से कहा है। बरनबास और शाऊल के भेजे जाने के मामले में भी (प्रेरितों 13:1-3), भविष्यद्वक्ता उसकी पुष्टीकरण ही कर रहे थे जिसे परमेश्वर ने बरनबास और शाऊल को स्पष्ट किया हुआ था। पवित्र आत्मा ने वहाँ एक भविष्यद्वक्ता को कहा, "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।" पहले कभी पवित्र आत्मा ने उन्हें बुलाया हुआ था। भविष्यद्वक्ता उसकी पुष्टि कर रहे थे जो शाऊल और बरनबास पहले ही जानते थे, और भविष्यद्वाणी केवल उसकी पुष्टि कर रही थी जो परमेश्वर ने पहले ही उनसे कहा था। भविष्यद्वाणी सामान्यतः इसी के लिए है। भविष्यद्वक्ता का वरदान जब इसे पुष्टिकरण के लिए प्रयोग में लाया जाता है अदभुत आशीषें लाता है।

समस्या 8: शासन के लिए भविष्यद्वाणी का प्रयोग करना

भविष्यसूचक से सम्बंधित एक और सिद्धान्त है जो पास्टरों और अगुवों के लिए बहुत महत्त्व का है। नए नियम में, यह स्पष्ट किया गया है कि हम भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यद्वाणी द्वारा नहीं, परन्तु मसीह द्वारा शासन किए जाते हैं। इफिसियों 1:22 में, पौलुस

कहता है, परमेश्वर ने सब चीजें मसीह के पैरों तले की हैं; और "उसे सब वस्तुओं का शिरोमणी ठहराकर कलीसिया को दे दिया" है।

उसकी प्रभुता के अधीन अगुवों के रूप में हम उससे मार्गदर्शन पा सकते हैं। वह हमें शासन दे सकता है और, चाहे आप विश्वास करें या नहीं, वह ऐसा आपकी कलीसिया के कुछ सदस्यों के लिए भी कर सकता है!

कभी-कभी अगुवे उनके झुण्ड पर बहुत अधिक नियंत्रण रखना चाहते हैं। मैं जानता हूँ चरवाहों के पास भेड़ों के भटकने की समस्या हो सकती है। इसलिए भेड़ों को अनुशासित करना और सुधारना पड़ता है। परन्तु आप के पास सम्भवतः कुछ समर्पित भेड़ें भी होंगी जो यीशु से प्रेम करतीं और आज्ञापालन करती हैं। यदि सदस्य का जीवन शुद्ध और सही है, तब डरो मत और कलीसिया के प्रमुख, यीशु को उन्हें मार्गदर्शन देने दो।

हनन्याह – एक सामान्य विश्वासी

बाइबल में एक सामान्य विश्वासी की एक अदभुत कहानी है जो परमेश्वर से सुनता है, और फिर जैसे वह आज्ञापालन करता है, बड़े सामर्थ्य के साथ इस्तेमाल किया जाता है। वह हनन्याह नामक एक चेला था, जिसने तरसुस के शाऊल के लिए प्रार्थना की, जो दमिश्क के मार्ग पर प्रभु की महिमा से भूमि पर गिर पड़ा था और उसकी आँखों की रोशनी जाती रही थी (प्रेरितों 9:10-17 देखो)। जहाँ तक हम जानते हैं, हनन्याह कलीसिया का एक सदस्य मात्र था। कोई संकेत नहीं दिया गया है कि वह एक प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पास्टर या शिक्षक था। परन्तु, प्रभु ने उसे एक स्पष्ट निर्देश दिया, और उसे बताया कि शाऊल को कैसे ढूँढना है और उसके ऊपर क्या प्रार्थना करनी है। जब हनन्याह ने उस वचन का पालन किया, तब शाऊल को उसकी दृष्टि मिल गई और वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया। आज की भाषा में हम हनन्याह को एक साधारण सदस्य (लेमैन) कहेंगे (अर्थात् जो कलीसिया में कोई बाइबल का पद लिए हुए नहीं है)।

एक भविष्यद्वक्ता पुष्टीकरण ढूँढता है

मेरा एक मित्र है जिसकी भविष्यद्वाणी की सेवा है और जो जगह-जगह जाकर सेवा करता है; उसने मुझे एक कहानी बताई जो उसके साथ एक हवाई उड़ान के दौरान घटी थी। वह बहुत सेवा और सफर के कारण थका हुआ था और प्रभु से प्रार्थना कर रहा था। "प्रभु, मैं तेरे लिए बोलता हूँ। मैं तेरा वचन कई लोगों को देता हूँ। परन्तु मुझे तुझ से एक वचन चाहिए। मैं चाहता हूँ कि कोई पुष्टि करे कि सेवा का यह सफर परमेश्वर के राज्य के लिए लाभदायक होगा।" हवाई जहाज के उड़ान भरने से थोड़ा पहले, एक विमान परिचालक, एक महिला जिस से वह पहले कभी मिला नहीं था उसकी सीट के पास आई। वह उसकी बगल में घुटनों के बल हो गई और उस के लिए भविष्यद्वाणी करने लगी। यह उसके लिए एक बहुत ही आचम्भित करने वाला अनुभव था; कि कलीसिया की सभा के बाहर जैसे वातावरण में पवित्र आत्मा एक विमान परिचालक में आकर उसकी सेवा से सम्बंधित उसे एक शक्तिशाली संदेश दे रहा था! वह विमान परिचालक कौन थी? जहाँ तक हम जानते हैं, वह कोई प्रसिद्ध भविष्यद्वक्तिन नहीं थी, परन्तु मात्र एक स्त्री थी जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रही थी। यह इस सत्य को चित्रित करता है: हमें अपनी कलीसियाओं के उन सदस्यों को जो प्रभु के साथ सही सम्बंध में चल रहे हैं, प्रभु से अगुआई पाने और इस्तेमाल होने देना चाहिए। निस्संदेह, मण्डली के पास्टर जो उनकी कलीसियाओं में हो रहा होता है उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते हैं। अशांति फैलानेवालों के साथ निपटा जाना चाहिए। परन्तु, अपने लोगों पर बहुत अधिक नियंत्रण न रखें, नहीं तो आप पाएँगे कि आप उनके जीवनों में पवित्र आत्मा के काम में हस्तक्षेप कर रहे हैं। प्रभु उनके साथ उसी प्रकार बात कर सकता है, जैसे वह आपके साथ करता है।

भविष्यद्वाणी से सही प्रभावित होना

बाइबल का मानक भविष्यद्वक्ताओं या भविष्यद्वाणियों से शासित नहीं होना है। इसका प्रेरित पौलुस के जीवन से एक शीघ्र उदाहरण है।

प्रेरितों अध्याय 20 में, हम पौलुस को यरूशलेम को जाते पाते हैं। वह यहूदियों को यीशु के लिए जीतना चाहता है, परन्तु एक छोटी सी समस्या है। उसे परमेश्वर ने यहूदियों को जीतने के लिए नहीं बुलाया है; उसे अन्यजातियों के लिए बुलाया गया है (प्रेरितों 9:15; 13:47; 22:21; और गलातियों 1:16; 2:7 देखो)। वह सम्भवतः उन्हीं यहूदियों को यीशु के लिए जीत सकता है जो रोमी सामाज्रय के शहरों में तितर-बितर होकर रह रहे हैं। इन शहरों में ही सेवा के लिए पौलुस को बुलाया गया था। यहूदियों के लिए प्रेरित कौन था? पतरस! (गलातियों 1:16 देखो)। परन्तु पौलुस अपने यहूदी लोगों से इतना प्रेम करता था कि यदि वह उन्हें यीशु पर विश्वास करने के लिए प्रभावित नहीं कर सकेगा तो वह अपने शापित समझता था (प्रेरितों 17:1-2; रोमियों 9:3 देखो)।

अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और उत्साहों के बावजूद, हम वह नहीं कर सकते हैं जिसे करने के लिए बुलाए नहीं हुए हैं। परमेश्वर हमें संसार के विशेष जातीय समूहों और / या विशेष भूगोलीय क्षेत्रों के लिए बुलाकर और नियुक्त करके हमारी सेवा पर सीमाएँ डालता है। पौलुस अन्यजातियों के लिए ऐसे एक बुलावे के अधीन था। जो कुछ भी आपका बुलावा हो, उसकी सीमाओं के भीतर

रहो! परन्तु, यदि हम पौलुस की यात्रा का पीछा करें तो पाएँगे कि वह यरूशलेम यहूदियों की सेवा करने की मनसा से वहाँ जा रहा था: "अब देखो, मैं आत्मा में बँधा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा; केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं" (प्रेरितों 20:22-23)। पौलुस अपनी आत्मा में, न कि पवित्र आत्मा में बँधा हुआ जा रहा था। उसने कहा कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर उसे बता रहा था कि यरूशलेम में बन्धन और क्लेश उसके लिए तैयार हैं। जिस किसी भी कलीसिया में वह जाता था, आत्मा से भरे लोग उसे बताते थे, "पौलुस, तुम्हारे लिए यरूशलेम में केवल बन्धन और क्लेश तैयार हैं।" परन्तु उसने क्या किया? वह भविष्यद्वक्ताओं या भविष्यद्वाणियों के नियंत्रण में नहीं आया। वह जाता रहा।

प्रेरितों 21:7 में हम पौलुस को सूर में, कुछ चेलों के साथ सात दिन रहते पाते हैं। इन भले भाइयों ने "आत्मा के सिखाए" पौलुस से कहा कि वह यरूशलेम में पाँव न रखे। क्या यह स्पष्ट नहीं है? परन्तु, पौलुस ने क्या किया? वह चलता रहा। वह भविष्यद्वक्ताओं या भविष्यद्वाणियों के वश में नहीं होने का था।

वहाँ से थोड़ा आगे वे कैसरिया पहुँचते हैं जहाँ वे सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस के साथ रहे। जब वे वहाँ थे, भविष्यद्वक्ता अगबुस वहाँ आया और उसने पौलुस को यरूशलेम जाने के विरुद्ध एक कड़ी चेतावनी दी (प्रेरितों 21:8-14 देखो)। तो पौलुस ने क्या किया? वह जाता रहा। परन्तु वह भविष्यद्वक्ताओं या भविष्यद्वाणियों के वश में नहीं होने का।

भविष्यद्वक्ताओं या भविष्यद्वाणियों के द्वारा शासित नहीं होना सही है। परन्तु, जब आपको उतनी गवाहियाँ मिलें जितनी पौलुस को मिली थीं, तब तो आपको उनसे प्रभावित होना ही चाहिए। यदि हर कलीसिया आपको वही बात बताती है, यदि भाई आत्मा के द्वारा वही संदेश दोहरा रहे हैं, यदि भविष्यद्वक्ता बारम्बार इसे दोहरा रहे हैं - तब, ध्यान दो। जब आप इतने सारे विश्वसनीय सूत्रों से सुनते हो तो आपको प्रभावित होना चाहिए। मुझे लगता है पौलुस को रुक कर सुनना चाहिए था, परन्तु वह यहूदियों को यीशु के लिए जीतने के दृढ़संकल्प में था, और वह यरूशलेम गया। "जब मैं यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया, और उसको देखा कि वह मुझ से कहता है, 'जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे'" (प्रेरितों 22:17-18)। प्रभु यीशु पौलुस को जब वह मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था प्रकट हुआ था। प्रभु ने उसे कहा कि वह वहाँ से शीघ्र निकल ले क्योंकि यहूदी उसकी गवाही स्वीकार नहीं करेंगे। पौलुस ने क्या किया? वह प्रभु से विवाद करने लगता है! यीशु का अन्तिम उत्तर था, "चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूँगा" (प्रेरितों 22:21)। संक्षेप में, प्रभु एक बहुत ही जिद्दी पौलुस को यह कहने का प्रयास कर रहा था, "मैं ने तुझे यहूदियों को यीशु के लिए जीतने को नहीं बुलाया है! अन्यजाति, पौलुस, अन्यजाति! अन्यजाति! अन्यजाति!"

पौलुस ने क्या किया? वह यरूशलेम में ही रहा। परन्तु जैसे यीशु ने उसे बताया था, यहूदियों ने उसे जंजीरों में जकड़ा और उसे अन्यजातियों के हाथ में दे दिया। और अन्यजाती उसे कहाँ ले गए? जहाँ परमेश्वर चाहता था वह हो: रोम। इसलिए, यदि आप स्वेच्छा से वहाँ नहीं जाओगे जहाँ परमेश्वर चाहता है, तो वह आपको जंजीरों में ले जाएगा। परमेश्वर चाहता है कि उसकी इच्छा पूरी हो, जैसे पौलुस के मामले में परमेश्वर उसे अन्त में रोम ले ही गया।

"जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए...की जाती है। इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुख में हो" (1 पतरस 1:5-6)। परन्तु, यदि आपके जीवन में भविष्यद्वाणियों की एक शक्तिशाली नदी बह रही हो, तो यह एक संकेत हो सकता है कि आप उसे गम्भीरता से लें जो आपको बताया गया है। "जंजीरों में जकड़े" जाने से प्रभावित होना कहीं अधिक सुखद अनुभव होगा।

जवान नबी बूढ़े नबी से धोखा खा गया

1 राजा अध्याय 13 में हम एक जवान नबी की कहानी पढ़ते हैं जिसे परमेश्वर से एक वचन मिला था। उसे बताया गया था क्या करना है, और वह प्रभु की आज्ञा पूरी करने चला गया। वापसी पर उसे एक बूढ़ा नबी मिला जिसने उसे कहा, "मेरे घर चलकर भोजन कर।" जवान ने उत्तर दिया, "नहीं परमेश्वर ने मुझे कहा था, जा और लौट आ, और मार्ग में, न तो रुकना और न खाना-पीना।" बूढ़े नबी ने थोड़ी बहस की और उसे इन शब्दों से मनवाने का प्रयत्न किया, "मैं ने एक स्वर्गदूत को देखा और उसने कहा कि तूझे मेरे संग खाना-पीना है।" तो इस प्रकार जवान नबी उसके संग गया और खाया-पीया। जब वे खा-पी रहे थे, प्रभु का आत्मा बूढ़े नबी पर आया और उसने भविष्यद्वाणी की, "क्योंकि तू ने प्रभु की आज्ञा नहीं मानी, तुझे एक शेर खा जाएगा।" जब जवान नबी बूढ़े नबी के घर से निकला, यह दुखद भविष्याणी पूरी हुई। घटना वास्तव में घटी! जवान नबी को एक शेर ने मार डाला था।

जवान नबी की समस्या क्या थी? उसने किसी दूसरे को जो परमेश्वर ने उसे स्पष्ट कहा था करना है उससे कुछ भिन्न करने के लिए प्रभावित करने दिया।

परमेश्वर अगुवों के रूप में आपके कार्यों की जिम्मेवारी किसी दूसरे को नहीं देता है! जब आपने प्रभु से सुना है, तब आपको करना है जो वह कहता है।

निष्कर्ष

भविष्यसूचक वरदान अदभुत हैं, परन्तु हमें उनके शासन में नहीं रहना है। परन्तु यदि वे उसकी पुष्टि करते हैं जो परमेश्वर ने कहा है, तब हम पुष्टीकरण में सान्त्वना ले सकते हैं। यदि वे उसका खण्डन करते हैं जो परमेश्वर ने हम से कहा है - हमें उन्हें अस्वीकार करना है।

अपने जोश में, हम ऐसा कुछ करना चाहेंगे जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया या अभिषेक नहीं दिया है। यदि हम (पौलुस के समान) चेतावनी पातें हैं कि अपनी योजना के अनुसार न जाएँ, तब हमें रुकना चाहिए, और उपवास प्रार्थना के द्वारा सुनना चाहिए जो प्रभु हम से कह रहा है।

ये मार्गदर्शन हमें उनसे गुमराह हुए बिना उनका लाभ पाने के योग्य करेंगी।

अध्याय 3 – प्रेरित / भविष्यद्वक्ता का इकट्ठे काम करना

प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के बीच कड़ी

पिछली शताब्दी के आरम्भ में एक आत्मिक जाग्रती आई थी। परमेश्वर के एक महान कार्य में से, इस गति ने प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के पदों की एक गहरी शिक्षा को प्रेरित किया था जो हम ने कभी सुनी थी। जो लोग इस बेदारी के भाग थे उनको प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के विषय में विश्वास का बाइबल का सच्चा आधार मिला था। परमेश्वर ने इन अगुवों को इफिसियों 4:11 में वर्णित सेवा के वरदानों का अनोखा अन्तर्दृष्टि दिया था - "उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।" इस गति के आरम्भ के वर्षों में, परमेश्वर ने कई सच्चे प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा किया था। उनकी सिद्धान्तीय स्थिति थी कि प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं को इकट्ठे काम करना चाहिए। प्रेरितों को भविष्यद्वक्ताओं के बिना सेवा करने नहीं जाना है। भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरितों के बिना सेवा करने नहीं जाना है। प्रेरित / भविष्यद्वक्ता के ये दल सारे संसार भर में फैले हुए थे, और वे बड़े सामर्थ्य के साथ गए थे।

- लूका 11:49 में यीशु ने सिखाया: "इसलिए परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगी...।"
- 1 कुरिन्थियों 12:28 हमें बताता है: "परमेश्वर ने कलीसिया में अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं : प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता...।"
- फिर, इफिसियों 2:20 में पौलुस कहता है कि कलीसिया प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर" बनी है। कलीसिया की नींव रखने के लिए वह इन दो सेवाओं के मिलकर काम करने की बात करता है।

इन सब आयतों में प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के पदों में सम्बंध, इस चीज का संकेत है कि ये दो पद इकट्ठे काम करते हैं।

दल में सेवा

यीशु ने अपने चेलों को दो-दो के दल के बिना बाहर नहीं भेजा था। उसने उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा था जहाँ वह बाद ने स्वयं जाने वाला था (लूका 10:1 देखो)। आप ध्यान देंगे कि पौलुस, जो सबसे अधिक प्रसिद्ध प्रेरित था, बरनबास के साथ गया था। प्रेरितों 13:1 में, बरनबास का नाम प्रेरितों की सूची में है। "अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे, जैसे: बरनबास...।" बाद में भी, बरनबास को प्रेरित कह गया है, "परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने..." (प्रेरितों 14:14)। परन्तु उसे पहले स्थानीय कलीसिया में एक भविष्यद्वक्ता कहा गया है। जब वह बाद में मिशनरी-सुसमाचार प्रचार और कलीसिया स्थापना का काम करने लगा था, तब उसे प्रेरित कहा गया है। वह और पौलुस एक सामर्थी दल थे।

अन्त में, बरनबास और पौलुस अन्ताकिया लौट आए, जहाँ उन्होंने कुछ समय के लिए सेवा की। दुर्भाग्यवश, जवान यूहन्ना मरकुस पर विवाद के कारण वे अलग हो गए (प्रेरितों 15:36-39 देखो)। इसलिए, जब पौलुस उसकी मिशनरी-सुसमाचार प्रचार की दूसरी यात्रा को निकला, तो वह एक दूसरे भविष्यद्वक्ता सीलास को साथ ले गया। "...सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे... पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया" (प्रेरितों 15:32, 40)।

कभी-कभी पौलुस का दल बड़ा होता था। कम से कम एक बार उसके साथ नौ सामर्थी सेवाएं चल रही थीं। "बिरीया के पुर्रुस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस, और आसिया का

तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए" (प्रेरितों 20:4)। (सात पुरुष और पौलुस, और लूका जिसने ब्योरा भी लिखा था; कुल मिलाकर नौ थे)। कोई आश्चर्य नहीं उन्होंने आसिया माइनर को बड़े सामर्थ्य के साथ प्रभावित किया था!

बाइबल कहती है, "...हजार का पीछा एक मनुष्य करता, और उनके दस हज़ार को दो मनुष्य भगा देते" (व्यवस्था. 32:30)। यदि एक योद्धा प्रभु के साथ मिलकर काम करता है, तो वह हज़ार शत्रुओं को भगा सकता है। यह एक महान विजय है। यदि दो योद्धा इकट्ठे लड़ाई लड़ें तो प्रभावकारिता पाँच गुणा बढ़ जाती है। दल में केवल एक और सदस्य के आने से, आपकी विजय पाँच गुणा बढ़ जाएगी - दो दस हज़ार शत्रुओं को भगा देंगे। यदि आप दो जन इकट्ठे सेवा करते हैं तो आपको बहुत बड़ी सफलता हाथ लगेगी। जरा सोचो तो क्या होगा यदि आपके दल में तीन, या चार, या नौ सदस्य हैं। दल की बढ़त के समानुपात में सामर्थ्य में महान बढ़त होती है। नए नियम के समयों में एक दल में कम से कम एक प्रेरित और एक भविष्यद्वक्ता का इकट्ठे सेवा करना होता था।

तीन प्रकार के प्रेरित

सेवा में असन्तुलित हो जाना सम्भव है, चाहे आपका वरदान कुछ भी हों। भविष्यद्वक्ता विशेषकर इसमें सबसे अधिक भेद्य होते हैं, यदि वे प्रमाणित, अनुभवी प्रेरितों के साथ सेवा नहीं करते। इसलिए, हम बताना चाहते कि एक प्रेरित क्या है, और एक प्रेरित क्या नहीं है।

आजकल कलीसिया में प्रेरित का शीर्षक ले लेना लोकप्रिय हो गया है। मेरा विश्वास है उनमें से कई स्वयं-अभिषिक्त और स्वयं-नियुक्त हैं। वे सच्चे प्रेरित नहीं हैं हालाँकि वे अपने आप को उस नाम से बुलाते अवश्य हैं।

तीन प्रकार के प्रेरित हैं जिन्हें नए नियम में पाया जा सकता है:

1. मेम्ने के बारह प्रेरित

प्रकाशितवाक्य 21:14 बताता है, "...मेम्ने के बारह प्रेरितों के नाम लिखे थे।" इन बारह प्रेरितों का इस्राएल के साथ विशेष सम्बंध था। "इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा : 'अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। परन्तु इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना" (मत्ती 10:5-6)। जैसे उसने उन्हें उनकी पहली मिशनरी यात्रा में भेजा, तो यीशु ने उन्हें अशुद्धात्माओं, चंगा करने और मरे हुओं को जीवित करने की सामर्थ्य दी। परन्तु ध्यान दो: उसने उन्हें विशेषकर कहा कि वे अन्यजातियों के पास या सामरिया में न जाएँ, बल्कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास ही जाएँ।

इस सम्बंध को समझने के लिए, आओ हम पतरस की यीशु के साथ हुई एक बातचीत को दोबारा सुनें। पतरस ने पूछा, "देख, हम तो सबकुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिए हैं : तो हमें क्या मिलेगा?" यीशु ने उनसे कहा, "...जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे" (मत्ती 19:27-28)। मेम्ने के वे बारह प्रेरित, जिन्होंने यीशु के पीछे चलने के लिए सबकुछ त्याग दिया था, मसीह के भावी राज्य में इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करने के लिए सिंहासनों पर बैठकर प्रतिष्ठा पाएंगे।

2. स्वर्गारोहण प्रेरित

प्रेरितों का दूसरा दल जिसका बाइबल में वर्णन है स्वर्गारोहण प्रेरित हैं। जब यीशु स्वर्ग में लौट गया, उसने कलीसिया को वरदान दिए। ये वरदान प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनानेवाले, पास्टर और शिक्षक थे (इफिसियों 4:7, 11)। इसलिए हम उन्हें स्वर्गारोहण प्रेरित कहते हैं। वे यीशु के स्वर्गारोहण के समय दिए गए थे। वे मेम्ने के बारह प्रेरितों के चुने जाने के बाद थे। वे मेम्ने के बारह प्रेरितों का भाग नहीं थे जिन्हें इस्राएल के लिए बुलाया गया था। बदले में, उन्हें विशेषकर अन्यजाति कलीसिया को दिया गया था। इन स्वर्गारोहण प्रेरितों का अन्यजातियों के साथ एक विशेष सम्बंध है। जिनका नए नियम में नाम है, वे हैं पौलुस, बरनबास, अन्द्रुनीकुस, यूनियास (एक महिला का नाम), याकूब, सीलास, तीमुथियुस और दूसरे। इन पहले दो समूहों में ही नए नियम में कम से कम 20 विशेष प्रेरितों के नाम हैं।

3. झूठे प्रेरित

तीसरा समूह झूठे प्रेरित हैं। प्रकाशितवाक्य 2:2 में, यीशु इफिसुस की कलीसिया की प्रशंसा करता है: "मैं तेरे काम...जानता हूँ; और यह भी कि तू बुरे लोगों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परखकर झूठा पाया।" किसी ने विवेकपूर्वक कहा है: "एक झूठे प्रेरित का पहला चिन्ह यह हो सकता है कि वे अपने आप को प्रेरित कहते हैं।" 2 कुरिन्थियों 11:13 में, पौलुस कहता है, "ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल के काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।"

हमारा संसार झूठे प्रेरितों से भरा पड़ा है, ऐसे पुरुष जो प्रेरित होने के अभिमानी दावे कर रहे हैं। बाइबल के दृष्टिकोण में, एक सच्चा प्रेरित लोगों को मनवाने का प्रयत्न नहीं करेगा कि वह एक प्रेरित है, बल्कि यीशु मसीह के एक दास के रूप में लोगों की सेवा करेगा। यूनानी शब्द "doulos" का अनुवादः नए नियम में "सेवक" या "दास" किया गया है। यह ऐसे व्यक्ति की बात करता है जो अपने सम्पूर्ण रूप से अपने मालिक के अधीन है। वह वैसा ही करता है जैसे मालिक कहता है, और अधिकाँश चीजों में अपनी इच्छा नहीं करता है। पौलुस, याकूब और पतरस प्रेरितों ने अपना वर्णन करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया था। "पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिए अलग किया गया है" (रोमियों 1:1; याकूब 1:1; 2 पतरस 1:1)।

न तो पौलुस ने और न याकूब या पतरस ने अपने आपको परमेश्वर के लोगों पर एक शासक की भूमिका में देखा था। बदले में, उन्होंने अपने आप को मसीह के दास और केवल मसीह के दास ही नहीं, बल्कि लोगों के दास के रूप में देखा। वे सेवक अगुवे थे। एक सच्चे प्रेरित का यह सही रवैया है।

सच्चे प्रेरित चापलूस उपाधियों से बचते हैं

आओ हम अब प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचाप सुनानेवाले, पास्टर और शिक्षक की पाँच सेवाओं पर एक नज़र डालते हैं (इफिसियों 4:11)। ऐसा जान नहीं पड़ता है कि इनमें से एक भी शब्द बाइबल में उपाधि के रूप में उपयोग किया गया था!

आज की कलीसिया में, कई हैं जो अपने को प्रेरित घोषित करते हैं, और चाहते हैं कि उन्हें "प्रेरित क" या "प्रेरित ग" बुलाया जाए। हाल में मुझे ऐसी सभाओं में बुलाया गया था जहाँ कुछ अगुवों को प्रेरिताई में "ऊपर उठाया" जा रहा था। हालाँकि ये मेरे मित्र थे जिन्हें मैं प्रेम और आदर करता था, ऐसा लगता था कि वे "प्रेरिताई" के किसी भ्रम में परिश्रम कर रहे थे। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि एक सच्चा प्रेरित होना कोई ऊँचे उठाए जाने की बात नहीं है। यदि आप 1 कुरिन्थियों 4:13 में पौलुस की अपनी प्रेरिताई का बयोरा पढ़ें तो पाएँगे कि सच्चे प्रेरित अकसर "...जगत का कूड़ा और सब वस्तुओं की खुरचन के समान" माने जाते थे। कभी-कभी, एक सच्चे प्रेरित और एक झूठे प्रेरित में यही अन्तर होता है। झूठा ऊपर उठाया जाना चाहता है जबकि सच्चे "जगत के कूड़े" के समान दिखने के लिए तैयार हैं।

सेवाओं की उपाधियाँ नहीं – परन्तु काम के वर्णन

प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनानेवाले, पास्टर और शिक्षक ये शब्द बाइबल में उपाधियों के रूप में उपयोग नहीं किए गए थे। बदले में वे वास्तुकार, बढ़ई, चित्रकार या नलसाज के समान काम का वर्णन थे। काम का वर्णन एक कार्य को निश्चित करता है जिसे एक व्यक्ति करता है। प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनानेवाला, पास्टर और शिक्षक जैसे शब्दों के साथ भी ऐसा ही है, जो काम का वर्णन करते हैं, जिन्हें किया जाता है।

अधिकाँश समाजों में हम काम के वर्णन को उपाधि के रूप में उपयोग नहीं करते हैं। हम "नलसाज अ" या "चित्रकार ज" नहीं कहते। यह उनके काम के वर्णन को उनकी उपाधि बनाना हो जाता है। हम सम्भवतः, "अ, नलसाज" या "ज, चित्रकार" कहेंगे।

यीशु के बारे में कहा गया था, "क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र...है" (मरकुस 6:3)। यीशु ने चापलूसी वाली उपाधियाँ पाने या मनुष्यों का सम्मान और प्रशंसा पाने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। बल्कि, उसने "अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया..." (फिलि. 2:7)। यीशु ने दूसरों पर छोड़ दिया कि वे उसे क्या पुकारना चाहते हैं। उसका एक ही दावा था कि वह परमेश्वर का पुत्र है - एक स्थिति जिसे वह दूसरों के साथ बाँटता है। "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं" (यूहन्ना 1:12)।

दीनता द्वारा प्रगति

हम पौलुस की आत्मिक प्रगति पर एक करीबी नज़र डालेंगे। हम में से हर एक को, जैसे हम प्रभु को जानने के लिए उसके पीछे चलते हैं, आत्मिक प्रगति करनी चाहिए। परन्तु कुछ वर्तमान कलीसिया के अगुवों के दृष्टिकोण से पौलुस की प्रगति थोड़ी अनोखी लगेगी। पौलुस ने अपनी पूर्व की स्थिति को यह कहते हुए स्वीकारा, "मैं समझता हूँ कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूँ" (2 कुरिं. 11:5)। अपनी सेवा के प्रारंभिक दिनों में वह अपने को सबसे बड़ा प्रेरित समझता था। परन्तु वह वर्तमान की बात करते हुए कहता है, "मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं" (1 कुरिं. 15:9)। अन्त में, अपने एक अन्तिम पत्र में, पौलुस कहता है, "मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिसमें सब से बड़ा मैं हूँ" (1 तीमु. 1:15)।

तो पौलुस की प्रगति सबसे बड़े प्रेरित से सबसे बड़े पापी में हुई थी। यह आत्मिक बढ़त है! हम सब को पहचानना है कि पौलुस ऐसे समय में से गुज़रा था जब प्रभु ने उसके आत्म-दृष्टिकोण को ठीक किया था, और उसने परमेश्वर के सामने अधिक दीनता में चलना सीखा था।

मत्ती 23:8 में यीशु ने उसके अनुयायियों को आदेश दिया कि तुम "रब्बी न कहलाना"। यूनानी शब्दानुक्रमणिका निम्नलिखित ज्ञान देती है। यूनानी शब्द रब्बी का अक्षरशः अर्थ है: "मेरे मालिक"। आदर की एक पदीय उपाधि के रूप में, इसका अनुवाद होगा, "मालिक, रब्बी!" परन्तु यीशु ने उसके चेलों को कहा कि वे रब्बी न कहलाएँ। यीशु अभिमान से निकलने वाले आत्म प्रतिष्ठा के विरुद्ध था, जिसके द्वारा अच्छी सेवाओं वाले व्यक्ति नष्ट हो सकते हैं। उसने कहा, "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता...तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एक मात्र परमेश्वर की ओर से आता है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?" (यूहन्ना 5:41, 44)। यह एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न है जिस पर हर अगुवे को विचार करना चाहिए।

यीशु ने बाद में कहा, "जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है" (यूहन्ना 7:18)। निस्संदेह, हम जानते हैं कि यीशु ने अपने लिए लेने के बजाय, महिमा सदा उसके पिता को दी थी।

अब इसके विरुद्ध, "..अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकाले जाएँ : क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा की अपेक्षा अधिक प्रिय लगती थी" (यूहन्ना 12:42-43)। मनुष्यों से सम्मान और प्रशंसा पाने की चाह एक सरल फँदा है जिसमें हम फँस सकते हैं, और इससे आपकी सेवा और गवाही में समझौता होगा। पौलुस इस विषय को समर्थन देता है: "यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से" (1 थिस्स. 2:6)।

यदि आप मनुष्यों के प्रसन्न करनेवाले हो, जो मनुष्यों से प्रशंसा खोजता है, तब तो आप मसीह के सेवक नहीं हो सकते हो! पौलुस इसे समझता था जब उसने लिखा, "क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता" (गलातियों 1:10)। इसलिए, हमें उपाधियों और लोगों की प्रशंसा की चाह करने से सावधान रहना चाहिए।

याकूब 4:10 और 1 पतरस 5:6 के अनुसार, यदि आप अपने को दीन करते हो तो, प्रभु आपको बढ़ा सकता है और बढ़ाएगा। यदि वह आपको बढ़ाता है तो यह अपने को स्वयं बढ़ाने से काफी भिन्न है। इसलिए, हम सब को, स्वेच्छा से और निरन्तर दीनता का मार्ग लेना चाहिए।

अभिमान के विरुद्ध एक व्यावहारिक नुसखा

सुलेमान सिखाता है कि "झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं" (नीतिवचन 13:10)। सब झगड़ों रगड़ों के पीछे अभिमान होता है। जब अगुवे एक दूसरे से झगड़ रहे होते हैं, जब परिवार और कलीसियों में फूट होती है, तब कारण अभिमान होता है। यहीं से ही सदा झगड़े उत्पन्न होते हैं।

कभी-कभी मुझे झगड़ों और विवादों में मध्यस्थता करने के लिए बुलाया जाता है। जब मैं अगुवों से निपटने का प्रयास करता हूँ जो आपस में झगड़ा कर रहे हैं, तब मैं सदा पैर धोने की सभा पर जोर देता हूँ। हम पानी के कटोरे और तौलिए लाते हैं, और सब को एक दूसरे के पैर धोने के लिए कहते हैं। यह सदा अभिमान को तोड़ता है, और क्योंकि अभिमान तोड़ा गया है, झगड़े बंद हो जाते हैं। यह फिर उस मूड को बनाता है जिसकी बात याकूब करता है: "जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है" (याकूब 3:17)। शान्ति और तर्क के इस वातावरण में, अन्तर सरलता से निपटाए जाते हैं।

यीशु के समय में, कारें या बसें नहीं हुआ करती थीं। सड़कों पर मनुष्य और पशु दोनों होते थे। ऊँट, बैल, बकरियाँ, गाएँ, घोड़े और गधे लोगों के साथ साथ उन्हीं सड़कों पर चलते थे। तो यदि आप उन प्राचीन रास्तों पर चलते तो काफी सारे गोबर, कचड़ा और धूल में से चलना पड़ता। नए नियम के समय में किसी के पाँव धोना, घर के सबसे छोटे दास का काम होता था। तो जब प्रभु यीशु ने उसके चेलों के पाँव धोए थे (यूहन्ना 13:5), तब वह सबसे छोटे दास का स्थान ले रहा था। पतरस बहुत आचम्भित हुआ कि राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु एक सबसे छोटे दास का स्थान लेगा। परन्तु वह उसके चेलों के लिए, तब और अब, एक उदाहरण रख रहा था। मैं सोचता हूँ कि यीशु का उदाहरण हम सब के लिए काफी अच्छा है!

आपकी उपाधि क्या है?

गलातियों 5:16 में, पौलुस ने कहा, "...आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।" जब पतरस महान प्रेरित पौलुस की बात कर रहा था, तब उसने उसे "हमारे प्रिय भाई पौलुस" (2 पतरस 3:15) कहकर सम्भोदित किया था। "भाई पौलुस" - क्या यह दीनता की आवाज नहीं देता? हम आजकल केवल "भाई" क्यों नहीं कहते? मत्ती 23:8 को यहाँ दोहराना अच्छा होगा। यीशु ने कहा, "तुम रब्बी न कहलाना...तुम सब भाई हो।" तो यदि कलीसिया के अगुवों को केवल "भाई" कहा जाए तो क्या गलत है? यह पर्याप्त सम्मान है। मैं कई अगुवों को जानता हूँ जिनको "रेव्हरेंड" कहलाना अच्छा लगता है।

परन्तु बाइबल कहती है, "...उसका नाम पवित्र और भययोग्य है" (111:9)। कलीसिया के अगुवों के लिए उस गुण को लेना जो केवल परमेश्वर के योग्य है और उसे अपने लिए उपाधि के रूप में लगाना, मुझे अत्यन्त खतरनाक और अभिमानी लगता है।

विश्व-प्रसिद्ध कलीसिया के अगुवा, बिली ग्रहम का अच्छा उदाहरण

बिली ग्रहम जोर देते हैं कि जब उसके दल का कोई सदस्य सभा में उसका परिचय कराता है तो वह उसे "श्रीमान् ग्रहम" ही कहे। "श्रीमान्" शब्द के साथ कोई भी अभिमानी सम्मान नहीं जुड़ा होता है। कुछ लोग जो समझते नहीं है वह इस विषय में कैसा अनुभव करता है, उसे "रेव्हरेंड ग्रहम" या "रॉइट रेव्हरेंड डॉ. ग्रहम" भी कहते हैं। सभा में लोग उसे किस उपाधि से पुकारें उस पर उसका कोई नियंत्रण तो नहीं है, परन्तु वह अपने दल के सदस्यों को ऐसा करने नहीं देता है। यह केवल "श्रीमान् ग्रहम" है। वह इसी प्रकार जाना जाना पसन्द करता है। दूसरे लोग आप के नाम के आगे बड़ी बड़ी उपाधियाँ लगा सकते हैं। आपका उस पर कोई नियंत्रण नहीं है, परन्तु आप सम्मान की अभिमानी खोज को अस्वीकार कर सकते हो। आप यश और महिमा की अपने लक्ष्य और ईश्वर के रूप में खोज करने से इन्कार कर सकते हो।

इसलिए जब हम सच्चे प्रेरितों की तुलना झूठे प्रेरितों से करते हैं, तो अभिमान और आत्म-प्रतिष्ठा से प्रेरित उपाधियों की इस खोज का मामला निर्णायक है। एक सच्चा प्रेरित अपने आप को मसीह के दास के रूप में प्रस्तुत करेगा। एक सच्चा प्रेरित दूसरों को उसकी प्रेरिताई के अधीन लाने का प्रयास नहीं करेगा। एक सच्चा प्रेरित परमेश्वर के और लोगों के सेवक के रूप में सहायता करने के लिए कार्य करेगा।

निष्कर्ष

सम्भवतः एक कारण कि हम दल में सेवाओं को अधिक नहीं देखते हैं, क्योंकि बहुत सारे कलीसिया के अगुवों की यश या धन के लिए स्वार्थी इच्छा होती है।

आओ हम अन्धकार और सांसारिकता के कामों को त्यागें और अपने समान बहुमूल्य विश्वास वालों के साथ जुड़ें ताकि किसी भी कीमत पर खोए हुओं को जीत सकें।

आओ हम यीशु के अन्तिम आदेश को अपनी प्राथमिकता बनाए। "...तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)।

अध्याय 4 – एक कलीसिया पर एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक कैसे आता है

परिचय

अब हम प्रेरित, भविष्यद्वक्ता की सेवा के हमारे अध्ययन के और महत्त्वपूर्ण पहलू में आते हैं। यह समझना आवश्यक है कि हमारी कलीसियाएँ कैसे एक भविष्यद्वाणी के अभिषेक को प्राप्त कर सकती हैं। यदि हम इसे कैसे पाना है समझ लें, तो यह हमें और सारे विश्वासियों को, विभिन्न श्रेणी में, प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के अभिषेक में भाग लेने के लिए स्वतंत्र करेगा।

इस शिक्षा में हम पहले ही देख चुके हैं कि, इफिसियों 2:19-22 के अनुसार, कलीसियाओं की नींव रखने के लिए प्रेरित / भविष्यद्वक्ता के दलों की आवश्यकता है। पौलुस कहता है कि कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर" बनती है (इफि. 2:20)। प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनी कलीसिया में अकसर एक सामर्थी भविष्यद्वाणी की सेवा कार्य कर रही होगी। हम निश्चित रूप से देख सकते हैं कि नए नियम के समय की कलीसियाओं में ऐसा ही था।

कलीसियाओं पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक

"अब देखो, मैं आत्मा में बँधा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा; केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं" (प्रेरितों 20:22-23)। कई वर्ष पहले मैं इन वचनों को पढ़ रहा था कि इन में से कुछ उछल पड़ा। मुझे लगा कि हर कलीसिया में जहाँ-जहाँ पौलुस गया उसके लिए विश्वासियों द्वारा भविष्यद्वाणी के वचन आए थे। उन सब ने उसे चेतावनी दी जिसका उसे यरूशलेम में सामना करना पड़ेगा। मैं ने सोचा, "ऐसा कैसे है कि हर कलीसिया पर यह भविष्यद्वाणी का अभिषेक कार्य कर रहा था? हर कलीसिया ने उसे वही संदेश दिया, कि बन्धन और क्लेश उसके लिए तैयार हैं। उन्हें कैसे पता चला?

एक ही उत्तर जो सही लगता है वह है कि हर कलीसिया पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक काम कर रहा था। पौलुस ऐसी कलीसिया के विषय में बताता है कि जब सभा चल रही है, "परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए...तो उसके मन के भेद प्रगट हो जाएँगे और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है" (1 कुरिं. 14:23-25)। यह एक ऐसी कलीसिया है जिस पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक है। यह बताता है कि जब अविश्वासी उनकी सभा में आते हैं जहाँ अभिषेक है तो उनके साथ क्या होता है।

जैसे कलीसिया में भविष्यद्वाणियाँ आती हैं तो अविश्वासियों के हृदय के भेद प्रकट हो जाते हैं। भविष्यद्वाणी के वरदान के साथ जब ज्ञान का वचन आता है जिसके द्वारा हमारे जीवनों के रहस्य प्रकट होते हैं, तो अविश्वासी गिरकर परमेश्वर की आराधना करता है!

भविष्यद्वाणी के अभिषेक के विषय में व्यक्तिगत अनुभव

हम सोचेंगे कि कुरिन्थुस की कलीसिया में किस प्रकार की भविष्यद्वाणी आ रही थी जिससे अविश्वासी परमेश्वर को दण्डवत् करने लगे थे। मेरा विश्वास है यह व्यक्तिगत, प्रकट करनेवाली और ठीक समय की थी।

जब मैं बीस वर्ष का था तब मैं ने अपने जिले के एक छोटे कस्बे में एक नई कलीसिया आरम्भ की थी। हम विशेषकर मेरे युवक-संबंधी अनुभवहीनता के कारण, कई प्रकार की परीक्षाओं और क्लेशों से गुज़र रहे थे। मुझे सबकुछ के विषय में कुछ भी पता नहीं था, इसलिए मुझे बहुत समस्याएँ हुई। यह मेरे लिए दूसरी कलीसिया स्थापना का प्रयत्न था। पहली कलीसिया जो मैं ने एक पास के ग्रामीण इलाके में आरम्भ करने में सहायता की थी, एक दूसरे पास्टर को दे दी थी। इस कस्बे में पहले वर्ष के अन्त में एक महिला प्रकट हुई और सदस्यों में झूठ, मिथ्यापवाद और फूट फैलाने लगी। दो सप्ताहों के भीतर हमारे पास मण्डली में कोई भी नहीं बचा था। तो हम ने दोबारा आरम्भ किया, और दूसरे वर्ष के अन्त तक हमारे पास दोबारा एक अच्छी मण्डली बन गई थी। वही स्त्री सभाओं में दोबारा प्रकट हो गई। तीन सप्ताह के बाद वही कहानीः हमारे पास मण्डली में कोई नहीं रह गया था।

तो मैं ने तीसरी बार आरम्भ किया। कलीसिया दोबारा बढ़ने लगी और हम अच्छी तरह चल रहे थे, जब एक वर्ष के बाद वह स्त्री दोबारा प्रकट हुई। थोड़े समय के भीतर, मण्डली में कोई भी नहीं बचा था। एक के बाद एक तीन असफलताएँ! कुछ तो गड़बड़ थी। इसलिए मैं ने प्रभु से कहा, "मैं एक वर्ष और दूँगा; यदि इस बार सफलता नहीं मिली, तो मुझे छोड़ कर जाना होगा।" हम चौथे प्रयास के अन्त के वर्ष तक पहुँच रहे थे जब वह स्त्री दोबारा प्रकट हो गई। उसके विषय में सोचते हुए जो होने के लिए तैयार था, मैं इतना डर गया था कि मेरे घुटने काँप रहे थे। घोर निराशा में, मैं ने प्रभु को पुकारा कि वह मेरे पास किसी को भेजे जो मुझे समझा सके कि क्या हो रहा है। हमें कलीसिया नष्ट करनेवाली घटनाओं का बार-बार सामना क्यों करना पड़ रहा है?

हमारी प्रार्थना के उत्तर में, प्रभु ने हमारे पास एक प्रिय भाई और उसकी पत्नी को भेजा। उन्होंने अपने आपको एक प्रेरित और एक भविष्यद्वक्तिन नहीं कहा, और उन्होंने इस प्रकार काम किया। उनके पहुँचने के तीन दिन के भीतर, उन्होंने कलीसिया में एक जादू-टोना की आत्मा का पता लगा लिया था। उन्हें पता चल गया कि यह किसके भीतर बसी हुई है, उनके पास इसे प्रमाणित करने के लिए निष्पक्ष तथ्य थे, तो इसलिए वे इस जानकारी को मेरे पास लाए। अब तक मैं ने उनको कुछ भी बताया नहीं था कि हम ने इन चार वर्षों में क्या क्या सहा था। मैं चाहता था कि वे आएँ और पवित्र आत्मा की अगुआई में पता लगाएँ जो परमेश्वर उन्हें बताना चाहता था। प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन ने जादू-टोना की आत्मा का पता लगाने के बाद, मुझे इससे निपटने के लिए बाइबल का एक सिद्धान्त दिया।

"यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से निश्चित की जाए। यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जान। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहाँ जो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ" (मत्ती 18:15-20)। क्योंकि यह स्त्री अपने जादू-टोना से मन नहीं फिरा रही थी, हमें विवश होकर कलीसिया से कह देना पड़ा, और उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जानना पड़ा। (मत्ती 18:17)

जैसे कलीसिया ने बाइबल के इन सिद्धान्तों का पालन किया, तो हम ने वह सच पाया जिसकी यीशु ने प्रतिज्ञा की थी:

1. कलीसिया के रूप में, हम बाँध सकते थे और खोल सकते थे। हम ने जादू-टोना की आत्मा को बाँधा। हम ने अपराधी महिला को सदस्यता से खोल दिया।
2. "क्योंकि जहाँ जो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" हम ने पाया कि यीशु हमारे समर्थन के लिए उपस्थिति था। उस जादू-टोना की आत्मा के प्रभाव को बिलकुल शक्तिहीन कर दिया गया।

जैसे मैं कलीसिया को यह बात बता रहा था (जैसा यीशु ने निर्देश दिया है), अचानक प्रभु का आत्मा लोगों पर गिर पड़ा। वे अपने आप खड़े हो गए और युद्ध को जा रही सेना के समान लय में मार्च करने लगे। पवित्र आत्मा ने मण्डली को पकड़ लिया, और हम ने "बलवन्त" के विरुद्ध युद्ध करने और उसे बाँधने में कुछ समय बिताया। "कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बाँध ले? तब वह उसका घर लूट लेगा" (मत्ती 12:29)। सामर्थी मध्यस्थता, और बलवन्त के विरुद्ध सामर्थ्य के शब्द बोलने का काम कुछ 20 से 25 मिनट तक चलता रहा - इस सारे समय हम मार्च करते रहे और युद्ध के विषय के आराधना के गीत गाते रहे।

अचानक हमारी युद्ध की पुकार एक विजय की पुकार में बदल गई। हम जान गए कि युद्ध जीत लिया गया है। सब विजय के आनन्द में चिल्लाने लगे और अपने छुड़ानेवाले परमेश्वर के लिए स्तुति का झँडा फहराने लगे। यह सारी सभा पवित्र आत्मा के नियंत्रण में थी। इस सारे समय कोई मनुष्य नहीं परन्तु पवित्र आत्मा अगुआई कर रहा था। यह परमेश्वर का काम था!

उस सभा में, पवित्र आत्मा का महान उँडेला जाना आरम्भ हुआ। छः सप्ताहों के बाद, पहले से चार गुणा अधिक लोग थे, और दान और दशमाँश में देना छः गुणा हो गया था। अब हम कलीसिया के खर्चे चुका सकते थे और पास्टर (मेरा) और उसके परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त था। उसी समय, कलीसिया पर एक महान भविष्यद्वाणी का अभिषेक उतरा। जैसे हमारी कलीसिया के पास से कारें गुज़रती थीं, तो परमेश्वर का आत्मा चालकों को विवश करके हमारे पर्किंग क्षेत्र में मोड़ देता था। वे हमारी सभाओं में चले आते थे, और कभी-कभी उनके चेहरों पर आश्चर्य होता था कि उनको क्या हो गया है।

कलीसिया पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक होने के कारण, भविष्यद्वाणी का आत्मा सदस्यों में काम करने लगा था। भविष्यद्वाणियों के द्वारा, अविश्वासियों के हृदयों के रहस्य प्रकट हो जाते थे, और वही परिणाम दिखते थे जिनका उल्लेख पौलुस करता है। वे रोते और चिल्लाते हुए फ़र्श पर गिर पड़ते थे। कलीसिया के सदस्य प्रार्थना करने के लिए उन्हें घेर लेते थे। सब प्रकार के चमत्कारी धर्मान्तिरन, चंगाइयाँ और छुटकारे होते थे।

पापियों और धर्मत्यागियों के अतिरिक्त, कुछ पतित प्रचारक भी थे जिन्हें परमेश्वर ने पकड़ा, क्षमा किया और पुनःस्थापित किया। नौ महिनों तक हमारी हर सप्ताह में हर रात सभा होती थी। शायद ही कोई सभा होगी जिसमें ये चीजें न हुई होंगी। हम ने नौ महिनों तक सभाएँ चलाने की कोई योजना नहीं बनाई थी, परन्तु यह ऐसे ही हो रहा था। हर सभा में परमेश्वर की महिमा आती थी। पवित्र आत्मा लोगों को खींच कर ले आता था। परमेश्वर एक अदभुत तरीके से कार्य करता था और लोग कहते, "भाई / पास्टर, हम कल रात भी सभा करना चाहते हैं।" तो हम अगले रात की सभा की घोषणा कर देते। उन सारे महिनों में इसी प्रकार होता रहा। इसी कारण से मैं समझता हूँ कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:24-25 में क्या लिख रहा था। हम ने उन्हें अनुभव किया।

परन्तु वह क्या था जिसने कलीसिया पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक लाया था? यह एक प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन का इकट्ठे दल में सेवा करना था। यह कलीसिया आखिरकार एक सच्चे प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन की सामर्थी नींव पर स्थापित की गई थी।

मेरी व्यक्तिगत समस्या से निपटा जाता है

पहली कलीसिया की स्थापना करने में मुझे एक प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवा की सहायता नहीं मिली थी। मैं केवल एक जवान नौसिखिया पास्टर था जो पता लगाने का प्रयत्न कर रहा था कि सेवा क्या होती है। प्रभु ने कृपा से मुझे कुछ "भेड़ें" दे दी जिन पर मैं अभ्यास कर सकता। उन बेचारी भेड़ों को मेरे प्रशिक्षण की वेदी पर बलिदान होना पड़ा था! परन्तु कलीसिया ने मेरी गलतियों को पार कर लिया और यह आज भी है और एक उत्तम परमेश्वर का जन उसका पास्टर है।

परन्तु, दूसरी कलीसिया में ही प्रभु ने हमारे पास एक प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन को भेजा जिन्होंने उस कलीसिया की मजबूत नींव रखी।

परन्तु इस भक्त पति/पत्नी के दल को पहले दो बड़ी समस्याओं से निपटना था।

1. पहली समस्या थी कि मुझे पता नहीं था मेरी एक समस्या है।
2. और दूसरी थी कि मुझे पता नहीं था कि समस्या क्या है।

जिस समय वे आए थे, मैं मुख्य पास्टर था; मैं दूसरे अगुवों के एक दल की अगुआई करता था जो मेरी सहायता करते थे। मैं सोचता था कि जिस प्रकार मैं कलीसिया की सभा चलाता हूँ वह बाइबल का तरीका है और सही है। अपने जन्म से लेकर मैं एक साम्प्रदाय का भाग रहा था। बिना जाने, जो मैं करता था उसके द्वारा उन साम्प्रदायिक परम्पराओं के लिए अपने प्रेम का प्रदर्शन कर रहा था। मैं अपनी सभाएं उसी प्रकार करता था जिस प्रकार मैं ने अपनी साम्प्रदाय में होते देखा था। यह हमारी कलीसिया में आए प्रेरित को परेशान कर रहा था। वह हमें परम्परा द्वारा चलाए चलने और आत्मा द्वारा चलाए चलने में अन्तर सिखाने का प्रयत्न कर रहा था - एक धर्मविधि को करने और परमेश्वर की आवाज सुनने में अन्तर। वह चाहता था कि मैं हर सभा के लिए पवित्र आत्मा का निर्देश प्राप्त करूँ!

मैं ने एक सभा को चलाने के विषय में परमेश्वर की आवाज सुनना नहीं सीखा था। जब यह प्रेरित हमें बताता कि हमें परमेश्वर की आवाज सुनने और आत्मा द्वारा चलाए चलने की आवश्यकता है, तब मैं जोर से "आमीन!" चिल्लाता। परन्तु अगली सभा में, मैं उठता और साम्प्रदाय की परम्पराओं पर चलते हुए पुराने तरीके से ही सभा चलाता। परन्तु मुझे पता नहीं था कि यह हो रहा था। मैं था "घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते" (भजन 32:9)। प्रभु को मेरा ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए मेरे सिर पर एक ईंट मारनी थी, परन्तु ऐसा होना अच्छा नहीं था। इस भक्त प्रेरित ने मेरी आवश्यकता को पहचान लिया था। उस रविवार सुबह मैं पुराने साम्प्रदाय की परम्परा के तरीके से सभा चला रहा था। सभा चलते तीस मिनट ही हुए थे कि प्रेरित इतना परेशान और उत्तेजित हो गया कि वह खड़ा हो गया। वह लम्बे लम्बे डग भरते हुए मंच पर आया और मंच पर जोर से मारते हुए, चिल्लाया, "भाई, लगभग दो सप्ताह से मैं आपको परमेश्वर की आवाज सुनना सिखाने का प्रयत्न कर रहा हूँ! आप इन धार्मिक विधियों को कब छोड़ने वाले हो और कब परमेश्वर की आवाज सुननेवाले हो!" उसने मुझे सारी मण्डली के सामने फटकारा और सुधारा और मुझे इसी की आवश्यकता थी। "जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य हैं, परन्तु बैरी अधिक चुम्बन करता है" (नीतिवचन 27:6)। उसे मेरा ध्यान मिल गया, इसलिए मैं ने दबे भाव से कहा, "क्षमा कीजिए, मुझे क्या करना चाहिए?" उसने उत्तर दिया, "भाई, परमेश्वर चाहता है आप भविष्यद्वाणी द्वारा प्रचार करें। वह चाहता है आप प्रकटीकरण द्वारा प्रचार करें।" मैं ने कहा, "ठीक है, मुझे ऐसा करना अच्छा लगेगा परन्तु मैं ने इसके विषय में पहले कभी सुना नहीं है। यह क्या है?"

वहाँ मैं, मण्डली के सामने अपने "बाइबल स्कूल का प्रशिक्षण" पा रहा था! तो उसने अपनी बाइबल में 1 कुरिन्थियों 14:6 खोला और पढ़ा - "इसलिए हे भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बातें करूँ, और प्रकाश या ज्ञान या भविष्यद्वाणी या उपदेश की बातें तुम से न करूँ, तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा?"

<u>अगुवों के लिए यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण आयत है (1 कुरिं. 14:6)। यहाँ प्रेरित पौलुस चार तरीकों का वर्णन करता है जिसके द्वारा हम बोलते, सिखाते और प्रचार करते हैं:</u>

1. प्रकाश,
2. ज्ञान,
3. भविष्यद्वाणी, और
4. उपदेश के द्वारा।

उस समय तक, मैं ने ज्ञान या उपदेश के अलावा नहीं सिखाया था; जो मैं बाइबल के अध्ययन से पाता उसे सिखाता था; पवित्रशास्त्र की खरी शिक्षा देता था। मैं ने प्रकटीकरण द्वारा प्रचार, या भविष्यद्वाणी द्वारा प्रचार के विषय में कभी नहीं सुना था। मैं ने इस आयत को कई बार पढ़ा था, परन्तु मैं ने प्रचार और सिखाने के इन चार तरीकों पर पहले कभी ध्यान नहीं दिया था।

तब प्रेरित ने मुझे कहा, "प्रभु चाहता है कि आप आज सुबह से ही प्रकटीकरण और भविष्यद्वाणी द्वारा प्रचार करना आरम्भ करो।" मैं ने उत्तर दिया, "मैं ऐसा करना चाहूँगा, परन्तु आप जानते हो मैं कर नहीं सकता। यह एक चमत्कार होगा, जिसे परमेश्वर को मेरे लिए और मेरे द्वारा करना होगा।"

हाथ रखने के द्वारा प्रदान

तब प्रेरित ने कहा, "मैं आपके सिर पर हाथ रखूँगा और प्रार्थना करूँगा कि प्रभु आपको बुद्धि और प्रकाश का आत्मा दे।" आपको याद होगा कि पौलुस ने इफिसियों के लिए प्रार्थना की थी। "कि...महिमा का पिता...तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे...कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मिरास की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है..." (इफि. 1:17-19)।

फिर प्रेरित और उसकी पत्नी ने मुझ पर हाथ रखे और प्रार्थना की। प्रार्थना करके उसने कहा, "अब मैं चाहता हूँ आप भविष्यद्वाणी द्वारा प्रचार करो; मेरा अर्थ है - मैं चाहता हूँ आप अभी इसी समय करो।" मैं ने प्रार्थना की और कहा, "प्रभु, मैं ने यह पहले कभी नहीं किया है, मुझे पता नहीं है यह सब क्या है, परन्तु क्योंकि यह बाइबल में है और मैं ऐसा चाहता हूँ, तो इसलिए मेरी सहायता कर।" जैसे ही मैं ने यह प्रार्थना समाप्त की, प्रकाश का आत्मा अचानक मुझ में आया, और एक क्षण के अन्दर पवित्र आत्मा ने मेरे मन और आत्मा को परमेश्वर के वचन से नई जानकारी और समझ से भर दिया। यह वर्णन करना कठिन है कि जब आप में प्रकाश का आत्मा आता है तो क्या होता है, परन्तु मेरे साथ इस प्रकार हुआ: एक क्षण भर में, आत्मा ने मेरे मन में परमेश्वर की योजना और उसके तरीकों को समझने के लिए उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक की आयतों को भर दिया। वो समझ आई जिसे मैं ने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। उस क्षण भर में जो कुछ भी मुझे दिया गया था, कलीसिया को सिखाने में छः महिने लग गए।

यह अविश्वसनीय था!

इसे अच्छी तरह समझाने के लिए कुछ पृष्ठभूमि की आवश्यकता है। मैं ने किसी बाइबल स्कूल में प्रशिक्षण नहीं लिया हुया था। परन्तु जब मैं जवान था तब मैं अपना काफी समय "घुटना-विद्या" में बिताया था, अर्थात् - मैं हर दिन अपने बिस्तर के पास घुटनों पर एक या अधिक घंटा बिताता था; अपनी बाइबल अपने सामने खोल कर रखता और पढ़ता और परमेश्वर से प्रार्थना करता जो इसमें लिखा है समझने में मेरी सहायता करे। इसके अतिरिक्त, मेरे एक आरम्भित गुरू (मेन्टर) ने मुझे चुनौती दी कि मैं हर दिन बाइबल से पाँच आयतें कंठस्थ करूँ। यदि तुम ऐसा नियमित करोगे, तो तुम बाइबल की सारी पुस्तकों को याद कर लोगे। एक दिन में पाँच आयतें एक वर्ष में 1,825 आयतें होती हैं। आप सारा नया नियम कुछ वर्षों में कंठस्थ कर सकते हो।

जो व्यक्ति मुझे ऐसा करने की चुनौती दे रहा था, उसने 12 वर्ष के होते-होते सारा नया नियम कंठस्थ कर लिया था। और 22 वर्ष के होते-होते उसने सारा पुराना नियम भी कंठस्थ कर लिया था। उसके पिता ने, जो एक अच्छा पास्टर था, उसमें बचपन से ही कंठस्थ करने की आदत डाल दी थी। कितनी अदभुत मिरास! मैं अपने मेन्टर के समान बाइबल कंठस्थ तो नहीं कर सका था, परन्तु जब तक प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन हमारे आए थे, मैं ने पुराने और नए नियम के बहुत सारे पवित्रशास्त्र कंठस्थ कर लिए थे।

इस सब के बावजूद, मैं स्वीकार करता हूँ कि "घुटना-विद्या" के उन सारे वर्षों में मैं बहुत कम बाइबल सीख पाया था। मैं अधिकाँश पुराने और नए नियम को समझ नहीं पाया था, हालाँकि मैं उसे पढ़ता, मैं उस पर मनन करता, मैं उसे कंठस्थ करता था। यीशु ने हमें बताया है कि जब पवित्र आत्मा आएगा, "वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा" (यूहन्ना 14:26)। इससे पहले पवित्र आत्मा आपको पवित्रशास्त्र स्मरण कराए, उसे आपके मन में याद किया हुआ होना चाहिए। पहले आपको वचन कंठस्थ करने होंगे, तब ही पवित्र आत्मा "सब तुम्हें स्मरण कराएगा।"

दाऊद ने कहा, "मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है...तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन, मैं ने अपने मुँह से किया है" (भजन 119:11, 13)। आप उसे ही बोल सकते हो जिसे कंठस्थ किया है। हम सब को वह करना चाहिए जो दाऊद ने किया था, परमेश्वर के वचन को हमारे हृदय में जमा करना और उसके नियमों को बोलना। यीशु के शब्दों के द्वारा प्रभु का वचन उसके चेलों के पास आया था। उसने उन्हें बहुत सी शिक्षाएँ दी थीं। बाद में, पवित्र आत्मा ने उसके शब्दों को उसे याद दिलाया और उन्होंने चार सुसमाचार लिखे।

प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन के मेरे लिए प्रार्थना करने के बाद, पवित्र आत्मा ने मेरे साथ यह किया। उसने उन सारे वर्षों का बाइबल का कंठस्थ करना, पढ़ना और अध्ययन करना लिया और आयतों को याद दिलाया, और इस प्रकार सुव्यवस्थित किया कि, अचानक और अलौकिक रूप से, मैं उनको स्मरण कर सका, समझ सका और दूसरों को सिखा सका। पौलुस उस अलौकिक योग्यता को प्रकाश का आत्मा कहता है।

जब प्रकाश का आत्मा मेरे ऊपर आया, तब प्रभु ने उस सब को लिया जो मेरी स्मृति में था और क्षण भर के अन्दर उसे सुव्यवस्थित कर दिया। उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक, यह ईश्वरीय सत्य के एक महान परिदृश्य के समान बन गया। और यह चमत्कार आने वाले कई वर्षों तक होता रहा।

इससे पहले पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को आपको स्मरण करा सके, उसे आपको स्मरण में रखना अत्यावश्यक होता है। बाइबल का अध्ययन करना और पवित्रशास्त्र कंठस्थ करना किसी को भी माफ नहीं है। परन्तु कंठस्थ करने और अध्ययन के बावजूद भी आप मेरे समान बंध कर रह सकते हो, और कुछ न समझो। फिर भी, प्रकाश का आत्मा इसे इकट्ठा कर सकता है और पवित्रशास्त्र में अलौकिक अन्तदृष्टि दे सकता है। बुद्धि और प्रकाश का आत्मा पाने से लेकर जो कुछ भी मैं ने सिखाया है इस वरदान का परिणाम है जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया है।

प्रकाश के आत्मा के बाद – एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक

मेरे ऊपर प्रकाश के आत्मा के आने के बाद, कलीसिया पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक उतरा जिसके परिणाम मैं पहले ही बता चुका हूँ। उसके बाद हम ने बेदारी के अदभुत समय देखे। यह एक प्रेरित और भविष्यद्वक्तिन के कारण हुआ था जिन्होंने कलीसिया की और मेरी सेवा की थी।

बाद में, जब मैं ने प्रभु से पूछा कि एक कलीसिया पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक कैसे आता है (जैसे एक व्यक्ति पर आता है उसके विपरीत), तो उसने मुझे इफिसियों 2:20 स्मरण कराया: "और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर...बनाए गए हो।" परन्तु इस प्रक्रिया को समझने के लिए मुझे अधिक अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता थी।

प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं का कलीसियाओं की नींव रखना और भविष्यद्वाणी का अभिषेक प्रदान करना

प्रारंभिक कलीसिया में नींव रखने के लिए प्रेरित और भविष्यद्वक्ता काफी काम कर रहे थे। जैसे सुसमाचार यरूशलेम से अन्यजातियों में फैलने लगा, एक दिलचस्प घटना घटी थी। आओ हम चार उदाहरण देखें:

1. प्रेरितों अध्याय 8 सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस की सामरिया में महान चमत्कार-चंगाई की कहानी है। लगभग सारा शहर बड़े आनन्द के साथ मसीह की ओर फिर गया, और फिलिप्पुस ने नए विश्वासियों को पानी का बपतिस्मा दिया। परन्तु, उन्होंने अभी पवित्र आत्मा नहीं पाया था।

जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना जो सामरिया में हो रहा था, तो उन्होंने क्या किया? वे वहाँ इस नई कलीसिया की नींव रखने गए। बाइबल का विवरण इस प्रकार है: "जब प्रेरितों ने जो रूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था; उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।" (प्रेरितों 8:14-17)

पतरस हमें बताता है कि हम कलीसिया को एक "आत्मिक घर" के रूप में सोचें जो "जीवित पत्थरों" से बना है: "तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो..." (1 पतरस 2:5)।

प्रक्रिया इस प्रकार कार्य करती है। यह वे साधन हैं जिनके द्वारा यीशु अपनी कलीसिया बनाता है।

सुसमाचार प्रचारक अविश्वासियों के पास आता है और उन्हें सुसमाचार सुनाता है। जब वह पापियों को उद्धार और चंगाई लाने का अपना पूरा कर लेता है, तब आपके पास जीवते पत्थरों का एक ढेर रह जाता है।

पत्थरों का एक ढेर इमारत नहीं है

इससे पहले आपको एक घर मिले आपको पत्थरों को एक अच्छी पर नींव सही क्रम में लगाना होता है। यहीं पर नींव के स्तर पर प्रेरित और भविष्यद्वक्ता का काम आरम्भ होता है। पास्टर और शिक्षक का काम बाद में नींव रखने के बाद आता है जब दीवारें खड़ी की जाती और घर पूरा बनाया जाता है।

"और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो। जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो" (इफिसियों 2:20-22)।

तो ये नींवें कैसे बनती हैं?

आप देखेंगे कि प्रेरितों ने पहले सामरियों पर हाथ रखे थे कि वे पवित्र आत्मा पाएँ। हाथ रखना प्रदान करने के लिए होता है। सामरिया के नए विश्वासियों को भविष्यसूचक आयाम में पवित्र आत्मा का अभिषेक और सामर्थ्य चाहिए था। भविष्यद्वक्ता योएल ने कहा था कि जब अन्तिम दिनों में लोगों पर पवित्र आत्मा उँडेला जाएगा तो ऐसा ही होगा। "परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी..." (प्रेरितों 2:17)। भविष्यद्वाणी उन पर एक भविष्यसूचक अभिषेक का प्रमाण है जो भविष्यद्वाणी करते हैं।

प्रेरितों के हाथ रखने के बाद, सामरिया की कलीसिया और प्रेरितों की पुस्तक में उल्लेख हुई दूसरे कलीसियाओं ने पवित्र आत्मा पाया और उन पर भविष्यद्वाणी का अभिषेक टिक गया था। प्रेरितों की पुस्तक में नए विश्वासी आत्मा के वरदानों में कार्य करने, अन्य अन्य भाषाओं में बोलने, भविष्यद्वाणी करने, ज्ञान का वचन बोलने लगे थे, ताकि जब अविश्वासी उनकी सभाओं में आते थे, तो उनके हृदय के रहस्य इन भविष्यद्वाणी के वरदानों द्वारा प्रकट किए जाते थे। बाद में, जब पौलुस इन कलीसियाओं में आया था, सदस्यों को पवित्र आत्मा द्वारा पता चला था कि उसके साथ क्या होनेवाला है - और उन्होंने उसे बताया - जैसे हम ने पहले कहा था (प्रेरितों 20:22-23)।

2. प्रेरितों अध्याय 10 में, हमारे पास एक और उदाहरण है जब प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सहायता से एक नई कलीसिया की नींव रखी जाती है और एक भविष्यद्वाणी के अभिषेक में आती है। पतरस को एक स्वर्गदूत दिखाई दिया था जब वह याफा में प्रार्थना कर रहा था। स्वर्गदूत का प्रकट होना, और इसके साथ जो चमत्कारी दर्शन दिखाई दिए थे, उसके कारण उसे कुरनेलियुस के घर जाना पड़ा था। कुरनेलियुस एक भक्त अन्यजाति और रोमी सूबेदार था। प्रेरितों 10:34 से लेकर अध्याय के अन्त तक, पतरस का कुरनेलियुस के घर पहुँचने के बाद क्या हुआ था उसका विवरण है। जब पतरस इन रोमियों को प्रचार कर रहा था, पवित्र आत्मा उन उतर आया था। "पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सुननेवालों पर उतर आया" (प्रेरितों 10:44)। अब जो यहूदी पतरस के साथ आए थे विश्वास नहीं करते थे कि अन्यजाति उद्धार पाएँगे, वे पवित्र आत्मा भी पाएँगे दूर की बात थी; इसलिए जब उन्होंने यह देखा तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने करनेलियुस के घराने को अन्यभाषों में बोलते और परमेश्वर की महिमा करते सुना, और चकित होकर कहने लगे, "जिन्होंने हमारे समान बपतिस्मा पाया है!"

दल में सेवा का महत्त्व

दल में सेवा का महत्त्व यहाँ चित्रित किया गया है। हम जानते हैं कि पतरस कुरनेलियुस के घर अकेला नहीं गया था, परन्तु "...याफा के भाइयों में से कुछ उनके साथ हो लिए" (प्रेरितों 10:23)। बाइबल में उनके नाम तो नहीं दिए गए हैं, परन्तु पतरस वहाँ

एक दल के साथ गया था। तो इस प्रकार हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जिस प्रकार प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के एक दल ने सामरिया में सेवा की थी, उसी प्रकार कुरनेलयुिस के घर में भी एक दल ने सेवा की थी। न केवल धराने ने पवित्र आत्मा पाया, परन्तु आत्मा के वरदान भी उनके जीवनों में उँडेले गए थे, एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक उन पर उतरा था, और वे अलौकिक में चलनेवाली एक कलीसिया बन गए थे। अन्यजातियों में प्रेरिताई की सेवा से पवित्र आत्मा के उँडेले जाने के परिणाम वही हुए थे जो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में हुए थे।

बाद में, जब पतरस यरूशलेम की कलीसिया के प्राचीनों के सामने अपने कार्यों का बचाव कर रहा था, तब उसने कहा, "अत: जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?" (प्रेरितों 11:17)। अन्यजातियों को वही वरदान उन्हीं परिणामों के साथ मिला था।

"जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना" (प्रेरितों 10:45-46)।

3. प्रेरितों 11:19-27 में, कुछ उत्तर में अन्ताकिया तक जाकर सुसमाचार कर रहे थे। उन दिनों, यह यरूशलेम से बहुत दूर माना जाता था। जब वे अन्ताकिया पहुँचे, तो उन्होंने यूनानियों को सुसमाचार सुनाया, जिनमें से कइयों ने विश्वास किया और प्रभु की ओर फिरे।

अब आओ हम ध्यान दें: जब इसकी खबर यरूशलेम में कलीसिया को मिली, तो उन्होंने तुरन्त बरनबास को अन्ताकिया भेज दिया। बरनबास क्यों? जैसे हम ने पहले इस अध्ययन में बताया है कि बरनबास प्रेरित और भविष्यद्वक्ता दोनों था परन्तु वह अकेले नहीं गया। आयत 25 हमें बताती है कि वह पौलुस को (जो अभी भी शाऊल कहलाता था) ढूँढ़ने तरसुस गया। "तब वह शाऊल को ढूँढ़ने के लिए तरसुस चला गया" (प्रेरितों 11:25)। बरनबास ने एक दल की आवश्यकता महसूस की थी और इसलिए उसने पौलुस की सहायता चाही थी। एक वर्ष तक, वे दोनो पुरुष अन्ताकिया की नई कलीसिया के साथ मिलते रहे और विश्वासियों को सिखाते रहे। "जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया ले आया; और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे; और चेले सब से पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए" (प्रेरितों 11:26)।

अगली बात जो हम अन्ताकिया की कलीसिया के विषय में पढ़ते हैं वह है "उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से आए" (प्रेरितों 11:27)। यरूशलेम से आए भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा, इस कलीसिया में भविष्यद्वाणी की सेवा कार्य करने लगी थी। विवरण बताता है: "उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा - वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा" (प्रेरितों 11:28)।

विश्वासियों के इकट्ठा होने के तुरन्त बाद, प्रेरित और भविष्यद्वक्ता वहाँ पहुँच गए क्योंकि कलीसिया को उसी नींव पर बनना था जो केवल वे ही रख सकते थे। तब नए विश्वासियों को भविष्यद्वाणी की सेवा प्रदान की गई। इससे नए विश्वासी भविष्यद्वाणी करने और ज्ञान के वचन प्रयोग करने लगे, जिससे लोगों के हृदयों के रहस्य प्रकट हो सकते थे। हम इस नमूने को सारे नए नियम में दोहराया हुआ देखते हैं।

4. जैसे प्रेरितों 19:1-8 में बताया गया है, पौलुस इफिसुस गया। वे पवित्र आत्मा के विषय में कुछ नहीं जानते थे, इसलिए पौलुस ने उन्हें समझाया कि उन्हें उसकी आवश्यकता है। "जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे" (प्रेरितों 19:6)। इससे पहले तक उस कलीसिया में भविष्यद्वाणी का अभिषेक या पवित्र आत्मा के वरदान नहीं थे। परन्तु, जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा और अन्य भाषाओं में बोले और भविष्यद्वाणी की।

सारी प्रेरितों की पुस्तक में जब प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं ने नए विश्वासियों पर हाथ रखे थे, उन्हें पवित्र आत्मा और सामर्थ्य मिला था। प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं से सामर्थ्य अन्तरित होता था। हम ऐसा ही 21वीं शताब्दी में होता हुआ देखना चाहते हैं। जिस चमत्कार ने मेरा जीवन परिवर्तित कर दिया था, आज भी विश्वासियों के जीवनों में हो सकता है, और हो भी रहा है। हाथ रखना और लोगों के लिए प्रार्थना करना कोई विधि नहीं है। कुछ चमत्कार की अपेक्षा की जा सकती है।

पुराने नियम में अभिषेक का अन्तरण

पुराने नियम में परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल के पुरनियों में से 70 को इकट्ठा करने को आदेश दिया और कहा, "...जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें समवाऊँगा" (गिनती 11:16-17)। परमेश्वर ने जो आत्मा (अभिषेक और वरदान) मूसा पर था उसे पुरनियों में डालने की प्रतीज्ञा की थी। इसके बाद ही वे मूसा के साथ अगुआई में खड़े होने के योग्य हुए थे। परमेश्वर ने मूसा को कहा था कि जब आत्मा सत्तर पुरनियों में डाला जाएगा तो, "...वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा" (गिनती 11:17)। तो इस प्रकार अभिषेक का एक अभिषिक्त अगुवे से दूसरे पर अन्तरित करने का सिद्धान्त बाइबल का एक उचित विचार और व्यवहार है।

मूसा और यहोशू

बाद में, प्रभु ने मूसा को अपने उत्तराधिकारी, यहोशू पर उसके हाथ रखने को कहा। ऐसा करने से, मूसा उसका कुछ अधिकार यहोशू पर डालेगा। "यहोवा ने मूसा से कहा, 'तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह ऐसा पुरुष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है...और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे'" (गिनती 27:18, 20)।

मूसा को एक आत्मिक अधिकार और अभिषेक दिया गया था जो मूसा के हाथ रखने से यहोशू पर चला जाएगा। हम इसे यहोशू के जीवन में सिद्ध होता हुआ देखते हैं। "और नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे" (व्यवस्था. 34:9)।

पौलुस और तीमुथियुस - आज के लिए आदर्श

प्रकट है कि तीमुथियुस एक बहुत ही विशेष नौजवान था जो पौलुस की शिक्षाओं और मार्गदर्शन से चेला बना था। पौलुस ने तीमुथियुस के जीवन में इस प्रकार से भविष्यद्वाणी से बात की थी कि उसकी सेवा सदा के लिए प्रभावित हो गई थी। पौलुस तीमुथियुस को उन भविष्यद्वाणियों का स्मरण दिलाता है ..."जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रह" (1 तीमु. 1:18)। जब एक भविष्यद्वक्ता भविष्यद्वाणी करता है, या जब भविष्यद्वक्ताओं के धर्मवृद्ध किसी के ऊपर प्रार्थना करते हैं, तो कुछ बड़े महत्त्व का काम हो सकता है। यह तीमुतियुस की सेवा में बड़े महत्त्व का था। उसके आत्मिक युद्ध की सफलता उस भविष्यद्वाणी के वचन पर निर्भर थी।

1 तीमुथियुस 4:14 में पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देता है, "उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्रचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।" यूनानी का शब्द जिसे यहाँ "वरदान" अनुवाद किया गया है, उसका अर्थ है "एक अलौकिक योग्यता"। भविष्यद्वक्ताओं के धर्मवृद्धों ने तीमुथियुस पर हाथ रखे, उस पर भविष्यद्वाणी की, और उसे एक आत्मिक वरदान दिया गया था। यह एक अलौकिक योग्यता थी जिसके विषय में पौलुस उसे उपदेश देता है कि वह उसकी उपेक्षा न करे। और इस प्रकार बाइबल में अनेक उदाहरण हैं कि जब लोगों पर प्रार्थना और भविष्यद्वाणी के साथ हाथ रखे गए थे तो उन पर अभिषेक, वरदान, और परमेश्वर का सामर्थ्य उतरा था।

यीशु ने हमें कहा कि हम बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएँगे (मरकुस 16:18)। हम में से कइयों ने ऐसा किया है, परन्तु संसार की अधिकाँश कलीसियाओं में ऐसा नहीं होता है कि भविष्यद्वक्ताओं के धर्मवृद्धों ने अगुवों और सदस्यों पर हाथ रख कर उनके जीवनों में नींव रखी हो। यह अत्यावश्यक है कि हम बाइबल के अनुसार कार्य करें यदि हम बाइबल के परिणाम चाहते हैं। यदि हम 21वीं शताब्दी की कलीसिया को सामर्थ्य और अनुग्रह से भरा देखना चाहते हैं तो, हमें परमेश्वर को परमेश्वर होने देना है और पता लगाना है कि वह क्या चाहता है सेवा किस प्रकार की जाए।

सबसे पहली बात कलीसियाओं में आत्मिक नींवें रखने, और लोगों पर एक भविष्यद्वाणी का अभिषेक अन्तिरत करने की आवश्यकता है। प्रभु ने नियुक्त किया है कि प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के दल इस काम को करें। हम प्रार्थना करते हैं कि, हे प्रभु, ऐसा हो जाए! हम उस चीज का दोहराया हुआ देखना चाहते हैं जब आप ने 120 विश्वासियों को पिन्तेकुस्त के दिन अधिकार दिया था। "और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा" (मरकुस 16:20)।

यदि आप भी यही चाहते हैं तो आप कर सकते हैं! इस प्रकार प्रार्थना कीजिए:

"पिता, मैं विश्वास की माँग करता हूँ ताकि मेरा हृदय आप से पा सके, और फिर जो मैं ने पाया है उससे दूसरों की सेवा कर सकूँ। मेरा विश्वास है तू आज भी चिन्हों, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों के द्वार काम करता है। प्रभु, जैसे मैं प्रार्थना कर रहा हूँ मेरे पास सामर्थ्य के साथ आ। मैं खुद में कमज़ोर और आशाहीन हूँ परन्तु मेरा भरोसा तुझ में है। चिन्हों के द्वारा अपने वचन को प्रमाणित कर, अपना अभिषेक और वरदान मुझ में अन्तिरत कर और उन में भी कर जिन के लिए मैं प्रार्थना करूँगा। आमीन।"

आज कलीसिया में प्रेरितों की पुनःस्थापना और पहचान

1. परिचय

20वीं शताब्दी में पवित्र आत्मा के काम को कुछ इस प्रकार बताते हैं:

1900 - पैन्टेकोस्टल मिशन का आरम्भ
1950 - बिली ग्रहम और दूसरे सुसमाचार प्रचारकों का उदय
1960 - गरीबों के लिए दया (और कैरिस्मेटिक गति -सिखाने, आत्मा के वरदानों, देह की सेवा पर बल)
1970 - एक महान प्रार्थना की गति
1980 - भविष्यद्वक्ता का पद
1990 - प्रेरित का पद (और विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार)

कुछ विश्वास करते हैं कि प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की सेवा, और आत्मा के वरदान बाइबल के सम्पूर्ण होने के साथ समाप्त हो गए थे। यह विश्वास इफिसियों 4:11 के सामने टिका नहीं रह सकता है क्योंकि पंचगुणा स्वर्गारोहण के वरदानों को अपना काम करते रहना है जब तक "कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक बढ़ न जाएँ।" हमें परिपक्वता के उस स्तर तक अभी पहुँचना है! इसके इतिरिक्त, आत्मा के वरदानों को काम करते रहना है जब तक "सर्वसिद्ध" आ नहीं जाता (1 कुरिं. 13:10)। इस प्रकार मसीह के पुनरागमन तक आत्मा के वरदानों को बने रहना है।

2. प्रेरित शब्द का अर्थ

"Apostolos" शब्द नए नियम में इस प्रकार प्रयोग किया गया है:
मत्ती, मरकुस, यूहन्ना (एक-एक बार); प्रेरितों (28); पौलुस के पत्र (34); इब्रानियों (1); पतरस (3); यहूदा (1); प्रकाशितवाक्य (3)। इसका अर्थ है: जिसे भेजा गया है। "एक प्रतिनिधि, संदेशवाहक जिसे आदेश के साथ भेजा गया है।" प्रतिनिधि, दूत, संदेशवाहक, मिशनरी।

(अ) एक अभिप्राय से हर मसीही भेजा हुआ है। महान नियुक्ति पर विचार करो (मत्ती 28; रोमियों 10:14-15)।

(आ) सारी कलीसिया प्रेरितिक है। नाइसीन क्रीड कहती है, "हम एक पवित्र विश्वव्यापी प्रेरितिक कलीसिया हैं।"

(इ) नया नियम अकसर अधिक निश्चित है। यह पद की बात करता है। लूका 6:12-13 कहता है, "उन दिनों में वह पर्वत पर प्रार्थना करने गया, और परमेश्वर से प्रार्थना में सारी रात बिताई। जब दिन हुआ तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए, और उनको प्रेरित कहा।" (इफि. 4:11; 1 कुरिं. 12:28 भी देखो)।

3. प्रेरितों का वर्गीकरण

नए नियम के प्रेरितों को वर्गीकरण करना शिक्षाप्रद है, यह दिखाने के लिए कि सब प्रेरितः (अ) एक ही महत्ता के; (आ) एक ही उत्कर्ष के; (इ) सेवा की एक जैसी पहुँच के, और (ई) बिलकुल एक समान काम के विवरण के नहीं थे।

अ. प्रेरित मसीह (इब्रा. 3:1)
यीशु प्रेरित और महायाजक कहलाता है जिसे हम अंगीकार करते हैं। वह अद्वितीय और एक मात्र सिद्ध प्रेरित है।

आ. मेम्ने के बारह प्रेरित

1. इन 12 प्रेरितों को मसीह ने सारी रात प्रार्थना करने के बाद चुना था (लूका 6:12-13)।
2. उनके नाम पतरस, याकूब, यूहन्ना, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा, मत्ती, याकूब (हलफई), तद्दै, शमौन (कनानी), और यहूदा इस्करियोती थे। मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:16-19; लूका 6:12-16; प्रेरितों 1:13 (यहूदा के अलावा)। ये सब सूचियाँ यहूदियों के प्रेरित, पतरस के नाम से आरम्भ होती हैं (गलातियों 2:8) और उन्हें बारह कहा गया है (मत्ती 26:14; मरकुस 14:23; यूहन्ना 6:67)।
3. मत्तियाह। जिसे यहूदा के स्थान पर चुना गया था, बारह में से एक बना (प्रेरितों 1:26)।
4. ये बारह मसीह के जी उठने के गवाह थे। "जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा - अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक - जो लोग बराबर हमारे साथ रहे, उचित है कि उनमें से एक हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए" (प्रेरितों 1:21-22)।

5. प्रेरित पहली सेवा थे जिसे मसीह ने चुना था (लूका 6:12-13)। (1 कुरिं. 12:28 भी देखो)

इ. पौलुस

1. पौलुस एक प्रेरित कहलाता है (रोमियों 1:1; गलातियों 1:1; 1 कुरिं. 1:1; इफि. 1:1 आदि)।
2. पौलुस "अन्यजातियों का प्रेरित" कहलाता है (गलातियों 2:8)।
3. यह बात ध्यान देने योग्य है कि पौलुस अपने आप को प्रेरित कहने से अनिच्छुक नहीं है। न ही वह दूसरों को प्रेरित कहने से हिचकता है जो उससे बहुत हम महत्ता के हैं, अर्थात् अपुल्लोस (1 कुरिं. 3:6; 1 कुरिं. 4:9); अन्द्रुनीकुस और यूनियास (रोमियों 16:7)।
4. पौलुस की प्रेरिताई उसकी सेवा के फलों से प्रमाणिक ठहरती है। उसने उन कलीसियाओं को स्थापित किया और मजबूत किया जहाँ प्रभु ने उसे भेजा था (1 कुरिं. 9:1-2)।
5. निस्संदेह पौलुस (मसीह के बाद) सबसे बड़ा प्रेरित था। प्रेरितों की आधी पुस्तक उसके विषय में है (प्रेरितों अध्याय 13 से 28 तक)। और पौलुस ने नए नियम की लगभग आधी पुस्तकों को लिखा है (27 में से 13)।

ई. दूसरे प्रेरित

कम से कम 10 और प्रेरित हैं जिनका विशेष रूप से उल्लेख किया गया है:

* प्रभु का भाई याकूब (गला. 1:19)
* बरनबास (प्रेरितों 14:14)
* अपुल्लोस (1 कुरिं. 1:6-9)
* अन्द्रुनीकुस (रोमियों 16:7)
* यूनियास (रोमियों 16:7)
* इपफ्रुदीतुस (फिलि. 2:25), संदेशवाहक apostolos है
* तीतुस (2 कुरिं. 8:23)
* तीमुथियुस (1 थिस्स. 2:6)
* यहूदा (प्रेरितों 15:23)
* सीलास (सिलवानुस) (1 थिस्स. 2:6)

इन में से कई प्रेरितों ने कलीसियाएं स्थापित तो नहीं कीं परन्तु उन्हें स्थापित करने में सहायता की थी। पौलुस कहता है, "मैं ने लगाया (कलीसिया), अपुल्लोस ने सींचा (विकसित किया) (1 कुरिं. 3:6)।

5. प्रेरितों के दल

- पतरस और यूहन्ना को सामरिया भेजा गया (प्रेरितों 8:14)
- बरनबास, पौलुस और मरकुस (प्रेरितों 13:15)
- पौलुस और सीलास (प्रेरितों 15:40)
- पौलुस, सीलास, तीमुथियुस, लूका, इरास्तुस, गयुस, अरिस्तर्खुस (प्रेरितों 19)
  (अ) सेवाएँ एक दूसरे पर निर्भर थीं
  (आ) दल का हर सदस्य प्रेरित नहीं था

4. प्रेरितों की सेवा

प्रेरितों को पहचानने के लिए हमें प्रेरितों के कार्य (वे क्या करते हैं) समझने होंगे। प्रेरितों की पुस्तक और पत्रों का अध्ययन करने से प्रेरिताई सेवा के निम्नलिखित प्रमुख कार्य पता चलते हैं:

1. कलीसियाएँ स्थापित करना: नींव रखना

पौलुस कहता है उसने लगाया (1 कुरिं. 3:6)
उसने एक बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली (1 कुरिं. 3:10)

2. कलीसियाओं को विकसित करना, कलीसियाओं को स्थिर करना

अपुल्लोस ने सींचा (1 कुरिं. 3:6)
अपुल्लोस ने नींव पर बनाया (1 कुरिं. 3:10)

एक प्रेरित कलीसिया लगा सकता है और दूसरा उसे विकसित कर सकता है। और सब प्रेरित कलीसियाएँ आरम्भ नहीं करते हैं। कई कलीसियाओं को लगाते भी हैं और विकसित भी करते हैं।

3. <u>कलीसियाओं का निरीक्षण करना</u>
प्रेरितों उनकी कलीसियाओं के लिए गहरी चिन्ता रखते हैं। पौलुस कहता है, "और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है" (2 कुरिं. 11:28)।

4. <u>दूसरों को सेवा के लिए तैयार करना</u>
प्रेरित दूसरी स्वर्गारोहण वरदानों की सेवाओं के साथ मिलकर परमेश्वर के लोगों को सेवा के कामों के लिए तैयार करते हैं (इफि. 4:11)। प्रेरित दूसरे अगुवों को सिखाते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस, तीतुस और दूसरों को सिखाया (1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस देखो)।

5. <u>परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और सिखाना</u>
पिन्तेकुस्त के दिन पतरस (प्रेरितों 2)। पौलुस ने कहा कि वह इफिसियों के मसीहियों को परमेश्वर के सारे अभिप्राय का प्रचार करने से न झिझका था (प्रेरितों 20:27)। यरूशलेम की कलीसिया प्रेरितों से शिक्षा पाने में लौलीन रही थी (प्रेरितों 2:42)। यह सेवा शिक्षक की सेवा के साथ व्याप्त होती है।

6. <u>चिन्ह और आश्चर्यकर्म करना</u>
इसका अर्थ अवश्य नहीं कि हर प्रेरित की चिन्हों और आश्चर्यकर्मों की सेवा होगी (प्रेरितों 3:1-8)।

7. <u>सेवाओं को अभिषेक देना और स्थापन करना</u>
डीकनों की नियुक्ति (प्रेरितों 6:1-6); एल्डरों की नियुक्ति (प्रेरितों 14:23)।
पौलुस ने अरतिमास को तीतुस के पास भेजा और तीतुस से आग्रह किया कि उसके पास निकुपुलिस में आए (तीतुस 3:12)।

8. <u>कलीसिया में अनुशासन लाना</u>
पतरस, हनन्याह और सफीरा के विषय में (प्रेरितों 5:11)
पौलुस, हुमिनयुस और सिकन्दर के विषय में (1 तीमु. 1:20)
यूहन्ना, दियुत्रिफेस के विषय में (3 यूहन्ना आय. 9-10)

9. <u>सेवा में संयोग</u>
पौलुस एक शिक्षक - प्रेरित था (2 तीमु. 1:11)
पतरस एक पास्टर - प्रेरित था (यूहन्ना 21:15-17)
तीमुथियुस सम्भवतः एक सुसमाचार प्रचारक - प्रेरित था (2तीमु. 4:5)

10. <u>सेवा के क्षेत्र (भाग)</u>
पतरस यहूदियों का प्रेरित था
पौलुस अन्यजातियों का प्रेरित था (गला. 2:8)
पौलुस कुरिन्थियों को कहता है, "यदि मैं दूसरों का प्रेरित न भी होऊँ, आपका तो हूँ।" पौलुस हर कलीसिया का प्रेरित नहीं था।

5. प्रेरितों का स्वीकरण और ग्रहण

यह सम्भवतः सबसे चुनौतीपूर्ण मामला है जिसका हमें आज सामना करना पड़ रहा है। क्या हम प्रेरितों को स्वीकार करते हैं और क्या हम उन्हें ग्रहण करते हैं ?! यीशु ने कहा, "जो तुम्हें ग्रहण करता है...जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा" (मत्ती 10:40-42)। उसी प्रकार यह प्रेरित पर भी लागू होगा। मैं ने नीचे कुछ कारण दिए हैं कि क्यों हमें उन्हें स्वीकार करने और ग्रहण करने में कठिनाई होती है।

अ. अपर्याप्त समझ

पवित्रशास्त्र से प्रेरितों की सेवा के विषय में। हमें अपने विचारों को पवित्रशास्त्र के प्रकटीकरण के पूरी तरह अधीन करना होगा।

आ. अवास्तविक ऊँची अपेक्षाएँ

हम ने जाने-अनजाने में प्रेरिताई के लिए डण्डा इतना ऊँचा कर दिया है कि किसी के लिए भी लगभग अलभ्य हो गया है। इसलिए प्रेरितों के वर्गीकरण का अध्ययन (ऊपर 3 देखो), डण्डे को एक अधिक यथार्थवादी स्तर पर रखने में हमारी सहायता करेगा। हमें तीतुस, तीमुथियुस, सीलास, इपफ्रुदीतुस और दूसरों पर विचार करना चाहिए। जिस प्रकार हर सुसमाचार प्रचारक बिली ग्रहम के समान नहीं है, और हर शिक्षक डेरेक प्रिन्स के समान नहीं है, उसी प्रकार हर प्रेरित पौलुस या पतरस के समान नहीं है।

निम्नलिखित पर विचार करोः जब मैं एक लड़का था मुझे कलीसिया ले जाया गया था। इमारत के पीछे की ओर एक रंगीन खिड़की जिस बारह प्रेरितों के चित्र बने हुए थे। उनके वस्त्र अत्यन्त जटिल सजावट के थे, वे उनके हाथों में अधिकार-दण्ड, पृथ्वीमण्डल, मेम्ने और दूसरी विचित्र चीजें पकड़े हुए थे, और उनके सिरों के पीछे बड़े-बड़े महिमा के चक्र थे। मैं उस खिड़की को हर रविवार देखता था, और मैं सोचने लगा था कि प्रेरित असल में उसी प्रकार के लोग थे - परन्तु वे थे नहीं। यह मात्र कल्पना थी।

आओ मैं आपको बाइबल की एक प्रेरित की तस्वीर देता हूँ। वह एक कमज़ोर आवाज वाला एक निर्बल छोटा सा व्यक्ति (2 कुरिं. 10:10), एक कैदी (प्रेरितों 16:23) है। वह अल्पपोषित दिखता है और उसके कपड़े अशोभनीय हैं (1 कुरिं. 4:11)। यदि आप उसके हाथों को देखें, तो वे चमड़ों को नरम करने और तम्बुओं में सिलाने के कड़े परिश्रम से, क्योंकी उसकी जीविका यही है, धब्बे पड़े हुए और फटे हुए हैं (प्रेरितों 18:3)। कभी-कभी वह बहुत बीमार रहता है, जीवन से निराश भी रहता है (2 कुरिं. 1:8-11; गला. 4:13; 2 कुरिं. 11:30)। सम्भवतः ये कमजोरियाँ उन भयानक दुखों का कारण हैं जिन्हें उसे सहन करना पड़ा है (2 कुरिं. 11:23-28)। इस तस्वीर का उन बारह आत्मसन्तुष्ट बूढ़े पुरुषों के साथ कुछ भी साझे का नहीं है जो उस कलीसिया की खिड़की से आप पर झाँकते हैं, है ना!

जिन प्रेरितों को मसीह कलीसिया को देता है वे न तो बदमाश हैं और न ही उच्च-सन्त हैं। वे न तो कलीसिया के इतिहास के अवशेष हैं और न ही किसी की कल्पना की वस्तु हैं। वे पुरुष हैं जिन्हें परमेश्वर ने एक नींव रखने की सेवा के लिए बुलाया है।

इ. नियंत्रण या उत्कट स्वाधीनता का प्रत्यक्षज्ञान

कुछ लोग प्रेरितों को नियंत्रण के समानार्थ समझते हैं, यह या तो उनके अधिनायकीय अगुवों के साथ बुरे अनुभव के कारण है जिन्होंने उनके अधिकार का दुरुपयोग किया था, या यह उनकी अपनी उत्कट स्वाधीनता के कारण है। वे सोचते हैं कि प्रेरिताई का अर्थ स्थानीय कलीसिया के स्वशासन का कटाव है। दुरुपयोग का उत्तर उपयोग "नहीं" नहीं है, बल्कि सही उपयोग है।

ई. असुरक्षा या ईर्ष्या

कुछ उनकी अपनी असुरक्षा या ईर्ष्या के कारण प्रेरितों को स्वीकारने और ग्रहण करने में अनिच्छुक हैं (1 कुरिं. 3)। एक प्रेरित का अधिकार तत्त्वतः आत्मिक और सम्बंधी है। वह उनके लिए ही प्रेरित है जो उसे स्वीकार करते हैं। सब अधिकार वालों के समान, प्रेरित को अगुआई करनी है, परमेश्वर के लोगों पर अधिकार नहीं जताना है (1 पतरस 5:1-6)।

उ. प्रेरितों का नाम रखना

कुछ प्रेरित की सेवा स्वीकार करने के लिए तैयार हैं परन्तु अपने को प्रेरित कहने के अनिच्छुक हैं क्योंकि सोचते हैं कि यह अभिमानी बात होगी, परन्तु यीशु ने आप बारहों को प्रेरित कहा था (लूका 6:12-13)। पौलुस अपने अधिकाँश पत्रों में अपने को प्रेरित कहता है (उदा. रोमियों 1:1)। यह बात ध्यान देने योग्य है कि रोमियों का पत्र इस प्रकार आरम्भ होता है, "पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया है।" पौलुस एक सेवक-अगुवा था जैसे सब अगुवों को होना चाहिए। इसके इतिरिक्त, पौलुस दूसरों को भी प्रेरित कहने से हिचकता नहीं है जो उससे बहुत कम महत्ता के थे, अर्थात्, बरनबास, अपुल्लोस, तीमुथियुस, और तीतुस। यीशु ने कहा जो तुम्हें ग्रहण करता है मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है (मत्ती 10:40)। पतरस ने भी अपने को प्रेरित कहा था (1 पतरस 1:1)।

6. निष्कर्ष

मूल बात है: कलीसिया की बढ़त और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए परमेश्वर के नमूने का कोई भी अनुकल्प नहीं है, अर्थात्, सब स्वर्गारोहण वरदान सेवाओं में वापसी (इफि. 4:11)। कई कलीसियाओं की गतियों के सामने उन्हें दोबारा बनाने की आवश्यकता खड़ी है। यदि हम परमेश्वर के नमूने में लौटने की आवश्यकता की परवाह करते हैं तो हमें एक दूसरे से सीखने, लगे रहने, विचार-विमर्श करने और सुनने के लिए वचनबद्ध होना है। हमें अपने हृदयों की रखवाली करने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे हृदयों की स्थिति ही निर्धारित करेगी कि हम कितना सुनते हैं जो आत्मा कलीसिया से कह रहा है (मत्ती 13:13-17; नीतिवचन 4:20-27)। हमें प्रेम, दीनता, भरोसा और शिक्षनीयता और मसीह, उसकी कलीसिया और उसके राज्य के लिए उत्साह में सच्चाई और बहुपक्षीय वार्तालाप का एक वातावरण बनाने की आवश्यकता है (मत्ती 24:14)।

अन्तिम खोज – अन्तिम दिनों के दर्शन

मैं ने दर्शन कैसे पाया

इस दर्शन से सम्बंधित एक सबसे आम प्रश्न जो मुझे पूछा जाता है वह है कि मैं ने इसे कैसे पाया था। मेरा विश्वास है कि यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है, और इसलिए मैं यहाँ इसका संक्षिप्त उत्तर देने का प्रयत्न करूँगा। पहले, मैं समझाना चाहता हूँ कि दर्शनों और "भविष्यसूचक अनुभवों" से मेरा तात्पर्य क्या है। भविष्यसूचक "अनुभव" जैसे मैं उन्हें कहता हूँ बहुत से और भिन्न हैं। उनमें वे सब प्रमुख तरीके सम्मिलित हैं जिनके द्वारा प्रभु ने पवित्रशास्त्र में अपने लोगों से बातें की हैं। क्योंकि प्रभु जैसा वह कल था वैसा ही आज भी है, उसने उसके लोगों के साथ उसी तरीकों से सम्बंध रखना छोड़ा नहीं है, और इसलिए ये अनुभव कलीसिया के इतिहास भर में अभी भी पाए जाते हैं। जैसे प्रेरित पतरस ने प्रेरितों अध्याय दो के अपने उपदेश में समझाया था कि स्वपन, दर्शन और भविष्यद्वाणियाँ, और पवित्र आत्मा का उँडेला जाना अन्तिम दिनों के प्रमुख चिन्ह हैं। जैसे हम प्रत्यक्ष रूप से इस युग के अन्त में पहुँच रहे हैं, तो वे हमारे समय में आम होते जा रहे हैं। उनका इतना अधिक आम होने का एक कारण है कि हमें इन समयों में अपने उद्देश्य पूरे करने में उनकी आवश्यकता पड़ेगी। यह भी सत्य है कि शैतान भी, जो दुर्भाग्यवश पवित्रशास्त्र कई मसीहियों से अच्छी तरह जानता है, परमेश्वर के उसके लोगों के साथ सम्बंध में भविष्यसूचक प्रकटीकरण के महत्त्व को समझता है, और इसलिए वह उनके लिए जो उसकी सेवा करते हैं जाली वरदानों को बहुतायत से उँडेल रहा है। परन्तु, यदि असली नहीं होते तो जाली भी नहीं होते!

तीन दशक पहले एक मसीही बनने के शीघ्र बाद, मैं ने प्रेरितों दो का यह अध्याय पढ़ा और समझ गया कि यदि ये अन्तिम दिन हैं तो इन तरीकों को जिनसे प्रभु हम से बातें करेगा समझना आवश्यक है। मुझे याद नहीं है कि मैं ने इन अनुभवों को अपने लिए पाने के लिए प्रार्थना की थी, परन्तु मैं उन्हें अनुभव करने लगा, जिससे मुझे उन्हें समझने के लिए अधिक प्रेरणा मिली। उस समय से लेकर मैं ने उन्हें समय समय पर बारंबार अनुभव किया है। और लम्बे समय भी बीत गए हैं जब मैं ने उन्हें अनुभव नहीं किया है। परन्तु, नहीं होने के समयों के बाद वे लौट आते थे, और या तो वे अधिक सामर्थी होते थे या अधिक बारंबार होते थे। हाल में, वे दोनों हो रहे हैं। इस सब के द्वारा मैं ने भविष्यद्वाणी के वरदानों, अनुभवों और भविष्यद्वाणी के लोगों के विषय में बहुत कुछ सीखा है।

भविष्यसूचक प्रकटीकरण के कई स्तर हैं। प्रारंभ के स्तरों में भविष्यसूचक "प्रभाव" हैं। ये असली प्रकटीकरण हैं। वे असाधारण रूप से निश्चित और सही हो सकते हैं जब उनके अर्थ वे लोग बताते हैं जो उनकी ओर अनुभवी और संवेदनशील होते हैं। परन्तु इस स्तर पर ही हमारे प्रकटीकरणों पर हमारी अपनी भावनाओं, पूर्वधारणाओं और शिक्षाओं का प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए मैं ने निश्चय किया है कि मैं इस स्तर पर आने वाले प्रकटीकरणों के साथ "प्रभु यह कहता है" शब्द प्रयोग नहीं करूँगा।

प्रभाव के स्तर पर भी दर्शन आ सकते हैं। वे कोमल होते हैं और उन्हें "अपने हृदय की आँखों" से देखना पड़ता है। वे भी बहुत निश्चित और सही होते हैं, विशेष तब जब उन्हें वे प्राप्त करते और/या अर्थ बताते हैं जो अनुभवी हैं। जितनी अधिक हमारे हृदयों की आँखें खुलती हैं जैसे पौलुस ने इफिसियों 1:18 में प्रार्थना की थी, उतने अधिक सामर्थी और उपयोगी वे हो सकते हैं।

प्रकटीकरण का अगला स्तर प्रभु की उपस्थिति की एक सचेत भावना है, या पवित्र आत्मा का अभिषेक है, जो हमारे मनों में विशेष प्रकाश देता है। यह अकसर तब आता है जब मैं लिख रहा होता हूँ, या बोल रहा होता हूँ, और यह मुझे जो मैं बोल रहा होता हूँ उसकी महत्त्व या परिशुद्धता में बहुत भरोसा देता है। मेरा विश्वास है कि सम्भवत इसे प्रेरितों ने भी अनुभव किया था जब वे नए नियम के पत्र लिख रहे थे। यह हमें बहुत विश्वास देगा, परन्तु यह अभी भी ऐसा स्तर है जो हमारी पूर्वधारणाओं, शिक्षाओं, आदि से प्रभावित हो सकता है। इसी लिए मेरा विश्वास है कि कुछ मामलों में, पौलुस कहेगा कि वह अपनी राय दे रहा है, परन्तु उसे लगता था कि उसमें प्रभु का आत्मा (सहमति में) है। सामान्यतः, जब हम भविष्यसूचक से निपटते हैं तो सिद्धान्तवाद से अधिक दीनता की अधिक आवश्यकता है।

"खुले दर्शन" प्रभावों से एक ऊँचे स्तर पर घटित होते हैं; वे हमें अधिक स्पष्टता देते हैं जितनी हमें तब भी नहीं मिलती जब हम प्रभु की सचेतन उपस्थिति, या अभिषेक महसूस करते हैं। खुले दर्शन बाहरी होते हैं, और एक चलचित्र की स्पष्टता से देखे जाते हैं। क्योंकि उन्हें हम नियंत्रित नहीं कर सकते हैं इसलिए मेरा विश्वास है कि इस प्रकार से आने वाले प्रकटीकरणों में काफी कम मिश्रण की सम्भावना है।

भविष्यसूचक का एक और ऊँचा स्तर बेसुध होना है, जैसे कि सबसे पहले पतरस के साथ हुआ था जब उसे कुरनेलियुस के घर जाने और पहली बार अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने को कहा गया था, और जैसा पौलुस के साथ हुआ था जब प्रेरितों 22 में वह मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था। बेसुध होना बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं का एक आम अनुभव था। बेसुध होना स्वपन देखने के समान है जब आप जगे होते हो। एक चित्रपट देखने के बजाय, जैसे खुले दर्शन में होता है, आप महसूस करेंगे कि आप चलचित्र में हैं, कि आप एक अजीब तरीके से उसमें वहाँ हैं। बेसुध होना कोमल से लेकर, जिसमें आप अपने शारीरिक आस-

पड़ोस के जानकार रहते हो, और उसके साथ सम्बंध बनाए रख सकते हो, वैसे हो सकते हो जब आप अनुभव करोगे कि आप अपने दर्शन के स्थान में ही हो। ऐसा लगता है यहेजकेल इसे अधिक बारंबार अनुभव करता था, और जिसे यूहन्ना ने भी अनुभव किया था जब उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की बातों को लिखा था।

इस पुस्तक में लिखे दर्शन एक स्वपन के साथ आरम्भ हुए थे। उनमें से कुछ प्रभु की तीव्र उपस्थिति में आए थे, परन्तु अधिकतर बेसुधी के स्तर पर ही आए थे। उनमें से अधिकाँश उस स्तर पर आए थे जब मैं अभी भी अपने आप-पड़ोस की चेतना में था, और उसके साथ व्यवहार कर सकता था जैसे कि फोन का उत्तर देना। जब उन में हस्तक्षेप होता था, या मुझे उठ कर चलना फिरना पड़ता था। जब वापस आ कर बैठता वे वापस आ जाते जहाँ मैं ने उन्हें छोड़ा था।

मैं कभी जान नहीं पाया कि ऐसे अनुभवों को कैसे आरम्भ करना है, परन्तु मेरे पास उन्हें अपनी इच्छा से बंद करने की स्वतंत्रता लगभग होती थी। दो बार, इस दर्शन के बड़े बड़े भाग ऐसे समय में आए जिसे मैं असुविधाजनक समय कहूँगा, जब मैं कुछ महत्त्वपूर्ण काम पूरा करने के लिए अपने कैबिन में गया था। हमारी पत्रिकाओं के दो प्रकाशन इसके कारण समय से पीछे चल रहे थे। परन्तु प्रभु हमारे समय की कोई अधिक परवाह करता लगता नहीं है!

स्वपन और बेसुध में, मुझे वह मिले थे जिन्हें मैं अत्यन्त बढ़े हुए आत्माओं की परख और ज्ञान के वचन के वरदान कहूँगा। कभी-कभी जब मैं एक व्यक्ति को देखता हूँ, या एक कलीसिया या सेवा के लिए प्रार्थना करता हूँ, मैं उनके विषय में चीजें जानने लगता हूँ जिनकी पहले मुझे कोई स्वाभाविक जानकारी नहीं थी। इन भविष्यसूचक अनुभवों में ये वरदान उस स्तर पर कार्य कर रहे थे जिनको मैं ने असली जीवन में कभी भी अनुभव नहीं किया था। अर्थात्, इस दर्शन में मैं दुष्टों के झुण्ड को देखता और उसके सारी नीतियों और योग्यताओं को तुरंत जान लेता। मुझे पता नहीं यह मुझे कैसे पता चला, परन्तु मुझे पता चला, और बड़े विस्तार से पता चला। कुछ मामलों में मैं किसी चीज या किसी को देखता और उनके अतीत, वर्तमान और भविष्य को तुरंत जान लेता। इस लेख में समय और जगह की बचत करने के लिए मैं ने इस ज्ञान को, मुझे कैसे मिला समझाने के बजाय, जैसे यह आया है वैसे ही सम्मिलित किया है।

भविष्यसूचक प्रकटीकरण को उपयोग करना

मैं बड़े सुनिश्चित रूप से बताना चाहता हूँ कि मैं विश्वास नहीं करता कि किसी प्रकार का भविष्यसूचक प्रकटीकरण सिद्धान्त बनाने के लिए है! उसके लिए हमारे पास पवित्रशास्त्र है!

इसलिए भविष्यसूचक के दो मूल उपयोग हैं: कुछ मामलों में प्रभु की वर्तमान या भावी युद्धनीतिक इच्छा प्रकट करना। हमारे पास मकिदुनिया जाने के पौलुस के स्वपन में, और बेसुध में जहाँ उसे तुरंत यरूशलेम छोड़ने के लिए कहा गया था दो उदाहरण हैं। हमारे पास अगबुस की सेवा से भी उदाहरण हैं। उनमें से एक अकाल के विषय में है जो सारे संसार पर आनेवाला था, और दूसरा पौलुस के यरूशलेम जाने के विषय में था।

हम ऐसे प्रकटीकरण को सिद्धान्त पर प्रकाश डालने के लिए दिए जाते हुए भी देखते हैं जिसे पवित्रशास्त्र में सिखाया गया है, परन्तु स्पष्ट रूप से देखा नहीं गया है। पतरस का बेसुध होना एक था जिसने प्रभु की इच्छा, और बाइबल की खरी शिक्षा दोनों पर प्रकाश डाला, कि पवित्रशास्त्र अन्यजातियों का सुसमाचार पाने के विषय में बिलकुल स्पष्ट हैं, परन्तु जिसे कलीसिया ने अभी समझा नहीं था।

इस लेख के दर्शनों में कुछ युद्धनीतिक प्रकटीकरण हैं, और उन्होंने बाइबल के कुछ सिद्धान्तों को प्रदीप्त भी किया जिन्हें मैं ने सच में पहले देखा नहीं था, परन्तु अब स्पष्ट देखता हूँ। परन्तु अधिकाँश सिद्धान्त जो मेरे लिए इन अनुभवों में प्रदीप्त किया गया था, मैं ने वर्षों से जाना और सिखाया भी था, परन्तु मैं कह नहीं सकता कि मैं ने उन्हें अच्छी तरह जीया भी था। कई बार मैं ने उस चेतावनी के बारे में सोचा था जिसे पौलुस ने तीमुथियुस को उसकी अपनी शिक्षाओं पर ध्यान देने के विषय में दी थी। इन अनुभवों में बोले गए कई शब्द, मैं ने स्वयं कई बार सिखाए हैं। मैं जानता हूँ कि मैं अपनी बहुत सारी शिक्षाओं को प्रयोग में लाने में असफल रहता हूँ, और इसलिए, उनमें से कई को मैं ने अपने लिए फटकार के रूप में लिया था। वैसे भी, मुझे लगा कि वे सामान्य संदेश हैं और मैं ने उन्हें यहाँ सम्मिलित किया है।

मुझे कुछ लोगों ने इस दर्शन को एक प्रतीक-कथा के रूप में, सदा की प्रसिद्ध पुस्तक "द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" में अन्य पुरुष में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया था, परन्तु मैं कई कारणों से इसके विरुद्ध फैसला किया। पहला, मुझे लगा कि कुछ इसे मेरी अपनी रचना के परिणाम के रूप में ले लेंगे, और वह गलत होगा। मैं इतना रचनात्मक होना चाहूँगा, परन्तु मैं हूँ नहीं। दूसरा कारण था कि यदि मैं ने इसे जैसे पाया था वैसे ही बताया तो मैं अधिक सही रहूँगा, और मैं इन अनुभवों को जैसे मैं ने इन्हें पाया था बताने का प्रयत्न किया है। परन्तु, मैं सोचता हूँ कि मेरी चीजों को याद रखने की योग्यता मेरी सबसे बड़ी कमज़ोरी है। कभी-कभी मैं ने कुछ बातों के विषय में अपनी स्मरणशक्ति पर संदेह प्रकट किया है, और इसलिए मुझे लगता है कि आपको भी ऐसा करने की स्वतंत्रता है। मैं सोचता हूँ कि ऐसा किसी भी संदेशों के साथ करना सही है। केवल पवित्रशास्त्र को ही भ्रमातीत माना जाना चाहिए। जैसे

आप पढ़ेंगे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा आपको सत्य में ले चलेगा, और किसी भी भूसी को जो वहाँ होगी गेहूँ से अलग करेगा।

भाग 1 – नरक के झुण्ड आ रहे हैं

शैतानी सेना इतनी बड़ी थी कि जितनी दूर तक मैं देख सकता था यह फैली हुई थी। यह भागों में बँटी हुई थी, और हर भाग एक भिन्न झंडा लिए हुए था। सर्वप्रथम भाग अभिमान, दंभी, स्वार्थी अभिलाषा, अधर्मी न्याय, और ईर्ष्या के झंडों के साथ कूच कर रहे थे। और भी कई दुष्ट भाग थे जिन्हें मैं देख नहीं पा रहा था, परन्तु जो इस नारकीय भयानक झुँड के आगे थे सबसे शक्तिशाली थे। इस सेना का अगुवा स्वयं भाइयों पर दोष लगानेवाला था।

इस झुण्ड द्वारा उठाए हुए हथियारों के नाम भी थे। तलवारों के नाम धमकी थे; भालों का नाम विश्वासघात था; और तीरों के नाम दोषारोपण, गप-शप, निन्दा और छिन्द्रानिवेषण। दुष्टात्माओं के गुप्तचर और छोटी टोलियाँ जिनके नाम अस्वीकरण, कड़ुवाहट, अधीरता, अ-क्षमा और कामुकता मुख्य आक्रमण की तैयारी के लिए इस सेना के आगे थे।

ये छोटी टोलियाँ और गुप्तचर संख्या में काफी कम थे, परन्तु वे पीछे आनेवाले कुछ बड़े भागों से कम शक्तिशाली नहीं थे। वे युद्धनीतिक कारणों से ही छोटे थे। जैसे यूहन्ना बपतिस्मादाता एक अकेला पुरुष था, परन्तु भीड़ की भीड़ को प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए बपतिस्मा देने के लिए असाधारण अभिषेक पाया हुया था, उसी प्रकार इन छोटी शैतानी टोलियाँ को भी "समूहों को बपतिस्मा देने के लिए" असाधारण दुष्ट शक्ति दी गई थी। कड़ुवाहट की एक अकेली दुष्टात्मा लोगों की भीड़ में, सारी जाति या संस्कृति में उसका ज़हर डाल सकती थी। कामुकता की एक दुष्टात्मा अपने आपको एक प्रदर्शक, फिल्म, या विज्ञापन से जोड़ सकती थी, और बिजली के कीचड़ के तीर जैसा कुछ छोड़ सकती थी जो लोगों की भीड़ को जा लगेगा और असंवेदी बना देगा। यह सबकुछ आनेवाले महान दुष्टों के झुण्डों की तैयारी के लिए था।

यह सेना विशेषकर कलीसिया के विरुद्ध कूच कर रही थी, परन्तु यह जिस पर भी आक्रमण कर सकती थी कर रही थी। मैं जानता था कि यह परमेश्वर के आनेवाले कार्य को जो लोगों के समूहों को कलीसिया में लाने के लिए था, पहले से अधिकृत करने का प्रयास कर रहे थे।

इस सेना की प्रमुख नीति सम्बंधों के हर सम्भव स्तर पर फूट डालना था - कलीसियाओं का एक दूसरे के साथ, मण्डलियों का उनके पास्टर के साथ, पती और पत्नियों का, बच्चों और माता-पिता का, और बच्चों का भी एक दूसरे के साथ। गुप्तचरों को कलीसियाओं, परिवारों या व्यक्तियों में द्वार खोजने के लिए भेजा गया था जिसका फिर अस्वीकरण, कड़ुवाहट, कामुकता आदि लाभ उठा सकते और बड़ा कर सकते थे। फिर पीछे आनेवाले भाग शिकारों को जीत लेने के लिए द्वारों में से घुस जाते।

इस दर्शन का सबसे दहलानेवाला भाग यह था कि यह झुण्ड घोड़ों पर सवार नहीं था, परन्तु मुख्यतः मसीहियों पर सवार था! उनमें से अधिकाँश अच्छे कपड़े पहने हुए और प्रतिष्ठित थे, और उनकी सुसंस्कृत और शिक्षित होने की प्रतीति थी, परन्तु वे जीवन के हर धंधे से भी थे लग रहे थे। ये लोग उनके विवेकों को शान्त करने के लिए मसीही सत्य बोलने का दावा करते थे, परन्तु वे उनका जीवन अन्धकार की शक्तियों के साथ सहमति में जीते थे। जैसे वे उन शक्तियों के साथ सहमत होते थे उनकी नियत दुष्टात्माएँ बढ़ जाती थीं और अधिक सरलता से उनके कार्यों को संचालन करने लगते थे।

इन में से कई विश्वासी एक से अधिक दुष्टात्मा के मेजबान थे, परन्तु प्रकट रूप से एक ही प्रभारी लगता था। प्रभारी की प्रकृति बताती थी कि वह किस भाग में कूच कर रहा है। हालाँकि सब भाग इकट्ठे कूच कर रहे थे, परन्तु यह भी जान पड़ता था कि सारी सेना अव्यवस्था की सीमा पर थी। उदाहरणार्थ, घृणा की दुष्टात्माएँ दूसरे भागों से उतनी ही घृणा करते थीं जितनी वे मसीहियों से करती थीं। ईर्ष्या के दुष्टात्मा एक दूसरे के लिए ईर्ष्या से भरे हुए थे। इस झुण्ड के अगुवे एक ही तरीके से उनको झगड़ने से रोक सकते थे कि वे उनकी घृणा, ईर्ष्या आदि को उन लोगों पर केन्द्रित किए रखें जिन पर वे सवार थे। परन्तु, ये लोग एक दूसरे के साथ झगड़े में फूट पड़ते थे। मैं जानता था कि इसी प्रकार पवित्रशास्त्र में इस्राएल के विरुद्ध आनेवाली कुछ सेनाओं ने अपने आप को नष्ट किया था। जब इस्राएल के विरुद्ध उनका उद्देश्य व्यर्थ हुआ था तो उनका रोष अनियंत्रित हो गया था, और वे एक दूसरे के साथ लड़ने लगे थे।

मैं देखा कि दुष्टात्माएँ इन मसीहियों पर चढ़े हुए थे, परन्तु जैसा गैर-मसीहियों के साथ था वे उन में नहीं थे। प्रकट था कि इन विश्वासियों को उनकी दुष्टात्माओं से छुटकारा पाने के लिए केवल उनसे सहमत होना बंद करना था। उदाहरणार्थ, यदि जिस मसीही पर ईर्ष्या की दुष्टात्मा बैठी हुई थी केवल ईर्ष्या का विरोध करने लगता, तो वह दुष्टात्मा बहुत तेजी से कमज़ोर होने लगती। जब ऐसा होता तब कमज़ोर हो रही दुष्टात्मा जोर से चिल्ला उठती और भाग का अगुवा सारी दुष्टात्माओं को उस पर आक्रमण करने के लिए लगा देता, जब तक कि कड़ुवाहट आदि उस में फिर से बनने नहीं लगती। यदि इससे काम नहीं हुआ तब दुष्टात्माएँ

पवित्रशास्त्र बोलने लगते थे जो इस प्रकार विकृत किए होते थे कि वे कड़ुवाहट, दोषारोपण आदि को उचित सिद्ध करते थे। यह स्पष्ट था कि दुष्टात्माओं की शक्ति लगभग पूरी तरह छल की शक्ति में जमी हुई थी, परन्तु उन्होंने इन मसीहियों को यहाँ तक धोखे में रखा था कि वे उन्हें इस्तेमाल कर सकते थे और ये मसीही सोचते थे कि परमेश्वर उन्हें उपयोग कर रहा है। यह इसलिए था क्योंकि आत्म-धार्मिकता के झंडे लगभग सब ने उठा रखे थे जिससे जो चल रहे थे उन झंडों को नहीं देख पा रहे थे जिन पर इन भागों के सच्चे स्वभाव लिखे हुए थे।

जैसे मैं ने इस सेना के दूर पीछे की ओर देखा तो मैं ने दोष लगानेवाले को स्वयं देखा। मैं उसकी नीति को समझने लगा, और मुझे आश्चर्य हुआ कि यह इतनी सरल थी। मैं जानता था जिस घर में फूट पड़ी हो वह खड़ा नहीं रह सकता है, और इस सेना का प्रयास कलीसिया में फूट डालना था जिससे वे अनुग्रह से पूरी तरह गिर जाएगी। प्रकट था कि वह ऐसा एक ही तरीके से कर सकता था कि मसीहियों को उनके भाइयों के साथ युद्ध करने के लिए इस्तेमाल करे, और इसी कारण से आगे के भागों में लगभग सब मसीही थे, या कम से कम दावा करने वाले मसीही थे। हर कदम जो ये धोखा खाए मसीही दोष लगानेवाले की आज्ञापालन में उठाते थे उन पर उसकी शक्ति को मजबूत करता था। इससे उसका और उसके सेनापतियों का विश्वास सेना की प्रगति से बढ़ जाता था। यह प्रकट था कि इस सेना की शक्ति इन मसीहियों की दुष्ट के साथ सहमति पर निर्भर थी।

कैदी

इन पहले भागों के पीछे पीछे दूसरे मसीहियों की भीड़ थी जो इस सेना के कैदी थे। ये सब घायल थे, और डर की छोटी दुष्टात्माओं द्वारा रखवाली किए हुए थे। सेना में दुष्टात्माओं से अधिक कैदी नज़र आ रहे थे। आश्चर्यजनक बात यह थी कि, इन कैदियों के पास अभी भी उनकी तलवारे और ढालें थीं, परन्तु वे उन्हें इस्तेमाल नहीं कर रहे थे। यह देख कर धक्का लगा कि इतनी कम डर की दुष्टात्माओं ने इतने सारों को कैदी बना रखा था। यदि मसीहियों ने उनके हथियारों को इस्तेमाल किया होता तो वे बड़ी सरलता से स्वतंत्र हो गए होते, और सम्भवतः सारी दुष्ट सेना को बड़ी हानि पहुँचाई होती। बदले में, वे दब्बुओं के समान साथ-साथ चले जा रहे थे।

कैदियों के ऊपर आकाश उदासी नामक गिद्धों के कारण काला था। कभी-कभी वे कैदी के कंधों पर उतरते और उस पर उलटी कर देते। उलटी दण्ड था। जब किसी कैदी को उलटी आकर टकराती थी, तब वह खड़ा हो जाता और कुछ समय के लिए सीधा होकर चलता, और फिर पहले से कमज़ोर होकर गिर पड़ता। दोबारा, मैं सोचने लगा कि इन कैदियों ने गिद्धों को उनकी तलवारों से क्यों नहीं मार डाला, जो वे सरलता से कर सकते थे। कभी-कभी कमज़ोर कैदी ठोकर खाते और गिर पड़ते। जैसे ही वे भूमि पर गिरते, दूसरे कैदी उनको उनकी तलवारों से मारने लगते, और साथ में उनका तिरस्कार भी करते। तब गिद्ध आ जाते और गिरे हुओं को उनके मरने से पहले ही नोंच कर खाने लगते। दूसरे मसीही कैदी मंजूरी के साथ खड़े होकर देखते रहते, और कभी-कभी उनकी तलवारें उनमें भोंकते रहते।

जैसे मैं ने देखा, तो समझ में आया कि ये कैदी सोच रहे थे कि दण्ड की उलटी परमेश्वर का सत्य था। तब मुझे समझ आया कि ये कैदी सोच रहे थे कि वे असल में परमेश्वर की सेना में कूच कर रहे हैं! इसीलिए वे डर की छोटी दुष्टात्माओं, या गिद्धों को मार नहीं रहे थे - उन्हें लगा कि ये परमेश्वर के दूत हैं! गिद्धों के बादलों के अन्धकार से उन कैदियों को देखने में कठिनाई हो रही थी कि सबकुछ जो उनके साथ हो रहा था उसे वे प्रभु की ओर से मान रहे थे। उन्हें लग रहा था कि जो ठोकर खा रहे थे परमेश्वर के न्याय में थे, इसी लिए वे इस प्रकार उन पर आक्रमण कर रहे थे - क्योंकि वे सोच रहे थे वे परमेश्वर की सहायता कर रहे हैं!

इन कैदियों को जो भोजन दिया जा रहा था गिद्धों की उलटी ही था। जो इसे खाने से इन्कार करते कमज़ोर होकर गिर पड़ते थे। जो इसे खा लेते कुछ समय के लिए शक्ति पाते, परन्तु यह दुष्ट की शक्ति होती थी। तब वे कमज़ोर हो जाते, और तब तक कमज़ोर रहते जब तक कड़ुवाहट का पानी नहीं पीते जो उन्हें निरन्तर दिया जा रहा था। कड़ुव पानी पीने के बाद वे दूसरों पर उलटी करने लगते। जब एक कैदी ने ऐसा किया, तब एक दुष्टात्मा जो सवारी की प्रतीक्षा कर रही थी उस पर चढ़ गई, और उस पर सवारी करते हुए आगे के एक भाग में चले जाने लगी।

गिद्धों की उलटी से भी खराब एक घृणास्पद कीचड़ था जिसे ये दुष्टात्माएं उन मसीहियों पर मलत्याग और पेशाब कर रहे थे जिन पर वे चढ़े हुए थे। यह कीचड़ अभिमान, स्वार्थी अभिलाषा आदि था, जो उनके भाग का स्वभाव था। परन्तु इस कीचड़ से मसीहियों को दण्ड की तुलना में इतना अच्छा लग रहा था कि उन्होंने बड़ी सरलता से विश्वास कर लिया कि दुष्टात्माएँ परमेश्वर के संदेशवाहक हैं, और कि यह कीचड़ पवित्र आत्मा का अभिषेक है।

मुझे इस दुष्ट सेना से इतनी घृणा हो रही थी कि मैं मरना चाहता था। तब परमेश्वर की आवाज यह कहते हुए मेरे पास आई, "यह शत्रु की अन्तिम दिनों की सेना है। यह शैतान का अन्तिम छल है। जब वह मसीहियों को एक दूसरे पर आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल करता है तब उसकी परम शक्ति छोड़ी जाती है। सारे युगों में उसने इस सेना को इस्तेमाल किया है, परन्तु जितना वह अब इतने सारों को इस्तेमाल कर रहा है उतना उसने पहले कभी नहीं किया है। डरो मत। मेरी भी एक सेना है। तुम्हें अब खड़े

होकर लड़ना है, क्योंकि इस युद्ध से छिपने के लिए अब कोई स्थान नहीं बचा है। तुम्हें मेरे राज्य के लिए, सत्य के लिए, और उनके लिए जो धोखे में हैं लड़ना है।"

प्रभु का यह वचन इतना प्रोत्साहक था कि मैं तुरन्त मसीही कैदियों को चिल्लाकर कहने लगा कि वे धोखे में हैं, और सोचने लगा कि वे मेरी सुनेंगे। जब मैं ने ऐसा किया तो ऐसा लगा कि सारी सेना ने घूम कर मेरी ओर देखा। जो डर और उदासी उन पर थी मेरी ओर आने लगी। मैं अभी भी चिल्लाता रहा क्योंकि मैं ने सोचा कि मसीही जाग जाएँगे और समझ जाएँगे कि उनके साथ क्या हो रहा है, परन्तु बदले में उनमें से कई अपने तीरों को मुझ पर चलाने के लिए उन्हें हाथ में लेने लगे। दूसरे थोड़े हिचकाए जैसे कि उन्हें पता नहीं था कि वे मेरे बारे में क्या सोचें। तब मैं समझ गया कि मैं ने इसे स्थाई रूप से कर दिया है, और यह एक बहुत ही मूर्खतापूर्ण गलती थी।

युद्ध आरम्भ होता है

तब मैं ने मुड़ कर प्रभु की सेना को मेरे पीछे खड़े देखा। हज़ारों सैनिक थे, परन्तु वे फ़िर भी संख्या में बहुत कम थे। मुझे धक्का लगा और मैं हताश हुआ क्योंकि ऐसा लग रहा था कि जितने मसीही प्रभु की सेना में है उससे कहीं अधिक मसीहियों को शैतान असल में इस्तेमाल कर रहा था। मैं यह भी जानता था कि जो युद्ध आरम्भ होने वाला था उसे एक महान गृहयुद्ध के रूप में देखा जाएगा क्योंकि सन्निकट युद्ध के पीछे शक्तियों को कम लोग ही समझ पाएँगे।

जैसे मैं ने प्रभु की सेना को अधिक निकट से देखा तो स्थिति और भी निराशाजनक लगी। केवल एक छोटी संख्या ही उनके हथियार पहने हुए थे। कई ने उनके हथियारों के केवल एक या दो शस्त्र की पहन रखे थे; कुछ ने तो कुछ भी नहीं पहन रखा था। एक बड़ी संख्या में तो पहले से ही घायल थे। उन में से अधिकाँश के पास जिन्होंने पूरे हथियार पहन रखे थे, बहुत छोटी-छोटी ढालें थीं जिनके विषय में मैं जानता था कि आनेवाले आक्रमण से उनकी रक्षा नहीं कर पाएँगी। मुझे और आश्चर्य हुआ, इन सिपाहियों में से अधिकाँश स्त्रियाँ और बच्चे थे। जिन्होंने उनके पूरे हथियार पहन रखे थे उनमें से बहुत कम ही हथियारों के इस्तेमाल का प्रशिक्षण पाए हुए थे।

इस सेना के पीछे-पीछे एक भीड़ थी जो दुष्ट झुण्ड के पीछे चल रहे कैदियों के समान ही थे, परन्तु वे प्रकृति में बहुत भिन्न थे। वे जरूरत से अधिक खुश दिख रहे थे, जैसे कि मदहोश हों। वे खेल रहे थे, गीत गा रहे थे, खा-पी रहे थे और एक छोटे शिविर से अगले में घूम रहे थे।

मैं प्रभु की सेना की ओर उस आक्रमण से बचने के लिए जो मैं जानता था दुष्ट झुण्ड से आनेवाला है, भागा। हर प्रकार से ऐसा जान पड़ता था कि हम एक-तरफा हत्याकाण्ड में पड़नेवाले थे। मुझे सेना के पीछे चली आ रही भीड़ की विशेष चिन्ता थी, इसलिए मैं ने कोलाहल के ऊपर से चिल्लाकर उन्हें युद्ध की चेतावनी देने का प्रयास किया। परन्तु केवल कुछ ही मुझे सुन पाए। और जो सुन पाए, उन्होंने मुझे "शान्ति का चिन्ह" दिखाया और कहा कि वे युद्ध में विश्वास नहीं करते, और प्रभु उनके साथ कुछ भी बुरा होने नहीं देगा। मैं ने उन्हें समझाने का प्रयास किया कि प्रभु ने हमें हथियार दिए हैं क्योंकि जो अभी होनेवाला है उसके लिए हमें इसकी आवश्यकता होगी, परन्तु उन्होंने प्रत्युत्तर दिया कि वे शान्ति और आनन्द के स्थान में पहुँच चुके हैं जहाँ ऐसा कुछ भी उनके साथ नहीं हो सकेगा। मैं ने प्रभु से बड़ी उत्सुकता के साथ प्रार्थना करना आरम्भ किया कि वह हथियार पहने हुओं की ढालें बड़ी करे ताकि जो युद्ध के लिए तैयार नहीं हैं उनकी रक्षा हो सके।

तब एक संदेशवाहक मेरे पास आया, मुझे एक तुरही दी और मुझे शीघ्रता के साथ बजाने को कहा। मैं ने बजाई, और जिन्होंने उनका कुछ भी हथियार पहना हुआ था तुरन्त उत्तर दिया, और वे खट से सावधान हो गए। उनके लिए और हथियार लाए गए, जिन्हें उन्होंने शीघ्रता के साथ पहन लिया। मैं देखा कि जिन लोगों पर घाव थे उन्होंने उनके घाव पर हथियार नहीं पहने, परन्तु इससे पहले मैं इसके विषय में कुछ कहता, शत्रु के तीर हमारे ऊपर बरसने लगे। जिसने भी उसके सारे हथियार नहीं पहन रखे थे घायल हो गया। जिन्होंने उनके घावों को छिपाया नहीं था दोबारा वहीं पर चोट खाई।

जिन पर निन्दा के तीरों से प्रहार हुआ था, तुरन्त उनकी निन्दा करने लगे जो घायल नहीं थे। जिन पर गप-शप का प्रहार हुआ वे गप-शप करने लगे, और शीघ्र ही हमारे अपने शिविर में एक मुख्य भाग बन गया था। मुझे लगा कि हम अपने आपको नष्ट करने की सीमा पर थे, उसी प्रकार जैसे पवित्रशास्त्र में कुछ सांसारिक सेनाओं ने एक दूसरे को घात करके किया था। निस्सहायता की भावना भयानक थी, जब गिद्ध घायलों पर झपटते और उन्हें कैदियों के शिविर में ले जाते थे। घायलों के पास अभी भी तलवारें थीं और वे सरलता से गिद्धों पर प्रहार कर सकते थे, परन्तु उन्होंने नहीं किया। असल में वे स्वेच्छा से चले गए क्योंकि वे उनसे नाराज थे जो उनके समान घायल नहीं हुए थे।

मैं ने शीघ्रता से सेना के पीछे वाली भीड़ के विषय में सोचा और उन्हें देखने के लिए कि उनका क्या हुआ है भागा। यह असम्भव लग रहा था परन्तु उनका दृश्य और भी खराब था। हजारों घायल भूमि पर पड़े कराह रहे थे। उनके ऊपर का आकाश गिद्धों के कारण काला पड़ा हुआ था जो उन्हें शत्रु के कैदी बनाने के लिए उठा कर ले जा रहे थे। उन में से कई जो घायल नहीं हुए थे अविश्वास की भावशून्यता में बैठे हुए थे, और गिद्ध उन्हें भी बड़ी सरलता के साथ उठा ले गए। कुछ ने गिद्धों के साथ लड़ने का

प्रयास आरम्भ किया था, परन्तु उनके पास उपयुक्त हथियार नहीं थे, और गिद्धों ने उन पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। घायल इतने नाराज थे कि वे उन सब को धमकाते और भगा देते थे जो उनकी सहायता करने का प्रयत्न करते, परन्तु वे गिद्धों के अधीन और दब्बू बने हुए थे।

इस भीड़ में से जो घायल नहीं हुए थे और गिद्धों से लड़ने का प्रयास किया था, युद्ध के क्षेत्र से भागने लगे थे। शत्रु के साथ यह पहली मुठभेड़ इतनी विध्वंसक थी कि मैं भी उनके साथ भागने की सोचने लगा था। तब, आश्चर्यजनक तेजी के साथ, जो भाग गए थे उनमें से कुछ पूरे हथियार पहने हुए और बड़ी बड़ी ढालें लिए हुए वापस प्रकट हुए। यह थोड़ा सा पहला प्रोत्साहन था जिसे मुझे याद है मैं ने अनुभव किया था। ये योद्धा जो लौट रहे थे उनमें पार्टी का हर्ष नहीं था, परन्तु उसके स्थान पर एक विस्मयकारी संकल्प था। मैं जानता था कि वे एक बार धोखा खाए हैं, और अब वे सरलता के साथ धोखे में नहीं पड़ेंगे। वे उनके स्थान लेने लगे जो गिर पड़े थे, और पिछले और बाजू की रक्षा के लिए सेना बनाने लगे थे। इससे सारी सेना में बड़ा साहस फैलने लगा जिससे खड़े होकर लड़ने का सब का निश्चय दोबारा बढ़ने लगा। तुरन्त विश्वाश, आशा और प्रेम नामक तीन विशाल स्वर्गदूत आए और सेना के पीछे खड़े हो गए। जैसे हम ने उनको देखा तो हम सब की ढालें बढ़ने लगीं। आश्चर्यजनक बात है कि कितनी शीघ्रता के साथ निराशा विश्वास में परिवर्तित हो गई थी। यह पक्का विश्वास भी था, जो अनुभव के साथ तैयार किया हुआ था।

महा मार्ग

अब सबके पास तलवारें थीं जिनके नाम परमेश्वर का वचन था, और तीर थे जिनके नाम बाइबल के विभिन्न सच्चाइयों पर रखे हुए थे। हम भी वार करना चाहते थे, परन्तु जानते न थे कि उन मसीहियों को कैसे बचाया जाए जिन पर दुष्टात्माएँ चढ़ी हुई थीं। तब हमारे मन में आया कि यदि इन मसीहियों पर सच्चाई का प्रहार होगा तो वे जाग जाएँगे और उनके अत्याचारियों से लड़ कर उन्हें भगा देंगे। मैं ने कुछ तीर छोड़े, और दूसरों ने भी कुछ तीीर छोड़े। लगभग सब तीर मसीहियों को जा लगे। परन्तु, जब सत्य के तीन उनको लगे, तो वे जगे नहीं या घायल होकर गिर नहीं पड़े - वे क्रुद्ध हुए, और उन पर चढ़ी हुई दुष्टात्माएँ बहुत बड़ी होने लगीं।

इससे सबको धक्का लगा, और हम महसूस करने लगे कि यह जीतने के लिए एक असम्भव युद्ध है। फिर भी, विश्वास, आशा और प्रेम के साथ, हमें विश्वास था कि हम कम से कम अपने स्थान पर तो खड़े रहेंगे। तब बुद्धि नामक एक और स्वर्गदूत प्रकट हुआ और उसने हमें हमारे पीछे के पर्वत पर से लड़ने का आदेश दिया। पर्वत पर जितना ऊँचा हम देख सकते थे उतने ऊँचे तक भिन्न-भिन्न स्तर पर कगार लगे हुए थे। हर ऊँचे स्तर पर कगार संकीर्ण, और खड़े होने के लिए कठिन होता जा रहा था। हर स्तर का नाम बाइबल का एक सिद्धान्त था। नीचे के स्तर नींव के सिद्धान्तों के नाम थे, जैसे कि: "उद्धार", "पवित्रीकरण", "प्रार्थना", "विश्वास", आदि, और ऊँचे स्तरों के नाम बाइबल के गहरे सिद्धान्तों के नाम थे। जितनी ऊँचाई पर हम जाते उतनी ही बड़ी हमारी ढालें और हमारी तलवारें होती जातीं, और उतने ही कम शत्रु के तीर हम तक पहुँच पाते।

एक दुखद भूल

कुछ लोग जो नीचे के स्तरों पर रह गए थे, शत्रु के तीरों को उठाकर वापस उन पर फेंकने लगे। यह बहुत ही गभीर भूल थी। दुष्टात्माएँ सरलता के साथ तीरों के सामने से हट गए और उनको मसीहियों को लगने देते। जब एक मसीही को दोषारोपण या निन्दा का एक तीर लगता, तब कड़ुवाहट या रोष की एक दुष्टात्मा आती और तीर पर बैठ जाती। तब वह अपना ज़हर मसीही पर पेशाब करने और मलत्याग करने लगती। जब एक मसीही पर ऐसी दो या तीन दुष्टात्माएं अभिमान या आत्म-धार्मिकता की दुष्टाताओं में जुड़ जातीं जो पहले ही वहाँ थीं, तब वह आप भी दुष्टात्माओं की विकृत प्रतिमा में परिवर्तित हो जाता।

हम इसे ऊँचे स्तर से होता हुआ देख रहे थे, परन्तु जो नीचे स्तरों पर से शत्रु के तीरों को फेंक रहे थे नहीं देख पा रहे थे। हम में लगभग आधों ने चढ़ते रहने का निर्णय लिया जबकि बाकी नीचे से स्तरों पर जाने लगे ताकि उन्हें समझा सकें क्या हो रहा है जो नीचे थे। तब सबको चेतावनी दी गई कि वे चढ़ते रहें और रुकें नहीं, केवल कुछ लोगों ने अपने आपको हर स्तर पर खड़ा किया हुआ था ताकि वे उनकी सहायता कर सकें जो आगे बढ़ रहे थे।

सुरक्षा

जब हम "भाइयों में एकता" नामक स्तर पर पहुँचे, तब शत्रु का कोई भी तीर हम तक नहीं पहुँच पा रहा था। हमारे शिविर में के कइयों ने फैसला किया कि उन्हें इतनी ऊँचाई तक ही चढ़ने की आवश्यकता है। मैं इसे समझ गया क्योंकि हर स्तर के साथ पैरों का जमाव अनिश्चित होता जा रहा था। परन्तु, जैसे मैं ऊँचाई पर जाता रहा मैं ने महसूस किया कि मैं अधिक शक्तिशाली और अपने हथियारों के साथ अधिक निपुण हो रहा था, इसलिए मैं चढ़ता रहा।

शीघ्र ही मेरी निपुणताएँ मसीहियों को मारे बिना दुष्टात्माओं को मारने में काफी अच्छी हो गई। मुझे लगा कि यदि मैं ऊँचा जाता रहा तो मैं दूर तक मार सकता था और दुष्ट झुण्ड के मुख्य अगुवों को मार सकता था जो उनकी सेना के पीछे होते थे। मुझे दुख

हुआ कि कितने सारे निचले स्तरों पर रह गए थे, जहाँ वे सुरक्षित तो थे परन्तु शत्रु को मार नहीं सकते थे। फिर भी, जो चढ़ते जा रहे थे उनमें शक्ति और चरित्र बढ़ते जा रहे थे जिससे उन में से हर एक कई शत्रुओं को नष्ट कर सकता था।

हर स्तर पर सच्चाई के तीर बिखरे पड़े थे जिन्हें वे छोड़ गए थे जो उस स्थिति से गिर गए थे (कई हर स्थिति से गिरे हुए थे)। सब तीरों के नाम उस स्तर के नाम पर थे। कुछ उन तीरों को उठाने के इन्छुक नहीं थे, परन्तु मैं जानता था कि हमें नीचे के झुण्ड को नष्ट करने के लिए सब तीरों की आवश्यकता होगी। मैं ने एक उठाया, और मारा, और कितनी सरलता से एक दुष्टात्मा को मारा, कि दूसरे भी उन्हें उठाने और मारने लगे। हमें शत्रु के कई भागों को मारने लगे। इस के कारण, सारी दुष्ट सेना का ध्यान हम लग गया। कुछ समय के लिए ऐसा लगा कि जितनी अधिक विजय हम प्राप्त करते, उतना अधिक शत्रु हम पर आक्रमण करता। हालाँकि हमारा काम अनन्त था, यह आनन्दकर बन गया था।

क्योंकि ऊँचे स्तरों पर शत्रु हमें मार नहीं सक रहा था, तो गिद्धों के झुण्ड हम पर उलटी करने के लिए हमारे ऊपर उड़ने लगे, या वे दुष्टात्माओं को लाते थे जो कगारों पर पेशाब और मलत्याग करते, जिससे वे बहुत फिसलनेवाले हो जाते।

लंगर

हर स्तर पर चढ़ने के साथ हमारी चलवारें बढ़ने लगीं, परन्तु मैं ने अपनी तलवार लगभग पीछे छोड़ दी थी क्योंकि मुझे लग नहीं रहा था मुझे ऊँचे स्तरों पर इसकी आवश्यकता पड़ेगी। मैं ने लापरवाही के साथ इसे रखने का फैसला किया, मैं सोच रहा था कि मुझे यह किसी कारण से ही दी गई होगी। तब, क्योंकि जिस कगार पर मैं खड़ा था इतनी संकीर्ण थी, और फिसलनेवाली हो रही थी, मैं ने तलवार को भूमि में गाड़ दिया और शत्रु पर वार करते समय अपने आप को इससे बाँध दिया। तब प्रभु की आवाज यह कहते हुए मेरे पास आई, "तू ने बुद्धि इस्तेमाल की है जो चढ़ते रहने में तुम्हारी सहायता करेगी। कई इसलिए गिर गए हैं क्योंकि उन्होंने अपने आप को लंगर लगाने में उनकी तलवार को उचित रूप से उपयोग नहीं किया था।" ऐसा लगा कि कोई भी इस आवाज को सुन नहीं पाया था, परन्तु अनेकों ने देखा जो मैं ने किया था और वैसा ही किया।

मैं ने सोचा कि प्रभु ने ऐसा करने के लिए पहले मुझ से बात क्यों नहीं की थी। तब मैं ने जाना कि उसने इसके विषय में मेरे साथ किसी न किसी प्रकार से बात की थी। जैसे मैं ने इस पर विचार किया जो समझ में आया कि मेरा सारा जीवन इस समय के लिए प्रशिक्षण पाया हुआ था। मैं जान गया कि जिस दर्जे तक मैं प्रभु की बात सुनी थी और उसके अनुसार किया था उसी दर्जे तक मैं तैयार हुआ था। मैं यह भी जान गया कि किसी कारण से जो बुद्धि और समझ मुझ में अब थी, इस युद्ध के दौरान, न तो बढ़ाई जा सकती थी और न ही मुझे से ले ली जा सकती थी। मैं अपने जीवन में अनुभव की हर परीक्षा के लिए बहुत कृतज्ञ हुआ, और मुझे दुख भी हुआ कि मैं ने उस समय उनका महत्त्व समझा नहीं था।

शीघ्र ही हम दुष्टात्माओं को लगभग सम्पूर्ण परिशुद्धता के साथ मार रहे थे। शत्रु का रोष आग और गंधक के समान उठने लगा था। मैं जान गया कि उस सेना में फँसे मसीही अब उस रोष का आवेग महसूस कर रहे थे। कुछ इतने क्रुध हो गए कि वे एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। सामान्यतः यह बड़े प्रोत्साहन की बात होती, परन्तु जिनको सबसे अधिक तकलीफ हुई वे धोखा खाए हुए मसीही थे जो शत्रु के शिविर में थे। मैं जानता था कि संसार को यह मसीहियत का ही अबोध्य विलीन होना लग रहा होगा।

उन में से कुछ जिन्होंने उनकी तलवारों को लंगर के रूप में उपयोग नहीं किया था गिद्धों को मार गिराने में सफल हो रहे थे, परन्तु वे कगारों से भी बड़ी सरलता से गिर रहे थे जिन पर वे खड़े थे। इन में से कुछ निचले स्तरों पर गिर पड़े थे, परन्तु कुछ बिलकुल नीचे जा गिरे थे जिन्हें गिद्ध उठा कर ले जा रहे थे। मैं ने हर मुक्त क्षण में जो मुझे मिलता था अपनी तलवार को कगार में और अधिक घुसाने या अपने आप को उस में और अच्छी तरह बाँधने में लगाया। हर बार जब मैं ऐसा करता था, तो बुद्धि मेरे बगल में खड़ी हो जाती, जिससे मुझे पता चलता कि यह बहुत महत्त्व का था।

एक नया हथियार

सच्चाई के तीर बिरले ही गिद्धों को भेदते थे, परन्तु उन्हें वापस भगा देने के लिए वे काफी चोट पहुँचाते थे। हर बार जब वे काफी दूर भगा दिए जाते थे, हम में से कुछ अगले स्तर पर चढ़ जाते थे। जब हम "गलातियों, दो बीस" नामक स्तर पर पहुँचे, तब हम उस रवैये के ऊपर थे जिसका विरोध गिद्ध कर सकते थे। इस स्तर पर ऊपर के आकाश ने इसकी चमक और सुन्दरता से हमें लगभग चौंधिया दिया। मैं ने ऐसी शान्ति अनुभव की जिसे मैं ने पहले कभी नहीं किया था। जब तक मैं इस स्तर तक नहीं पहुँचा था, हमारा अधिकतर लड़ना शत्रु के लिए डर, घृणा या विरक्ति से उतना ही प्रेरित था जितना परमेश्वर के राज्य, सच्चाई, या कैदियों के लिए प्रेम से प्रेरित था। परन्तु इस स्तर पर मैं विश्वास, आशा और प्रेम के पास पहुँच गया था, जबकि पहले मैं उन्हें केवल दूर से ही देख पा रहा था। यहाँ मैं उनकी महिमा से लगभग अभिभूत हो गया। फिर भी, मुझे लगा मैं उनके निकट हो सकता हूँ। जब मैं उनके निकट हुआ वे मेरी ओर फिरे और मेरे हथियारों की मरम्मत करने और चमकाने लगे। शीघ्र ही वे बदल गए और विश्वास, आशा और प्रेम से आनेवाली महिमा को प्रतिबिम्ब करने लगे। जब उन्होंने मेरी तलवार को छूआ, जो उसमें से चमकीली

बिजली के गाज चमकने लगे। तब प्रेम ने कहा, "जो इस स्तर तक पहुँचते हैं उन्हें आनेवाले युग का सामर्थ्य सौंपा जाता है।" फिर एक शान्त करनेवली गम्भीरता के साथ मेरी ओर फिर कर, उसने कहा, "मुझे अभी भी तुम्हें उन्हें उपयोग करना सिखाना है।"

"गलातियों दो बीस" स्तर इतना चौड़ा था कि उस पर से गिरने का कोई खतरा नहीं था। वहाँ आशा नामक असीमित तीर भी थे। हम ने उन में से कुछे नीचे गिद्धों पर छोड़े, और इन तीरों ने उन्हें सरलता के साथ मार गिराया। उन में से आधे जो इस स्तर पर पहुँचे थे तीर मारते रहे जबकि बाकी उनको उन तक पहुँचाने के लिए गए जो अभी भी नीचे के स्तरों पर थे।

गिद्ध लहरों के समान नीचे के स्तरों पर आक्रमण कर रहे थे, परन्तु हर लहर के साथ कम होते जा रहे थे। "गलातियों दो बीस" स्तर से हम सेना के किसी भी शत्रु को मार सकते थे, केवल अगुवों को ही नहीं मार पा रहे थे जो हमारी पहुँच से बाहर थे। हम ने फैसला किया कि हम जब तक सब गिद्धों को नष्ट नहीं कर लेते, सच्चाई के तीरों को इस्तेमाल नहीं करेंगे, क्योंकि जो उदासी के बादल उन्होंने बना रखे थे सत्य को कम प्रभावशाली बना देते थे। इसमें एक लम्बा समय लग गया, परन्तु हम थके नहीं। अन्त में, ऐसा लगने लगा कि पर्वत के ऊपर का आकाश गिद्धों से लगभग पूरी तरह खाली हो गया है।

विश्वास, आशा और प्रेम, जो हमारे हथियारों के समान हर स्तर पर बढ़ते गए थे, अब इतने बड़े हो गए थे कि युद्ध क्षेत्र के दूर के लोग भी उन्हें देख सकते थे। उनकी महिमा कैदियों के शिविर में भी फैल रही थी जो अभी भी गिद्धों के बड़े बादल के नीचे थे। मैं बहुत प्रोत्साहित हुआ कि वे इस प्रकार देखे जा सकते थे। अब सम्भव था कि जिन मसीहियों को शत्रु इस्तेमाल कर रहा था, और जिन कैदियों को उसने पकड़ रखा था, समझ जाएँगे कि हम शत्रु नहीं है, परन्तु उन्हें शत्रु इस्तेमाल कर रहा है।

परन्तु ऐसा हुआ नहीं, कम से कम अभी तो नहीं हुआ। जो शत्रु के शिविर में थे जो विश्वास, आशा और प्रेम के प्रकाश को देखने लगे थे उन्हें "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" कह रहे थे जो कमज़ोरों या नासमझों को धोखा देने वाले थे। तब मैं समझ गया कि उनका धोखा और बन्धन मेरी समझ से कहीं अधिक बड़ा था। परन्तु, गैर-मसीहियों ने, जो इन में से किसी भी सेना का भाग नहीं थे, उनकी महिमा को देखा और बेहतर दृश्य के लिए पर्वत के निकट होने लगे थे। जो उन्हें देखने के लिए निकट आए थे समझने लगे थे कि युद्ध वास्तव में किस के विषय में है। यह एक बड़ा प्रोत्साहन था।

विजय का उल्लास हम सब में बढ़ता रहा था। मुझे लगा कि इस सेना में इस युद्ध में होना सब समय का सबसे बड़ा साहसिक कार्य होगा। अधिकाँश गिद्धों को नष्ट करने के बाद जो हमारे पर्वत पर आक्रमण कर रहे थे, हम उन गिद्धों को निशाना बनाने लगे जो अभी भी कैदियों पर छाए हुए थे। जैसे अन्धकार का बादल छटने लगा और उन पर सूर्य चमकने लगा, तब वे भी, ऐसे जागने लगे जैसे कि गहरी नींद में थे। उन्हें तुरन्त अपनी स्थिति से घृणा हुई, विशेषकर उस उलटी से जो अभी भी उनके ऊपर लगी हुई थी, और वे अपने आप को साफ करने लगे। जैसे उन्होंने विश्वास, आशा और प्रेम को देखा, और पर्वत को भी देखा और वे दौड़ पड़े।

दुष्ट झुण्ड ने उनकी पीठों पर दोषारोपण और निन्दा के तीर छोड़े, परन्तु वे रुके नहीं। पर्वत तक पहुँचते पहुँचते कइयों की पीठ पर एक दर्जन या अधिक तीर लगे हुए थे, फिर भी वे कोई परवाह नहीं कर रहे थे। जैसे ही वे पर्वत पर चढ़ने लगे उनके घाव भरने लगे। उदासी का बादल हट जाने के बाद ऐसा लगने लगा था कि जैसे अब सबकुछ आसान हो रहा है।

फँदा

पुराने कैदियों को उनके उद्धार से बड़ा आनन्द हो रहा था। जैसे वे पर्वत पर चढ़ने लगे तो वे हर स्तर के लिए प्रशंसा से इतने अभिभूत हो गए कि इससे हम भी उन सच्चाइयों के लिए अधिक आदर से भर गए। शीघ्र ही पुराने कैदियों में शत्रु से लड़ने का एक तीव्र संकल्प उत्पन्न हुआ। उन्होंने दिए हुए हथियार पहन लिए और हम से याचना करने लगे कि उन्हें लौटकर शत्रु पर आक्रमण करने दिया जाए जिसने उन्हें कैदी बना रखा था, और इतने लम्बे समय तक उन के साथ दुर्व्यवहार किया था। हम ने इसके विषय में विचार किया, और फिर फैसला किया कि हम सब को लड़ने के लिए पर्वत पर ही रहना चाहिए। दोबारा प्रभु की आवाज आई, "दूसरी बार तुम ने बुद्धि उपयोग की है। यदि तुम शत्रु से उसके स्तर पर लड़ोगे तो जीत नहीं सकोगे, परन्तु तुम्हें मेरे पवित्र पर्वत पर रहना होगा।"

मैं चकित हुआ कि हम ने ऐसे महत्त्व का फैसला सोचकर और संक्षेप में विचार करके किया था। तब मैं ने निश्चय किया कि मैं किसी भी परिणाम का कोई भी फैसला बिना प्रार्थना के नहीं करूँगा। तब बुद्धि तुरन्त मेरे निकट आई, मेरे दोनों कंधों को दृढ़ता के साथ पकड़ा और मेरी आँखों में आँखें डालकर कहा, "तुम्हें ऐसा करना चाहिए!" जैसे बुद्धि ने यह कहा उसने मुझे आगे की ओर खींचा जैसे कि वह मुझे किसी चीज से बचा रहा था। मैं ने पीछे मुड़कर देखा, हालाँकि मैं "गलातियों दो बीस" के चौड़े पठार पर खड़ा था, मैं बिना जाने किनारे की ओर चला गया था। मैं पर्वत पर से गिरने के बिलकुल निकट आ गया था। मैं ने बुद्धि की आँखों में दोबारा देखा, और उसने बड़ी गम्भीरता के साथ कहा, "जब तुम सोचते हो तुम खड़े हो, ध्यान दो, कहीं ऐसा न हो कि गिर पड़ो। इस जीवन में तुम किसी भी स्तर से गिर सकते हो।"

मैं ने इसके विषय में थोड़ी देर तक विचार किया। उस विजय के उल्लास में जिसे हम प्राप्त करने लगे थे, और भाइयों की एकता में, मैं लापरवाह हो गया था। लापरवाही से गिरने के बजाय शत्रु के आक्रमण से गिरना उत्तम था।

साँप

एक लम्बे समय तक हम गिद्धों को मारते और दुष्टात्माओं को निकालते रहे जो मसीहियों पर चढ़ी हुई थीं। हम ने पाया कि विभिन्न सच्चाइयों के तीरों का विभिन्न दुष्टात्माओं पर अधिक प्रभाव होता था। हम जानते थे कि यह एक लम्बा चलने वाला युद्ध होगा, परन्तु अब हमारी कोई अधिक दुर्घटनाएँ नहीं हो रही थीं, और हम ने "धैर्य" के स्तर से आगे चढ़ना जारी रखा। फिर भी, इन मसीहियों पर से दुष्टात्माओं के निकल जाने के बाद भी, बहुत कम ही पर्वत पर आते थे। कइयों ने दुष्टात्माओं के स्वभाव ले लिए थे, और उनके बिना भी उनके धोखे में बने रहे थे। जैसे दुष्टात्माओं का अन्धकार हटने लगा तो हम ने इन मसीहियों के नीचे से भूमि को सरकते देखा। तब मैं ने देखा कि उनकी टाँगें साँपों से बँधी हुई हैं। जैसे मैं साँपों को देख रहा था तो पाया कि वे सब एक प्रकार के थे, और लज्जा नाम उन पर लिखा हुआ था।

हम ने सच्चाई के तीर उन पर छोड़े परन्तु कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब हम ने आशा के तीर इस्तेमाल किए, परन्तु कोई परिणाम नहीं मिला। "गलातियों दो बीस" से ऊपर जाना बहुत आसान था क्योंकि हम सब एक दूसरे की सहायता कर रहे थे। क्योंकि हम शत्रु के विरुद्ध कुछ कर नहीं पा रहे थे, तो हम ने फैसला किया कि हम जहाँ तक चढ़ सकते हैं चढ़ जाएँगे और देखेंगे कि ऐसा कुछ मिल जाए जो साँपों के विरुद्ध काम करेगा।

हम सच्चाई के स्तर के पास से फुर्ती से निकल गए। उन में से अधिकाँश पर हम ने रुक कर देखने का प्रयत्न भी नहीं किया कि साँपों पर काम करने वाला कुछ मिल जाए। विश्वास, आशा और प्रेम हमारे साथ-साथ थे, परन्तु मैं ने ध्यान नहीं दिया कि हम बुद्धि को पीछे छोड़ आए थे। काफी देर बाद मुझे पता चलने वाला था कि यह एक बड़ी भूल थी। वह हम से शिखर पर तो मिलने ही वाला था, परन्तु उसे पीछे छोड़ देने से हम ने दुष्ट झुण्ड पर एक अति शीघ्र और सरल विजय को खो दिया था।

लगभग बिना चेतावनी के हम एक स्तर पर पहुँचे जहाँ से एक बाग में रास्ता जाता था। ऐसा सुन्दर स्थान मैं ने कभी नहीं देखा था। इस बाग के द्वार पर ये शब्द लिखे हुए थे, "पिता का अप्रतिबन्ध प्रेम"। प्रवेश इतना यशस्वी और आकर्षक था कि हम प्रवेश करने से रुक नहीं सके। जैसे ही मैं ने प्रवेश किया मैं ने एक पेड़ देखा, मैं जानता था जीवन का पेड़ ही होगा। यह बाग के मध्य में था, और इसकी रखवाली अभी भी विस्मयकारी सामर्थ्य और अधिकार वाले स्वर्गदूत कर रहे थे। जब मैं ने उनकी ओर देखा तब उन्होंने भी मेरी ओर देखा। वे स्नेही लग रहे थे, जैसे कि वे हमारी अपेक्षा कर रहे थे। मैं ने पीछे मुड़ कर देखा और पाया कि बाग में दूसरे योद्धाओं की एक सेना भी थी। इसने हम सब को साहस दिया, और स्वर्गदूतों के आचरण के कारण, हम ने उन के पास से निकलकर पेड़ तक पहुँचने का फैसला किया। एक स्वर्गदूत ने पुकार कर कहा, "जो इस स्तर तक पहुँचते हैं, जो पिता के प्रेम को जानते है, वे खा सकते हैं।"

मुझे एहसास नहीं था कि मुझे कितनी भूख लगी है। जब मैं ने फल चखा, तो पाया कि यह उस सब से बेहतर था जो मैं ने पहले कभी खाया था, परन्तु यह किसी प्रकार सुपरिचित भी था। इसने धूप, वर्षा, सुन्दर खेत, समुद्र में सूर्य के अस्त होने की याद दिला दी, परन्तु उससे भी बढ़कर उन लोगों की याद दिला दी जिनसे मैं प्रेम करता था। हर काट के साथ मैं सब चीजों से और सब लोगों से अधिक प्रेम करने लगा था। तब मेरे मन में मेरे शत्रु आने लगे, और मैं ने उनसे भी प्रेम किया। यह भावना शीघ्र ही उस सबसे बढ़ गई जिसे मैं ने कभी अनुभव किया था, "गलातियों दो बीस" की शान्ति से भी जब हम पहली बार इस स्तर पर पहुँचे थे। तब मैं ने प्रभु की आवाज यह कहते हुए सुनी, "यह अब तुम्हारी प्रतिदिन की रोटी है। इसे तुम से कभी भी रोका नहीं जाएगा। तुम जितना चाहो और जब चाहो खा सकते हो। मेरे प्रेम का कोई अन्त नहीं है।"

मैं ने यह देखने के लिए कि आवाज कहाँ से आई थी पेड़ की ओर देखा और देखा कि यह शुद्ध श्वेत उकाबों से भरा हुआ थाा। उनकी सबसे सुन्दर, भेदक आँखें थीं जैसी मैं ने पहले कभी नहीं देखी थीं। वे मेरी ओर देख रहे थे जैसे कि निर्देश की प्रतीक्षा कर रहे हों। एक स्वर्गदूत ने कहा, "वे तुम्हारा आदेश मानेंगे। ये उकाब साँप खाते हैं।" मैं ने कहा, "जाओ! उस लज्जा को खा लो जिसने हमारे भाइयों को बाँध रखा है।" उन्होंने उनके पंख खोले और एक हवा चली और उन्हें ऊपर उठा ले गई। इन उकाबों ने आकाश को एक चौंधिया देनेवाली महिमा से भर दिया। हम इतनी ऊँचाई पर थे परन्तु फिर भी मैं नीचे उतर रहे उकाबों को देखने पर शत्रु के शिविर से आ रही आतंक की आवाजें सुन सकता था।

राजा प्रकट होता है

तब प्रभु यीशु मसीह हमारे मध्य प्रकट हुए। उन्होंने हम में से हर एक का स्वयं स्वागत किया और पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिए हमारे बझाई दी। तब उन्होंने कहा, "मुझे अब तुम्हें भी वह बताना चाहिए जो मैं ने स्वर्गारोहण से पहले तुम्हारे भाइयों को बताया था - मेरे राज्य का संदेश। शत्रु की सबसे शक्तिशाली सेना को अब खदेड़ दिया गया है, परन्तु नष्ट नहीं हुई है। अब हमारे पास मेरे राज्य का संदेश लेकर कूच करने का समय है। उकाबों को छोड़ा गया है और वे हमारे संग चलेंगे। हम हर स्तर से तीर ले लेंगे, परन्तु मैं तुम्हारी तलवार हूँ, और मैं तुम्हारा कप्तान हूँ। अब प्रभु की तलवार को म्यान से निकालने का समय है।"

तब मैं ने मुड़ कर देखा कि प्रभु की सारी सेना बाग में खड़ी थी। सब जातियों और राष्ट्रों से पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे थे, जो उनके झंडे उठाए हुए थे, जो हवा से सम्पूर्ण एकता में लहरा रहे थे। मैं जानता था कि इससे पहले पृथ्वी पर ऐसा कभी नहीं देखा गया था। मैं जानता था कि शत्रु की पृथ्वी भर में और भी कई सेनाएँ, और गढ़ हैं, परन्तु इस महान सेना के आगे कुछ भी खड़ा नहीं हो सकता था। मैं ने लगभग धीमे से कहा, "यह प्रभु का दिन होगा।" सारी सेना ने तब एक विस्मयकारी गड़गड़ाहट के साथ कहा, "सेनाओं के प्रभु का दिन आ गया है।"

सारांश

महिनों बाद मैं इस स्वपन पर विचार कर रहा था। कलीसिया की कुछ घटनाएँ और स्थितियाँ उसके समान लग रहीं थीं जिसे मैं ने देखा था जब नरक की सेना ने कूच किया था। तब मुझे अब्राहम लिन्कन की याद आई। केवल एक ही तरीके से वह "उद्धारक" बन सकता था, और संध की एकता को बनाए रख सकता था यदि वह ग्रहयुद्ध लड़ने के लिए तैयार होता। उसे न केवल लड़ना था, परन्तु एक निश्चय के साथ लड़ना था कि जब तक विजय प्राप्त न हो जाती समझौता नहीं करना था। उसके पास, शत्रु को प्रचार द्वारा "नारकीय" बनाए बिना अमरीका के इतिहास का एक सबसे रक्तरंजित युद्ध लड़ने के लिए अनुग्रह होना अवश्य था। यदि उसने ऐसा किया होता तो उसने उत्तर के संकल्प को कहीं शीघ्रता के साथ उत्तेजित कर लिया होता, और शीघ्र ही एक सैनिक विजय प्राप्त कर ली होती, परन्तु इससे युद्ध के बाद इकट्ठा करना अधिक कठिन हो गया होता। क्योंकि वह असल में संघ को सुरक्षित रखने के लिए युद्ध कर रहा था, उसने दक्षिण के पुरुषों और स्त्रियों को शत्रु नहीं बनाया, परन्तु उस दुष्टता को बनाया जिसने उन्हें बन्धन में रखा था।

एक महान आत्मिक ग्रहयुद्ध कलीसिया के सामने खड़ा है। कई इससे बचने के लिए सबकुछ जो वे कर सकते हैं करेंगे। यह स्वाभाविक है, और उत्तम भी। परन्तु, समझौता एक अनन्त शान्ति बनाए नहीं रख सकता है। यह केवल अन्तिम संघर्ष को जब वह आएगा अधिक कठिन बना देगा, परन्तु यह आएगा।

प्रभु अब एक आत्मिक अगुआई को तैयार कर रहा है जो मनुष्यों को स्वतंत्र करने के लिए एक आत्मिक ग्रहयुद्ध लड़ने की इच्छुक होगी। मुख्य मामला गुलामी बनाम स्वतंत्रता का है। दूसरा मामला, जो कुछ के लिए प्रमुख मामला होगा, रुपया-पैसा होगा। जैसे कभी-कभी ऐसा लगता था कि अमरीका का ग्रहयुद्ध सारे राष्ट्र को नष्ट कर देगा, उसी प्रकार जो कलीसिया पर आनेवाला है उससे कभी-कभी ऐसा लगेगा कि इससे कलीसिया का अन्त हो जाएगा। परन्तु, जैसे न केवल अमरीका बना रहा बल्कि विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बन गया, वैसा ही कलीसिया के साथ होने वाला है। कलीसिया नष्ट नहीं होगी, परन्तु जिन संस्थाओं और सिद्धान्तों ने मनुष्यों को आत्मिक गुलामी में रखा है हो जाएँगे।

इसके बाद भी, कलसिया में सम्पूर्ण न्याय रात भर में नहीं प्राप्त होगा। स्त्रियों के अधिकार के लिए तब भी संघर्ष होंगे, और इसलिए कलीसिया को जातिवाद और अत्याचार की दूसरी किस्मों से स्वतंत्र कराना होगा। ये सब मामले हैं जिनका सामना किया जाना चाहिए। परन्तु, आनेवाले आत्मिक ग्रहयुद्ध के मध्य, विश्वास, आशा और प्रेम, और परमेश्वर का राज्य जिस पर वे खड़े हैं, दिखाई देने लगेंगे जैसे वे पहले कभी भी दिखाई नहीं दिए हैं। यह सब मनुष्यों को राज्य में खींचने लगेगा। परमेश्वर की सरकार किसी भी मानवीय सरकार से बड़ी है दिखाई देने लगेगा।

और आओ हम सदा याद रखें, कि प्रभु के साथ "एक हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है।" वह हम में उसे एक दिन में कर सकता है जिसके लिए हम को लगता है एक हज़ार वर्ष लगेगा। कलीसिया को स्वतंत्र करने, और महिमा देने का काम, ऐसा काम है जो जैसा हम सोचते हैं मनुष्य से सम्भव है उस से कहीं शीघ्र पूरा हो जाएगा। परन्तु, हम मानवीय सम्भवनाओं की बात नहीं कर रहे हैं।

भाग 2 – पवित्र पर्वत

हम परमेश्वर के बाग में जीवन के पेड़ के नीचे खड़े थे। ऐसा लगता था कि सारी सेना वहाँ थी, कुछ प्रभु यीशु के सामने घुटनों पर थे। उसने अभी-अभी हमें हमारे भाइयों की खातिर जो अभी भी बन्धन में थे, और संसार की खातिर जिससे वह प्रेम करता है, युद्ध में लौटने का आदेश दिया था। यह एक अदभुत और भयानक आदेश दोनों था। यह अदभुत था क्योंकि यह उससे आया था। यह भयानक था क्योंकि इसका तात्पर्य था कि हमें उसकी प्रकट उपस्थिति को, और इस बाग को जिसके जितना सुन्दर हम ने कोई भी स्थान नहीं देखा था, छोड़ना पड़ेगा। यह सब छोड़कर दोबारा युद्ध में जाना अबोध्य लग रहा था।

प्रभु ने उसका उपदेश जारी रखाः "मैं ने तुम्हें आत्मिक वरदान और सामर्थ्य, अपने वचन और अपने राज्य की वर्धमान समझ दी है, परन्तु सबसे महान हथियार जो तुम्हें दिया गया है पिता का प्रेम हैं। जब तक तुम पिता के प्रेम में चलते रहोगे तुम कभी भी

असफल नहीं होगे। इस पेड़ का फल पिता का प्रेम है जो मुझ में प्रकट है। यह प्रेम जो मुझ में है तुम्हारी प्रतिदिन की रोटी होनी चीहिए।"

ऐसी सुन्दरता और महिमा के इस वातावरण में ऐसा लग नहीं रहा था कि प्रभु उसकी महिमा में प्रकट हुआ है। असल में, उसका प्रकटन साधारण था। फिर भी, जिस अनुग्रह से वह चलता-फिरता और बात करता था, उसके समान कोई आकर्षक व्यक्ति नहीं था जिससे मैं मिला हूँ। वह मान-मर्यादा और श्रेष्ठता में मानवीय परिभाषा के परे था। यह समझना सरल था कि वही सबकुछ क्यों है जिससे पिता प्रेम करता और सम्मान करता है। वह सच में यहाँ तक अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ है कि ऐसा लगता था कि अनुग्रह और सच्चाई के बिना कुछ भी मायने नहीं रखता है।

जैसे मैं ने जीवन के पेड़ का फल खाया, कि हर भली चीज का विचार जिसे मैं ने जाना था मेरे प्राण में भर गया। जब यीशु ने बात की तब भी वैसा ही हुआ था परन्तु बड़े पैमाने पर था। मैं केवल इस स्थान में रहना और उसे सुनना चाहता था। मुझे स्मरण आया कि मैं कैसे सोचा करता था कि इन स्वर्गदूतों के लिए कुछ और नहीं बस सिंहासन के सामने निरन्तर आराधना करते रहना कितना उबाऊ होता होगा। <u>अब मुझे पता चला था कि उसकी आराधना करते रहने से अधिक अदभुत या उल्लास का और कोई काम नहीं है। हम इसी के लिए रचे गए थे, और यह स्वर्ग का निश्चित रूप से उत्तम भाग होगा।</u> मैं कल्पना नहीं कर पाया कि यदि स्वर्ग की सारी गायण-मण्डलियाँ एकत्र हो जाती तो कितना अदभुत होता। यह विश्वास करना कठिन था कि मैं आराधना सभाओं में कितनी बोरियत अनुभव करता था। मैं जान गया कि यह केवल इसलिए था क्योंकि उन समयों में मैं वास्तविकता से लगभग बिलकुल दूर होता था।

मैं लौटने और आराधना के उन समयों की भरपूरी करने की इच्छा से लगभग अभिभूत हो गया था, जब मैं ने अपने मन को भटकने दिया था, या दूसरी चीजों से अपने आप को व्यस्त रखा था। उसके लिए मेरी आराधना व्यक्त करने की इच्छा लगभग अतोषणीय बन गई थी। मुझे उसकी स्तुति करनी थी! जैसे ही मैं ने अपना मुँह खोला, सारी सेना से एक ही समय में स्वतः आराधना से मैं चकित रह गया। मैं लगभग भूल गया था कि वहाँ कोई और भी है, परन्तु हम सब सम्पूर्ण एकता में थे। जो यशस्वी आराधना होने लगी थी शब्दों से व्यक्त नहीं की जा सकती है। जैसे हम ने आराधना की, प्रभु से एक सुनहरी दीप्ति निकलने लगी थी। तब सोने के चारों और चाँदी थी। तब रंग थे, जिनकी प्रचुरता को मैं ने अपने आँखों से कभी नहीं देखा था। इन सब ने हमें लपेट लिया था। इस महिमा के साथ मैं ने भावनाओं के एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश किया जिसे मैं ने पहले कभी भी अनुभव नहीं किया था। किसी प्रकार मैं समझ गया कि यह महिमा सब समय वहाँ थी, परन्तु जब हम ने आराधना में उस पर ध्यान केन्द्रित किया था, हम उसकी महिमा को और अधिक देखने लगे थे। जितने अधिक भावपूर्ण रूप से हम ने आराधना की, उतनी अधिक हम ने महिमा देखी। यदि यह स्वर्ग था, तब तो मैं ने अपने स्वपन में ऐसा नहीं देखा था।

उसका निवासस्थान

मुझे कुछ पता नहीं यह आराधना कितनी देर चली होगी। यह मिनट हो सकते हैं या महिने हो सकते हैं। उस प्रकार की महिमा में समय को मापने का कोई तरीका नहीं था। मैं ने अपनी आँखें बंद कर लीं क्योंकि जो महिमा मैं अपने हृदय से देख रहा था उतनी ही महान थी जितनी मैं अपनी शारीरिक आँखों से देख पा रहा था। जब मैं ने अपनी आँखें खोलीं तो मैं यह देख कर चकित हुआ कि प्रभु वहाँ नहीं था और उसके स्थान पर स्वर्गदूतों का एक झुँड खड़ा था। उन में से एक ने मेरे पास आकर मुझे कहा, "अपनी आँखें दोबारा बंद करो।" जब मैं ने कीं, तब प्रभु की महिमा देखी। यह कोई कम राहत की बात नहीं थी। मैं जानता था कि अब जबकि मैं ने महिमा को अनुभव किया है मैं उसके बिना रह नहीं सकता था। तब स्वर्गदूत ने समझाया, "जो तुम अपने मन की आँखों से देखते हो वह उससे अधिक असली है जो तुम अपनी शारीरिक आँखों से देखते हो।" मैं ने आप भी इस बात को कई बार कहा था, परन्तु कितना कम मैं इस पर चला था! स्वर्गदूत बोल रहा था, "इसी कारण से प्रभु ने अपने पहले चेलों से कहा था कि उसके लिए बेहतर होगा कि वह चला जाए तब पवित्र आत्मा आएगा। प्रभु तुम्हारे भीतर रहता है। तुम ने इसे अनेक बार सिखाया है, परन्तु अब तुम्हें इसे जीना है, क्योंकि तुम ने जीवन के पेड़ का फल खाया है।"

तब स्वर्गदूत मुझे द्वार तक ले जाने लगा। मैं ने विरोध किया कि मैं जाना नहीं चाहता हूँ। चकित दिखते हुए, स्वर्गदूत ने मुझे कंधों से पकड़ा और मेरी आँखों में देखा। तब मैं ने उसे पहचानाः यह बुद्धि था। "तुम्हें यह बाग छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। यह बाग तुम्हारे हृदय में है क्योंकि सृष्टिकर्त्ता आप तुम्हारे भीतर है। तुम ने उत्तम भाग की इच्छा की हैः उसकी आराधना करना और सदा उसकी उपस्थिति में रहना; और और यह तुम से कभी भी लिया नहीं जाएगा। परन्तु तुम्हें इसे यहाँ से वहाँ ले जाना है जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।"

मैं जानता था वह सही था। तब मैं ने उस के परे जीवन के पेड़ को देखा। जाने से पहले मैं जितने फल ले जा सकता था ले जाने की विवशता महसूस कर रहा था। मेरे विचार जानकर, बुद्धि ने मुझे कोमलता के साथ हिलाया। "नहीं, यह फल भी यदि भय में लिया जाता है तो खराब हो जाता है। यह फल और यह पेड़ तुम्हारे भीतर हैं क्योंकि वह तुम्हारे भीतर है। तुम्हें विश्वास करना है।" मैं ने अपनी आँखें बंद कीं और प्रभु को देखने का प्रयास किया परन्तु देख नहीं पाया। जब मैं ने अपनी आँखें खोलीं, तो देखा

कि बुद्धि अभी भी मुझे घूर रही थी। बड़े धैर्य के साथ उसने कहा, "तुम ने स्वर्गीय क्षेत्र को चखा है, और चखने के बाद कोई भी युद्ध में लौटना नहीं चाहता है। कोई भी प्रभु की प्रकट उपस्थिति को छोड़ना नहीं चाहता है। जब प्रेरित पौलुस यहाँ आया था तब उसके बाद वह अपने सारे जीवन भर संघर्ष करता रहा था, कि उसे पृथ्वी पर रह कर कलीसिया के लिए परिश्रम करना चाहिए या अपनी मीरास पाने के लिए यहाँ आ जाना चाहिए। उसकी मीरास उतनी बढ़ गई थी जितना वह पृथ्वी पर रहकर सेवा करता रहा था। अब जबकि तुम्हारे पास एक सच्चे आराधक का हृदय है तो तुम सदा यहाँ रहना चाहोगे, परन्तु सच्ची आराधना में प्रवेश करके तुम सदा यहाँ रह सकते हो। जितना अधिक तुम उस पर केन्द्रित रहोगे, उतनी अधिक महिमा तुम देखोगे, चाहे तुम कहीं भी रहो।"

बुद्धि के शब्दों ने आखिरकार मुझे शान्त कर दिया था। दोबारा, मैं ने प्रभु को इस अदभुत अनुभव के लिए, और जो जीवन उसने मुझे दिया था उसके लिए धन्यवाद देने के लिए अपनी आँखें बंद कीं। जैसे मैं ने किया, मैं उसकी महिमा दोबारा देखने लगा, और पहले की आराधना के अनुभव की सारी भावनाएँ मेरे मन में भर गईं। मेरे लिए प्रभु के शब्द इतने प्रबल और स्पष्ट थे कि मुझे निश्चित था कि वे श्रव्य थे: "मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी त्यागूँगा।"

"प्रभु, मेरे अविश्वास को क्षमा कर", मैं ने उत्तर दिया, "कृपया मेरी सहायता कर कि मैं तुझे न कभी छोडूँ और न कभी त्यागूँ।" यह एक अदभुत और कष्टकर समय दोनों था। यहाँ "असली संसार" असली नहीं था, और आत्मिक संसार इतना अधिक असली था कि मैं दूसरे में लौटने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैं अचरज और एक भयानक डर दोनों की पकड़ में था, कि मैं किसी भी क्षण जाग जाऊँगा और पाऊँगा कि यह सब एक स्वपन था।

बुद्धि समझ गई कि मेरे भीतर क्या चल रहा है। "तुम स्वपन देख रहे हो", उसने कहा, "परन्तु यह स्वपन उससे अधिक असली है जिसे तुम असली समझते हो। पिता ने लोगों को उसके निवासस्थान का द्वार देखने में सहायता के लिए स्वपन दिए। वह केवल मनुष्यों के हृदयों में बसेगा, और स्वपन तुम्हारे हृदय का एक द्वार हो सकते हैं, जो तुम्हें उसके पास ले चलेंगे। इसी कारण से उसके स्वर्गदूत मनुष्यों को उनके स्वपन में बारंबार दिखाई देते हैं। स्वपन में वे मनुष्य के पतित मन को छोड़ कर सीधे उसके हृदय में जा सकते हैं।"

जैसे मैं ने अपनी आँखें खोली, तो बुद्धी अभी भी मेरे कंधों को थामे हुए था। "मैं प्रमुख वरदान हूँ जो तुम्हें तुम्हारे काम के लिए दिया गया हूँ", उसने कहा, "मैं तुम्हें मार्ग दिखाऊँगा, और मैं तुम्हें उस पर रखूँगा, परन्तु केवल प्रेम तुम्हें विश्वासयोग्य बनाए रखेगा। प्रभु का भय बुद्धि का आरम्भ है, परन्तु सबसे ऊँची बुद्धि उसे प्रेम करना है।"

तब बुद्धि ने मुझे छोड़ दिया और द्वार की ओर चलने लगी। मैं द्वैधवृत्ति के साथ पीछे हो लिया। मुझे युद्ध और पर्वत की चढ़ाई का उल्लास स्मरण आया, और यह सम्मोहक था, परन्तु उसकी प्रभु की उपस्थिति के साथ और आराधना के साथ जिसे मैं ने अभी अनुभव किया था कोई तुलना नहीं थी। इसे छोड़ना मेरे जीवन की सबसे बड़ा बलिदान होगा जो मैं ने कभी किया है। तब मुझे स्मरण आया कि यह सब मेरे भीतर था और चकित हुआ कि मैं इसे कितनी जल्दी भूल गया था। यह ऐसा था जैसे मेरे भीतर एक बड़ा युद्ध चल रहा हो, जो मैं ने अपनी शारीरिक आँखों से देखा और जो मैं ने अपने हृदय से देखा था के बीच।

मैं आगे बढ़ा ताकि बुद्धि के बगल में चल सकूँ, और पूछा, "मैं ने पच्चीस वर्ष प्रार्थना की है कि प्रेरित पौलुस के समान तीसरे स्वर्ग में उठा लिया जाऊँ। क्या यह तीसरा स्वर्ग है?

"यह उसका एक भाग है", उसने उत्तर दिया, "परन्तु और अधिक भी है।"

"क्या मुझे और देखने दिया जाएगा?" मैं ने पूछा।

"तुम काफी अधिक देखोगे। मैं तुम्हें अभी और देखने के लिए ले जा रहा हूँ", उसने उत्तर दिया।

मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विषय में सोचने लगा। "क्या यूहन्ना का प्रकटीकरण तीसरे स्वर्ग का भाग था?" मैं ने पूछा।

"यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य का एक भाग तीसरे स्वर्ग से था, परन्तु अधिकाँश दूसरे स्वर्ग से था। पहला स्वर्ग मनुष्य के पतन से पहले था। दूसरा स्वर्ग पृथ्वी पर दुष्टता के शासन के दौरान आत्मिक क्षेत्र है। तीसरा स्वर्ग है जब पिता का प्रेम और अधिकार राजा के द्वारा पृथ्वी पर दोबारा प्रबल होंगे।"

"पहला स्वर्ग कैसा था?" मैं ने पूछा, और पूछते समय एक अजीब कँपकँपी महसूस की।

"उसके विषय में अब चिन्ता नहीं करना बुद्धि होगा", बुद्धि ने वर्धमान गम्भीरता के साथ उत्तर दिया, क्योंकि मेरे प्रश्न से उसे धक्का लगा लगता था।" बुद्धि है तीसरे स्वर्ग की खोज करना जैसा तुम ने किया भी है। तीसरे स्वर्ग के विषय में जानने के लिए और भी काफी कुछ है जिसे तुम इस जीवन में नहीं जान सकोगे, और यह तीसरा स्वर्ग है, राज्य, जिसका तुम्हें इस जीवन में प्रचार करना चाहिए। आनेवाले युगों में तुम्हें पहले स्वर्ग के विषय में बता दिया जाएगा, परन्तु इस समय उसके विषय में जानना तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं है।"

मैं ने उस कँपकँपी को याद करने का निश्चय किया जिसे मैं ने अभी अनुभव किया था, और बुद्धि ने सिर हिलाया, जिसे मैं ने जाना मेरे विचार का समर्थन था। "आप कितने महान साथी हो", मैं ने कहा, क्योंकि मुझे समझ आया था कि यह स्वर्गदूत कितना बहुमूल्य वरदान था। "तुम वास्तव में मुझे सही पथ पर रखोगे।"

"मैं निस्संदेह रखूँगा", उसने उत्तर दिया।
मैं निश्चित था कि मैं ने इस स्वर्गदूत से प्रेम आता हुआ अनुभव किया था, जो अनोखा था, क्योंकि मैं ने ऐसा दूसरे स्वर्गदूतों से कभी भी अनुभव नहीं किया था। वे अकसर उनकी चिन्ता प्रेम के बजाय कर्तव्य से दिखाते थे। बुद्धि ने मेरे विचारों की ओर प्रतिक्रिया की जैसे कि मैं ने उन्हें जोर से बोला हो।
"प्रेम करना बुद्धि है और यदि मैं तुम से प्रेम न करूँ तो बुद्धि न हुई। परमेश्वर की कृपा और कठोरता को देखना भी बुद्धि है। उसे प्रेम करना और उसका भय मानना भी बुद्धि है। यदि तुम कुछ और करते हो तो धोखे में हो। "यह अगला सबक है जिसे तुम्हें सीखना चाहिए", उसने सुस्पष्ट उत्सुकता के साथ कहा।
"मैं इसे जानता हूँ, और कई वर्षों से सिखाया भी है", मैं उत्तर दिया, पहली बार सोचने लगा था कि सम्भव है बुद्धि मुझे नहीं जानती है।
"मैं एक बड़े लम्बे समय से तुम्हारा साथी हूँ, और मैं तुम्हारी शिक्षाओं को जानता हूँ", बुद्धि ने उत्तर दिया। "अब तुम सीखने वाले हो कि तुम्हारी अपनी कुछ शिक्षाओं का अर्थ क्या है। जैसे तुम ने अनेक बार कहा है, "तुम्हारे मन में विश्वास करने से नहीं, परन्तु तुम्हारे हृदय में विश्वास करने से धार्मिकता आती है।"
मैं ने क्षमा माँगी, बुद्धि पर संदेह प्रकट करने के कारण थोड़ी लज्जा महसूस कर रहा था। उसने कृपा के साथ मेरी क्षमा को स्वीकार किया। तब मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि मैं उस पर अपने अधिकाँश जीवन में संदेह प्रकट कर रहा और चुनौती दे रहा था, और अकसर अपनी हानि के लिए।

प्रेम का दूसरा भाग

"प्रभु की आराधना करने के समय होते हैं", बुद्धि ने जारी रखा, "और सबसे अधिक भय और सम्मान के साथ उसका आदर करने के समय होते हैं, जैसे बोने के और काटने के समय होते हैं। हर एक का समय जानना बुद्धि है। सच्ची बुद्धि परमेश्वर के समय और मौसम जानती है। मैं तुम्हें यहाँ लाया क्योंकि यह समय प्रभु की उसके प्रेम की महिमा में आराधना करने का समय है। ऐसे युद्ध के बाद तुम्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। मैं अब तुम्हें एक दूसरे स्थान पर ले जा रहा हूँ क्योंकि यह उसके न्याय के भय में उसकी आराधना करने का समय है। जब तक तुम दोनों को नहीं जानते हो तो एक दूसरे से अलग हो जाने का खतरा है।"
"क्या आपका तात्पर्य यह है कि यदि मैं उस यशस्वी आराधना में बना रहता तो आपको खो देता?" मैं ने अविश्वास से पूछा।
"हाँ, मैं तुम्हें मिलने कभी भी आ सकता था, परन्तु हम बिरले ही मिलते। ऐसी महिमा और शान्ति छोड़ना कठिन होता है, परन्तु वह राजा का सम्पूर्ण प्रकटीकरण नहीं है। वह एक शेर और मेम्ना दोनों है। आत्मिक बच्चों के लिए वह मेम्ना है। परिपकिव हो रहों के लिए वह शेर है। पूर्ण परिपक्वों के लिए वह शेर और मेम्ना दोनों है। दोबारा, मैं जानता हूँ तुम यह समझते हो, तुम इसे अपने मन में ही जानते थे। शीघ्र ही तुम इसे अपने हृदय में भी जानोगे, क्योंकि तुम मसीह के न्यायासन को अनुभव करनेवाले हो।"

युद्ध में लौटना

बाग का द्वार छोड़ने से पहले, मैं ने बुद्धि से पूछा कि क्या मैं उन चीजों पर विचार करने के लिए जिन्हें अभी-अभी अनुभव किया था कुछ देर वहाँ बैठ सकता हूँ। "हाँ, तुम्हें ऐसा करना चाहिए", उसने उत्तर दिया, "परन्तु इसके लिए मेरे पास एक बेहतर स्थान है।"
मैं बुद्धि के पीछे पीछे द्वार से निकल गया और हम पर्वत से नीचे उतरने लगे। मैं चकित हुआ कि युद्ध अभी भी चल रहा था, परन्तु उतनी तीव्रता के साथ नहीं जितना तब था जब हम चढ़ रहे थे। निचले स्तरों पर अभी भी दोषारोपण और निन्दा के तीर चल रहे थे, परन्तु अधिकाँश शत्रु के झुण्ड जो बच गये थे महान श्वेत उकाबों पर प्रचण्डता के साथ आक्रमण कर रहे थे। परन्तु उकाब सरलता के साथ जीत रहे थे।
हम उतरते रहे जब तक लगभग नीचे न पहुँच गए। "उद्धार" और "पवित्रीकरण" के स्तरों के ठीक ऊपर "धन्यवाद और स्तुति" का स्तर था। मुझे यह स्तर याद है क्योंकि जब मैं इस स्तर पर पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था शत्रु का सबसे बड़ा आक्रमण हुआ था। एक बार जब हम यहाँ पहुँच गए थे, तब बाकी की चढ़ाई काफी सरल थी, और जब हमारे हथियार में कोई तीर लग जाता था, तब चंगाई काफी शीघ्रता के साथ होती थी।
जैसे ही मेरे शत्रुओं ने मुझे इस स्तर पर देखा (वे बुद्धि को नहीं देख सकते थे), उन्होंने मुझ पर तीरों की एक बौझार की। मैं ने उन्हें अपनी ढाल से इतनी सरलता के साथ गिरा दिया कि उन्होंने मारना छोड़ दिया। उनके तीर लगभग समाप्त हो रहे थे और वे उनको व्यर्थ गँवाना नहीं चाहते थे। जो सिपाही अभी भी इस स्तर से लड़ रहे थे उन्होंने मुझे चकित होकर एक सम्मान के साथ देखा जिससे मैं बहुत संकोचित हुआ। तब मैं ने ध्यान दिया कि मेरे हथियार और ढाल में से प्रभु की महिमा निकल रही थी। मैं ने उन्हें बताया कि वे बिना रुके पर्वत के शिखर तक चले जाएँ तो वे भी प्रभु को देख सकेंगे। जैसे ही वे जाने को राजी हुए उन्होंने बुद्धि को देखा। वे आराधना करने के लिए उसके सामने गिरने लगे परन्तु उसने उन्हें रोका, और उन्हें उनके मार्ग पर भेज दिया।

विश्वासयोग्य

मैं इन सिपाहियों के लिए प्रेम से भर गया था, जिन में से कई स्त्रियाँ और बच्चे थे। उनके हथियार अस्तव्यस्थ थे, और वे खून से लथपथ थे, परन्तु उन्होंने हार नहीं मानी थी। असल में, वे अभी भी प्रसन्न और प्रोत्साहित थे। मैं ने उन्हें बताया कि वे मुझे से अधिक सम्मान के योग्य हैं, क्योंकि उन्होंने युद्ध का सबसे बड़ा बोझ सहा था, और दृढ़ बने रहे थे। लगा कि उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया, परन्तु आभार माना कि मैं ने ऐसा कहा था। परन्तु, मुझे वास्तव में लगा था कि यह सच है।

पर्वत के हर स्तर को कब्जे में लेना अवश्य था, नहीं तो बचे हुए गिद्ध आकर उन्हें उलटी और मल से अपवित्र कर देते थे और उन पर खड़े रह पाना कठिन होता जाता था। अधिकाँश कगारों पर सिपाही खड़े थे जिन्हें मैं ने पहचाना विभिन्न साम्प्रदायों या गतियों से थे और उस स्तर की सच्चाई का बचाव कर रहे थे जिस पर वे विश्वास करते थे। मुझे मेरे रवैये से लज्जा हुई जो मैं ने इन समूहों की ओर बना रखा था। मैं ने उन्हें संबंध के परे और अधिक से अधिक धर्मत्यागी समझा था, परन्तु यहाँ वे शत्रु के भयानक आक्रमण के विरुद्ध विश्वासयोग्यता के साथ लड़ रहे थे। सम्भवतः इन स्तरों के उनके बचाव के कारण मैं चढ़ता रहा था जैसा मैं ने किया था।

इन में से कुछ उनके स्तर पर इस प्रकार से स्थित थे कि वहाँ से पर्वत और युद्ध क्षेत्र का अच्छा दृश्य मिलता था, परन्तु कुछ इतने अलग थे कि उन पर से सिपाही केवल अपनी स्थित ही देख सकते थे। वे बाकी के हो रहे युद्ध से, या बाकी की सेना से जो युद्ध कर रही थी अनजान थे। वे निन्दा और दोषारोपण से इतने घायल थे कि यदि कोई ऊपर से स्तर से उन्हें ऊपर चढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने आता तो वे उसका विरोध करते थे। परन्तु, जब कुछ शिखर से प्रभु की महिमा प्रतिबिम्बित करते हुए आने लगे तो उन्होंने सुना, कुछ ने बड़े आनन्द के साथ सुना, और आप भी बड़े साहस और संकल्प के साथ चढ़ना आरम्भ किया। जैसे मैं ने यह सब देखा, बुद्धि ने कुछ न कहा, परन्तु वह मेरी प्रतिक्रियाओं में बहुत दिलचस्प था।

वास्तविकता का पता चला

मैं देख रहा था जब शिखर पर गए सिपाही नीचे के स्तरों में उन को कार्यमुक्त करने आने लगे थे जो उन सच्चाइयों पर दृढ़ खड़े थे। जैसे यह हुआ तो हर स्तर उनके द्वारा लाई महिमा से चमकने लगा। शीघ्र ही सारा पर्वत महिमा से चमकने लगा था जिससे गिद्ध और दुष्टात्माएँ चौंधियाने लगे। थोड़े ही समय में पर्वत पर इतनी सारी महिमा थी कि इससे बाग जैसा अनुभव होने लगा। मैं प्रभु का धन्यवाद और स्तुति करने लगा, और तुरन्त मैं दोबारा उसकी उपस्थिति में था। ऐसा करने से अनुभव होनेवाली भावनाओं और महिमा को रोक पाना कठिन था। अनुभव इतना तीव्र हो गया कि मुझे रुकना पड़ा। बुद्धि मेरे बगल में खड़ी थी। अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए उसने कहा, "उसके फाटकों में धन्यवाद के साथ, और उसके आँगनों में स्तुति के साथ प्रवेश किया जाता है।"

"परन्तु यह तो कितना असली था! ऐसा लगा जैसे मैं दोबारा वहाँ था", मैं चिल्लाया।

"तुम वहाँ थे", बुद्धि ने उत्तर दिया, "यह अधिक असली नहीं हुआ था, तुम हुए हो। जैसे प्रभु ने क्रूस पर के चोर को कहा था, 'आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा', तुम स्वर्गलोक में कभी भी प्रवेश कर सकते हो। प्रभु, उसका स्वर्गलोग और उसका पर्वत सब तुम में निवास करते हैं, क्योंकि वह तुम में है। जो पहले केवल पूर्वानुभव थे, अब तुम्हारे लिए वास्तविकता हैं क्योंकि तुम पर्वत पर चढ़े हो। तुम मुझे देख सकते हो और दूसरे मुझे नहीं देख सकते हैं उसकी कारण यह नहीं है कि मैं ने तुम्हारे क्षेत्र में प्रवेश किया है, परन्तु कि तुम ने मेरे क्षेत्र में प्रवेश किया है। भविष्यद्वक्ता इस वास्तविकता को जानते थे जिससे उन्हें बड़ा साहस मिलता था, तब भी जब वे सेनाओं के सामने अकेले खड़े रहते थे। उन्होंने उनके विरुद्ध खड़ी पृथ्वी की सेनाओं को ही नहीं, बल्कि स्वर्गीय सेना को भी देखा था।"

घातक फँदा

फिर मैं ने नीचे हो रहे हत्याकाण्ड, और धीरे-धीरे पीछे हट रही शैतान सेना को देखा। मेरे पीछे पहाड़ पर और यशस्वी योद्धा उनके स्थान ग्रहण कर रहे थे। मैं जानता था कि हम अब बचे हुए शैतानी झुण्ड पर आक्रमण करने और नष्ट करने के लिए काफी शक्तिशाली थे। "अभी नहीं", बुद्धि ने कहा, "वहाँ देखो।" मैं ने उस दिशा में देखा जहाँ वह संकेत कर रहा था, परन्तु अपने ही हथियार से निकलनेवाली महिमा से अपनी आँखें छिपानी पड़ीं। तब मैं ने एक छोटी घाटी में कुछ गति-विधि की झलक देखी। परन्तु मैं पता नहीं लगा पा रहा था कि मैं क्या देख रहा हूँ क्योंकि मेरे हथियार से निकल रही महिमा के कारण मैं अन्धकार में देख नहीं पा रहा था। मैं ने बुद्धि से पूछा कि क्या मेरे हथियार को ढकने के लिए कुछ है जिससे मैं देख सकूँ। तब उसने मुझे पहनने के लिए एक बहुत ही सादी चादर दी। "यह क्या है?" मैं ने इसके सादेपन से थोड़ा अपमान महसूस करते हुए पूछा। "दीनता", बुद्धि ने कहा, "इसके बिना तुम ठीक से देख नहीं सकोगे।" मैं ने अनिच्छा से इसे पहन लिया और तुरन्त मैं बहुत सी चीजें देखने लगा जिन्हें पहले देख नहीं सका था। मैं ने घाटी की ओर उस गति-विधि की ओर देखा। मैं शत्रु के झुण्ड के एक सम्पूर्ण भाग को देखकर चकित रह गया, जो पर्वत से निलनेवाले किसी पर भी घात लगाकर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठे थे।

"यह क्या सेना है ?" मैं ने पूछा, "और वे युद्ध से ठीक-ठाक कैसे बच निकले हैं ?"
"यह अभिमान है", बुद्धि ने समझाया, "महिमा में जाने के बाद यह देख पाने के लिए सबसे कठिन शत्रु है। जो इस वस्त्र को पहनने से इन्कार करते हैं इस अति कुटिल सेना से हाथों से बहुत दुख उठाएँगे।"
जैसे मैं ने पीछे पर्वत की ओर देखा, तो पाया कि बहुत सारे यशस्वी योद्धा बचे हुए शत्रु के झुण्ड पर आक्रमण करने के लिए मैदान पार करके जा रहे थे। उन में से किसी ने भी दीनता के वस्त्र नहीं पहने थे और उन्होंने शत्रु को नहीं देखा था जो उनके पीछे से उन पर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठा था। मैं उन्हें रोकने के लिए दौड़ पड़ा, परन्तु बुद्धि ने मुझे रोक लिया। "तुम इसे रोक नहीं सकोगे", उसने कहा, "केवल वही सिपाही जो इस वस्त्र को पहने हैं तुम्हारे अधिकार को पहचानेंगे। मेरे साथ आओ। इससे पहले तुम महान युद्ध में अगुआई कर सको कुछ और भी है जो तुम्हें देखना चाहिए।"

महिमा की नींव

बुद्धि मुझे पहाड़ से नीचे सबसे निचले स्तर पर ले गई, जिसका नाम "उद्धार" था। "तुम्हें लगता है यह सबसे नीचे का स्तर है", बुद्धि ने कहा, "परन्तु यह सारे पर्वत की नींव है। किसी भी यात्रा में, पहला कदम सबसे महत्त्व का होता है और अकसर सबसे कठिन भी होता है। बिना "उद्धार" के कोई पर्वत न होगा।"
इस स्तर पर हत्याकाण्ड से मैं भयभीत हो गया था। हर सिपाही बुरी तरह जख्मी था, परन्तु कोई भी मरा नहीं था। भारी संख्या में लोग कठिनाई से किनारे को थामे हुए थे। कई गिर पड़ेंगे लग रहा था, परन्तु कोई भी गिरा नहीं था। सब जगह स्वर्गदूत सिपाहियों की बड़े आनन्द के साथ सेवा कर रहे थे कि मुझे पूछना पड़ा, "वे इतने खुश क्यों हैं ?"
"इन स्वर्गदूतों ने उनके साहस को देखा है जो टिके रहने के लिए लगी है। वे कहीं आगे नहीं बढ़े होंगे, परन्तु उन्होंने आशा भी नहीं छोड़ी है। वे शीघ्र ही चंगे हो जाएँगे, और तब वे बाकी के पर्वत की महिमा को देखेंगे, और वे चढ़ने लगेंगे। वे आनेवाले युद्ध के लिए महान योद्धा होंगे।"
"परन्तु क्या यह अच्छा नहीं होता यदि वे हम सब के साथ पर्वत प चढ़ गए होते ?" मैं ने, उनकी वर्तमान स्थिति देखकर, विरोध प्रकट किया।
"यह तुम्हारे लिए अच्छा होता, परन्तु तुम्हारे लिए नहीं। यहाँ रहकर उन्होंने तुम्हारे अधिकाँश शत्रुओं को व्यस्त रखकर तुम्हारे लिए चढ़ना सरल किया था। ऊँचे स्तरों से बहुत कम ने दूसरों की पर्वत तक आने में कभी सहायता की है, परन्तु इन्होंने की। तब भी जब ये स्वयं बड़ी कठिनाई से पर्वत को पकड़े हुए थे, वे दूसरों को ऊपर खींचने में हाथ बढ़ाते थे। असल में, अधिकाँश महान योद्धाओं को इन विश्वासयोग्यों ने ही पर्वत तक लाया है। वे उनसे कम वीर नहीं हैं जो शिखर तक पहुँचे हैं। उन्होंने दूसरों को उद्धार में लाकर स्वर्ग में बड़ा आनन्द लाया है। इसी कारण से स्वर्ग के सब स्वर्गदूत आकर उनकी सेवा करना चाहते थे, परन्तु केवल सबसे सम्मानितों को ही अनुमति मिली थी।"
एक बार पिर मुझे इन महान सन्तों की ओर अपने पूर्व रवैये से लज्जा हुई। हम में से कइयों ने ऊँचे स्तरों पर जाते हुए उनका तिरस्कार किया था। उन्होंने युद्ध में कई गलतियाँ की थीं, परन्तु उन्होंने हम बाकियों से अधिक चरवाहे का हृदय प्रकट भी किया था। प्रभु निन्यानबे को छोड़कर एक खोई हुई के पीछे जाता है। वे उस स्थान पर टिके रहे थे जहाँ से वे खोए हुओं तक पहुँच सकते थे, और इसके लिए उन्होंने बारी कीमत चुकाई है। मैं भी उनकी सहायता करना चाहता था परन्तु जानता न था कहाँ से आरम्भ करूँ।
तब बुद्धि ने कहा, "तुम में सहायता करने की इच्छा होना सही है, परन्तु तुम सबसे अधिक सहायता अपने बुलावे में काम करके कर सकते हो। ये सब चंगे हो जाएँगें और पर्वत पर चढ़ेंगे। वे अब तुम्हारे और दूसरों के कारण जो शत्रु को नष्ट करते और मार्ग पर चिन्ह लगाते तुम से पहले गए थे तेजी से चढ़ सकते हैं। वे तुम्हारे साथ दोबारा युद्ध में लग जाएँगे। वे निडर हैं जो शत्रु के सामने कभी भी पीछे नहीं हटेंगे।"

अभिमान की शक्ति

मैं विचार कर रहा था कि मैं ने पर्वत से उतरते हुए भी उतना ही सीखा था जितना चढ़ते हुए सीखा था, कि युद्धक्षेत्र के शोर ने मेरा ध्यान खींचा। अब तक हज़ारों महान योद्धा शत्रु के झुण्ड पर आक्रमण करने के लिए मैदान को पार कर चुके थे। शत्रु, केवल एक भाग, अभिमान, के अलावा, चारों दिशाओं में तितर-बितर हो रहा था। बिलकुल बिना पता चले, यह प्रगामी योद्धाओं के पीछे पहुँच रहे थे, और तीरों की एक बौछार करनेवाले थे। तब मैं ने देखा कि महान योद्धाओं की पीठ पीछे कोई कवच नहीं था। और अब जो प्रहार उन पर होने वाला था उसके लिए वे पूरी तरह जोखिम में और भेद्य थे।
तब बुद्धि ने कहा, "तुम ने सिखाया है कि पीठ के लिए कोई कवच नहीं होता है, जिसका अर्थ है कि यदि तुम शत्रु से भागते हो तो तुम भेद्य हो। परन्तु, तुम्हें पता नहीं था कि अभिमान में आगे बढ़ना भी तुम्हें भेद्य बना देता है।"

मैं ने स्वीकृति में सिर हिलाया। अब कुछ भी नहीं किया जा सकता था, और देखना भी लगभग असह्य था, परन्तु बुद्धि ने कहा मुझे देखना अवश्य है। मैं जानता था कि परमेश्वर का राज्य एक मुख्य हार उठाने वाला है। मैं ने पहले भी दुख महसूस किया था, परन्तु इस प्रकार का दुख मैं ने कभी नहीं सहा था। मैं चकित हुआ, कि जब अभिमान के तीर योद्धाओं को लगे तो उन्हें पता भी नहीं चला। परन्तु, शत्रु प्रहार करता रहा। योद्धाओं का खून बह रहा था और वे कमज़ोर हो रहे थे, परन्तु वे स्वीकार नहीं कर रहे थे। शीघ्र ही वे इतने कमज़ोर गए कि उनकी ढालों और तलवारों को उठा नहीं पा रहे थे; तो उन्होंने उन्हें यह कहते हुए नीचे गिरा दिया, कि उनको अब इनकी आवश्यकता नहीं है। वे उनके हथियार बी यह कहते हुए निकालने लगे कि उनको अब इनकी भी आवश्यकता नहीं है। तब एक और शत्रु का भाग प्रकट हुआ और तेजी से आगे बढ़ा। इसका नाम शक्तिशाली भ्रम था। इसके सदस्यों ने तीरों की बौझार की और वे निशाने पर लगते हुए नज़र आए। भ्रम की केवल कुछ ही दुष्टात्माओं ने जो चोटी और प्रतीयमानतः कमज़ोर थीं, इस यशस्वी योद्धाओं की महान सेना को ले गए। उन्हें विभिन्न कैदखानों में ले जाया गया, जिनके नाम दुष्टात्माओं के विभिन्न सिद्धान्त थे। मैं भौचक्का रह गया कि धर्मियों का यह महान समूह कैसे इतनी सरलता के साथ हराया गया था, और उन्हें अभी भी पता नहीं था कि उन्हें क्या हुआ है।

मैं फूट पड़ा, "कैसे हो सकता है कि जो इतने सामर्थी थे, जो पर्वत के शिखर चक जा चुके थे, जिन्होंने प्रभु को देखा था, इतने भेद्य हों?"

"अभिमान देख पाने के लिए सबसे कठिन शत्रु है, और यह सदा तुम्हारे पीछे से चुपके से आ जाता है", बुद्धि ने शोक प्रकट किया, "किसी प्रकार से, जो सबसे ऊँची ऊँचाइयों पर गए होते हैं गिरने के सबसे अधिक खतरे में होते हैं। तुम्हें यह सदा याद रखना है कि इस जीवन में तुम किसी भी समय किसी भी स्तर से गिर सकते हो।"

"ध्यान दो जब तुम सोचते हो तुम खड़े, कहीं गिर न पड़ो", मैं ने उत्तर दिया, "ये पवित्रशास्त्र मुझे अब कितने विस्मयकारी लगते हैं।"

"जब तुम्हें लगता है तुम सबसे कम असुरक्षित हो तब असल में तुम सबसे अधिक असुरक्षित होते हो।

"अधिकाँश लोग एक महान विजय के बाद तुरन्त गिर पड़ते हैं", बुद्धि ने शोक किया।

"हम इस प्रकार आक्रमण किए जाने से कैसे बच सकते हैं?" मैंने पूछा।

"मेरे निकट रहो, प्रमुख फैसले करने से पहले प्रभु से पूछो, और दीनता का वस्त्र पहने रखो। तब शत्रु ने जैसे उनको किया था तुम्हें सरलता के साथ अंधा नहीं कर पाएगा।"

मैं ने अपने वस्त्र को देखा। यह कितना सादा और तुच्छ लगता था। मुझे लगा कि इससे मैं एक योद्धा से अधिक एक बेघर व्यक्ति लगता था। बुद्धि ने उत्तर दिया जैसे कि मैं जोर से बोल रहा था।

"प्रभु राजाओं से अधिक बेघरों के निकट होता है। तुम जितना परमेश्वर के अनुग्रह में चलोगे उतनी ही सच्ची सामथर्य तुम्हारे पास होगी, और 'वह अपना अनुग्रह दीनों को देता है।' कोई भी दुष्ट हथियार इस वस्त्र को भेद नहीं सकता है, क्योंकि कुछ भी उसके अनुग्रह को जीत नहीं सकता है। जब तक तुम इस वस्त्र को पहने रखोगे तुम इस प्रकार के आक्रमण से सुरक्षित रहोगे।"

तब मैं ऊपर की ओर देखा यह पता लगाने के लिए कि कितने योद्धा अभी भी पर्वत पर हैं। मुझे यह देखकर धक्का लगा कि कितने कम थे। परन्तु मैं ने देखा कि वे सब उसी दीनता के वस्त्र को पहने हुए थे। "यह कैसे हुआ?" मैं ने पूछा।

"जब उन्होंने उसी युद्ध को देखा जिसे तुम देख रहे थे, वे सब सहायता के लिए मेरे पास आए, और मैं ने उन्हें उनके वस्त्र दिए", बुद्धि ने उत्तर दिया।

"परन्तु मैं ने सोचा उस सारे समय तुम मेरे साथ थे?"

"मैं उन सब के साथ होता हूँ जो मेरे पिता की इच्छा पूरी करने के लिए जाते हैं", बुद्धि ने उत्तर दिया।

"आप प्रभु हो!" मैं चिल्लाया।

"हाँ", उसने उत्तर दिया, "मैं ने तुम्हें बताया था कि मैं न तो तुम्हें छोडूँगा और न त्यागूँगा। जैसे मैं तुम्हारे साथ हूँ वैसे ही मैं अपने सारे योद्धाओं के साथ भी हूँ। मैं तुम्हारे लिए वह बनूँगा जो तुम्हें मेरी इच्छा पूरी करने के लिए चाहिए होगा, और तुम्हें बुद्धि की आवश्यकता थी।" तब वह ओझल हो गया।

राज्य में पद

मैं स्वर्गदूतों के एक महान समूह के बीच खड़ा था जो "उद्धार" के स्तर पर घायलों की सेवा कर रहे थे। जैसे मैं इन स्वर्गदूतों के पास से गुज़रने लगा, वे एक घुटने पर होकर मुझे बड़ा आदर देने लगे। अन्त में मैं ने एक से पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, क्योंकि उनमें से सबसे छोटा भी मुझ से कहीं शक्तिशाली था। "वस्त्र के कारण", उसने उत्तर दिया। "यह राज्य में सबसे बड़ा पद है।"

"यह तो केवल एक सादा वस्त्र है", मैं ने विरोध प्रकट किया।

"नहीं!" स्वर्गदूत ने विरोध किया। "तुम परमेश्वर के अनुग्रह को पहने हुए हो। इससे बढ़कर कोई बड़ी सामर्थ्य नहीं है!"

"परन्तु हम हज़ारों ने इसी वस्त्र को पहना हुआ है। यह पद कैसे हो सकता है?" मैं ने पूछा।
"तुम प्रतापी विजेता हो, राजा के बेटे और बेटियाँ हो। जब वह पृथ्वी पर था तो उसने भी यही वस्त्र पहना हुआ था। जब तक तुम इस वस्त्र को पहने हुए हो, स्वर्ग या पृथ्वी पर कोई भी शक्ति नहीं जो तुम्हारा सामना कर सके। स्वर्ग और पृथ्वी पर सब उस वस्त्र को पहचानते हैं। हम निसंस्देह उसके सेवक है, परन्तु वह तुम में निवास करता है, और तुम उसके अनुग्रह को पहने हुए हो।"
किसी प्रकार मैं जानता था कि यदि मैं ने वस्त्र न पहना होता और मेरा महियायुक्त हथियार दिखाई देता, तो स्वर्गदूत की बात, और उनके व्यवहार से मेरा अभिमान बढ़ रहा होता। ऐसे सादे वस्त्र को पहनने के बाद अभिमान या अहंकार महसूस करना असम्भव है। परन्तु, वस्त्र में मेरा विश्वास तेजी से बढ़ रहा था।

भाग 3 – उकाबों का लौटना

क्षितिज पर मैं ने एक विशाल सफेद बादल को निकट आते देखा। इसे देखते ही मुझ में आशा उठने लगी। जैसे उगता सूरज अंधकार को भगा देता है इसने वातावरकण को आशा से भर दिया था। जैसे यह निकट आने लगा मैं ने उन महान श्वेत उकाबों को पहचान लिया जो जीवन के पेड़ से उड़ कर गए थे। वे पर्वत पर उतरने, और हर स्तर पर योद्धाओं के दलों के पास उनके स्थानों को लेने लगे थे।
मैं सावधानी के साथ उस उकाब के पास गया जो मेरे निकट उतरा था क्योंकि उसकी उपस्थिति कितनी भययोग्य थी। जब उसने अपनी भेदक आँखों से मेरी ओर देखा, मैं जान गया कि मैं उस से कुछ भी छिपा नहीं सकता हूँ। उसकी आँखें इतनी उत्कट और दृढ़ थीं कि उनको देखने से ही मुझ में कँपकँपी होने लगी। इससे पहले मैं पूछता, उसने उत्तर दिया।
"तुम जानना चाहते हो हम कौन हैं। हम गुप्त भविष्यद्वक्ता हैं जिन्हें इस घड़ी के लिए रखा गया था। हम उनकी आँखें हैं जिन्हें ईश्वरीय सामर्थी हथियार दिए गए हैं। हमें वह सबकुछ दिखाया गया है जिसे प्रभु कर रहा है, और सबकुछ जो शत्रु तुम्हारे विरुद्ध करने वाला है। हम पृथ्वी पर चक्कर लगाकर आए हैं और हम जानते हैं कि युद्ध के लिए क्या किया जाना अवश्य है।"
"क्या तुम ने उस युद्ध को नहीं को नहीं देखा जो अभी हुआ था?" मैं ने उतनी चिड़चिड़ाहट के साथ पूछा जितनी मैं व्यक्त करने का साहस कर सकता था। "क्या तुम उन योद्धाओं की सहायता नहीं कर सकते थे जिन्हें अभी कैदी बना कर ले जाया गया था?"
"हाँ। हम ने सबकुछ देखा और यदि वे हमारी सहायता चाहते तो हम उनकी सहायता कर सकते थे। हम उन्हें पीछे रोक कर, या उन्हें बैठो और शान्त रहो बोलकर उनकी सहायता कर सकते थे। परन्तु हम उस युद्ध में ही लड़ सकते हैं जिसकी आज्ञा पिता देता है, और हम उनकी सहायता ही कर सकते हैं जो हम में विश्वास करते हैं। केवल वे ही जो हमें भविष्यद्वक्ताओं के रूप में, जो हम हैं, स्वीकार करते हैं, भविष्यद्वक्ता का इनाम, या हमारी सेवाओं का लाभ पाएँगे। जिन पर घात लगा कर आक्रमण किया गया था उस वस्त्र को नहीं पहने हुए थे जिसे तुम ने पहना है, और जिन के पास वह वस्त्र नहीं है हमें समझ नहीं सकते हैं। हम सब को एक दूसरे की आवश्यकता है, उन्हें भी है जो अभी भी घायल हैं, और कई दूसरे भी जिन्हें तुम अभी जानते नहीं हो।

उकाब का हृदय

जैसे मैं उकाब से बातें कर रहा था, मैं उसके समान सोचने लगा। इस संक्षिप्त बातचीत के बाद मैं उकाब के हृदय में देख सकता था और जैसे उसने मुझ पर फूँका था मैं उस पर फूँक सकता था। उकाब इसे पहचान गया था।
"तुम्हारे पास हमारे कुछ वरदान हैं", उकाब ने कहा, "हालाँकि वे अभी अच्छी तरह विकसित नहीं हुए हैं। तुम ने उन्हें अधिक प्रयोग में नहीं लाया है। मैं यहाँ तुम में, और तुम्हारे समान दूरों में इन वरदानों को जगाने आया हूँ, और मैं तुम्हें उनका प्रयोग करना सिखाऊँगा। इस प्रकार हमारी बातचीत निश्चित होगी। इसे निश्चित होना होगा, नहीं तो हम सब अनावश्यक हानि उठाएँगे, और अनेक बड़े-बड़े अवसरों को भी खो देंगे।"
"तुम अभी कहाँ से आए हो?" मैं ने पूछा।
"हम साँप खाते हैं", उकाब ने उत्तर दिया, "शत्रु हमारे लिए रोटी है। हमारा तत्त्व पिता की इच्छा पूरी करने से आता है, जो शैतान के कामों को नष्ट करना है। हर साँप जो हम खाते हैं हमारी दृष्टि को बढ़ाने में सहायता करता है। शत्रु का हर गढ़ जिसे हम ढाते हैं हमें शक्ति देता है जिससे हम ऊँचा उड़ सकते हैं और हवा में लम्बे समय तक रह सकते हैं। हम अभी-अभी एक भोज से लौटे हैं, हम ने लज्जा के साँपों को खाया है जिन्होंने तुम्हारे भाइयों और बहनों को बाँध रखा था। वे शीघ्र ही यहाँ होंगे। वे उन उकाबों के संग आ रहे हैं जिन्हें हम ने उन्हें मार्ग दिखाने के लिए, और शत्रु के प्रत्याक्रमण से उनकी रक्षा करने के लिए पीछे छोड़ा था।"

ये उकाब अपने विषय में बहुत आश्वस्त लग रहे थे, परन्तु गर्वीले नहीं थे। वे जानते थे वे क्या हैं और उन्हें क्या करने के लिए बुलाया गया है। वे हमें भी जानते थे और वे भविष्य को भी जानते थे। उनका भरोसा मेरे लिए आश्वासन देने वाला था, और उन घायलों के लिए तो अधिक था जो अभी अभी हमारे चारों ओर पड़े हुए थे। जो अभी तक इतने निर्बल थे कि बात भी नहीं कर सकते थे, बैठकर उकाब के साथ मेरी बातचीत को सुन रहे थे। वे उसकी ओर इस प्रकार देख रहे थे जैसे खोए हुए बच्चे उनके माँ-बाप की ओर देखते हैं जिन्होंने उन्हें अभी-अभी पाया हो।

आत्मा की हवा

जब उकाब ने घायलों की ओर देखा तो उसकी मुखाकृति भी बदल गई। उस तीव्र दृढ़ निश्चय के स्थान पर जिसके सामने मैं पहले खड़ा था, घायलों के लिए कोमल, कृपालु बूढ़े दादाजी सा था। उकाब ने अपने पंख खोले और कोमलता के साथ उन्हें फड़फड़ाने लगा, जिससे घायलों पर एक ठण्डी हवा बहने लगी। यह वैसी हवा नहीं थी जिसे मैं ने पहले कभी अनुभव किया था। हर साँस के साथ मैं शक्ति और मन की स्पष्टता प्राप्त कर रहा था। शीघ्र ही घायल खड़े हो गए और एक सच्चाई के साथ परमेश्वर की आराधना करने लगे कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। एक बार फिर मैं अत्यन्त लज्जा महसूस करने लगा क्योंकि मैं ने उनकी निन्दा की थी जो इस स्तर पर रह गए थे। वे हम को जो पर्वत पर चढ़ रहे थे कितने कमज़ोर और मूर्ख लग रहे थे, परन्तु उन्होंने हम से अधिक सहा था और विश्वासयोग्य रहे थे। परमेश्वर ने उन्हें सुरक्षित रखा था और वे उससे एक महान प्रेम से प्रेम करते थे।

मैं ने ऊपर पर्वत की ओर देखा। सब उकाब उनके पंखों को कोमलता के साथ फड़फड़ा रहे थे। पर्वत पर के सब उस हवा से ताज़गी अनुभव कर रहे थे जिसे ये बहा रहे थे और वे सब प्रभु की आराधना करने लगे थे। शुरू में तो जो आराधना विभिन्न स्तरों से आ रही थी में उसमें कुछ बेसुरापन था परन्तु कुछ समय के बाद हर स्तर पर का हर व्यक्ति सम्पूर्ण स्वरसंगति के साथ गा रहा था।

मैं ने पृथ्वी पर ऐसी सुन्दर चीज नहीं सुनी थी। मैं चाहता था यह कभी बंद न हो। शीघ्र ही मैं ने पहचान लिया कि यह वही आराधना है जो हम ने बाग में अनुभव की थी, परन्तु अब अधिक प्रचुर और भरपूर लग रही थी। मैं जानता था कि यह इसलिए है क्योंकि हम अपने शत्रुओं की उपस्थिति में आराधना कर रहे थे, अर्थात् ऐसे अंधकार और पर्वत के दुष्ट वातावरण में थी, कि यह कितनी अधिक सुन्दर लग रही थी।

मुझे पता नहीं आराधना कितनी देर तक चलती रही, परन्तु आखिरकार उकाबों ने उनके पंख फड़फड़ाना बंद कर दिया और यह बंद हो गई। "आप रुक क्यों गए?" मैं ने उस उकाब से पूछा जिससे मैं बातें कर रहा था।

"क्योंकि वे अब सम्पूर्ण हैं", उसने उन घायलों की ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया जो अब खड़े थे और पूंण स्थिति में दिख रहे थे। "सच्ची आराधना किसी भी घाव को भर सकती है", उसने आगे कहा।

"कृपया इसे दोबारा करो", मैं ने याचना की।

"हम इसे कई बार करेंगे, परन्तु कब करना है हमारा फैसला नहीं है। जिस हवा को तुम ने अनुभव किया पवित्र आत्मा थी। वह हमारा संचालन करता है; हम उसका संचालन नहीं करते। उसने घायलों को चंगा किया है और उस एकता को लाने लगा है जो आगे के युद्ध के लिए आवश्यक है। <u>सच्ची आराधना सिर, अर्थात् यीशु पर तेल भी उँडेलती है, जो फिर सारी देह पर बहने लगता है और हमें उसके साथ और एक दूसरे के साथ एक बनाता है। कोई भी जो उसके साथ एक होता है घायल या अशुद्ध रह नहीं सकेगा। उसका लहू शुद्ध जीवन हैं, और जब हम उसके साथ जुड़ते हैं तो यह बहता है। जब हम उसके साथ जुड़ते हैं तब हम एक दूसरे के साथ भी जुड़ते हैं, जिससे उसका लहू सब में से बहता है।</u> क्या तुम अपने शरीर का घाव इसी प्रकार चंगा नहीं करते? तुम घाव को बंद कर देते हो जिससे लहू घायल सदस्य तक उसे जीवित करने के लिए बहने लगता है। जब उसकी देह का एक अंग घायल होता है, तब हमें उस अंग के साथ जुड़ जाना है जब तक यह पूरी तरह पुनस्थापित न हो जाता। हम सब एक हैं।"

आराधना से बने हुए सुखाभास में, यह संक्षिप्त शिक्षा गूढ़ लग रही थी, हालाँकि मैं जानता था यह बिलकुल मूल है। जब पवित्र आत्मा कार्य करता है तब हर शब्द यशस्वी लगता है, चाहे यह कितना भी प्रारम्भिक क्यों न हो। मैं प्रेम से इतना भरा हुआ था कि मैं सबको गले लगाना चाहता था - उन खूँखार बूढ़े उकाबों को भी। तब, एक बिजली के समान, मुझे वे महान योद्धा याद आए जो पकड़े गए थे। उकाब ने इसे भाँप लिया परन्तु कुछ कहा नहीं। वह मुझे देखता रहा। अन्त में, मैं बोला उठा, "क्या हम उन्हें वापस ला सकते हैं जो अभी-अभी खो गए थे?"

राजा का हृदय

"हाँ, तुम्हारे लिए ऐसा महसूस करना सही है", उकाब ने अन्त में कहा। "जब तक पूरी देह पुनस्थापित न हो जाती, हम सम्पूर्ण नहीं हैं, और हमारी आराधना भी सम्पूर्ण नहीं है। सबसे यशस्वी आराधना में, और राजा की उपस्थिति में भी, हम जब तक एक नहीं हो जाते हम सब इस खालीपन को अनुभव करेंगे, क्योंकि हमारा राजा भी इसे अनुभव करता है। हम सब बन्धन में पड़े अपने भाइयों

के लिए शोकित होते हैं, परन्तु हम अपने राजा के हृदय के लिए अधिक शोकित होते हैं। हालाँकि तुम अपने सब बच्चों से प्रेम करते हो, तुम उसके लिए शोक करोगे जो बीमार या घायल है। वह भी अपने सब बच्चों से प्रेम करता है, परन्तु इस समय उसका सारा ध्यान घायलों और पीड़ितों की ओर है। उसकी खातिर हमें जब तक सब प्राप्त नहीं कर लिए जाते छोड़ना नहीं है। जब तक कोई घायल है, वह घायल है।"

पर्वत हटाने वाला विश्वास

उकाब के पास बैठकर मैं ने उसके शब्दों पर विचार किया। अन्त में मैं ने पूछा, "मैं जानता हूँ कि बुद्धि अब तुम्हारे द्वारा मुझ से बात कर रही है, क्योंकि तुम्हारी बातों में मैं उसकी आवाज सुनता हूँ। उस पिछले युद्ध से पहले मुझे अपने ऊपर बहुत विश्वास था, और मैं भी लगभग उसी अभिमान द्वारा ले जाया गया था जिससे वे उठा लिए गए थे, और यदि बुद्धि मुझे रोकती नहीं तो मैं भी बड़ी सरलता के साथ उनके साथ बंधी बन जाता। मैं अपने भाइयों को स्वतंत्र करने की इच्छा से अधिक शत्रु के लिए घृणा से प्रेरित था। पहले पहल इस पर्वत पर आने, और महान युद्ध में लड़ने के बाद से, मैं सोचता हूँ कि जितनी भी सही चीजें जो मैं ने कीं, मैं ने गलत कारणों से कीं, और जितनी गलत चीजें मैं ने कीं, मेरे पास करने के अच्छे अभिप्राय थे। जितना अधिक मैं सोचता हूँ, उतना अधिक अनिश्चित मैं अपने विषय में होता जाता हूँ।"

"तुम बुद्धि के साथ एक लम्बे समय तक रहे होगे", उकाब ने कहा।

इससे पहले मैं उसे पहचानने लगा, वह मेरे साथ एक लम्बे समय से था, परन्तु मुझे डर है कि मैं अधिकाँश समय उस का विरोध करता रहा हूँ। किसी प्रकार मैं जानता हूँ कि मुझ में अभी किसी महत्त्वपूर्ण चीज की कमी है, ऐसी कुछ चीज जो दोबारा युद्ध में जाने से पहले मेरे पास होनी चाहिए, परन्तु मुझे पता नहीं है यह क्या है।"

महान उकाब की आँखें जैसे उसने उत्तर दिया अधिक भेदक हो गईं, "जब बुद्धि तुम्हारे साथ तुम्हारे हृदय में बातें करता है तब तुम उसकी आवाज पहचानते हो। तुम अच्छा सीख रहे हो क्योंकि तुम्हारे पास वस्त्र है। जो तुम अभी अनुभव कर रहे हो सच्चा विश्वास है।"

"विश्वास?" मैं बोल पड़ा, "मैं गम्भीर संदेहों की बात कर रहा हूँ!"

"तुम बुद्धिमान हो कि अपने ऊपर संदेह कर रहे हो। परन्तु सच्चा विश्वास परमेश्वर पर निर्भर होता है, अपने ऊपर नहीं और न ही तुम्हारे विश्वास पर। तुम उस विश्वास के निकट हो जो पर्वतों को हटाता है, और हमें हटाना भी होगा। अब समय है कि इसे वहाँ ले जाया जाए जहाँ यह पहले गया नहीं है। परन्तु, तुम सही हो। तुम में अभी भी कुछ महत्त्वपूर्ण चीज की कमी है। तुम्हें अभी भी एक प्रकटीकरण की आवश्यकता है। हालाँकि तुम पर्वत के शिखर पर चढ़ चुके हो, और मार्ग में हर सत्य से कुछ सीखा है, और हालाँकि तुम परमेश्वर के बाग में खड़े हुए थे, उसके बिनाशर्त प्रेम को अनुभव किया है, और अब तक उसके पुत्र को अनेक बार देखा है, परन्तु तुम अभी भी परमेश्वर की सारी योजना का एक अंश ही जानते हो, और वह भी केवल सतही ही।"

मैं जानता था कि यह कितना सत्य था कि इसे सुनने से असल में शान्ति मिलती थी। मैं ने कितने सारे लोगों और परिस्थितियों का गलत न्याय किया है। बुद्धि ने मेरा जीवन अनेक बार बचाया है, परन्तु बुद्धि की आवाज मेरे भीतर अभी भी एक धीमी सी आवाज है, और मेरे अपने विचारों और भावनाओं का कोलाहल अभी भी बहुत ऊँचा है। मैं बुद्धि को आपके द्वारा बोलता हुआ अधिक जोर से सुनता हूँ जितना मैं अपने हृदय में सुन नहीं पाता हूँ, इसलिए मैं जानता हूँ मुझे आपके निकट रहना चाहिए।

"हम यहाँ इसलिए हैं क्योंकि तुम को हमारी आवश्यकता है", उकाब ने कहा, "हम यहाँ इसलिए भी हैं क्योंकि हमें तुम्हारी आवश्यकता है। तुम्हारे पास ऐसे वरदान हैं जो मेरे पास नहीं हैं, और मेरे पास ऐसे वरदान हैं जो तुम्हारे पास नहीं हैं। तुम ने उन चीजों को अनुभव किया है जिन्हें मैं ने नहीं किया है, और मैं ने उन चीजों को अनुभव किया है जिन्हें तुम ने नहीं किया है। उकाबों को तुम्हें अन्त तक के लिए दिया गया है, और तुम हमें दिए गए हो। मैं कुछ समय के लिए तुम्हारे बहुत निकट रहूँगा, और फिर मेरे स्थान पर तुम्हारे लिए दूसरे उकाब आएँगे। हर उकाब भिन्न है। अकेले-अकेले नहीं, परन्तु इकट्ठे, हम प्रभु के रहस्यों को जान सकते हैं।

सच्चाई के द्वार

तब उकाब उस चट्टान पर से उठा जहाँ वह बैठा हुआ था, और उस स्तर के किनारे पर आया जिस पर हम खड़े थे। "आओ", उसने कहा। जैसे मैं निकट आया मैं ने सीढ़ियाँ देखीं जो पर्वत के तल तक जाती थीं, और एक छोटा द्वार देखा।

"मैं ने इसे पहले क्यों नहीं देखा था?" मैं ने पूछा।

"जब तुम पहले इस पर्वत के पास आए थे तब तुम इसे देख पाने के लिए यहाँ अधिक देर नहीं रुके थे", उसने उत्तर दिया।

"तुम यह कैसे जानते हो? क्या तुम यहाँ थे जब मैं पहली बार यहाँ आया था?"

"यदि मैं यहाँ नहीं होता तब भी जान जाता, क्योंकि सब जो इस द्वार को देखते नहीं हैं उसी कारण से नहीं देख पाते हैं, परन्तु मैं असल में यहाँ था", उसने उत्तर दिया, "मैं उन सिपाहियों में से एक था जिसके पास से तुम तेजी से निकल गए थे।"

तब मैं ने पहचाना कि यह उकाब एक मनुष्य था जिससे मैं मसीह में आने के तुरन्त बाद मिला था, और जिससे मैं ने कुछ बातचीत भी की थी। वह बोल रहा था, "मैं तब तुम्हारे पीछे बहुत आना चाहता था। मैं एक लम्बे समय से इस स्तर पर था कि मुझे परिवर्तन की आवश्यकता थी। मैं उन खोए हुओं को छोड़ नहीं सकता था जिन्हें मैं मसीह में लाने का प्रयत्न कर रहा था। जब मैं ने आखिरकार प्रभु की इच्छा पूरी करने को समर्पण किया, कि यहाँ रहूँ या जाऊँ, तब बुद्धि प्रकट हुई और इस द्वार को दिखाया। उसने कहा कि यह ऊपर जाने का छोटा रास्ता है। इस प्रकार मैं तुम से पहले शिखर पर पहुँचा था। वहाँ मैं एक उकाब में बदल गया था।"

तब मुझे याद आया कि मैं ने इस प्रकार के द्वार कुछ स्तरों पर देखे थे। मैं ने उन में से एक के भीतर झाँक कर भी देखा था और जो भीतर देखा था उससे कितना आश्चर्यचकित भी हुआ था। मैं ने अधिक दूर तक जाने का साहस नहीं किया था क्योंकि मेरा सारा ध्यान युद्ध और पर्वत के शिखर पर पहुँचने पर लगा हुआ था। "क्या मैं किसी एक द्वार में प्रवेश करके शिखर पर पहुँच सकता था?" मैं ने पूछा।

"यह इतना सरल नहीं है", उकाब ने, कुछ चिड़चिड़ा दिखते हुए, कहा। "हर द्वार से एक मार्ग जाता है, जिसमें से एक शिखर तक पहुँचता है।" मेरे अगले प्रश्न का पूर्वानुमान लगाते हुए उसने कहा, "दूसरे द्वार पर्वत के दूसरे स्तरों तक जाते हैं। पिता ने हर मार्ग को इस प्रकार बनाया है कि हर व्यक्ति उसे चुनेगा जो उसकी परिपक्वता के अनुसार होगा।"

"अविश्वसनीय! उसने यह कैसे किया है?" मैं सोचा परन्तु उकाब ने मेरे विचार पढ़ लिए।

"यह बहुत सरल था", उकाब ने बोलना जारी रखा जैसे कि मैं ने अपने विचार जोर से बोले थे, "आत्मिक परिपक्वता राज्य के उद्देश्यों के लिए, और दूसरों के लिए अपनी इच्छाओं के बलिदान की उत्सुकता से निर्धारित होती है। जिस द्वार में प्रवेश के लिए सबसे अधिक बलिदान की आवश्यकता होती है सदा हमें सबसे ऊँचे स्तर पर ले जाएगा।"

मैं वह सबकुछ याद रखने का प्रयत्न कर रहा था जो उकाब मुझ से कह रहा था। मैं जानता था कि मुझे मेरे सामने के द्वार में प्रवेश करना चाहिए, और कि मेरे लिए बुद्धिमानी होगी कि मैं उस किसी से जो मुझ से पहले गया है और ऊपर जाने के लिए सही द्वार चुना है जो कुछ मैं सीख सकता हूँ सीखूँ।

"मैं सीधे शिखर पर नहीं गया था, और मैं ऐसे किसी से नहीं मिला हूँ जो गया है", उकाब बोल रहा था। "परन्तु मैं अधिकाँश से अधिक तेजी के साथ गया क्योंकि यहाँ उद्धार के स्तर पर लड़ते हुए मैं ने आत्म-बलिदान के विषय में बहुत कुछ सीखा था। मैं ने तुम्हें यह द्वार दिखाया है क्योंकि तुम ने वस्त्र पहना है और तुम वैसे भी इसे देख लेते थे, परन्तु समय कम है और मैं शीघ्र परिपक्व होने में तुम्हारी सहायता के लिए यहाँ हूँ।"

"हर स्तर पर द्वार हैं, और हर एक खजानों की ओर जाता है जो तुम्हारी समझ के परे हैं", उकाब ने जारी रखा। "उन्हें शारीरिक रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है, परन्तु हर खज़ाना जिसे तुम अपने हाथों में लोगे तुम अपने हृदय में ले जा सकोगे। तुम्हारे हृदय को परमेश्वर के खज़ाने का घर होना है। जब तक तुम दोबारा शिखर पर पहुँचोगे, तुम्हारे हृदय में पृथ्वी के सब खजानों से अधिक मूल्यवान् खज़ाने होंगे। उन्हें तुम से कभी भी नहीं लिया जाएगा, बल्कि वे अन्तकाल तक तुम्हारे हैं। शीघ्र जाओ। तूफानी बादल छा रहे हैं, और एक और महान युद्ध का आभास हो रहा है।"

"क्या आप मेरे साथ चलोगे?" मैं ने निवेदन किया।

"नहीं", उसने उत्तर दिया, "यह वह स्थान है जहाँ का मैं हूँ। मुझे उनकी सहायता करनी है जो घायल हैं। परन्तु मैं तुम से यहाँ दोबारा मिलूँगा। तुम लौटने से पहले मेरे अनेक उकाब भाइयों और बहनों से मिलोगे, और जहाँ तुम उनसे मिलोगे वहाँ वे तुम्हारी मुझे से बेहतर सहायता कर सकेंगे।"

स्वर्ग के खज़ाने

मैं पहले ही उकाब से इतना प्रेम करने लगा था कि उसे छोड़ पाना कठिन था। मुझे जान कर खुशी हुई थी कि मैं उससे दोबारा मिलूँगा। अब द्वार मुझे चुम्बक के समान खींच रहा था। मैं उसे खोला और प्रवेश किया।

जो महिमा मैं ने देखी इतनी गजब की थी कि मैं अपने घुटनों पर गिर पड़ा। सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थर इतने सुन्दर थे कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता है। उनकी महिमा असल में जीवन के पेड़ की महिमा के बराबर थी। कमरा इतना बड़ा था कि यह बिना छोर के लग रहा था। फर्श चाँदी का था, खम्भे सोने के, और छत एक शुद्ध हीरा थी जो हर रंग को जिसे मैं जानता था और कइयों को जिन्हें मैं नहीं जानता था प्रतिबिम्ब कर रहा था। असंख्य स्वर्गदूत चारों ओर थे, जो विभिन्न वस्त्र और वरदियाँ पहने हुए थे जो पृथ्वी की नहीं थीं।

जैसे मैं कमरे से गुज़रने लगा, सब स्वर्गदूत प्रणाम में झुक गए। एक ने आगे बढ़कर मेरा नाम लेकर मेरा स्वागत किया। उसने बताया कि मैं कमरे में कहीं भी जा सकता हूँ और जो कुछ देखना चाहता हूँ देख सकता हूँ। उनसे कुछ भी रोका नहीं जाता है जो द्वार से भीतर आते हैं। मैं सुन्दरता से इतना अभिभूत हो गया था कि बोल ही नहीं पा रहा था। मैं ने आखिरकार कहा कि यह तो

बाग से भी कहीं अधिक सुन्दर था। आश्चर्यचकित होकर, स्वर्गदूत ने कहा, "यह बाग है! यह तुम्हारे पिता के घर में एक कमरा है। हम तुम्हारे सेवक हैं।"

जैसे मैं चलने लगा, स्वर्गदूतों का एक बड़ा समूह मेरे पीछे हो लिया। मैं ने मुड़ कर अगुवे को पूछा कि वे मेरे पीछे क्यों चल रहे हैं। "वस्त्र के कारण", उसने कहा। "हमें तुम्हारे लिए, यहाँ और आनेवाले युद्ध में तुम्हारी सेवा करने के लिए, दिया गया है।"

मुझे पता नहीं था कि मैं स्वर्गदूतों के साथ क्या करूँ इसलिए मैं चलता रहा। मेरा ध्यान एक विशाल नीले पत्थर की ओर आकर्षित हुआ जिसके अन्दर लग रहा था सूर्य और बादल थे। जब मैं ने उसे छूआ तो मेरे ऊपर वही भावनाएँ छा गईं जो जीवन के पेड़ का फल खाने से हुई थीं। मैं ने कई गुणा शक्ति, अलौकिक मानसिक स्पष्टता, और सबके और सबकुछ के लिए प्रेम अनुभव किया। मैं प्रभु की महिमा देखने लगा। जितने देर तक मैं पत्थर को छूए रहा उतनी अधिक महिमा बढ़ने लगी। मैं पत्थर पर से अपना हाथ हटाना नहीं चाहता था, परन्तु महिमा इतनी तीव्र हो गई कि आखिरकार मुझे हटाना पड़ा।

तब मेरी आँखें एक सुन्दर हरे पत्थर पर पड़ीं। "उसके अन्दर क्या है?" मैं ने पास खड़े स्वर्गदूत से पूछा।

"ये सब पत्थर उद्धार के खज़ाने हैं। तुम अब स्वर्गीय स्थान को छू रहे हो, और वह जीवन की पुनःस्थापना है", उसने कहा।

जैसे मैं ने हरे पत्थर को छूआ तो मैं पृथ्वी को चटकीले और भड़कीले रंगों में देखने लगा। जितनी देर तक मैं उस पत्थर पर अपना हाथ रखे रहा वे प्रचुरता में बढ़ने लगे, और मेरा प्रेम भी उस सब के लिए जिसे मैं ने देखा बढ़ गया। तब मैं ने सब जीवित प्राणियों में एक ऐसे स्तर का सुमेल देखा जो मैं ने पहले कभी नहीं देखा था। तब मैं सृष्टि में प्रभु की महिमा देखने लगा। यह इतनी बढ़ने लगी, कि तीव्रता के कारण मुझे पीछे हटना पड़ा।

मैं समझा कि मुझे पता नहीं था कि मैं ने वहाँ कितना समय बिताया था। परन्तु मैं जानता था कि केवल इन पत्थरों को छूने से ही परमेश्वर और उसकी सृष्टि की मेरी समझ कई गुणा बढ़ गई थी, और छूने के लिए कितने अधिक पत्थर और थे। उस कमरे में इतना कुछ था जिसे एक व्यक्ति अपने सारे जीवन भर में सोख नहीं सकता था। "और कितने कमरे हैं?" मैं ने स्वर्गदूत से पूछा।

"इस प्रकार के कमरे पर्वत के हर स्तर पर हैं।"

"व्यक्ति उस सबकुछ को कैसे अनुभव कर सकता है जो केवल इस एक कमरे में है, उन सब की तो बात ही नहीं?" मैं ने पूछा।

"इसे करने के लिए तुम्हारे पास अनन्तकाल है। प्रभु यीशु की सबसे मूल सच्चाइयों में छिपे खज़ानों में इतना कुछ है कि यह कई जीवन भर चलता रहेगा जिसका तुम पता नहीं लगा सकोगे। कोई भी व्यक्ति केवल एक जीवन में उनमें से किसी के विषय में सबकुछ पता नहीं लगा सकता है, परन्तु तुम उसे ले लो जिसकी तुम्हें आवश्यकता है और अपनी नियती की ओर बढ़ते रहो।"

मैं सन्निकट युद्ध के विषय में, और कैद किए गए योद्धाओं के विषय में दोबारा सोचने लगा। ऐसे यशस्वी स्थान में यह कोई सुखद विचार नहीं था, परन्तु मैं जानता था कि इस कमरे में लौटने के लिए मेरे पास अनन्तकाल है; परन्तु पर्वत के शिखर तक का मार्ग पता लगाने, और वापस युद्ध में लौटने के लिए मेरे पास समय कम था।

मैं स्वर्गदूत की ओर मुड़ा। "तुम्हें उस द्वार का पता लगाने में मेरी सहायता करनी होगी जो शिखर को जाता है।"

स्वर्गदूत हैरान दिखा। "हम तुम्हारे सेवक हैं", उसने उत्तर दिया, "परन्तु तुम्हें हमारी अगुआई करनी है। यह सारा पर्वत हमारे लिए एक रहस्य है। हम सब ने इस महान रहस्य को जानने की इच्छा की थी, परन्तु इस कमरे को छोड़ने के बाद जिसके विषय में हम छोड़ा सा जानने लगे हैं, हम तुम्हारे साथ और भी सीखेंगे।"

"क्या आपको पता है सब द्वार कहाँ हैं?" मैं ने पूछा।

"हाँ, परन्तु हमें पता नहीं है वे कहाँ ले जाते हैं। कुछ हैं जो बड़े आकर्षक लगते हैं, और कुछ सादे हैं, और कुछ असल में घृणास्पद हैं। एक तो भयानक है।"

"इस स्थान में ऐसे द्वार हैं जो घृणास्पद हैं?" मैं ने अविश्वास के साथ पूछा। "और एक भयानक है? यह कैसे हो सकता है?"

"हम जानते नहीं हैं, परन्तु मैं आपको दिखा सकता हूँ", उसने उत्तर दिया।

"कृपया दिखाइए", मैं ने कहा।

हम कुछ देर चलते रहे। हम खुछ खज़ानों के पास से गुज़रे जिनकी महिमा अकथनीय थी, जिनके पास ने गुज़र जाना कठिन था। कई द्वार भी थे जिन पर बाइबल के विभिन्न नाम लिखे हुए थे। जब स्वर्गदगूत ने उन्हें "आकर्षक" कहा था तो मुझे लगा कि उसने उनके आकर्षण को कम करके बताया था। मैं उन में से हर एक में से जाना चाहता था, परन्तु "भयानक द्वार" के विषय में मेरी जिज्ञासा के कारण मैं चलता रहा।

तब मैं ने उसे देखा। "भयानक" भी एक न्यूनोक्ति थी। मुझे डर ने पकड़ लिया और लगा कि यह मेरा प्राण ले लेगा।

अनुग्रह और सच्चाई

मैं उस द्वार से मुड़ा और तेजी के साथ पीछे हट गया। पास में एक सुन्दर लाल पत्थर था, जिस पर हाथ रखने के लिए मैं लगभग लपका। तुरन्त मैं गतसमनी के बाग में प्रभु को प्रार्थना में देख रहा था। जो प्राणपीड़ा मैं ने देखी उस द्वार से भयानक थी जिसे मैं ने अभी देखा था। धक्के के साथ, मैं ने अपना हाथ पत्थर पर से झटके के साथ हटाया और थकान के साथ फर्श पर गिर पड़ा। मैं

नीले या हरे पत्थरों के पास लौटना चाहता था, परन्तु मुझे अपनी शक्ति और दिशा की मेरा भावना को समेट कर रखना था। स्वर्गदूत तुरन्त मेरे चारों ओर मेरे सेवा में लग गए। मुझे कुछ पीने को दिया गया जिससे मुझ में जीन आई। शीघ्र ही मैं खड़े होने और दूसरे पत्थरों के पास लौटने के लिए काफी अच्छा अनुभव करने लगा। परन्तु, प्रभु के प्रार्थना करने के आवर्तक दर्शन के कारण मैं रुकने को बाध्य हुआ।

"वह क्या था", मैं ने पूछा।

"जब तुम पत्थरों को छूते हो तो हम उसमें से कुछ देख पाते हैं जो तुम देखते हो, और जो तुम अनुभव करते हो उसका कुछ अनुभव कर पाते हैं", स्वर्गदूत ने कहा। "हम जानते हैं कि ये सब पत्थर महत्त्वपूर्ण खज़ाने हैं, और सब प्रकटीकरण जो उन में हैं बहुमूल्य हैं। हम ने क्रूसित होने से पहले प्रभु की प्राणपीड़ा को एक क्षण के लिए देखा था, और उस भयानक रात जो उसने महसूस किया था उसे थोड़ा अनुभव किया था। हमारे लिए समझ पाना कितना कठिन है कि हमारा परमेश्वर कैसे इस प्रकार दुख उठा सकता है। इससे हमें पता चलता है कि मनुष्यों की सेवा करना कितने सम्मान की बात है जिसके लिए उसने ऐसी भयानक कीमत चुकाई है।"

स्वर्गदूत के शब्द मेरे प्राण के लिए बिजली के समान थे। मैं ने महान युद्ध में लड़ाई की थी। मैं पर्वत के शिखर पर चढ़ा था। मैं आत्मिक क्षेत्र से इतना परिचित हो गया था कि मैं ने स्वर्गदूतों पर ध्यान नहीं दिया था, और मैं विशाल उकाबों के साथ बराबरी पर बातें कर सकता था। फिर भी मैं एक क्षण के लिए भी प्रभु के दुखों में सहभागी नहीं हो सका था, मैं अधिक सुखद अनुभव में भाग जाना चाहता था। " मुझे यहाँ नहीं होना चाहिए", मैं लगभग चिल्लाया। "किसी और से बढ़कर मुझे, दुष्ट का कैदी होना चाहिए!"

"जनाब", स्वर्गदूत ने आशंकित होकर कहा। "हम समझते हैं कि कोई भी यहाँ इसलिए नहीं है क्योंकि वह योग्य है। तुम यहाँ हो क्योंकि तुम्हें सृष्टि से पहले एक उद्देश्य के लिए चुना गया था। हम नहीं जानते तुम्हारा विशेष उद्देश्य क्या है, परन्तु हम जानते हैं कि इस पर्वत पर हर एक के लिए यह महान ही है।"

"धन्यवाद, आप सहायक हो। मेरी भावनाएँ इस स्थान में बहुत तनाव अनुभव कर रही हैं, और वे मेरी समझ पर विजयी हो रही हैं। आप सही हो। यहाँ कोई भी इसलिए नहीं आया है क्योंकि वह योग्य है। सच है, जितना ऊँचा हम इस पर्वत पर चढ़ते हैं, उतने अधिक हम यहाँ अयोग्य होते हैं, और उतना अधिक अनुग्रह हमें यहाँ रहने के लिए लगता है। मैं पहली बार पर्वत के शिखर पर कैसे चढ़ सका था?"

"अनुग्रह", मेरे स्वर्गदूत ने उत्तर दिया।

"यदि आप मेरी सहायता करना चाहते हो", मैं ने कहा, "तो जब कभी भी मुझे उलझन या निराशा में देखो तो इस शब्द को बारम्बार दोहराते रहो। इस शब्द को मैं किसी भी दूसरे शब्द से अधिक समझने लगा हूँ।"

"अब मुझे लाल पत्थर के पास जाना चाहिए। मैं जानता हूँ कि इस कमरे में वह सबसे बड़ा खज़ाना है, और मुझे तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक मैं उस खज़ाने को अपने हृदय में ले नहीं लेता हूँ।"

अनुग्रह की सच्चाई

"जो समय मैं ने लाल पत्थर के पास बिताया था मेरे जीवन सा सबसे दुखद अनुभव था। कई बार मैं और नहीं सह सका था बल्कि अपने हाथ को हटाना पड़ा था। अनेक बार लौटने से पहले मुझे अपने प्राण को नया बनाने के लिए नीले या हरे पत्थर के पास लौटना पड़ता था। हर बार लाल पत्थर के पास आना कठिन होता जा रहा था, परन्तु किसी भी चीज से अधिक जो मैं ने कभी सीखी या अनुभव की थी इससे प्रभु के लिए मेरा प्रेम और प्रशंसा बढ़ रही थी।

अन्त में, जब क्रूस पर यीशु पर से पिता की उपस्थिति चली गई, मैं और सहन नहीं कर सका था। मैं ने छोड़ दिया। मैं कह सकता था कि स्वर्गदूत भी, जो कुछ हद तक वह अनुभव कर रहे थे जो मैं कर रहा था, मेरे साथ पूरी तरह सहमत थे। पत्थर को दोबारा छूने की इच्छाशक्ति मेरे पास बिलकुल नहीं थी। मुझे तो लग भी नहीं रहा था कि मैं नीले पत्थर के पास जाऊँ। मैं फर्श पर पराजित सा पड़ा हुआ था। मैं रो रहा था कि प्रभु को क्या क्या सहना पड़ा था। मैं इसलिए भी रोया था क्योंकि मैं भी उसे चेलों के समान छोड़ कर भाग गया था। मैं ने भी उसे उनके समान निराश किया था जब उसे मेरी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

ऐसा लगा कि कई दिनों के बाद मैं ने अपनी आँखें खोलीं हैं। एक दूसरा उकाब मेरे पास खड़ा था। उसके सामने तीन पत्थर थे - एक नीला, एक हरा और एक लाल। "इन्हें खाओ", उसने कहा। जब मैं ने खाया, मेरा सारा अस्तित्व नया हो गया, और बड़ा आनन्द और बड़ी शान्ति दोनों मेरे प्राण में भर गए।

जब मैं उठ खड़ा हुआ, तो मैं ने अपनी तलवार के हत्थे पर, और फिर मेरे दोनों कंधों पर लगे हुए उन्हीं तीन पत्थरों को देखा। "ये अब सदा के लिए तुम्हारे हैं", उकाब ने कहा। "उन्हें तुम से लिया नहीं जा सकता है, और तुम उन्हें कभी भी खो नहीं सकते हो।"

"मैं ने इस अन्तिम को समाप्त नहीं किया है", मैं ने विरोध किया।

"केवल मसीह ही उस परीक्षा को समाप्त कर सकता है", उसने उत्तर दिया। "तुम ने काफी अच्छा किया है, और अब तुम्हें आगे बढ़ जाना चाहिए।"

"कहाँ?" मैं ने पूछा।
"तुम्हें फैसला करना होगा, परन्तु क्योंकि समय कम होता जा रहा है इसलिए मैं सुझाव देता हूँ कि तुम शीघ्र शिखर पर जाओ।" तब उकाब चला गया, प्रकट था कि वह जल्दी में था।
तब मुझे द्वार याद आए। मैं उनकी ओर बढ़ने लगा जो बहुत आकर्षक लग रहे थे। जब मैं पहले के पास पहुँचा तो यह अब आकर्षक नहीं लगा। तब मैं दूसरे के पास गया, और यह भी वैसा ही लगा। "कुछ बदल गया है", मैं ने जोर से कहा।
"तुम बदल गए हो", उकाबों ने एक साथ कहा। मैं उनको देखने के लिए मुड़ा और चकित हुआ कि वे कितने बदल गए थे। उनका रूप अब भोला -भाला नहीं था, परन्तु अब वे अधिक राजसी और बुद्धिमान लग रहे थे। मैं जानता था कि वे उसे प्रतिबिम्ब कर रहे थे जो मुझे में हुआ था, परन्तु अब मैं केवल अपने विषय में सोचकर संकोचित अनुभव कर रहा था।
"मुझे आपकी सलाह चाहिए", मैं ने अगुवे से पूछा।
"अपने हृदय की सुनो", उसने कहा, "अब ये महान सच्चाइयाँ वहीं पर हैं।"
मैं अपने हृदय पर कभी भी भरोसा नहीं कर पाया हूँ", मैं ने उत्तर दिया। "इसमें कितने सारे संघर्ष होते रहते हैं। मैं कितने सारे भ्रम, छल, और स्वार्थी आभिलाषाओं के अधीन होता हूँ। इस कोलाहल के ऊपर प्रभु की सुन पाना मेरे लिए कितना कठिन होता है।"
"जनाब, आपके हृदय में लाल पत्थर होने के कारण, मुझे नहीं लगता ऐसा होता रहेगा", अगुवे ने विश्वास के साथ कहा।
मैं दीवार से लग कर खड़ा हुआ सोच रहा था कि जब मुझे उकाब की सबसे अधिक आवश्यकता थी वह यहाँ नहीं था। वह यहाँ से पहले गुज़र चुका है और जानता होगा कि कौन सा द्वार चुनना चाहिए। परन्तु मैं जानता था वह लौटेगा नहीं, और मैं जानता था कि अच्छा होगा कि मैं चुनूँ। जैसे मैं ने विचार किया, तो "भयानक द्वार" ही था जिसके विषय में मैं सोच सका था। जिज्ञासा के कारण मैं ने वापस जाने और उसे देखने का फैसला किया। मैं पहली बार इससे इतनी तेजी से चला गया था कि मैं ने देखा नहीं था कि यह कौन सी सच्चाई का प्रतीक था।
जैसे मैं इसके पास पहुँचा मैं अपने भीतर डर उठते हुए महसूस कर सकता था, परन्तु उतनी तीव्रता के साथ नहीं जितना पहली बार हुआ था। दूसरे द्वारों के विपरीत, इस द्वार के चारों ओर बहुत अंधेरा था, इस पर लिखी सच्चाई को पढ़ने के लिए मुझे इसके बहुत निकट होना पड़ा। कुछ चकित होकर, मैं ने "मसीह का न्यायासन" पढ़ा। "यह सच्चाई इतनी भयंकर क्यों है?" मैं जोर से बोला, जानता था कि स्वर्गदूत मुझे उत्तर नहीं देंगे। जैसे मैं इसे ताकता रहा था मैं जान गया कि मुझे इस में प्रवेश करना चाहिए।
"कई कारण हैं कि यह डरावना क्यों है", उकाब की परिचित आवाज सुनाई दी।
"मैं बहुत खुश तुम आ गए", मैं बोला, "क्या मैं ने बेकार का फैसला किया है?"
"नहीं! तुम ने सही फैसला किया है। यह द्वार तुम्हें दूसरे किसी भी द्वार से अधिक तेजी के साथ पर्वत के शिखर पर ले जाएगा। यह डरावना है क्योंकि सृष्टि में सबसे बड़े डर का स्रोत इस द्वार में से है। सबसे बड़ी बुद्धि जिसे लोग इस जीवन में, या आनेवाले जीवन में जान सकते हैं इसी द्वार में से पा सकते हैं। फिर भी, बहुत कम ही इस में से जाएँगे।"
"परन्तु इस द्वार पर इतना अन्धकार क्यों है?" मैं ने पूछा।
"इन द्वारों की रोशनी उस ध्यान को प्रकट करती है जो कलीसिया इस समय इनके पीछे की सच्चाइयों को दे रही है। इस द्वार के पीछे की सच्चाई इस समय की सबसे उपेक्षित है, परन्तु यह एक सबसे महत्त्वपूर्ण है। जब तुम प्रवेश करोगे, समझ जाओगे। सबसे बड़ा अधिकार जिसे मनुष्य पा सकते हैं उन्हें ही दिया जाएगा जो इस द्वार से प्रवेश करेंगे। जब तुम मसीह यीशु को इस सिंहासन पर बैठे देखोगे तो, तुम, भी, उसके साथ बैठने के लिए तैयार किए जाओगे।"
"यह द्वार इतना अन्धकारपूर्ण और पूर्वाभास नहीं होता यदि हम ने इस सच्चाई को अधिक ध्यान दिया होता?" मैं ने पूछा।
"सही है। यदि लोग इस द्वार के पीछे प्रकट हो रही महिमा को जानते, तो यह एक सबसे चमकीला होता", उकाब ने शोक प्रकट किया। "परन्तु, यह अभी भी प्रवेश करने के लिए सबसे कठिन द्वार है। मुझे लौटने और तुम्हें प्रोत्साहित करने को कहा गया था क्योंकि तुम्हें शीघ्र ही इसकी आवश्यकता होगी। तुम अधिक महिमा देखोगे, परन्तु एक बड़ा आंतक भी देखोगे, जैसा तुमने पहले कभी देखा नहीं होगा। परन्तु जान लो क्योंकि तुम ने अभी एक कठिन मार्ग चुना है, यह बाद में तुम्हारे लिए बहुत सरल हो जाएगा। क्योंकि तुम इस कठिन सच्चाई का सामना अभी करने के लिए तैयार हो, तुम्हें बाद में हानि नहीं उठानी पड़ेगी। कई उसके प्रेम को जानना चाहते हैं, परन्तु बहुत कम उसकी कठोरता को जानने के इच्छुक हैं। यदि तुम दोनों को नहीं जानते हो तो धोखा और उसके अनुग्रह से गिरने के खतरे में होगे।"
"मैं जानता हूँ कि यदि मैं ने लाल पत्थर के पास समय नहीं बिताया होता तो मैं यहाँ कभी नहीं पहुँचता। मैं सरल मार्ग लेने का प्रयास कैसे कर सकता हूँ जबकि यह प्रभु के स्वभाव के कितना विपरीत है?" मैं ने पूछा। "परन्तु अब तुम ने चुना है, इसलिए शीघ्र जाओ। एक और महान युद्ध आरम्भ होनेवाला है, और मोरचे पर तुम्हारी आवश्यकता है", उसने कहा।

जैसे मैं ने उकाब की ओर देखा, और उसकी आँखों में दृढ़ निश्चय देखा, तो मेरा विश्वास बढ़ा गया। आखिरकार, मैं द्वार की ओर मुड़ा।

भाग 4 – श्वेत सिंहासन

मैं ने अन्तिम बार पर्वत के भीतर इस विशाल कमरे के चारों ओर नज़र घुमाई। रत्न और खज़ाने जो उद्धार की सच्चाइयों के प्रतीक थे उनकी महिमा में विस्मयकारी थे। ऐसा लगा जैसे कि उनके विस्तार का कोई अन्त नहीं था, और उनकी सुन्दरता को पूरी तरह समझने का कोई तरीका नहीं था। मैं कल्पना नहीं कर पाया कि दूसरे कमरे जिन में विश्वास के दूसरे महान सत्य रखे थे अधिक यशस्वी हो सकते थे। इससे मुझे समझने में सहायता मिली कि क्यों इतने सारे मसीही इस स्तर को छोड़ना नहीं चाहते हैं, और विश्वास के मूल सिद्धान्तों पर आश्चर्य करने में संतुष्ट होते हैं। मैं जानता था कि मैं वहाँ अनन्तकाल तक रह सकता हूँ और कभी भी उबूँगा नहीं।

तब मेरे पास खड़े उकाब ने मुझे प्रोत्साहित किया: "तुम्हें जाना चाहिए!" जैसे मैं उसे देखने के लिए मुड़ा, उसने अपनी आवाज धीमी करके, आगे कहा, "प्रभु के उद्धार में बने रहने में बड़ी शान्ति और सुरक्षा और कहीं नहीं है। इसे जानने के लिए तुम्हें यहाँ लाया गया था क्योंकि जहाँ तुम जा रहो हो वहाँ तुम्हें इस विश्वास की आवश्यकता होगी, परन्तु अब तुम्हें यहाँ अधिक नहीं रुकना चाहिए।" शान्ति और सुरक्षा के विषय में उकाब की बातों को सुनकर मेरे मन में उन साहसी योद्धाओं की याद आई जो पर्वत के उद्धार के पहले स्तर से लड़ रहे थे। वे कितनी अच्छी तरह लड़े थे और कितनों को छुड़ाया था, परन्तु वे बुरी तरह घायल भी हुए थे। ऐसा लगता नहीं था कि उन्हें यहाँ शान्ति और सुरक्षा मिली होगी। तब उकाब ने मेरे विचारों को टोका जैसे कि वह उन्हें सुन रहा हो।

"परमेश्वर की शान्ति और सुरक्षा के विषय में एक भिन्न परिभाषा है। युद्ध में घायल होना एक महान सम्मान है। हम भी प्रभु की चोट खाने से चंगे हुए हैं, और हमारी चोट खाने से ही हमें भी चंगा करने का अधिकार दिया गया है। जिस स्थान में शत्रु हमें घायल करता है, एक बार वहाँ चंगाई पाने के बाद, हमें दूसरों को चंगा करने का अधिकार दिया जाता है। चंगाई प्रभु की सेवा का एक मूल अंश था, और हमारी सेवा का भी एक मूल अंश है। यह एक कारण है कि क्यों प्रभु लोगों के साथ बुरी चीजें होने देता है, जिससे उन्हें दूसरों के लिए तरस मिलता है जिसके द्वारा चंगाई का सामर्थ्य कार्य करता है। इसी कारण से जब प्रेरित पौलुस के अधिकार पर संदेह प्रकट किया गया था उसने उसकी मारों और पत्थरावों के विषय में बताया था। हर घाव, और हर बुरी चीज जो हमारे साथ होती है, उसे भला करने में परिवर्तित किया जा सकता है। हर मार जो महान प्रेरित ने सही दूसरों के उद्धार का कारण बनी थी। हर घाव जो एक योद्धा लेता है दूसरों के उद्धार पाने, चंगा होने, या पुनःस्थापित होने का कारण बनता है।"

उकाब के शब्द बहुत प्रोत्साहक थे। उद्धार के खज़ानों के बीच खड़े होकर यह सत्य और भी स्पष्ट और भेदक बन गया था। मैं जाकर इसे पर्वत के शिखर पर से चिल्ला-चिल्लाकर बताना चाहता था ताकि वे सब जो अभी भी लड़ रहे थे इससे प्रोत्साहन पा सकते।

तब उकाब ने जारी रखा, "एक और कारण भी है कि क्यों प्रभु हमें घायल होने देता है। जब तक असली खतरा न हो साहस दिखाई नहीं देता। प्रभु ने कहा था कि वह यहोशू के साथ प्रतिज्ञा के प्रदेश में लड़ने जाएगा, परन्तु बारम्बार उसने उसे शक्तिशाली और साहसी होने को कहा। यह इसलिए था क्योंकि लड़ना तो उसे ही था, और इसमें असली खतरा था। इसी तरीके से प्रभु उन्हें सिद्ध करता है जो प्रतिज्ञाओं के योग्य हैं।"

मैं ने वृद्ध उकाब को देखा, और पहली बार मैं ने उसके फटे और टूटे हुए पंखों के बीच निशानों को देखा। परन्तु निशान भद्दे नहीं थे, परन्तु उन पर सोना लगा हुआ था, जो किसी प्रकार से धातू नहीं था, बल्कि माँस और पंख था। तब मैं देखा कि यह वही सोना था जो उकाब से निकलनेवाली महिमा प्रकट कर रहा था और उसकी उपस्थिति को विस्मयकारी बना रहा था।

"मैं ने इसे पहले क्यों नहीं देखा?" मैं ने पूछा।

"जब तक तुम ने उद्धार के खज़ानों की गहराई के महत्त्व को समझा न हो, तुम उस महिमा को देख नहीं सकते हो जो सुसमाचार के लिए दुख उठाने से आती है। एक बार जब तुम ने इसे देख लिया हो, तब तुम उन परीक्षाओं के लिए तैयार हो जो तुम्हारे जीवन में सबसे ऊँचे स्तर की आत्मिक परिपक्वता को लाएँगे। ये निशान वे महिमा हैं जो सदा बने रहेंगे। इसी कारण से जो घाव हमारे प्रभु ने पाए थे स्वर्ग में भी उसके संग हैं। उसके घावों को अभी भी देख सकते हो, और उन घावों को भी देख सकते हो जो उसके चुने हुओं ने उसके लिए पाए हैं। ये स्वर्ग में आदर के पदक हैं। वे सब जो उन्हें पाते हैं उनके जीवनों से अधिक परमेश्वर से और उसकी सच्चाइयों से प्रेम करते हैं। ये वही हैं जो मेम्ने के पीछे पीछे जहाँ कहीं वह जाता है चलते हैं, और सच्चाई, धार्मिकता और

मनुष्यों के उद्धार के लिए दुख उठाने के लिए तैयार रहते हैं। उसके लोगों के सच्चे अगुवे, जो सच्चा आत्मिक अधिकार उठाते हैं, इस प्रकार उनकी भक्ति को पहले प्रमाणित करते हैं।"

मैं ने स्वर्गदूतों के समूह के अगुवे को देखा जो मेरे पीछे चल रहे थे। मैं ने इससे पहले एक स्वर्गदूत में गहरी भावनाएँ नहीं देखी थीं, परन्तु ये शब्द निस्संदेह उसे और बाकियों को भी बहुत भावुक बना रहे थे। मैं ने सचमुच सोचा कि वे रो पड़ेंगे। तब अगुवा बोलाः

"हम ने सृष्टि से लेकर अनेक चमत्कार देखे हैं। मनुष्यों का प्रभु के लिए, और उनके साथी मनुष्यों के लिए स्वैच्छिक दुख उठाना, सबसे बड़ा चमत्कार है। हम भी कभी-कभार युद्ध करते हैं, और दुख भी उठाते हैं, परन्तु हम ऐसी ज्योति और महिमा में रहते हैं जहाँ ऐसा करना बहुत सरल होता है। जब पुरुष और स्त्रियाँ जो ऐसे अन्धकार और दुष्टता में रहते हैं जहाँ कितना कम प्रोत्साहन है, जहाँ महिमा देख नहीं सकते बल्कि केवल उसमें आशा रखते हैं, उस आशा के लिए दुख उठाते हैं जिसमें वे केवल अपने हृदय में धुँधला ही देख पाते हैं, जिस के कारण बड़े से बड़े स्वर्गदूत का घुटना आदर में झुक जाता है और वे खुशी से उद्धार पानेवालों की सेवा करते हैं। पहले तो हम समझ नहीं पाए थे कि क्यों पिता ने चाहा है कि मनुष्य विश्वास द्वारा जीवित रहेंगे, जहाँ वे स्वर्गीय क्षेत्र की और वास्तविकताओं और महिमाओं को देख नहीं पाएँगे, और इतना विरोध सहन करेंगे। परन्तु अब हम समझते हैं कि इन दुखों के द्वारा उसके अपने घराने के सदस्यों के रूप में महान अधिकार पाने की उनकी योग्यता सिद्ध होती है। अब विश्वास का यह जीवन स्वर्ग में सबसे बड़ा चमत्कार है। जो इस परीक्षा में सफल होते हैं मेम्ने के साथ उसके सिंहासन पर बैठने के योग्य होते हैं, क्योंकि उसने उन्हें योग्य बनाया है, और उन्होंने उनके प्रेम को सिद्ध किया है।"

तब स्वर्गदूत ने टोका, "साहस विश्वास का प्रदर्शन है। प्रभु ने कभी भी प्रतिज्ञा नहीं की कि उसका मार्ग सरल होगा, परन्तु उसने हमें आश्वासन दिया है कि लाभकर होगा। उनके साहस के कारण जिन्होंने उद्धार के स्तर से लड़ाई लड़ी थी स्वर्ग के दूतों ने जो परमेश्वर ने पतित मनुष्यों में किया है सम्मान किया है। उन्होंने भयानक आक्रमण में उनके घाव पाए थे, वे केवल अन्धकार और सत्य की प्रतीयमान हार ही देख पा रहे थे, वैसे ही जैसे हमारे प्रभु के साथ क्रूस पर हुआ था। फिर भी, उन्होंने हार नहीं मानी और वे पीछे नहीं हटे।

मुझे दोबारा दुख हुआ कि मैं ने उद्धार के स्तर पर रहकर उन दूसरे साहसी मनुष्यों के साथ युद्ध नहीं किया था। दोबारा, मेरे विचारों को समझते हुए, उकाब ने उन्हें टोका।

"पर्वत पर चढ़ते हुए भी तुम ने विश्वास, और बुद्धि प्रकट की थी, जिससे भी अधिकार प्राप्त होता है। तुम्हारे विश्वास ने अनेक लोगों को स्वतंत्र किया कि वे उद्धार के लिए पर्वत पर आ सकते। तुम ने भी कुछ घाव पाए थे, परन्तु राज्य में तुम्हारा अधिकार दुखों के बदले विश्वास के कार्यों से आया है। क्योंकि तुम थोड़ी चीजों में विश्वासयोग्य रहे हो, तुम्हें वापस जाकर दुख उठाने का सम्मान प्राप्त होगा, कि तुम्हें कहीं अधिक पर शासक बनाया जाए। परन्तु स्मरण रखो कि हम सब चाहे बनाते हों या दुख उठाते हों उन्हीं उद्देश्यों के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। यदि तुम ऊपर जाते हो तब, स्वर्ग के बड़े आनन्द के लिए, इस कमरे में कहीं अधिक मनुष्य होंगे। तुम्हें अभी चढ़ने, और बनाने के लिए बुलाया गया है, परन्तु यदि तुम इसमें विश्वासयोग्य रहोगे तब बाद में तुम्हें दुख उठाने का भी सम्मान मिलेगा।"

तब मैं मुड़ा और अन्धकारपूर्ण और पूर्वाभास वाले द्वार की ओर देखा जिस पर लिखा थाः "मसीह का न्यायासन"। जैसे हर बार जब मैं उद्धार के खज़ानों को देखता था मेरे प्राण में उत्साह और शान्ति भर जाती थी, उसी प्रकार जब मैं ने इस द्वार को देखा तो डर और असुरक्षा ने मुझे पकड़ लिया। अब ऐसा लगने लगा था कि मेरे भीतर का सबकुछ चाहता था कि मैं इसी कमरे में रहूँ, और मुझ में कुछ भी उस द्वार में जाना नहीं चाहता था। दोबारा उकाब ने मेरे विचारों का उत्तर दिया।

"इससे पहले तुम किसी महान सच्चाई में द्वार से प्रवेश करो तुम इन्हीं भावनाओं को अनुभव करोगे। तुम ने तब भी अनुभव किया था जब उद्धार के खज़ानों वाले इस कमरे में प्रवेश किया था। ये डर पतन का परिणाम हैं। वे भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल हैं। उस पेड़ के ज्ञान ने हम सब को असुरक्षित और आत्म-केन्द्रित बना दिया था। भले और बुरे का ज्ञान ने परमेश्वर के ज्ञान को भयानक बना दिया है, जबकि असल में परमेश्वर का हर सत्य हमें बड़ी शान्ति और सुरक्षा में ले जाता है। परमेश्वर के न्यायों को भी चाहना चाहिए, क्योंकि उसके सब मार्ग सिद्ध हैं।"

अब तक मैं ने काफी अनुभव कर लिया था कि जानता था कि जो सही लगता है अकसर सबसे कम फलवन्त मार्ग, और अकसर असफलता का मार्ग होता है। मेरे सारे सफर में सबसे बड़े खतरे का मार्ग सबसे बड़े इनाम में ले गया था। फिर भी, हर बार ऐसा लगता था कि कुछ अधिक दाँव पर लगा हुआ है। इसलिए, ऊपर जाने का फैसला हर बार अधिक कठिन होता गया था। मुझे उनके लिए सहानुभूति होने लगी थी जो उनके सफर में कहीं कहीं रुक जाते थे, और आगे बढ़ने से इन्कार करते थे, हालाँकि मैं भली भाँति जानता था कि यह एक भूल है। सच्ची सुरक्षा उन क्षेत्रों में आगे बढ़ते रहने से ही आती थी जिनमें अधिक विश्वास लगता था, जो था प्रभु पर अधिक निर्भरता।

"हाँ, आत्मा के ऊँचे क्षेत्रों में चलने के लिए अधिक विश्वास लगता है", उकाब ने कहा। "प्रभु ने हमें उसके राज्य का नक्शा दिया था, जब उसने कहा था: 'जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।' केवल ये शब्द ही आपको पर्वत पर चढ़ने के मार्ग पर बनाए रखेंगे, और आनेवाले महान युद्ध में विजय दिलाएँगे। वे मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होने में भी आपकी सहायता करेंगे।"

मैं जानता था कि अब मेरे जाने का समय था। मैं ने निश्चय किया कि मैं इस कमरे की महिमा को सदा स्मरण रखूँगा जिसमें उद्धार के खज़ाने भरे थे, परन्तु मैं यह भी जानता था कि मुझे उनसे आगे जाना है। मुझे जाना था। मैं मुड़ा और अपनी सारे साहस के साथ, मैं ने मसीह के न्यायासन का द्वार खोला और भीतर कदम रखा। जिन स्वर्गदूतों के समूह को मुझे दिया गया था उन्होंने द्वार के चारों उनके स्थान ले लिए, परन्तु प्रवेश नहीं किया।

"क्या हुआ? क्या आप नहीं आ रहे?" मैं ने जानना चाहा।

"जहाँ तुम अभी जा रहे हो तुम्हें अकेले जाना होगा। हम दूसरी ओर तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।"

बिना उत्तर दिए, मैं मुड़ा और इससे पहले मैं अपना इरादा बदलता मैं चलने लगा। किसी प्रकार मैं जानता था कि यह सही है कि मैं अपनी सुरक्षा स्वर्गदूतों के समूह में न डालूँ। जैसे मैं अंधेरे में चलने लगा मैं ने उकाब के अन्तिम शब्द सुने, "इसके बाद तुम्हारा भरोसा किसी में भी नहीं, अपने में भी नहीं होगा, परन्तु केवल प्रभु में ही होगा।"

मैं एक सबसे डरावने अन्धकार में था जो मैं ने कभी अनुभव किया था। हर कदम डर के साथ एक भयानक युद्ध बन गया। शीघ्र मैं सोचने लगा कि मैं ने नरक में कदम रख दिया है। अन्त में मैं ने पीछे हटना चाहा, परन्तु जब मैं पीछे जाने को मुड़ा तो मैं कुछ नहीं देख सका। द्वार बंद हो गया था और मैं देख भी नहीं पा रहा था कि यह कहाँ है। मुझे लगने लगा कि सबकुछ जो मेरे साथ घटा था, और सबकुछ जो मुझे उकाबों और स्वर्गदूतों ने कहा था, मुझे इस नरक में फँसाने के लिए छल था। मेरे साथ धोखा हुआ है! मैं ने प्रभु को पुकारा कि वह मुझे क्षमा करे, और मेरी सहायता करे। तुरन्त मैं उसे क्रूस पर देखने लगा, वैसे ही जैसे मैं ने उसे तब देखा था जब मैं ने लाल पत्थर पर हाथ रखा था। एक बार फिर, मैं ने उसके प्राण का अन्धकार देखा जब वह अकेला खड़ा संसार के पाप उठाए हुए था। उस कमरे में यह देखने के लिए एक भयानक अन्धकार था, परन्तु अब यहाँ प्रकाश था। मैं ने निश्चय किया कि मैं, उस पर अपना मन लगा कर, चलता रहूँगा। जैसे मैं ने किया, हर कदम के साथ मेरे हृदय में शान्ति बढ़ने लगी, और यह कुछ मिनट पहले जैसा था उससे सरल होने लगा।

शीघ्र ही मैं अन्धकार को भूल गया था, और मैं ठण्ड भी महसूस नहीं कर रहा था। फिर मैं एक धीमी रोशनी देखने लगा। धीमे-धीमे यह एक यशस्वी रोशनी बन गई। फिर यह इतनी अदभुत हो गई कि मुझे लगा कि मैं स्वर्ग में प्रवेश कर रहा हूँ। हर कदम के साथ महिमा बढ़ रही थी। मैं ने सोचा कि ऐसी अदभुच चीज का प्रवेश इतना अन्धकारमय और पूर्वाभास कैसे हो सकता है। अब मैं हर कदम का आनन्द लेने लगा था।

फिर मार्ग एक हॉल में खुला जो इतना विशाल था कि मुझे लगा कि पृथ्वी भी इसे समा नहीं सकेगी। इसकी सुन्दरता की कल्पना किसी भी मानवीय शिल्पकला के संदर्भ से नहीं की जा सकती है। इसे देखकर मुझे जो आश्चर्य हुआ अभी तक अनुभव की गई चीजों से अधिक था, अर्थात् बाग, या उद्धार के खज़ानों से भरे कमरों से भी अधिक। इस समय, मैं आनन्द और सुन्दरता से उतना ही अभिभूत हो गया था जिसना मैं कुछ मिनट पहले अन्धकार और डर से हुआ था। तब मुझे समझ आया कि हर बार जब मैं ने बहुत पीड़ा या प्राण का अन्धकार अनुभव किया था, उसके बाद कहीं अधिक महिमा और शान्ति का प्रकटीकरण हुआ था।

दूसरी छोर पर महिमा का स्रोत था जो कमरे की हर चीज से निकल रही थी। मैं जानता था कि यह स्वयं प्रभु है और हालाँकि मैं ने अब तक उसे अनेक बार देखा था, फिर भी जब मैं उसकी ओर बढ़ने लगा मैं थोड़ा भय महसूस करने लगा। परन्तु, यह भय एक पवित्र भय था जिससे महान आनन्द और शान्ति जो मैं अनुभव कर रहा था बढ़ ही गए थे। मैं जानता था कि मसीह का न्यायासन उस किसी भी सुरक्षा से जो मैं ने अनुभव की थी सुरक्षा का स्रोत था, परन्तु उसी के साथ यह बड़े परन्तु अधिक शुद्ध भय का स्रोत भी था। मैं ने ध्यान नहीं दिया था कि सिंहासन का फासला कितना बड़ा था। यहाँ पर चलना भी इतना अदभुत अनुभव था कि मुझे परवाह नहीं थी यदि इसमें एक हज़ार वर्ष भी लग जाते। पृथ्वी की भाषा में, मुझे एक काफी लम्बा समय लगा था। एक भाव से मुझे लगा कि यह दिन थे, और दूसरे भाव से वर्ष थे। परन्तु किसी प्रकार पृथ्वी के समय की यहाँ कोई संबद्धता नहीं थी।

मेरी आँखें प्रभु की महिमा पर इस प्रकार टिकी हुई थीं कि एक लम्बे समय तक चलने के बाद मैं ने देखा कि मैं लोगों की भीड़ के पास से गुज़र रहा हूँ जो मेरी बायीं ओर पद के अनुसार खड़े थे (मेरी दायीं ओर भी उतने ही थे, परन्तु वे इतनी दूर थे कि जब तक मैं सिंहासन के पास नहीं पहुँचा उन्हें देख नहीं सका था)। जैसे मैं ने उनको देखा मुझे रुकना पड़ा। वे इतने राजसी चमक रहे थे कि मैं ने ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था। उनका रूप मोहक था। ऐसी शान्ति और विश्वास एक मनुष्य के चेहरे पर कभी नहीं पाया गया था। हर एक पृथ्वी की तुलना में कहीं अधिक सुन्दर था। जैसे मैं उनकी ओर मुड़ा जो मेरे निकट थे वे स्वागत में इस प्रकार झुके जैसे वे मुझे जानते हों।

"आप मुझे कैसे जानते हो?" उनसे एक प्रश्न पूछने के अपने साहस पर चकित होते हुए, मैं ने पूछा।

"तुम एक सन्त हो जो अन्तिम युद्ध में लड़ रहे हो", मेरे निकट के व्यक्ति ने उत्तर दिया। "यहाँ सब तुम्हें जानते हैं, और उन्हें भी जानते हैं जो इस समय पृथ्वी पर लड़ रहे हैं। हम वे सन्त हैं जिन्होंने तुम से पहले की पीढ़ियों में प्रभु की सेवा की है। हम गवाहों का वह महान बादल हैं जिन्हें अन्तिम युद्ध देखने का अधिकार दिया गया है। हम तुम सब को जानते हैं, और हम वह सबकुछ भी देखते हैं जो तुम करते हो।"

आश्चर्य की बात थी, मैं ने एक को पहचाना जिसे मैं पृथ्वी पर जानता था। वह एक विश्वासयोग्य विश्वासी था, परन्तु मुझे लगता नहीं था उसने कुछ महत्त्व का काम किया था। वह पृथ्वी पर शारीरिक रूप से इतना अनाकर्षक था जिससे वह शर्मीला था। यहाँ उसका नाक-नक्शा वैसा ही था, परन्तु वह पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति से जिसे मैं जानता था अधिक सुन्दर था। वह मेरे पास एक आश्वासन और प्रतिष्ठा के साथ आया जिसे मैं ने पहले उसमें, या किसी दूसरे मनुष्य में नहीं देखा था।

"स्वर्ग इतना अधिक बड़ा है जिसकी कल्पना हम पृथ्वी पर नहीं कर सकते हैं", उसने कहा। "यह कमरा तो महिमा के क्षेत्रों का आरम्भ ही है जो हमारी समझने की योग्यता से परे था। यह भी सत्य है कि दूसरी मृत्यु जैसा हम समझते हैं उससे कहीं अधिक भयानक है। न स्वर्ग और न नरक वैसे हैं जैसा हम ने सोचा था वे हैं। यदि मुझे पृथ्वी पर पता होता जो मैं यहाँ जानता हूँ तब मैं वैसा जीवन नहीं जीता जैसा मैं ने जीया है। तुम बहुत धन्य हो कि मरने से पहले यहाँ आए हो", मेरे वस्त्र को देखते हुए, उसने कहा।

तब मैं ने अपनी ओर देखा मैं अभी भी दीनता का पुराना वस्त्र पहने हुए था, और हथियार अभी भी उसके नीचे था। मैं उनके सामने जो इतने यशस्वी थे, खड़ा घृणित और असभ्य महसूस कर रहा था। मैं सोचने लगा कि यदि मैं प्रभु के सामने ऐसे गया तो मैं एक गम्भीर समस्या में पड़ूँगा। उकाबों के समान, मेरे पुराने परिचित ने मेरे विचारों को समझ लिया, और उसने उत्तर दिया।

"जो यहाँ इस वस्त्र को पहने आते हैं उन्हें कुछ भी डरने की आवश्यकता नहीं है। यह वस्त्र सम्मान का सबसे बड़ा पद है, और इसी कारण से जब तुम गुज़र रहे थे वे तुम्हारे सामने झुके थे।"

"मैं ने तो ध्यान नहीं दिया कि कोई मेरे सामने झुक रहा था", मैं ने कुछ असम्बद्ध होकर, उत्तर दिया। "असल में, मैं ने केवल अभी ही किसी को देखा है।"

"यह अनुपयुक्त नहीं है", उसने आगे कहा। "यहाँ हम एक दूसरे को जो सम्मान देना चाहिए देते हैं। यहाँ स्वर्गदूत भी हमारी सेवा करते हैं, परन्तु आराधना केवल हमारे परमेश्वर और उसके मसीह की होती है! किसी का प्रेम में सम्मान करना, और उनकी आराधना करने में स्पष्ट अन्तर है। यदि हम ने इसे पृथ्वी पर समझा होता तो हम ने दूसरों के साथ बहुत भिन्न व्यवहार किया होता। यहाँ, उसकी महिमा के प्रकाश में, हम एक दूसरे को पूरी तरह समझ सकते हैं, और इसलिए एक दूसरे के साथ उचित रूप से सम्बंध बना सकते हैं।"

मैं अभी भी लज्जा महसूस कर रहा था। मुझे अपने आप को उनके सामने झुकने से रोकना पड़ा था, और साथ में मैं अपने आप को छिपाना चाहता था क्योंकि मैं नीचा महसूस कर रहा था। तब मैं शोक करने लगा कि मेरे विचार यहाँ भी उतने ही मूर्खतापूर्ण थे जितने वे पृथ्वी पर थे, और यहाँ सब उन्हें जान सकते थे! मैं उनके सामने जो कितने विस्मयकारी और शुद्ध थे कलंकित और मूर्ख लग रहा था। दोबारा मेरे पुराने परिचित ने इन विचारों का उत्तर दिया।

"अब हमारे शरीर अविनाशी हैं, परन्तु तुम्हारा नहीं है। हमारे मनों में अब पाप के कारण रुकावट नहीं होती। इसलिए जो सबसे महान साँसारिक मन समझ सकता है हम उसका कई गुणा समझ सकने के योग्य हैं, और हम अपनी समझने की योग्यता में बढ़ने के लिए अनन्तकाल लगा सकेंगे। यह इसलिए है जिससे हम पिता को जान सकते, और उसकी सृष्टि की महिमा समझ सकते हैं। पृथ्वी पर तुम उसे समझना आरम्भ भी नहीं कर सकते हैं जिसे यहाँ छोटे से छोटा जानता है, और हम यहाँ के सबसे छोटे हैं।"

"आप सबसे छोटे कैसे हो सकते हो?" मैं ने अविश्वास से पूछा।

"यहाँ एक प्रकार का अभिजात-वर्ग है। हमारे पृथ्वी के जीवनों के इनाम अनन्त पद हैं जो हमारे पास अनन्तकाल तक रहेंगे। यह महान भीड़ वे हैं जिन्हें प्रभु ने "मूर्ख कुँवारियाँ" कहा था। हम प्रभु को जानते थे, और उद्धार के लिए उसके क्रूस पर विश्वास भी किया था, परन्तु हम ने असल में उसके लिए नहीं जीया, अपने लिए जीया। हम ने अपने पात्र पवित्र आत्मा के तेल से भर कर नहीं रखे थे। हमारे पास अनन्त जीवन तो था, परन्तु हम ने पृथ्वी पर अपने जीवन गँवा दिए थे।"

मैं इस बात से असल में चकित हुआ था, परन्तु जानता भी था कि इस स्थान पर कोई भी झूठ नहीं बोल सकता है।

"मूर्ख कुँवारियाँ तो बाहरी अन्धकार में उनके दाँत पीस रही थीं", मैं विरोध किया।

"और हम ने किए भी। जब हम को समझ आई कि किस प्रकार हम ने अपने जीवन गँवा दिए थे तो जो शोक हम को हुआ पृथ्वी के किसी भी दुख से अधिक था। उस शोक का अन्धकार वे ही समझ सकते हैं जिन्होंने उसे अनुभव किया है। ऐसा अन्धकार कई गुणा अधिक हो जाता है जब यह उसकी महिमा के सामने प्रकट होता है जिसे हम ने निराश किया है। तुम इस समय स्वर्ग के सबसे छोटे पद वालों के बीच खड़े हो। परमेश्वर के महान उद्धार को जानना, और फिर अपने लिए जीते रहना, उससे बड़ी मूर्खता और कोई

नहीं है। यहाँ आना और फिर उसकी वास्तविकता के विषय में सीखना, पृथ्वी के मनुष्य के अनुभव से परे का दुख है। हम वे हैं जिन्होंने इस सबसे बड़ी मूर्खता के कारण इस बाहरी अन्धकार को सहा है।"

मुझे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। "परन्तु आप तो मेरी कल्पना से कहीं अधिक यशस्वी और आनन्द और शान्ति से भरे हुए हो, ऐसी कल्पना तो मैं ने स्वर्ग वालों के लिए भी नहीं की थी। मुझे तो आप में कोई पश्चाताप नहीं महसूस हो रहा है, और मैं जानता हूँ कि आप यहाँ झूठ नहीं बोल सकते हो। यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

मेरी आँखों में आँखें डालकर उसने जारी रखा, "प्रभु हम से जिस प्रेम से प्रेम करता है तुम्हारी समझ से अभी परे है। उसके न्यायासन के सामने हम ने अपने प्राण का सबसे महान अन्धकार और पश्चाताप अनुभव किया है जो किया जा सकता है। हालाँकि यहाँ हम समय को उस प्रकार नहीं मापते हैं जैसे तुम पृथ्वी पर मापते हो, फिर भी यह वैसे ही चलता है जैसे पृथ्वी पर मेरा जीवन चला था। मेरे सारे पाप और मूर्खताएँ जिन से मैं ने मन नहीं फिराया था मेरे सामने से, और इन सबके सामने से गुज़रे हैं। तुम इसका शोक तब तक नहीं समझ सकते जब तक इसे अनुभव नहीं किया हो। जब मैं प्रभु की महिमा के सामने खड़ा था, तब मुझे लगा कि मैं नरक की सबसे गहरी कालकोठरी में हूँ। जब तक मेरे जीवन का पूर्णतया निरीक्षण नहीं हो गया, वह दृढ़ बना रहा। जब मैं ने कहा कि मुझे दुख है और उसके क्रूस की दया की माँग की तब उसने मेरे आँसू पोछ दिए और अन्धकार निकाल दिया। जैसे मैं उसके सामने खड़ा हुआ, मैं कड़वाहट महसूस नहीं कर रहा था जिसे मैं जानता था, परन्तु याद है। केवल यहाँ ही तुम दर्द महसूस किए बिना चीजों को याद कर सकते हो। स्वर्ग के सबसे निचले स्थान का एक क्षण भी पृथ्वी के सबसे ऊँचे जीवन के हज़ार वर्षों से कहीं बड़ा है। अब मेरी मूर्खता के लिए मेरा शोक आनन्द में बदल गया है, और मैं जानता हूँ कि चाहे मैं स्वर्ग के सबसे निचले स्थान में भी रहूँ, मैं सदा आनन्दित रहूँगा।"

मैं दोबारा उद्धार के खज़ानों के विषय में सोचने लगा। किसी प्रकार मैं जानता था कि सबकुछ जो इस व्यक्ति ने बताया था उन खज़ानों द्वारा प्रकट हुआ था। हर कदम जो मैं ने पर्वत पर चढ़ते हुए और पर्वत में प्रवेश करते हुए लिया था, प्रकट करता था कि उसके मार्ग, मेरी समझ से अधिक भययोग्य और अधिक अदभुत थे।

मेरी ओर ताकते हुए, मेरे पुराने परिचित ने आगे कहा, "तुम यहाँ केवल समझ प्राप्त करने के लिए नहीं आए हो, बल्कि अनुभव पाने और परिवर्तित होने के लिए आए हो। अगला पद हमारे पद से कई गुणा बड़ा है। उसके बाद का हर स्तर पहले से कहीं बड़ा है। केवल इतना ही नहीं कि हर स्तर में अधिक यशस्वी आत्मिक देह है, बल्कि हर स्तर सिंहासन के निकट है जहाँ से सारी महिमा निकलती है।

फिर भी, मुझे अपनी असफलताओं का दुख नहीं है। मैं तो कुछ का भी हकदार नहीं हूँ। मैं यहाँ केवल अनुग्रह से हूँ, और मैं उसके लिए इतना कृतज्ञ हूँ जो मेरे पास है। वह प्रेम किए जाने के लिए कितना योग्य है। मैं स्वर्ग के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक अदभुत चीजें कर सकता हूँ, परन्तु मैं यहाँ रह कर उसकी महिमा निहारना चाहूँगा, चाहे मैं बाहरी किनारों पर ही क्यों न रहूँ।"

तब, अपनी आँखों में एक दूरवर्ती दृष्टि लिए, उसने आगे कहा, "स्वर्ग का हर व्यक्ति अब उसके महान रहस्य को खुलते देखने के लिए इस कमरे जमा है, और तुम लोगों को देखने के लिए भी जो अन्तिम युद्ध में लड़ेंगे।"

"क्या तुम उसे यहाँ से देख सकते हो?" मैं ने पूछा। "मैं उसकी महिमा दूर से देख सकता हूँ, परन्तु उसे देख नहीं सकता।"

"मैं तुम से कई गुणा बेहतर देख सकता हूँ", उसने उत्तर दिया। "और हाँ, मैं उसे और जो कुछ वह कर रहा है यहाँ से देख सकता हूँ। मैं उसे सुन भी सकता हूँ। मैं पृथ्वी भी देख सकता हूँ। उसने हम सबको यह सामर्थ्य दिया है। हम वह गवाहों का महान बादल हैं जो आप सबको देख रहे हैं", उसने दोहराया।

उसने झुक कर नमस्कार किया और अपने पद में लौट गया। मैं दोबारा चलने लगा, और उस सब को समझने का प्रयत्न कर रहा था जो उसने मुझ से कहा था। जैसे मैं ने उस बड़ी भीड़ को देखा जिसे उसने मूर्ख कुँवारियाँ कहा था, जिन्होंने पृथ्वी पर उनके जीवन आत्मिक रूप से सो दिए थे, मैं जानता था कि यदि उनमें से कोई भी पृथ्वी पर अब हुआ तो उन्हें ईश्वर जानकर उनकी उपासना की जाएगी। फिर भी, वे उनमें से सबसे छोटे थे जो यहाँ थे!

तब मैं अपने जीवन के उन समयों के विषय में सोचने लगा जहाँ मैं ने अपना जीवन गँवाया था। यह एक ऐसा जबरदस्त विचार था कि मैं रुक गया। तब मेरे जीवन के अंश मेरे सामने से गुज़रने लगे। मैं इस एक पाप के लिए बहुत शोक करने लगा। मैं भी एक बहुत बड़ा मूर्ख था! हो सकता था मैं ने अपनी मशाल में दूसरों से अधिक तेल रखा हो, परन्तु अब मैं जानता कि मैं कितना मूर्ख था कि जो मुझे करना था उसकी तुलना मैं जो दूसरे कर रहे थे उससे करता था। मैं भी एक मूर्ख कुँवारी था!

ठीक उसी समय जब मुझे लगा कि मैं इस भयानक खोज के बोझ से गिर पडूँगा, एक पुरुष जिसे मैं जानता था और परमेश्वर के एक महान जन के रूप में सम्मान करता था मुझे स्थिर करने के लिए आगे आया। किसी प्रकार उसके स्पर्श ने मुझे होश में लाया। फिर उसने जोश के मेरा साथ स्वागत किया। यह एक व्यक्ति था जिसके द्वारा मैं चेला बनना चाहता था। मैं उससे मिला था, परन्तु हम सम्बंध नहीं बना सके थे। कई दूसरों के समान मैं ने भी सीखने के लिए निकट होने का प्रयत्न किया था, परन्तु मैं उसके लिए एक परेशानी था और उसने मुझे चले जाने को कहा था। कई वर्षों तक मैं इसके विषय में दोषी महसूस करता रहा था, और

सोचता था कि मेरे अपने चरित्र में किसी दोष के कारण मैं ने एक महान अवसर खो दिया था। हालाँकि मैं ने इसे अपने मन से निकाल दिया था, मैं अभी भी इस असफलता का बोझ उठाए हुए था। जब मैं ने उसे देखा यह सब बारह आ गया, और एक व्याकुल भावना मुझ पर छा गई। अब जबकि वह इतना राजसी लग रहा था कि मैं अपनी घटिया दशा से और भी घृणास्पद और लज्जित अनुभव करने लगा। मैं छिपना चाहता था परन्तु यहाँ मैं उससे बच नहीं सकता था। मैं चकित हुआ क्योंकि मेरे लिए उसका स्नेह इतना सच्चा था कि उसने मुझे निश्चिन्त कर दिया। हमारे बीच कोई भी रोक नहीं थी। असल में, उससे आ रहे प्रेम ने मेरी आत्मचेतना को मुझे से पूर्णतया दूर कर दिया।

"मैं ने इस मिलन के लिए उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा की है", उसने कहा।

"आप मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे?" मैं पूछा, "क्यों?"

"तुम कइयों में से एक हो जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मैं अपने न्याय तक समझा नहीं था कि तुम एक ऐसे थे जिसकी सहायता करने, वरन् चेला बनाने के लिए मुझे बुलाया गया था, परन्तु मैं ने तुम्हें अस्वीकार कर दिया था।"

"जनाब", मैं ने विरोध किया। "आपके द्वारा चेला बनना एक बड़े सम्मान की बात होती, और मैं उस समय के लिए कृतज्ञ हूँ जो आपके साथ बिताया था, परन्तु मैं घमण्डी था और अस्वीकरण के योग्य था। मैं जानता हूँ कि मेरे विद्रोह और अभिमान ने मुझे एक असली आत्मिक पिता पाने से रोके रखा है। यह आपकी भूल नहीं थी, परन्तु मेरी थी।"

"यह सही है कि तुम अभिमानी थे, परन्तु इस कारण से मैं तुम से नाराज नहीं हुआ था। मैं अपनी असुरक्षा के कारण, जिससे मैं अपने आप-पास के सब पर नियंत्रण रखना चाहता था, नाराज हुआ था। मैं इसलिए नाराज़ हुआ था क्योंकि तुम बिना संदेह प्रकट किए मेरी बातों को स्वीकार नहीं करते थे। तब मैं तुम में कुछ खोजने लगा जो गलत था जिससे मैं तुम्हें अस्वीकार करने का कारण दिखा सकता था। मैं सोचने लगा था कि यदि मैं ने तुम्हें नियंत्रण में नहीं रखा तो तुम एक दिन मुझे और मेरी सेवा को परेशानी में डालोगे। मैं अपनी सेवा को लोगों से जिनके लिए सेवा दी गई थी अधिक महत्त्व देता था, इसलिए मैं ने तुम्हें और तुम्हारे समान कई दूसरों को निकाल दिया था", उसने कहा।

"मुझे स्वीकार करना चाहिए कि कभी-कभी मैं सोचता था आप एक..." और मैं ने अपने आप को रोक लिया क्योंकि जो मैं कहने वाला था उससे व्याकुल हो गया।

"और तुम सही हो", उसने यह एक असलीयत के साथ कहा जो पृथ्वी पर अज्ञात है। "मुझे एक आत्मिक पिता होने का अनुग्रह दिया गया था, परन्तु मैं एक खराब पिता था। सब बच्चे विद्रोही होते हैं। वे सब आत्म-केन्द्रित होते हैं, और सोचते हैं कि संसार उनके चारों ओर घूमता है। इसी कारण से उनका पालन-पोषण करने के लिए माता-पिता की आवश्यकता होती है। लगभग हर बच्चा कभी-कभार उसके माता-पिता के नाम को बदनाम करेगा, परन्तु तब भी वह परिवार का अंश होता है। मैं ने परमेश्वर के कई बच्चों को निकाल दिया था जिन्हें सुरक्षित परिपक्वता तक ले जाने का भार परमेश्वर ने मुझे सौंपा था। मैं ने उनको भी निराश किया जो मेरे साथ रहे थे। उन में से अधिकाँश को भयानक और अनावश्यक चोटों और असफलताओं को सहना पड़ा था जिनसे बचने के लिए मैं उनकी सहायता कर सकता था। उन में से कई अब शत्रु के कैदी हैं। मैं ने एक बड़ी संस्था बनाई, और कलीसिया में मेरा बहुत प्रभाव था, परन्तु सबसे बड़े वरदान जो प्रभु ने मुझे सौंपे थे वे लोग थे जिन्हें मेरे पास चेला बनाने के लिए भेजा गया था, जिनमें से कइयों को मैं ने अस्वीकार कर दिया था। यदि मैं इतना आत्म-केन्द्रित और अपनी प्रतिष्ठा के विषय में इतना चिन्तित नहीं होता तो मैं यहाँ राजा होता। मुझे एक ऊँचे सिंहासन पर बैठने के लिए बुलाया गया था। सबकुछ जो तेरा है और जो तुम प्राप्त करोगे मेरे स्वर्गीय खाते में भी होता। बदले में, जिन चीजों को मैं ने अपना ध्यान दिया था उसमें से अधिकाँश का बहुत कम असली अनन्त महत्त्व है।"

"आपने जो पूरा किया था विस्मयकारक था", मैं टोका।

"जो पृथ्वी पर अच्छा दिखता है यहाँ बहुत भिन्न दिखता है। जो बातें तुम्हें पृथ्वी पर राजा बनाएँगी अकसर यहाँ राजा होने में रुकावट डालेगी। जो चीजें तुम्हें यहाँ राजा बनाएँगी पृथ्वी पर दीन और महत्त्व की नहीं होंगी। मैं कुछ सबसे बड़ी परीक्षाओं और सबसे बड़े अवसरों में असफल रहा था जिनमें से एक तुम थे। क्या तुम मुझे क्षमा करोगे?"

"अवश्य", मैं ने लज्जित होते हुए कहा। "परन्तु मुझे भी आपकी क्षमा की आवश्यकता है। मुझे अभी भी लगता है कि यह मेरा अनाड़ीपन और विद्रोह था जिससे आपको कठिनाई हुई थी। असल में, मैं ने भी कुछ को जो मेरे निकट होना चाहते थे उन्हीं कारणों से नहीं होने दिया है जिस कारण से आप नहीं चाहते थे मैं आपके पास रहूँ।"

"यह सच है कि तुम सिद्ध नहीं थे, और मैं ने तुम्हारी कुछ समस्याओं को सही पहचान लिया था, परन्तु यह कोई किसी को निकालने का कारण नहीं है", उसने उत्तर दिया। "प्रभु ने जब संसार की असफलताओं को देखा तो उसे अस्वीकार नहीं किया। उसने मुझे अस्वीकार नहीं किया जब उसने मेरे पाप को देखा। उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। यह सदा बड़ा ही होता है जो छोटे के लिए अपना प्राण देता है। मैं अधिक परिपक्व था। मेरे पास तुम से अधिक अधिकार था, परन्तु मैं दृष्टान्त की एक भेड़ के समान बन गया था; मैं तुम्हें और दूसरों को जिन्हें उसने मेरे पास भेजा था अस्वीकार करके प्रभु को अस्वीकार किया था।"

जैसे वह बोल कर रहा था, उसके शब्द मुझे गहराई से प्रभावित कर रहे थे। मैं भी उस सब का दोषी था जिसका उल्लेख उसने किया था। कई जवान पुरुष और स्त्रियाँ जिन्हें मैं ने यह सोचकर किनारे कर दिया था कि वे मेरे समय के लिए महत्त्व के नहीं हैं मेरे मन में आने लगे। मैं कितना लौटकर उन्हें इकट्ठा करना चाहता था! जो शोक मैं इस समय अनुभव करने लगा उससे बुरा था जो मैं ने अपने समय गँवाने के विषय में किया था। मैं ने लोगों को व्यर्थ गँवाया था! अब उन में से कई शत्रु के कैदी थे और पर्वत के युद्ध के दौरान घायल और पकड़े गए थे। यह सारा युद्ध लोगों के लिए था, और फिर भी लोगों को अकसर सबसे कम महत्त्व का समझा जाता था। हम सच्चाई के लिए अधिक और लोगों के लिए कम लड़ते थे जिनके लिए सच्चाई दी गई थी। हम सेवकाइयों के लिए लड़ते थे और उन में के लोगों को रौंद कर निकल जाते थे।

"और कई लोग सोचते हैं कि मैं एक आत्मिक अगुवा हूँ! मैं सच में सबसे छोटा सन्त हूँ", मैं जोर से सोच रहा था।

"मैं समझता हूँ तुम्हें कैसा लग रहा है", एक दूसरे व्यक्ति ने कहा। मैं ने उसे पहचान लिया क्योंकि मैं उसे सब समय का सबसे महान मसीही अगुवा मानता था। "प्रेरित पौलुस ने उसके जीवन के अन्त के निकट कहा कि वह सन्तों में से सबसे छोटा है। फिर, उसकी मृत्यु के ठीक पहले, उसने अपने आपको 'सबसे बड़ा पापी' भी कहा। यदि उसने इसे पृथ्वी पर नहीं सीखा होता तो वह भी स्वर्ग में सबसे छोटा सन्त बनने के खतरे में होता। क्योंकि उसने यह पृथ्वी पर सीख लिया था वह अब प्रभु के सबसे निकट वालों में से एक है, और सारे अनन्तकाल तक एक सबसे बड़े पदवाला होगा।"

इस व्यक्ति को मूर्ख कुंवारियों के संग देखना मेरे लिए अभी तक का सबसे बड़ा आश्चर्य था। "मैं विश्वास नहीं कर सकता हूँ कि आप भी एक मूर्ख हो जिसने पृथ्वी पर अपना जीवन सो कर निकाल दिया था। आप यहाँ क्यों हैं ?"

"मैं यहाँ हूँ क्योंकि मैं ने जिसे हमारे उद्धारकर्त्ता का यशस्वी सुसमाचार सौंपा गया था एक सबसे गम्भीर भूल की थी। ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने अपने आपको कम नहीं समझने से सबसे महान प्रेरित से सबसे बड़ा पापी होने में प्रगति की थी, मैं ने विपरीत मार्ग लिया। मैं ने यह जानते हुए आरम्भ किया कि मैं सबसे बड़ा पापी हूँ जिसने अनुग्रह पाया है, परन्तु यह सोचते हुए समाप्त किया कि मैं एक सबसे बड़ा प्रेरित हूँ। फिर मैं अपने महान अभिमान के कारण, अपने इस मित्र के समान असुरक्षा के कारण नहीं, उन सब पर आक्रमण करने लगा जो हर चीज मेरे समान नहीं देखते थे। जो मेरे पीछे चलते थे उनसे मैं उनके बुलावे छीन लेता था, उनके व्यक्तित्व को भी छीन लेता था, और सब को मेरे समान बनने पर विवश करता था। मेरे आप-पास कोई भी वह नहीं हो सकता था। कोई भी मुझे प्रश्न करने का साहस नहीं कर सकता था क्योंकि मैं उसकी बुकनी बना देता था। मैं सोचता था कि दूसरों को छोटा करके मैं अपने को बड़ा कर रहा था। मैं सोचता था कि मुझे सब के लिए पवित्र आत्मा होना चाहिए। बाहर से मेरी सेवा एक बराबर चल रही मशीन के समान गलती थी जहाँ सब एकता में और सम्पूर्ण व्यवस्था में थे, परन्तु यह एक नज़रबन्दी-शिविर की व्यवस्था थी। मैं ने प्रभु के बच्चों को लेकर उन्हें उसके स्वरूप में बनाने के बदले अपने स्वरूप में स्वचालित यन्त्र बना दिया था। अन्त में मैं प्रभु की सेवा भी नहीं कर रहा था परन्तु उस मूर्ति की कर रहा था जिसे मैं ने अपने लिए बनाया था। अपने जीवन के अन्त तक मैं सच्चे सुसमाचार का शत्रु बन गया था, कम से कम व्यवहार में तो बन गया था, चाहे मेरी शिक्षाएँ और लेख सुस्पष्ट बाइबल की लगती थीं।"

इस व्यक्ति से यह सुनकर मुझे कितना विस्मयकारी लग रहा था। मैं सोचने लगा कि क्या यहाँ मेरी हर मुलाकात पहली मुलाकात से बड़ा धक्का देने के लिए होगी।

"यदि यह सत्य है कि आप सुसमाचार के शत्रु बने थे, तो कैसे सम्भव है कि आप यहाँ हो ?" मैं ने प्रश्न किया।

"परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं ने अपने उद्धार के लिए क्रूस पर विश्वास किया था, हालाँकि मैं ने दूसरे लोगों को इससे दूर रखा था और उन्हें प्रभु के पास ले जाने के बदले अपनी ओर खींचा था। फिर भी, जब हम अविश्वासयोग्य होते हैं धन्य उद्धारकर्त्ता विश्वासयोग्य रहता है। यह भी उसके अनुग्रह के कारण ही था कि उसने मुझे समय से पहले पृथ्वी पर से उठा लिया, ताकि जो मेरे अधीन थे उसे पाते और जानते।"

मैं यह सोचकर और अधिक चकित नहीं हो सकता था कि यह बात इस व्यक्ति के विषय में सच थी। इतिहास ने हमें उसकी एक भिन्न तस्वीर दी थी। मेरे मन में चल रही बातों को पढ़कर, उसने आगे कहा:

"परमेश्वर के पास पृथ्वी से भिन्न इतिहास की पुस्तकें हैं। तुम्हें इसकी एक झलक मिली है, परन्तु तुम अभी तक समझ नहीं पाए हो कि वे कितनी भिन्न हैं। पृथ्वी के इतिहास टल जाएँगे, परन्तु जो पुस्तकें यहाँ रखी गई हैं सदा बनी रहेंगी। यदि तुम उससे जो स्वर्ग तुम्हारे विषय में लिख रहा है आनन्दित होते हो तो तुम सचमुच धन्य हो। मनुष्य शीशे में से धुँधला देखते हैं, इसलिए उनके इतिहास सदा धुँधले रहेंगे, और कभी-कभी पूरी तरह गलत होंगे।"

"ऐसा कैसे था कि इतने सारे अगुवे आपका इतना सम्मान करते थे ?" मैं ने पूछा, क्योंकि मुझे अभी भी जो सुन रहा था स्वीकार करने में तकलीफ हो रही थी।

"बहुत ही कम मसीहियों में आत्माओं की परख का सच्चा वरदान होता है। इस वरदान के बिना सच्चाई का सही-सही पता लगाना असम्भव होता है। इस वरदान के होते हुए भी कठिन होता है। जब तक तुम यहाँ नहीं आए हो, और उघाड़े नहीं गए हो, तुम दूसरों

का न्याय, सकारात्मक या नकारात्मक, विकृत पक्षपातों के द्वारा करोगे। इसी कारण से हमें चेतावनी दी गई थी कि हम समय से पहले न्याय न करें। जब तक हम यहाँ नहीं आए हैं हम असल में पता नहीं लगा सकते हैं कि दूसरों के मन में क्या है, कि क्या वे भले काम या बुरे काम कर रहे हैं। बुरे से बुरे मनुष्यों में भी भले अभिप्राय होते हैं, और अच्छों से अच्छों में बुरे अभिप्राय होते हैं। केवल यहाँ ही लोग उनके कामों और उनके अभिप्रायों दोनों से परखे जाते हैं।"

"जब मैं पृथ्वी पर लौटूँगा तो क्या मैं इतिहास को सही-सही परख सकूँगा क्योंकि मैं यहाँ आया हुआ था?"

"तुम यहाँ हो क्योंकि तुम ने प्रभु से प्रार्थना की थी कि वह तुम्हारा कठोरता के साथ न्याय करे, बेरहमी के साथ तुम्हें सुधारे, ताकि तुम उसकी सेवा अधिक सिद्धता के साथ कर सको। यह एक सबसे बुद्धिमानी की विनती है जो तुम ने की है। बुद्धिमान अपना न्याय स्वयं करते हैं ताकि वे परखे न जाएँ। अधिक बुद्धिमान प्रभु के न्यायों की माँग करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे अपना न्याय अच्छी तरह नहीं कर सकते हैं। यहाँ आने के कारण तुम कहीं अधिक बुद्धि और विवेक लेकर जाओगे, परन्तु पृथ्वी पर कम से कम कुछ हद तुम धुँधला ही देख सकोगे। यहाँ का तुम्हारा अनुभव लोगों को बेहतर जानने में तुम्हारी सहायता करेगा, परन्तु जब तुम यहाँ पूरी तरह होगे तुम लोगों को पूरी तरह जान सकोगे। जब तुम यहाँ से जाओगे तो पाओगे कि तुम लोगों को कितना कम जानते हो, न कि तुम उन्हें कितनी अच्छी तरह जानते हो। यह बात मनुष्यों के इतिहास के सम्बंध में भी उतनी ही सत्य है। मुझे तुम से बात करने दी गई है क्योंकि मैं ने एक प्रकार से अपने लेखों के द्वारा तुम्हें चेला बनाया है, और मेरे विषय में सत्य जानने से तुम्हें सहायता मिलेगी", प्रसिद्ध सुधारक ने समाप्त किया।

तब एक स्त्री आगे आई जिसे मैं जानता नहीं था। उसकी सुन्दरता और मनोहरता विस्मयकारी थी, परन्तु वह किसी प्रकार से भी कामुक या सम्मोहक नहीं थी।

"मैं पृथ्वी पर इनकी पत्नी थी", वह कहने लगी। "जो तुम इनके विषय में जानते हो उसका अधिकाँश मुझ से आया है, इसलिए, जो मैं अब कहने वाली हूँ केवल उसके विषय में ही नहीं है, बल्कि हमारे विषय में है। तुम अपने प्राण को सुधारे बिना कलीसिया को सुधार सकते हो। तुम इतिहास की गति निर्धारित कर सकते हो, और फिर भी पिता की इच्छा पूरी न करो, या उसके पुत्र की महिमा न करो। यदि तुम मानवीय इतिहास बनाने में अपने आप को देते हो तो सम्भव है कर लोगे, परन्तु यह एक क्षणिक उपलब्धि होगी जो एक धूँए के लच्छे के समान लुप्त हो जाएगी।"

"परन्तु आपके पति के काम ने, या आपके काम ने, उसके बाद हर पीढ़ी को सदा के लिए प्रभावित किया था। यह कल्पना करना कठिन है कि उसके बिना संसार कितना अन्धकारपूर्ण हो सकता था", मैं ने विरोध किया।

"सच है। परन्तु तुम सारा संसार जीत सकते हो, परन्तु अपना प्राण ही खो दो। केवल तब ही यदि तुम अपने प्राण को शुद्ध रखते हो तो परमेश्वर के अनन्त उद्देश्यों के लिए संसार को प्रभावित कर सकते हो। मेरे पति ने अपना प्राण मेरे पास को दिया था, और वह इसे अपने जीवन के अन्त तक ही प्राप्त कर पाया था क्योंकि मुझे पृथ्वी से उठा लिया गया था ताकि वह प्राप्त कर सके। जो अधिकाँश उसने किया उसने मेरे लिए, न कि प्रभु के लिए किया। मैं ने उस पर दबाव डाला और उसे बहुत सा ज्ञान भी दिया जिसे वह सिखाता था। मैं ने उसे अपने अहम् के विस्तार के रूप में उपयोग किया, क्योंकि उस समय एक स्त्री होकर मैं आत्मिक अगुवे के रूप में पहचानी नहीं जा सकती थी। मैं ने उसके जीवन को अपने हाथ में ले लिया ताकि मैं अपना जीवन उसके द्वारा जी सकूँ। शीघ्र ही वह सबकुछ मेरे सामने खरा उतरने के लिए कर रहा था।"

"आप इनसे बहुत प्रेम करते होंगे", मैं ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"नहीं। मैं उससे बिलकुल भी प्रेम नहीं करता था। न ही वह मुझ से प्रेम करती थी। असल में, विवाह के कुछ वर्षों के बाद ही हम एक दूसरे को पसन्द भी नहीं करते थे। परन्तु हम दोनों को एक दूसरे की आवश्यकता थी, इसलिए हम ने इकट्ठे काम करने का एक तरीका खोज लिया था। हमारा विवाह प्रेम का नहीं, परन्तु बन्धन का जूआ था। जितने सफल हम होते गए, उतने दुखी भी हम होते गए, और उतना ही अधिक छल हम ने उन्हें मूर्ख बनाने में इस्तेमाल किया जो हमारे पीछे चल रहे थे। हम अपने जीवनों के अन्त तक खाली अभागे हो गए थे। जितना अधिक प्रभाव आप अपने आत्म-प्रदर्शन से प्राप्त करते हो, उतना अधिक प्रयास तुम्हें उस प्रभाव को बनाए रखने के लिए करना पड़ता है, और उतना अधिक अन्धकारपूर्ण और क्रूर तुम्हारा जीवन हो जाता है। राजा हम से डरते थे, और हम राजा से लेकर किसान तक सबसे डरते थे। हम किसी का भी भरोसा नहीं कर सकते थे क्योंकि हम आप ऐसे धोखे में जी रहे थे कि हम एक दूसरे का भी भरोसा नहीं करते थे। हम प्रेम और भरोसे का प्रचार करते थे क्योंकि हम चाहते थे कि सब हम से प्रेम और भरोसा करें, परन्तु हम गुप्त रूप से सबसे डरते और सबका तिरस्कार करते थे। यदि तुम बड़ी से बड़ी सच्चाइयों का प्रचार करते हो परन्तु स्वयं उन पर चलते नहीं हो, तब तो तुम सबसे बड़े पाखण्डी, और सबसे अधिक उत्पीड़ित मनुष्य हो।"

उनके शब्द मुझ पर हथोड़े के समान गिर रहे थे। मैं देख सकता था कि मेरा जीवन भी उसी दिशा की ओर जा रहा था। मैं भी मसीह को ऊँचा उठाने के बदले कितना अपने आप को बढ़ा रहा था। मैं देखने लगा कि मैं दूसरों की नज़रों में सिद्ध होने के लिए कितना कुछ कर रहा था, विशेषकर उनकी नज़रों में जो मुझे पसन्द नहीं करते थे, जो मुझे अस्वीकार करते थे, या जिनके साथ मैं

किसी प्रकार से प्रतिस्पर्द्धा महसूस करता था। मैं देखने लगा कि मेरा जीवन भी कितना एक प्रक्षेपित प्रतिमा के दिखावे पर बना हुआ था। परन्तु मैं यहाँ छिप नहीं सकता था। उसके गवाहों का महान बादल जानते थे कि मैं अपने प्रक्षेपित अभिप्रायों की बुराई के परे क्या हूँ।

मैं ने इस दम्पति को दोबारा देखा। वे अब कितने निष्कपट और कितने कुलीन थे कि उनके अभिप्रायों पर संदेह प्रकट करना असम्भव था।

वे उनके सबसे कुटिल पापों को मेरे लिए प्रकट कर रहे थे, और ऐसा करने में सच्ची खुशी अनुभव कर रहे थे।

"आपके इतिहास और आपके लेखों के द्वारा मुझ में आपका एक गलत विचार होगा, परन्तु अब मेरे मन में आपके लिए अधिक सम्मान है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस स्थान से मैं उस अखण्डता और स्वतन्त्रता को ले जा सकूँ जो अब आपके पास है। मैं अब अपनी प्रक्षेपित प्रतिमाओं के अनुसार जीते जीते थक गया हूँ। मैं उस स्वतन्त्रता की कितनी चाह रखता हूँ!" मैं ने विलाप किया, क्योंकि मैं इस मुलाकात की हर बात को स्मरण रखना चाहता था। तब प्रसिद्ध सुधारक ने एक अन्तिम उपदेश दिया:

"दूसरों को वह करना मत सिखाओ जो तुम स्वयं नहीं कर रहे हो। सुधार मात्र एक सिद्धान्त ही नहीं है। सच्चा सुधार केवल उद्धारकर्त्ता उनके साथ संयोग से आता है। जब तुम मसीह के साथ जूए में बंधे हो, और उन बोझों को उठाते हो जो वह तुम्हें देता है, तब वह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हारे लिए उन्हें उठाएगा। तुम उसका काम तब ही कर सकते हो जब तुम उसके साथ, न कि उसके लिए काम करते हो। केवल आत्मा ही उसे उत्पन्न कर सकता है जो आत्मा का है। यदि तुम उसके साथ जूए में बंधे हो तो तुम राजनीति या इतिहास के लिए कुछ नहीं करोगे। जो कुछ भी तुम राजनीतिक दबावों, या अवसरों के लिए करते हो, तुम्हारी सेवा का अन्त कर देगा। जो चीजें इतिहास बनाने के उद्देश्य से की जाती हैं, तुम्हारी उपलब्धियों को इतिहास तक ही सीमित रखेंगी, और तुम अनन्तकाल को प्रभावित करने में असफल रहोगे। यदि तुम वह स्वयं नहीं करते जिसका तुम दूसरों को प्रचार करते हो तो अपने आपको हमारे समान परमेश्वर के ऊँचे बुलावे के अयोग्य ठहराते हो।"

"मैं तो सोच भी नहीं सकता हूँ कि मैं एक ऊँचा बुलावे की खोज में हूँ", मैं ने टोका। "मैं तो इस स्थान में बैठने के योग्य भी नहीं हूँ जिसे आप स्वर्ग में सबसे छोटा स्थान कहते हो। मैं एक ऊँचे बुलावे की खोज कैसे कर सकता हूँ?"

"ऊँचा बुलावा उसके लिए पहुँच से परे नहीं है जिसे प्रभु ने बुलाया है। मैं तुम्हें बताता हूँ कि क्या चीज तुम्हें जीवन के पथ पर रखेगा: मसीहा से प्रेम करो और केवल उसकी महिमा खोजो। जो कुछ भी तुम अपने आप को ऊँचा करने के लिए करते हो एक दिन तुम्हें सबसे भयानक अपमान में ले जाएगा। जो कुछ भी तुम मसीहा के लिए प्रेम से करते हो, उसके नाम को महिमा लाने के लिए करते हो, उसके अनन्त राज्य की सीमाओं को बढ़ाएगा, और अन्त में तुम्हारे लिए एक अधिक ऊँचा स्थान भी लाएगा। उसके लिए जीओ जो यहाँ लिखा जाता है। जो पृथ्वी पर लिखा जाता है उसकी परवाह मत करो।"

तब दम्पति एक प्रसन्नचित आलिंगन के साथ विदा हो गए, परन्तु मैं तो कोई खुशी महसूस नहीं कर रहा था। जैसे वे चले जा रहे थे मैं अपने पाप से एक बार फिर अभिभूत होने लगा। वो समय मेरी आँखों के सामने से गुज़रने लगे जब अपनी अभिलाषाओं को पूरा करने, या खुद अच्छा दिखने के लिए, मैं ने लोगों को अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया था, या यीशु का नाम इस्तेमाल किया था। यहाँ इस स्थान में जहाँ मैं उसकी सामर्थ्य और महिमा को देख सकता था, जिसे मैं ने इस्तेमाल किया था, मेरे लिए खड़ा होना भी घृणित लग रहा था। मैं बहुत बुरी निराशा के बोझ से अपने मुँह के बल गिर पड़ा। इन लोगों और घटनाओं को मेरे सामने से गुज़रते देखते जैसे कि एक अनन्तकाल बीत गया हो, मैं ने महसूस किया कि सुधारक की पत्नी ने आकर मुझे मेरे पैरों पर खड़ा किया। मैं उसकी शुद्धता से अभिभूत हो गया, विशेषकर अब जबकि मैं इतना बुरा और भ्रष्ट महसूस कर रहा था। मुझ में उसकी आराधना करने की एक शक्तिशाली इच्छा आई क्योंकि वह इतनी शुद्ध जो थी।

"पुत्र की ओर फिरो", उसने जोरदार शब्दों के साथ कहा। मेरी, या इस समय किसी की भी आराधना करने की तुम्हारी इच्छा, अपने ऊपर से ध्यान हटाने, और जो तुम नहीं हो उसकी सेवा करके अपने को निदोर्ष ठहराने का एक प्रयास है। मैं अब शुद्ध हूँ क्योंकि मैं उसकी ओर फिरी थी। तुम्हें अपने हृदय की भ्रष्टता को देखना होगा, परन्तु तुम्हें अपने बारे में नहीं सोचना है या मरे हुए कामों के द्वारा अपने को निर्देष सिद्ध नहीं करना है, बल्कि उसकी ओर फिरना है।"

यह ऐसे सच्चे प्रेम में कहा गया था कि बुरा मान जाना असम्भव था। जब उसने देखा कि मैं समझ गया हूँ, उसने कहना जारी रखा:

"जो शुद्धता तुम ने मुझ में देखी है मेरे पति ने पहली बार देखी थी जब हम जवान थे। तब मैं अपने अभिप्रायों में अपेक्षाकृत शुद्ध थी, परन्तु मैं ने उसे अपनी गलत आराधना करने देने के द्वारा उसके प्रेम और अपनी शुद्धता को भ्रष्ट कर दिया। तुम उनकी आराधना करके जो तुम से अधिक शुद्ध हैं कभी भी शुद्ध नहीं हो सकते हो। तुम्हें उनसे परे उसे पाने के लिए जाना है जिसने उन्हें शुद्ध बनाया है, और केवल उसी में कोई पाप नहीं। जितनी अधिक लोगों ने हमारी प्रशंसा की, और जितनी अधिक हम ने उनकी प्रशंसाओं को स्वीकार किया, उतना अधिक हम जीवन के पथ से भटकते गए। तब हम लोगों की प्रशंसाओं के लिए, और उन पर अधिकार पाने के लिए जीने लगे जो हमारी प्रशंसा नहीं करते थे। इससे हमारा अन्त हुआ, और ऐसा ही उन सबके साथ भी हुआ है जो यहाँ सबसे निचले स्थान में हैं।"

अपनी बातचीत को बढ़ाने के उद्देश्य से, मैं ने अपने मन में आनेवाला अगला प्रश्न पूछा, "क्या तुम्हें और तुम्हारे पति को यहाँ इकट्ठे होना कठिन है?"

"बिलकुल नहीं। पृथ्वी के सारे सम्बंध यहाँ जारी रहते हैं, और वे सब न्याय के द्वारा, और इस तथ्य के द्वारा कि वे अब सब आत्मिक हैं जैसे हम अब आत्मा में हैं शुद्ध किए जाते हैं। जितने अधिक तुम क्षमा किए जाते हो उतना अधिक तुम प्रेम करते हो। जब हम ने एक दूसरे को क्षमा कर दिया हम एक दूसरे से अधिक प्रेम करने लगे। अब हमारा सम्बंध कहीं अधिक गहराई और घनिष्टता में चल रहा है क्योंकि हम उद्धार के संगी वारिस हैं। जितने गहरे घाव थे जो हम ने एक दूसरे को दिए थे, उतनी ही गहराई में प्रेम जा सका था जब हम ने चंगाई पाई थी। हम इसे पृथ्वी पर अनुभव कर सकते थे, परन्तु हम ने समय रहते क्षमा करना नहीं सीखा। यदि हम ने क्षमा करना सीख लिया होता तो जो प्रतिस्पर्द्धा हमारे सम्बंध में आई थी और हमारे जीवन को भटका दिया था, हमारे जीवन में जड़ नहीं पकड़ सकती थी। यदि तुम सच में प्रेम करते हो, तो तुम सच में क्षमा करोगे। जितना कठिन तुम्हारे लिए क्षमा करना होगा, उतनी ही दूर तुम सच्चे प्रेम से हो। क्षमा करना अत्यावश्यक है, वरना तुम ठोकर खाओगे, और कई तरीकों से उस मार्ग से भटक जाओगे जो तुम्हारे लिए चुना गया है।"

उसी समय मुझे अनुभव हुआ कि जिस स्त्री ने मुझे मेरी भ्रष्टता के इस दर्द के साथ सामना कराया था, एक सबसे आकर्षक व्यक्ति थी जिस से मैं कभी मिला होगा। यह कोई रोमानी आकर्षण नहीं था, परन्तु मैं उसे छोड़ना नहीं चाहता था। मेरे विचारों को समझने पर, उसने एक कदम पीछे लिया जैसे कि अब जाने वाली हो, परन्तु एक अन्तिम सलाह मुझे दी।

"शुद्ध प्रेम में कहा गया शुद्ध सत्य सदा आकर्षित करेगा। यहाँ महसूस होनेवाला दर्द तुम्हें स्मरण रहेगा, और तुम्हारे बाकी के जीवन में तुम्हारी सहायता करेगा। दर्द अच्छा है; यह दिखाता है कि समस्या कहाँ है। जब तक समस्या का पता न लगा लो दर्द कम करने का प्रयत्न मत करो। परमेश्वर का सत्य जब किसी समस्या के विषय में बताता है तो अकसर दर्द लाता है, परन्तु उसका सत्य हमें सदा स्वतन्त्रता का मार्ग भी बताएगा। जब तुम इसे जानोगे तब अपनी परीक्षाओं में भी आनन्द करने लगोगे, जो सब तुम्हें जीवन के पथ पर रखने के लिए दी गई हैं।"

"और, मेरे लिए तुम्हारा आकर्षण गलत नहीं है। यह नर और नारी के बीच आकर्षण है जिसे आरम्भ से दिया गया था, जो इसकी सच्ची किस्म में सदा शुद्ध है। जब शुद्ध सत्य शुद्ध प्रेम के साथ जुड़ता है, तब पुरुष असुरक्षा के कारण अधिकार जताने की आवश्यकता के बिना पुरुष हो सकते हैं। यह केवल कामुकता है, जो सबसे निचली गहराई है जिसमें हमारे पाप के कारण प्रेम गिर सकता है। सच्चे प्रेम के साथ, पुरुष सच्चे पुरुष बनते हैं, और स्त्रियाँ स्त्रियाँ हो सकती हैं जो उन्हें बनाया गया था, क्योंकि उनके प्रेम ने उनके डर को बदल दिया है। प्रेम कभी भी चालाकी से प्रभावित नहीं करेगा या असुरक्षा से अधिकार में करने का प्रयास नहीं करेगा, क्योंकि प्रेम सब डर को निकाल देता है। जिस स्थान पर सम्बंध सबसे अधिक भ्रष्ट हो सकते हैं वही स्थान है जहाँ वे, जब उनमें उद्धार ने काम किया है, सबसे अधिक पूर्ति अनुभव कर सकते हैं। सच्चा प्रेम स्वर्ग का स्वाद है, और कामुकता शत्रु की स्वर्ग की महिमा का अन्तिम भ्रष्टता है। जिस हद तक तुम पृथ्वी पर कामुकता से मुक्त हो, उसी हद तक तुम स्वर्ग को अनुभव करना आरम्भ कर सकते हो।

"परन्तु मुझे लगता नहीं है कि मैं ने यहाँ, या आपके लिए कोई कामुकता महसूस की है", मैं धीमे से विरोध किया। "बदले में, मैं चकित हो रहा हूँ कि मैं आपके समान किसी सुन्दर को देख रहा हूँ और कामुकता नहीं महसूस कर रहा हूँ।"

"यह इसलिए है क्योंकि तुम यहाँ हो। यहाँ उसकी महिमा का प्रकाश सब अन्धकार निकाल देता है। परन्तु यदि तुम यहाँ नहीं होते, तो कामुकता तुम पर सवार हो रही होती", उसने कहा।

"मुझे निश्चय है कि आप सही हैं। क्या हम पृथ्वी की इस भयानक भ्रष्टता से कभी मुक्त हो सकेंगे?" मैं ने याचना की।

"हाँ। जैसे तुम्हारा मन सत्य के आत्मा के द्वारा नया होता जाएगा तो तुम सम्बंधों को दूसरों से पाने के अवसर के रूप में नहीं, परन्तु देने के रूप में देखोगे। देना सबसे अधिक पूर्ति देता है जिसे हम अनुभव कर सकते हैं। सबसे अदभुत मानवीय सम्बंध भी हर्षोन्माद की एक क्षणिक झलक ही है जिसे हम अनुभव कर सकते हैं जब हम प्रभु की सच्ची आराधना करते हैं। जो हम यहाँ आराधना में अनुभव करते हैं तुम्हारी निर्बल महिमा-नहीं पाए शरीर सहन नहीं कर सकेंगे। परमेश्वर की सच्ची आराधना तुम्हारे प्राण को सच्चे सम्बंधों की महिमाओं के लिए शुद्ध करेगी। इसलिए, तुम्हें सम्बंध नहीं बल्कि सच्ची आराधना की खोज करनी है। केवल तब ही सम्बंध वह हो सकते हैं जो उन्हें होना है। सच्चा प्रेम पहले स्थान पर, या नियंत्रण में नहीं होना चाहता है, बल्कि सेवा के स्थान पर होना चाहता है। यदि मेरे पति और मैं ने इसे अपने विवाह में रखा होता तो इस समय हम राजा के पास बैठे होते, और यह विशाल हॉल और अधिक मनुष्यों से भरा होता।"

इसके साथ वह महिमा पाए सन्तों के क्रम में लौट गई। मैं ने दोबारा सिंहासन की ओर देखा और चकित रह गया क्योंकि इसकी महिमा पहले से कहीं अधिक सुन्दर लग रही थी। मेरे निकट खड़े एक दूसरे व्यक्ति ने समझाया:

"हर मुलाकात के साथ, एक परदा निकल जाता है जिससे तुम उसे अधिक स्पष्टता के साथ देख सकते हो। तुम उसकी महिमा देख कर नहीं, परन्तु उघाड़े चेहरे से देखकर परिवर्तित होते हो। हर एक जो परमेश्वर के सच्चे न्यायों में आता है ऐसे एक गलियारे में

से गुज़रता है और उनसे मिलता है जो उन परदों को निकालने में सहायता करते हैं जिसे वे अभी भी पहने हुए हैं, जो परदे मसीह के उनके दर्शन को विकृत करेंगे।"

मैं ने पहले ही अपनी पृथ्वी की कई वर्षों की सेवा से अधिक समझ प्राप्त कर ली थी। तब मैं सोचने लगा कि पृथ्वी पर मेरा अध्ययन और खोज मुझे केवल एक घोंघे की रफ्तार से ही आगे ले गए थे। कई जीवन भी मुझे न्याय के लिए कैसे तैयार कर सकेंगे? मेरे जीवन ने मुझे पहले ही उन सबसे अधिक जिनसे मैं मिला था अयोग्य ठहराया था, और वे कठिनाई से ही यहाँ पहुँच पाए थे!

"उनके लिए क्या आशा है जिन्हें इन अनुभव का अनुग्रह नहीं दिया गया था?" मैं ने पूछा।

मैं ने एक नई आवाज सुनी: "जिसे तुम यहाँ अनुभव कर रहे हो तुम्हें पृथ्वी पर दिया गया है। यदि तुम दीनता का वस्त्र पहने रखोगे, और अपना ध्यान उसकी महिमा पर केन्द्रित रखना सीखोगे, तो हर सम्बंध और दूसरों के साथ हर मुलाकात तुम्हें वह सिखा सकती है जो तुम यहाँ सीख रहे हो। तुम्हें यह अनुभव इस समय इसी लिए दिया जा रहा है क्योंकि तुम इस दर्शन को लिखोगे और जो इसे पढ़ेंगे और समझेंगे। तब कई उस महिमा और सामर्थ्य को अन्तिम युद्ध में ले जा सकेंगे जहाँ उन्हें ले जाना है।"

मैं इस व्यक्ति को जो मेरा समव्यस्क था पहचान कर चकित रह गया, और मैं जानता नहीं था कि वह मर चुका है। मैं पृथ्वी पर उससे कभी मिला नहीं था, परन्तु उसकी एक महान सेवा थी जिसका मैं बहुत सम्मान करता था। उसके बनाए हुए चेलों के द्वारा हज़ारों उद्धार में आए थे, और कई बड़ी-बड़ी कलीसियाएँ स्थापित की गई थीं जिन में से लगभग सभी सुसमाचार प्रचार के लिए समर्पित थीं।

उसने पूछा कि क्या वह मुझे एक मिनट के लिए गले लगा सकता है, मैं सहमत हो गया, हालाँकि अनुपयुक्त महसूस कर रहा था। जब हम गले मिले तब उससे आता हुआ ऐसा प्रेम अनुभव किया कि मेरे भीतर का एक बड़ा दर्द चंगा हो गया। मुझे इस दर्द की इतनी आदत पड़ गई थी कि जब यह चंगा हुआ तब ही मेरा इस पर ध्यान गया था। जब उसने मुझे अपने आलिंगन से छोड़ा तब मैं ने उसे बताया कि उसके आलिंगन ने मुझे किसी चीज से चंगा किया है। इस पर उसका आनन्द अत्यन्त महान था। तब वह मुझे बताने लगा कि क्यों वह स्वर्ग में सबसे निचले स्थान में था।

"मैं अपने जीवन के अन्त के निकट इतना अभिमानी हो गया था कि मैं सोच भी नहीं सकता था कि प्रभु कुछ भी महत्त्व का तब तक नहीं करेगा जब तक वह मेरे द्वारा नहीं करता। मैं प्रभु के अभिषिक्तों को छूने लगा, और उसके भविष्यद्वक्ताओं को हानि पहुँचाने लगा। जब प्रभु मेरे किसी चेले को इस्तेमाल करता तो मैं स्वीर्थीपन से घमण्ड करता, और ईर्ष्या करता जब प्रभु किसी ऐसे को इस्तेमाल करता जो मेरी सेवा के बाहर था। मैं उन्हें जोखिम में डालने के लिए कुछ पता लगाता जो उनमें गलत था। मैं तब नहीं जानता था कि हर बार जब मैं ऐसा करता था मैं अपना ही पद घटा रहा था।"

"मुझे तो पता नहीं था कि तुम ऐसा कुछ करते थे", मैं ने चकित होते हुए कहा।

"मैं ऐसा स्वयं नहीं करता था, परन्तु मैं अपने अधीन लोगों को पता लगाने और मेरा गन्दा काम करने के लिए उकसाता था। मैं उन्हें पृथ्वी को छान मारने भेजता कि दूसरों को प्रकट करने के लिए उनमें कोई भूल या पाप खोज निकालें। मैं एक सबसे बुरी चीज बन गया जो एक मनुष्य पृथ्वी पर बन सकता है - एक ठोकर का पत्थर जो दूसरे ठोकर के पत्थर उत्पन्न कर रहा था। हम सत्य की रक्षा करने के नाम में, सारी कलीसिया में डर और फूट पैदा करते थे। मैं अपनी आत्म-धार्मिकता में नरकवास की ओर जा रहा था। अपनी महान कृपा में, प्रभु ने मुझे एक रोग लगने दिया जिससे मेरी एक धीमी और अपमानजनक मृत्यु हुई। अपनी मृत्यु के ठीक पहले मुझे होश आया और मैं ने मन फिराया। मैं यहाँ आ सका हूँ उसके लिए कृतज्ञ हूँ। मैं यहाँ उसके सबसे छोटों में से हूँ, परन्तु यह फिर भी उससे कहीं अधिक है जिसके मैं योग्य हूँ। मैं इस कमरे से तब तक जा नहीं सकता था जब तक मैं ने तुम जैसों से क्षमा नहीं माँग ली होती जिनकी मैं ने हानि की है।"

"परन्तु तुम ने कभी मेरी हानि नहीं की", मैं ने कहा।

"परन्तु मैं ने की थी", उसने उत्तर दिया, "अधिकाँश आक्रमण जो तुम्हारे ऊपर हुए थे उनके द्वारा किए गए थे जिन्हें मैं ने दूसरों पर आक्रमण करने के लिए उत्तेजित और प्रोत्साहित किया हुआ था। हालाँकि मैं ने स्वयं वे आक्रमण नहीं किए थे, परन्तु प्रभु मुझे भी उतना ही जिम्मेवार ठहराता है जितने वे थे जिन्हें किए थे।"

"समझ आया। निस्संदेह मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।"

मैं ने पहले ही सोचना आरम्भ कर दिया था कि किस प्रकार मैं ने भी वैसा ही किया था हालाँकि मैं ने ऐसा छोटे पैमाने पर किया था। मुझे याद आया कि कैसे मैं ने एक कलीसिया के असन्तुष्ट सदस्यों को उनके कलीसिया के विषय में उनका ज़हर फैलाने दिया था और उन्हें रोका न था। मैं जानता था कि उन्हें बिना सुधारे ऐसा करने देने से मैं ने उन्हें करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया था। मुझे याद है मैं ने सोचा था कि उस कलीसिया में भ्रम के कारण ऐसा करना सही था। फिर मुझे याद आया कि कैसे मैं दूसरों से उस कलीसिया के लिए प्रार्थना करने को कहने के द्वारा उन्हीं कहानियों को दोहराया था। शीघ्र ही ऐसी दूसरी घटनाओं की बाढ़ मेरे हृदय में उठने लगी। एक बार फिर मैं अपने हृदय की दुष्टता और अन्धकार से अभिभूत होने लगा।

"मैं भी एक ठोकर का पत्थर रहा हूँ!" मैं ने विलाप किया। मैं जानता था कि मैं नरक के योग्य था, कि मैं सबसे बुरे प्रकार के नरक के योग्य था। मैं ने अपने हृदय में इस प्रकार की बेरहमी और क्रूरता पहले कभी नहीं देखी थी।

"और हम ने सदा अपने आपको यह कहकर सान्त्वना दी है कि हम परमेश्वर के बच्चों पर आक्रमण करके परमेश्वर पर कृपा कर रहे थे", इस व्यक्ति की उदार आवाज आई। "तुम्हारे लिए भला है कि तुम इसे यहाँ देख रहे हो, क्योंकि तुम वापस जाने वाले हो। कृपया मेरे चेलों को, यदि वे मन नहीं फिराते, उनके सन्निकट सर्वनाश की चेतावनी देना। उनमें से कइयों को यहाँ राजा होने के लिए बुलाया गया है, परन्तु यदि वे मन नहीं फिराते तो उनको सबसे बुरे प्रकार के न्याय का सामना करना पड़ेगा - ठोकर के पत्थर का न्याय। मेरी दीन करनेवाली बीमारी परमेश्वर से अनुग्रह था। जब मैं सिंहासन के सामने खड़ा था तब मैं ने प्रभु से विनती की थी कि ऐसा अनुग्रह मेरे चेलों पर भी भेजे। मैं लौट कर उनके पास नहीं जा सकता हूँ, परन्तु उसने मुझे तुम्हारे साथ यह समय दिया है। कृपया उन्हें क्षमा कर दो और मुक्त कर दो जिन्होंने तुम पर आक्रमण किए हैं। वे असल में समझते नहीं हैं कि वे दोष लगानेवाले का काम कर रहे हैं। मुझे क्षमा करने के लिए धन्यवाद, परन्तु कृपया उन्हें भी क्षमा कर दो। तुम्हारे अधिकार में है कि तुम किसी के पास रोके रखो या उन्हें प्रेम से ढाँप दो। मैं तुम से विनती करता हूँ कि तुम उन से प्रेम करो जो अब तुम्हारे शत्रु हैं।"

मैं इस व्यक्ति की बाते सुन नहीं पा रहा था क्योंकि मैं अपने पाप से ही इतना अभिभूत हो गया था। वह कितना यशस्वी और शुद्ध था, और उसमें ऐसी शक्तियाँ थीं जो पृथ्वी पर अज्ञात थीं। फिर भी वह मुझ से बड़ी दीनता के साथ आग्रह कर रहा था। मैं उससे आता हुआ ऐसा प्रेम अनुभव कर रहा था कि उसे इन्कार करने की कल्पना नहीं कर सकता था। परन्तु उसके प्रेम के प्रभाव के बिना भी, मैं उनसे भी इतना अधिक दोषी महसूस कर रहा था जितना मुझ पर आक्रमण करनेवाले कर सकते थे।

"निश्चय ही मैं उस सब का हकदार हूँ और उससे अधिक का भी जो उन्होंने मेरे साथ किया है", मैं ने उत्तर दिया।

"यह सच है परन्तु बात यह नहीं है", उसने आग्रह किया, "पृथ्वी का हर व्यक्ति दूसरी मृत्यु का हकदार है, परन्तु हमारा मसीहा हमारे लिए अनुग्रह और सच्चाई लाया है। यदि हमें उसका काम करना है तो हमें अनुग्रह और सच्चाई दोनों में करना है। अनुग्रह के बिना सच्चाई ही वह चीज है जो शत्रु लाता है जब वह ज्योतिर्मिय स्वर्गदूत बन कर आता है।"

"यदि मैं इससे छुटकारा पाऊँ तो सम्भव है मैं किसी की सहायता कर सकूँगा", मैं ने उत्तर दिया। "परन्तु क्या तुम देख नहीं सकते हो कि मैं उनसे कहीं अधिक बुरा हूँ जितने वे सम्भवतः हो सकते हैं ?"

"मैं जानता हूँ कि जो अभी तुम्हारी स्मृति में से गुज़रा है बुरा था", उसने एक ऐसे प्रेम और अनुग्रह के साथ उत्तर दिया जो गूढ़ थे। मैं जानता था कि वह अब मेरी स्थिति के लिए भी उतना ही चिन्तित हो गया था जितना वह अपने चेलों के लिए था।

"यह असल में स्वर्ग है", मैं फूट पड़ा। "यह असल में ज्योति और सत्य है। हम जो ऐसे अन्धकार में रहते हैं कैसे इतने अभिमानी हो सकते हैं, कि सोचते हैं कि हम परमेश्वर के विषय में इतना जानते हैं!" मैं सिंहासन की ओर चिल्लाया, "कृपया मुझे जानें दें और इस ज्योति को पृथ्वी पर ले जाने दें!"

तुरन्त स्वर्ग की सारी सेवा सावधान हो गई लग रही थी, और मैं जानता था कि उन सबका ध्यान मुझ पर था। मैं उन यशस्वियों में से एक के सामने भी कितना तुच्छ महसूस कर रहा था, परन्तु जब मुझे लगा कि वे सब मेरी ओर देख रहे हैं, तब डर एक ज्वारीय तरंग के समान मेरे ऊपर आया। मुझे लगा कि जैसा सर्वनाश मैं अनुभव करने वाला था वैसा किसी ने कभी नहीं किया होगा। मुझे लगा कि जो महिमा और सच्चाई इस स्थान में थी मैं उसका सबसे बड़ा शत्रु था।

तब मैं ने वापस जाने की अपनी विनती के विषय में सोचा। मैं तो अत्यन्त भ्रष्ट था। मैं ऐसी महिमा और सच्चाई का पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता था। अपनी भ्रष्टता के कारण मैं किसी भी प्रकार से इस यशस्वी स्थान और उपस्थिति की वास्तविकता को बता नहीं सकता था। मुझे लगा कि शैतान भी उतना नहीं गिरा होगा जितना मैं गिरा हूँ। "यह तो नरक है", मैं ने सोचा। जितना बुरा मैं हूँ उससे बुरा दर्द और कोई नहीं हो सकता है और फिर जानना कि इस प्रकार की महिमा है और फिर यहाँ से निकाल दिया जाना सबसे भयानक बात होगी जिसका मुझे डर था। "कोई आश्चर्य नहीं कि दुष्टात्माएँ इतनी क्रोधित और पागल हैं", मैं फुसफुसाया।

ठीक उसी समय जब मुझे लगा कि मैं नरक के सबसे गहरे क्षेत्रों में भेज दिया जाने वाला हूँ, मैं चिल्ला उठा, "यीशु!" तुरन्त मुझ पर एक शान्ति छा गई, और मैं जान गया कि मुझे महिमा की ओर बढ़ते रहना है, और किसी प्रकार मेरे पास ऐसा करने का विश्वास भी था। मैं जा रहा था जब मैं ने एक व्यक्ति को देखा जिसे मैं सारे समय का एक सबसे बड़ा लेखक समझता था। अपने सारे अध्ययन में मैं ने पाया था कि सच्चाई में उसकी अन्तर्दृष्टि की गहराई सम्भवत सबसे गहरी थी।

"जनाब, मैं ने सदा से इन मुलाकात की प्रतीक्षा की है", मैं लगभग फूट पड़ा।

"जैसे मैं ने भी की है", उसने एक सच्ची ईमानदारी के साथ उत्तर दिया।

मैं उसकी बात से चकित हुआ, परन्तु उसे मिल कर इतना उत्तेजित था कि मैं आगे बोलाः "मुझे लगता है कि मैं आपको जानता हूँ, और आपके लेखों में मुझे लगा जैसे कि आप किसी प्रकार मुझे जानते थे, और मैं सोचता हूँ कि पवित्रशास्त्र के लेखकों के अलावा और किसी से भी अधिक मैं आपका ऋणी हूँ", मैं ने कहा।

"तुम बड़े कृपालु हो", उसने उत्तर दिया। परन्तु मुझे दुख है कि मैं ने तुम्हारी सेवा सही तरीके से नहीं की। मैं एक छिछला व्यक्ति था, और मेरे लेख छिछले थे, और ईश्वरीय सच्चाई के बदले साँसारिक बुद्धि से भरे हुए थे।"

"जब से मैं यहाँ हूँ और जो कुछ मैं ने सीखा है, मैं जानता हूँ कि यह सच होगा क्योंकि यहाँ केवल सच ही बोला जा सकता है, फिर भी मेरे लिए इसे समझना कठिन है। मैं सोचता हूँ कि आपके लेख पृथ्वी पर कुछ उत्तम लेखों में से हैं", मैं ने उत्तर दिया।

"तुम सही हो", इस प्रसिद्ध लेखक ने ईमानदारी के साथ स्वीकार किया। "यह कितनी दुख की बात है। यहाँ का हर व्यक्ति, और वे भी जो राजा के पास बैठे हैं, यदि उन्हें दोबारा अवसर मिलता तो वे उनके जीवन एक भिन्न तरीके से जीते, परन्तु मुझे लगता है कि मैं अपना जीवन अधिकाँश से काफी भिन्न तरीके से जीता। राजा मेरा सम्मान करते थे, परन्तु मैं ने राजाओं के राजा को निराश किया। मैं ने मुझे दिए गए बड़े बड़े वरदानों और अन्तर्दृष्टियों को लोगों को उसकी ओर लाने के बदले अपनी और अपनी बुद्धि की ओर खींचने के लिए इस्तेमाल किया। इसके अतिरिक्त, मैं उसे केवल कान के सुनने के द्वारा ही जानता था, और इसी तरीके से मैं ने दूसरों को उसे जानने के लिए विवश भी किया। मैं ने उन्हें मुझ पर और मेरे समान दूसरों पर निर्भर बना दिया था। मैं ने उन्हें पवित्र आत्मा की ओर फेरने के बदले जिसे मैं मुश्किल से जानता था, निगमनिक तर्क की ओर अधिक फेर दिया। मैं ने लोगों को यीशु की ओर नहीं बल्कि अपनी और मेरे समान दूसरों की ओर, जो उसे जानने का ढोंग करते थे, खींचा। जब मैं ने प्रभु को यहाँ देखा, मैं अपने लेखों की बुकनी बनाना चाहता था, ठीक जैसे मूसा ने सोने की मूर्ति के साथ किया था। मेरा मन मेरी मूर्ति थी और मैं चाहता था कि सब मेरे साथ उसकी पूजा करें। मेरे लिए तुम्हारा सम्मान मुझे कोई प्रसन्नता नहीं देता। यदि मैं ने अपना समय मेरे ज्ञान के द्वारा दूसरों को प्रभावित करने के लिए उसके विषय में जानने की खोज में लगाने के बदले उसे जानने के लिए खोजने में लगाया होता, तो उन में से अनेक जो इस सबसे नीचे के क्रम में हैं उन सिंहासनों पर बैठे होते जो उनके लिए तैयार किए गए थे, और कई दूसरे भी इस कमरे में होते।"

"मैं जानता हूँ कि जो आप अपने काम के विषय में कह रहे हो सच होगा, परन्तु क्या आप अपने साथ अधिक कठोर नहीं हो रहे हो?" मैं ने प्रश्न किया। "आपके काम ने मुझे कई वर्षों तक पुष्टि दी है, और मैं जानता हूँ कि असंख्य दूसरों को भी दी है।"

"मैं अपने साथ अधिक कठोरता नहीं कर रहा हूँ। सबकुछ जो मैं ने कहा है सत्य है क्योंकि इसकी सिंहासन के सामने पुष्टि भी हो गई थी, जब मैं वहाँ खड़ा था। मैं ने बहुत उत्पन्न किया, परन्तु जो यहाँ हैं उन सबसे अधिक मुझे योग्यताएँ दी गई थीं, और मैं ने उन्हें अपने आत्मिक अभिमान और अभिलाषाओं के नीचे दबा दिया। जिस प्रकार आदम सारी मानव जाति को एक सबसे यशस्वी भविष्य में ले जा सकता था, परन्तु अपनी असफलता के कारण अरबों लोगों को सबसे बुरे सर्वनाश में ले गया। अधिकार के साथ जिम्मेवारी आती है। जितना अधिक अधिकार तुम्हें दिया गया है, उतनी ही अधिक सम्भावना भले या बुरे के लिए आपके पास होगी। जो उसके साथ युगों तक राज्य करेंगे सबसे गूढ़ प्रकार की जिम्मेवारी को देखेंगे। कोई भी व्यक्ति अकेला खड़ा नहीं होता है, और हर मानवीय असफलता, या विजय, हमारी समझ से कहीं परे, आनेवाली पीढ़ियों तक भी, गूँजती है।"

मैं सोच रहा था कि किस प्रकार इस व्यक्ति ने सबसे सुन्दर और सुस्पष्ट वाक्यांशों के साथ लिखा था, और महसूस कर रहा था कि वह तो "शब्द कर्मी" की परिभाषा था, एक ऐसा कलाकार जो शब्दों को कला के कामों में बदल देता था। परन्तु यहाँ वह एक साधारण व्यक्ति के समान बोल रहा था, बिना उस सूक्ष्मदर्शिता के जिसके लिए उसके लेख बहुत प्रसिद्ध थे। मैं जानता था कि वह जानता है मैं क्या सोच रहा था, जैसे यहाँ सब जानते थे, परन्तु वह उसकी बात कर रहा था जिसे वह प्रकट रूप से जानता था अधिक महत्त्वपूर्ण है।

"यदि मैं ने उसके विषय में ज्ञान खोजने के बदले प्रभु को खोजा होता, तो मैं कई हज़ारों को सफलतापूर्वक उद्धार में लाया होता जिनके फलस्वरूप कई और लाखों इस समय यहाँ होते। कोई भी जो अधिकार की सच्ची प्रकृति को समझता है अधिकार को खोजेगा नहीं, परन्तु केवल उसे स्वीकार करेगा, क्योंकि जब वे जानते हैं कि वे प्रभु के साथ जूए में बंधे हैं, प्रभु ही एक है जो बिना ठोकर खाए अधिकार को ले सकता है। कभी भी अपने लिए प्रभाव मत खोजो, परन्तु केवल प्रभु को खोजो और उसका जूआ उठाने के लिए तैयार रहो। मेरे प्रभाव ने तुम्हारे हृदय को नहीं, परन्तु ज्ञान में तुम्हारे अभिमान को पोषण दिया था।"

"मैं कैसे जान सकता हूँ कि मैं भी वही नहीं कर रहा हूँ?" मैं ने पूछा क्योंकि मैं भी अपने लेखों के विषय में सोचने लगा था।

"परमेश्वर का समर्थन पाने के लिए, न कि मनुष्यों का समर्थन पाने के लिए अध्ययन करो", वापस क्रम में लौटते हुए उसने कहा। गायब होने से पहले वह मुड़ा और एक मंद मुस्कान के साथ, एक अन्तिम सलाह दी: "और मेरे पीछे मत चलो।"

इस पहली भीड़ में मैं ने अपने समय के और इतिहास से कई दूसरे परमेश्वर के पुरुष और स्त्रियों को देखा। मैं ने रुक कर कई औरों से भी बात की। मुझे बारम्बार धक्का लग रहा था कि कितने सारे जिनके विषय में मैं ने अपेक्षा की थी कि वे ऊँचे पदों में होंगे राज्य के सबसे निचले पदों में थे। कइयों ने वही मूल कहानी बताई - वे सब उनकी महान विजयों के बाद अभिमान के घातक पाप में गिर पड़े थे, या ईर्ष्या में गिर पड़े थे जब दूसरों को भी उनके समान अभिषेक किया गया था। दूसरे उनके जीवनों के अन्त के निकट लालसा, निराशा, या कड़वाहट के शिकार हुए थे और इससे पहले वे नरकवास की हद पार कर देते उठा लिए गए थे। उन

सब ने मुझे वही चेतावनी दी: जितने ऊँचे आत्मिक अधिकार में तुम चलोगे, और यदि प्रेम और दीनता के बिना हो तो उतनी ही दूर तुम गिरोगे।

जैसे मैं न्यायासन की ओर बढ़ता रहा, मैं उनके पास में से गुज़रने लगा जो राज्य में ऊँचे पद के थे। उनसे मिलने के द्वारा, जो वैसी ही समस्याओं से ठोकर खाए थे जो मुझ में थीं, कई अधिक परदे निकाल जाने के बाद, मैं उनसे मिलने लगा जो जयवन्त हुए थे। मैं उन दम्पतियों से मिला जिन्होंने प्रभु की और एक दूसरे की विश्वासयोग्यता के साथ अन्त तक सेवा की थी। यहाँ उनकी महिमा अकथनीय थी, और उनकी विजय ने मुझे प्रोत्साहित किया कि जीवन के पथ पर बने रहना, और विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा करना सम्भाव है। जिन्होंने ठोकर खाई थी विभिन्न तरीकों से खाई थी। जो जयवन्त हुए थे उसी एक तरीके से हुए थे, कि वे पहली और सबसे बड़ी आज्ञा की ओर उनकी निष्ठा से भटके नहीं थे - प्रभु से प्रेम करना। इसके द्वारा उनकी सेवा, न मनुष्यों के लिए, न ही आत्मिक मनुष्यों के लिए, परन्तु केवल प्रभु के लिए की गई थी। ये वही थे जो मेम्ने की आराधना करते थे, और सब जगह उसके पीछे पीछे चलते थे।

जब मैं सिंहासन के आधे रास्ते तक भी नहीं पहुँचा था, जो पहले पद की अनिर्वचनीय महिमा थी इस महिमा की तुलना में जिसके पास से मैं अब गुज़र रहा था बाहरी अन्धकार लग रहा था। पृथ्वी की सबसे महान सुन्दरता स्वर्ग में कहीं भी पाए जाने के योग्य नहीं थी। और मुझे बताया गया था कि यह कमरा केवल अनिर्वचनीय क्षेत्रों की दहलीज ही था।

सिंहासन की ओर मेरे सफर को दिन, महिने या वर्ष लगे होंगे। उस स्थान में समय को जानने का कोई तरीका नहीं था। वहाँ सब मुझे सम्मान दे रहे थे, इसलिए नहीं कि मैं कोई था, या मैं ने कुछ किया था, परन्तु केवल इसलिए कि मैं अन्तिम दिनों के युद्ध में एक योद्धा था। किसी प्रकार, इस युद्ध के द्वारा परमेश्वर की महिमा एक ऐसे तरीके से प्रकट होने वाली थी कि यह हर सामर्थ्य और अधिकार के लिए, जो रचा गया है या रचा जानेवाला है, एक गवाही होगी। इस युद्ध के दौरान क्रूस की महिमा प्रकट होगी, और परमेश्वर की बुद्धि एक विशेष तरीके से जानी जाएगी। इस युद्ध में होना एक सबसे बड़े सम्मान की बात है जो दिया जा सकता है।

मैं मसीह के न्यायासन के निकट पहुँचा। जो ऊँचे पदों पर थे उनके सिंहासन भी मसीह के सिंहासन का एक भाग थे। इन सिंहासनों में से सबसे छोटा सिंहासन भी पृथ्वी के किसी भी सिंहासन से कई गुणा अधिक यशस्वी था। इन में से कुछ पृथ्वी के शहरों पर शासक थे जो शीघ्र ही उनके स्थान लेनेवाले थे। दूसरे स्वर्ग के कारबार पर शासक थे, और दूसरे भौतिक सृष्टि, जैसे कि तारा मण्डल और आकाशगंगा, के कारबार पर शासक थे। परन्तु प्रकट था कि जिन्हें शहरों पर अधिकार दिया गया था उनसे अधिक सम्मान पाए हुए थे जिनको आकाशगंगाओं पर अधिकार प्राप्त था। एक अकेले बच्चे का मूल्य तारों की एक आकाशगंगा से अधिक था, क्योंकि पवित्र आत्मा मनुष्यों में निवास करता है, और प्रभु ने मनुष्यों को उसके अनन्त निवासस्थान के रूप में चुना है। उसकी महिमा की उपस्थिति में सारी पृथ्वी धूल के एक तिनके के समान लगती थी; और फिर भी यह इतनी अत्यधिक महत्त्व की थी कि सारी सृष्टि का ध्यान इसी पर लगा हुआ था।

अब जबकि मैं सिंहासन के सामने खड़ा था, मैं धूल के एक तिनके से भी छोटा महसूस कर रहा था। फिर भी मैं पहले से अधिक पवित्र आत्मा को अपने ऊपर महसूस कर रहा था। मैं केवल उसके सामर्थ्य के द्वारा ही खड़ा हो पा रहा था। यहीं पर मैं सहायक के रूप में उसकी सेवा को सच में समझ पाया था। वह मुझे सारे सफर में ले आया था, हालाँकि अधिकाँश समय मैं उसके उपस्थिति से अनजान था।

प्रभु मेरी कल्पना के विपरीत अधिक कोमल और अधिक भयानक दोनों था। उसमें मैं ने बुद्धि को देखा जो मेरे साथ पर्वत पर आया था। मैं ने किसी प्रकार पृथ्वी के मेरे कई मित्रों की घनिष्ठता भी महसूस की, जो मैं समझ इसलिए था क्योंकि उसने अकसर उनके द्वारा मुझ से बातें की थीं। मैं ने यह भी पहचाना कि वह वही था जिसे मैं ने अकसर अस्वीकार भी किया था जब वह दूसरों के द्वारा मेरे पास आया था। मैं ने एक शेर और एक मेम्ना, चरवाहा और दुल्हा दोनों देखे, परन्तु सबसे बढ़कर मैं ने उसे न्यायी के रूप में देखा।

उसकी विस्मयकारी उपस्थिति में, सहायक इतने सामर्थ्य के साथ मेरे साथ था कि मैं सुविधा महसूस कर रहा था। यह स्पष्ट था कि प्रभु नहीं चाहता था मैं किसी प्रकार से असुविधा में रहूँ; वह केवल चाहता था मैं सच्चाई को जानूँ। मानवीय शब्द इसका वर्णन करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं कि उसके सामने खड़ा होना कितना विस्मयकारी, या कितना आराम देनेवाला था। मैं उस बिन्दु से पार हो गया था जहाँ मुझे चिन्ता थी कि न्याय अच्छा होगा या बुरा; मैं बस जानता था कि यह सही होगा, और कि मैं अपने न्यायी का भरोसा कर सकता था।

एक समय प्रभु ने उसके चारों ओर सिंहासनों की गैलरियों की ओर देखा। कई भरी हुई थीं, परन्तु कई खाली थीं। तब उसने कहा, "ये सिंहासन जय पानेवालों के लिए हैं जिन्होंने हर पीढ़ी में विश्वासयोग्यता के साथ मेरी सेवा की है। मेरे पिता और मैं ने इन्हें संसार की नींव के पहले से तैयार किया हुआ है। क्या तुम इन में से एक पर बैठने के योग्य हो?

मुझे याद आया जो मेरे मित्र ने एक बार कहा था, "जब सर्वज्ञ परमेश्वर तुम से एक प्रश्न पूछता है तब वह कोई जानकारी नहीं पाना चाहता है।" मैं ने सिंहासनों की ओर देखा। मैं ने उनको देखा जो अब बैठे हुए थे। मैं ने विश्वास के कुछ नायकों को पहचान

लिया, परन्तु मैं जानता था कि बैठे हुओं में से अधिकाँश पृथ्वी पर प्रसिद्ध नहीं थे। मैं जानता था कई मिशनरी थे जिन्होंने उनके जीवन गुमनामी में खर्च किए थे। उन्होंने परवाह नहीं की थी कि वे पृथ्वी पर जाने जाते हैं या नहीं, परन्तु केवल चाहते थे कि वह उन्हें जाने। मैं कुछ को देखकर चकित हुआ जो धनी थे, जो शासक थे, जो उसमें विश्वासयोग्य रहे थे जो उनको दिया गया था। परन्तु, ऐसा लगता था कि किसी भी दूसरे समूह से अधिक विश्वासयोग्य, प्रार्थनावीर स्त्रियाँ और माताएँ अधिक सिंहासनों पर बैठी हुई थीं।

यदि मैं अपने आप को वहाँ बैठने के योग्य समझता, तो भी मैं प्रभु के प्रश्न का उत्तर "हाँ" में नहीं दे सकता था। मैं उनके साथ बैठने के योग्य नहीं था जो यहाँ थे। मैं जानता था कि मुझे पृथ्वी पर स्वर्ग के सबसे बड़े इनाम के लिए दौड़ने का अवसर दिया गया था, परन्तु मैं असफल रहा था। मैं निराश था, परन्तु अभी भी एक आशा थी। हालाँकि मेरा अधिकाँश जीवन एक असफलता था, मैं जानता था कि पृथ्वी का अपना जीवन समाप्त करने से पहले मैं यहाँ आया था। जब मैं ने स्वीकार किया कि मैं योग्य नहीं हूँ, उसने पूछाः

"परन्तु तुम यह आसन चाहते हो?"

"मैं अपने सारे हृदय से चाहता हूँ", मैं ने उत्तर दिया।

तब प्रभु ने गैलरियों की ओर देखा और कहा, "वो खाली आसन किसी भी पीढ़ी में भर सकते थे। जिन्होंने मेरे नाम को पुकारा था मैं ने उन सब को यहाँ बैठने का आमंत्रण दिया था। वे अभी भी उपलब्ध हैं। अब अन्तिम युद्ध आ गया है, और कई जो अन्तिम है पहले होंगे। युद्ध समाप्त होने से पहले ये आसन भर जाएँगे। जो यहाँ बैठेंगे वे दो चीजों से जाने जाएँगेः वे दीनता का वस्त्र पहने होंगे, और उनमें मेरा स्वरूप होगा। तुम्हारे पास अब वस्त्र है। यदि तुम इसे अपने पास रखो और युद्ध में खो न दो, तो जब तुम लौटोगे तब तुम में मेरा स्वरूप भी होगा। तब तुम इन के साथ बैठने के योग्य होगे, क्योंकि मैं ने तुम्हें योग्य बना दिया होगा। सारा अधिकार और सामर्थ्य मुझे दिया गया है, और केवल मैं इसे काम में ला सकता हूँ। जब तुम सम्पूर्ण रूप से मुझ में बने रहने लगोगे, तब ही तुम जयवन्त होगे और तुम्हें मेरा अधिकार सौंपा जाएगा। अब मुड़ कर मेरे घराने को देखो।"

मैं मुड़ा और उस दिशा की ओर देखा जहाँ से मैं आया था। उसके सिंहासन के सामने से मैं सारे कमरे को देख सकता था। प्रदर्शन इसकी महिमा में किसी भी तुलना से परे था। लाखों पदों में बैठे थे। सबसे नीचे के पद का व्यक्ति भी एक सेना से अधिक विस्मयकारी, और अधिक सामर्थ्य का था। महिमा के ऐसे परिदृश्य को सोख लेना मेरी क्षमता के परे था। फिर भी, मैं देख सकता था कि इस महान कमरे का एक बहुत छोटा भाग ही भरा हुआ था।

तब मैं ने पीछे प्रभु की ओर देखा और उसकी आँखों में आँसू देखकर चकित रह गया। उसने यहाँ की हर आँख के आँसुओं को पोछ डाला था, केवल अपने को छोड़ कर। जैसे एक आँसू उसकी गाल पर आया उसने इसे अपने हाथ में पकड़ लिया। तब उसने उसे मुझे दिया।

"यह मेरा प्याला है। क्या तुम इसे मेरे साथ पीओगे?"

मैं उसे इन्कार नहीं कर सकता था। जैसे प्रभु मेरी ओर देख रहा था मैं उसके महान प्रेम को महसूस करने लगा। मैं कितना घृणित था फिर भी वह मुझ से प्रेम करता था। मैं कितना अयोग्य था फिर भी वह चाहता था मैं उसके निकट रहूँ। तब उसने कहाः

"मैं इन सबसे एक ऐसा प्रेम करता हूँ जिसे तुम अभी समझ नहीं सकते हो। मैं उन सब से भी प्रेम करता हूँ जिन्हें यहाँ होना चाहिए था परन्तु नहीं हैं। मैं निन्यानवे को छोड़कर उस एक के पीछे गया हूँ जो खो गया है। मेरे चरवाहे एक को छोड़कर निन्यानवे के पीछे नहीं जाते हैं जो अभी भी खोए हुए हैं। मैं खोए हुओं का उद्धार करने आया था। क्या तुम खोए हुओं का उद्धार करने के लिए मेरे हृदय के अनुसार करोगे? क्या तुम इस कमरे को भरने में सहायता करोगे? क्या तुम इन सिंहासनों, और इस हॉल के हर आसन को भरने में सहायता करोगे? क्या तुम स्वर्ग में, मुझे में और मेरे पिता में आनन्द लाने की इस खोज में लगोगे? यह न्याय मेरे अपने घराने के लिए है, और मेरा अपना घर भरा नहीं है। अन्तिम युद्ध तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मेरा घर भर नहीं जाता। केवल तब ही पृथ्वी को छुड़ाने, और मेरी सृष्टि से दुष्टता को निकालने का समय होगा। यदि तुम मेरे प्याले को पीते हो तो तुम में खोए हुओं के लिए प्रेम होगा जैसे मुझ में है।"

तब उसने एक प्याला लिया जो इतना साधारण था कि इस स्थान का नहीं लगता था, और उसने उसके आँसू को उसमें रखा। तब उसने उसे मुझे दिया। मैं ने ऐसी कड़नी चीज पहले कभी नहीं चखी थी। मैं जानता था कि मैं इसे पूरा पी नहीं सकूँगा, परन्तु मैं जितना पी सकता था पीने के लिए दृढ़ था। प्रभु ने धैर्य के साथ प्रतीक्षा की जब मैं अन्त में ऐसे रोने के साथ फूट पड़ा कि मुझे लगा मुझ में से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं। मैं खोए हुओं के लिए रो रहा था, परन्तु उससे भी अधिक मैं प्रभु के लिए रो रहा था।

मैं ने उसकी ओर निराशा से देखा क्योंकि मैं उस महान पीड़ा को और नहीं सह पा रहा था। तब उसकी शान्ति मुझ में भरने लगी और उसके महान प्रेम के साथ जो मैं महसूस कर रहा था प्रवाहित होने लगी। मैं ने ऐसा अदभुत कुछ भी अनुभव नहीं किया था। यह जीवित जल था जो मैं जानता था अनन्तकाल के लिए बहता रहेगा। तब मुझे लगा कि मुझ में से बह रहे पानी में आग लग गई

है। मुझे महसूस होने लगा कि यदि मैं ने उसकी महिमा के प्रताप को घोषित नहीं किया तो यह आग मुझे भस्म कर देगी। इससे पहले मैं ने प्रचार करने, उसकी आराधना करने, और उसके सुसमाचार के लिए दी गई हर साँस लेने की प्रेरणा महसूस नहीं की थी।
"प्रभु!" मैं चिल्लाया, मैं उसके अलावा सबको भूल गया था, "मैं अब जानता हूँ कि न्याय का यह सिंहासन अनुग्रह का सिंहासन भी है, और मैं आपकी सेवा करने के लिए अनुग्रह माँगता हूँ। सब चीजों से बढ़कर मैं तुझ से अनुग्रह माँगता हूँ। मैं अपना काम समाप्त करने के लिए तुझ से अनुग्रह माँगता हूँ। मैं तुझ से इस प्रकार प्रेम करने के लिए अनुग्रह माँगता हूँ ताकि मैं मोह और आत्म-केन्द्रिता से छुटकारा पा सकूँ जिन्होंने मेरे जीवन को कितना भ्रष्ट कर रखा है। मैं तुझे पुकारता हूँ कि तू मेरा मुझ से और मेरे अपने हृदय की बुराई से उद्धार कर, और कि यह प्रेम जिसे मैं अभी महसूस कर रहा हूँ निरन्तर मेरे हृदय में प्रवाहित होता रहे। मैं माँगता हूँ कि तू मुझे अपना हृदय और अपना प्रेम दे। मैं मेरे पाप से मुझे कायल करने के लिए तुझ से पवित्र आत्मा का अनुग्रह माँगता हूँ। मैं तेरी गवाही देने के लिए, जैसा तू वास्तव में है, पवित्र आत्मा का अनुग्रह माँगता हूँ। मैं अनुग्रह माँगता हूँ कि मैं उस सब की गवाही दे सकूँ जो तू ने उनके लिए तैयार किया जो तेरे पास आते हैं। मैं माँगता हूँ कि इस न्याय की वास्तविकता का प्रचार करने के लिए मुझ पर अनुग्रह हो। मैं अनुग्रह माँगता हूँ कि मैं उनको बता सकूँ जिन्हें इन खाली सिंहासनों पर बैठने के लिए बुलाया गया है, उन्हें जीवन के वचन दे सकूँ ताकि वे जीवन के पथ पर बने रह सकें, जिससे उन्हें वह करने के लिए विश्वास मिल सकेगा जो करने के लिए उन्हें बुलाया गया है। प्रभु, मैं इस अनुग्रह के लिए प्रार्थना करता हूँ।"
तब प्रभु खड़ा हो गया, और वे सब भी जहाँ तक मेरी नज़र जा सकती थी जो सिंहासनों पर बैठे थे वे भी खड़े हो गए। उसकी आँखें आग से जल रही थीं जैसा मैं ने पहले कभी नहीं देखा था।
"तुम ने मुझे अनुग्रह के लिए पुकारा है। यह विनती मैं कभी ठुकराता नहीं हूँ। तुम लौटोगे और पवित्र आत्मा तुम्हारे संग रहेगा। यहाँ तुम ने मेरी दया और मेरी कठोरता दोनों को चखा है। तुम्हें दोनों को याद रखना है यदि तुम जीवन के पथ पर रहना चाहते हो। परमेश्वर के सच्चे प्रेम में परमेश्वर का न्याय भी होता है। तुम्हें मेरी दया और मेरी कठोरता दोनों जानने हैं नहीं तो तुम धोखे में पड़ सकते हो। तुम्हें यहाँ यह अनुग्रह दिया गया है कि तुम दोनों को जानो। जो बातचीत तुम ने अपने भाइयों के साथ की थी मेरा अनुग्रह था। उन्हें याद रखो।"
तब उसने अपनी तलवार मेरे हृदय, तब मेरे मुँह, तब मेरे हाथों की ओर की। जब उसने ऐसा किया तब उसकी तलवार में से आग निकली और मुझे जला दिया। दर्द बहुत बड़ा था। "यह भी मेरा अनुग्रह है", उसने कहा, "तुम कइयों में से एक हो जिसे इस घड़ी के लिए तैयार किया गया है। जो तुम ने यहाँ देखा है उसका प्रचार करो और उसे लिखो। जो मैं ने तुम्हें कहा है तुम्हारे भाइयों को कहता हूँ। जाओ और मेरे सेनापतियों को अन्तिम युद्ध के लिए बुलाओ। जाओ और, गरीबों और दलितों, विधवाओं और अनाथों की रक्षा करो। यह मेरे सेनापतियों को आदेश है, और तुम उन्हें यहीं पर पाओगे। मेरे बच्चे मेरे लिए स्वर्गों के तारों से भी मूल्यवान हैं। मेरे मेम्नों को चारा दो। मेरे छोटों की रखवाली करो। उन्हें परमेश्वर का वचन दो ताकि वे जावित रहें। युद्ध में जाओ। जाओ और पीछे मत हटो। शीघ्र जाओ क्योंकि मैं शीघ्र आऊँगा। मेरा आज्ञापालन करो और मेरे आने के दिन को शीघ्र लाओ।"
तब स्वर्गदूतों का एक दल आया और मुझे सिंहासन से ले गया। अगुवा मेरे साथ चलने लगा और बात करने लगा।
"अब जबकि वह खड़ा हुआ है, वह तब तक नहीं बैठेगा जब तक अन्तिम युद्ध हो नहीं जाता। वह तब तक बैठा हुआ था जब तक उसके शत्रु उसके पैरों के नीचे नहीं किए जाते। अब समय आ पहुँचा है। उसके दुखभोग की रात से लेकर स्वर्गदूतों की सेनाएँ खड़ी थीं, उन्हें अब पृथ्वी पर छोड़ा गया है। नरक के झुण्ड भी छोड़े गए हैं। इस समय का सारी सृष्टि प्रतीक्षा कर रही थी। परमेश्वर का महान रहस्य शीघ्र ही समाप्त होगा। हम अन्त तक लड़ेंगे। हम तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के संग लड़ेंगे।"

भाग 5 – जय पानेवाले

जैसे मैं न्यायासन के पास से चला जा रहा था मैं उस सब पर विचार करने लगा जो मैं ने अभी अनुभव किया था। यह भयानक और अदभुत दोनों था। यह कितना चुनौतीपूर्ण और दिल फाड़नेवाला था, परन्तु मैं पहले से अधिक सुरक्षित अनुभव कर रहा था। इतने सारे लोगों के सामने इतना उघाड़ा जाना पहले तो आसान नहीं था, जहाँ एक भी विचार छिपाया नहीं जा सकता था, परन्तु यह जानने पर कि यह मेरे प्राण को स्वतन्त्र कर रहा है, मैं शान्त हुआ और इसे स्वीकार किया, तो यह अत्यन्त मुक्त करनेवाला सिद्ध हुआ। कुछ भी छिपाने के लिए नहीं होना सबसे बड़े जूए और बेड़ियाँ को निकाल देने जैसा है। मैं ऐसे महसूस करने लगा जैसे मैं साँस ले सकता हूँ जैसे मैं ने पहले कभी नहीं ली थी। जितना अधिक मैं निश्चिन्त हुआ, उतना अधिक मेरा मन योग्यता में गुणा होने लगा। तब मैं चल रही एक वार्तालाप महसूस करने लगा जिसे कोई भी मानवीय शब्द व्यक्त नहीं कर सकते थे। मैं ने

प्रेरित पौलुस की तीसरे स्वर्ग में जाने की बातों के विषय में सोचा जहाँ उसने ऐसी बातें सुनी थीं जिन्हें बताया नहीं जा सकता है। एक आत्मिक बातचीत होती है जो मानवीय बातचीत से बहुत बढ़कर होती है। यह मानवीय शब्दों से अधिक गूढ़ और अर्थपूर्ण होती है। किसी प्रकार यह हृदय और मन की मिलकर शुद्ध बातचीत होती है, और यह इतनी शुद्ध होती है कि गलतफ़हमी की कोई सम्भावना नहीं होती है।

जैसे मैं ने कमरे में किसी को देखा तो जो वह सोच रहा था मैं समझने लगा जैसे वह मुझे समझ रहा था। जब मैं ने प्रभु की ओर देखा तो मैं उसे भी उसी प्रकार समझने लगा। हम शब्द प्रयोग कर रहे थे, परन्तु हर शब्द का अर्थ एक गहराई थी जिसे कोई भी शब्दकोष बता नहीं सकता था। मेरा मन मुक्त हो गया था जिससे इसकी योग्यता कई गुणा बढ़ गई थी। यह पहले के किसी भी अनुभव से आनन्दकर था। यह भी प्रकट था कि प्रभु इस तरीके से मेरे साथ बातचीत करके उतना ही आनन्द ले रहा था जितना मैं उसके साथ करके ले रहा था। इससे पहले मैं कभी भी इतनी गहराई से समझा नहीं था कि उसके लिए परमेश्वर का वचन होना क्या होता है। यीशु उसकी सृष्टि के लिए परमेश्वर का संचार है। मानवीय शब्द आत्मा के संचार का एक सबसे कृत्रिम तरीका हैं। उसने हमें एक ऐसे स्तर पर बातचीत करने के लिए बनाया था जो मानवीय शब्दों से कहीं बढ़कर है, परन्तु पतन के कारण, और बेबिलोन की मीनार के विध्वंस के कारण, हम ने इस योग्यता को खो दिया है। जब तक हम इसे दोबारा प्राप्त नहीं कर लेते हम वह नहीं हो सकते हैं जो हमें होने के लिए रचा गया था, और हम इसे तब ही बनाए रख सकते हैं जब उसकी उपस्थिति में मुक्त किए जाते हैं।

मुझे समझ आने लगी कि जब आदम अपने पाप के कारण परमेश्वर से छिपने लगा था, तब मनुष्य की सबसे भयानक विकृति का आरम्भ हुआ था, और उसकी बौद्धिक और आत्मिक योग्यताओं में भारी घटाव हुआ था। इन्हें तब ही पुनःस्थापित किया जा सकता है जब हम "छिपने के स्थान" से बाहर निकलते हैं, अपने आप को परमेश्वर और एक दूसरे के सामने खोलते हैं, और सच्चाई से पारदर्शी होते हैं। जब हम "उघाड़े चेहरों" से प्रभु की महिमा को निहारते हैं तब हम उसके स्वरूप में परिवर्तित होते जाते हैं। हमारे छिपने से परदे बनते हैं।

जब प्रभु ने आदम के पाप के बाद उसे पूछा वह कहाँ है, तब यह उसका मनुष्य को पूछा गया पहला प्रश्न था, और यदि हम सम्पूर्ण रूप से उसके साथ पुनःस्थापित होना चाहते हैं तो यह पहला प्रश्न है जिसका हमें उत्तर देना चाहिए। निस्संदेह, प्रभु जानता था आदम कहाँ है। प्रश्न आदम के लिए था। यह प्रश्न परमेश्वर की मनुष्य की खोज का आरम्भ था। उद्धार की कहानी मनुष्य की परमेश्वर की खोज नहीं, बल्कि परमेश्वर की मनुष्य की खोज थी। जब हम इस प्रश्न का उत्तर पूरी तरह दे सकते हैं, और जानते हैं कि हम परमेश्वर के साथ सम्बंध में कहाँ हैं, तब हम उसके साथ पूरी तरह पुनःस्थापित हो गए होंगे। हम इस प्रश्न का उत्तर तब ही जान सकते हैं जब हम उसकी उपस्थिति में होते हैं। मेरे न्यायासन के सारे अनुभव का सार यही था। प्रभु मेरे बारे में पहले से ही सब जानता था। यह सब मेरे लिए था, ताकि मैं जान सकता मैं कहाँ हूँ। यह सब मुझे छिपने के स्थान से बाहर लाने के लिए, और मुझे अन्धकार से ज्योति में लाने के लिए था।

मैं यह भी समझने लगा कि प्रभु कितना उसके लोगों के साथ एक होना चाहता था। सारे न्याय के दौरान वह मुझे कुछ अच्छा या बुरा दिखाने का प्रयत्न नहीं कर रहा था बल्कि उसके साथ एक होकर देख सकूँ इसका प्रयत्न कर रहा था। मेरे उसे खोजने से अधिक प्रभु मुझे खोज रहा था। उसके न्यायों ने मुझे मुक्त कर दिया था और संसार का उसका न्याय इसे मुक्त कर देगा। जब परमेश्वर का न्याय का दिन आएगा तब यह आदम के लिए उसके छिपने के स्थान से अन्तिम छुटकारा लाएगा। यह आदम की अन्तिम मुक्ति होगी, और यह सृष्टि की भी अन्तिम मुक्ति होगी जो आदम के कारण बन्धन में चली गई थी। पतन के बाद छिपने की विवशता के कारण संसार में अन्धकार बना रहा था। "ज्योति में चलना" कुछ सच्चाइयों को जानने और उन पर चलने से अधिक है - यह सच्चा होना और यह छिपने की विवशता से मुक्त होना है। "ज्योति में चलने" का अर्थ है परमेश्वर या दूसरे किसी से भी छिपना नहीं है। पतन से पहले आदम और हव्वा की नग्नता शारीरक ही नहीं परन्तु आत्मिक भी थी। जब हमारा उद्धार पूरा होगा हम इस प्रकार की स्वतन्त्रता दोबारा अनुभव करेंगे। दूसरों के लिए सम्पूर्ण रूप से खुले होना हमारे हृदयों और मनों को उन क्षेत्रों के लिए खोल देगा जिन्हें अभी हम जानते नहीं हैं। न्यू एज मूवमेंट के द्वारा शैतान इसकी नकल बनाने का प्रयास कर रहा है।

मैं ने जो सीखा था उस पर विचार करता हुआ जैसे मैं चला जा रहा था, कि अचानक प्रभु बुद्धि के रूप में मेरे बगल में प्रकट हुआ। केवल इस समय वह पहले से कहीं अधिक, जब वह न्यायासन पर बैठा था उससे भी कहीं अधिक यशस्वी लग रहा था। मैं चकित और अत्यन्त खुश दोनों हो गया। "प्रभु, क्या आप इस प्रकार मेरे साथ लौट रहे हैं ?" मैं ने पूछा।

"मैं इस प्रकार सदा तुम्हारे संग रहूँगा। परन्तु, जैसा तुम मुझे अभी देखते हो मैं उससे भी अधिक तुम्हारे लिए होना चाहता हूँ। तुम ने यहाँ मेरी दया और मेरी कठोरता देखे हैं, परन्तु तुम अभी भी मुझे धर्मी न्यायी के रूप में पूरी तरह जानते नहीं हो।"

इससे मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं ने अभी-अभी अपना सारा समय उसके न्यायासन के सामने बिताया था, और महसूस किया था कि जो मैं सीख रहा था उसके न्याय के विषय में सीख रहा था। उसने इस बात को मेरे मन में घुसने देने की प्रतीक्षा की, और फिर आगे बोला।

"जब तुम सत्य को अनुभव करते हो तब एक स्वतन्त्रता आती है, परन्तु मैं जिसे स्वतन्त्र करता हूँ वह सच में स्वतन्त्र है। मेरी उपस्थिति की स्वतन्त्रता केवल सत्य को जानने से बड़ी है। तुम ने मेरी उपस्थिति में मुक्ति अनुभव की है, परन्तु तुम्हारे पास मेरे न्यायों के विषय में समझने के लिए बहुत कुछ है। जब मैं न्याय करता हूँ मैं दण्ड देने या दोषमुक्त करने नहीं, परन्तु धार्मिकता लाने का प्रयास कर रहा हूँ। धार्मिकता केवल मेरे साथ एक होने पर पाई जाती है। यह धर्मी न्याय है - मनुष्यों को मेरे साथ एकता में लाना।

"जब मैं यहोशू को सेनाओं के प्रधान के रूप में प्रकट हुआ था, मैं ने घोषित किया था कि मैं न तो उसकी ओर हूँ न ही उसके शत्रुओं की ओर। मैं पक्ष लेने के लिए नहीं आया था। जब मैं आता हूँ अधिकार लेने के लिए आता हूँ, पक्ष लेने के लिए नहीं। इस्राएल के प्रतीज्ञा के प्रदेश में प्रवेश करने से पहले मैं सेनाओं के प्रधान के रूप में प्रकट हुआ था। कलीसिया अब अपने प्रतीज्ञा के प्रदेश में प्रवेश करने वाली है, और मैं दोबारा सेनाओं के प्रधान के रूप में प्रकट होने वाला हूँ। जब मैं आऊँगा तब मैं उन सब को निकाल दूँगा जो मेरे लोगों को उनके भाइयों के विरुद्ध पक्ष लेने के लिए विवश कर रहे हैं। मेरा न्याय मानवीय झगड़ों में, मेरे अपने लोगों के झगड़ों में भी पक्ष नहीं लेता है। जो मैं इस्राएल के द्वारा कर रहा था मैं उनके शत्रुओं के लिए भी कर रहा था, उनके विरुद्ध नहीं कर रहा था। क्योंकि तुम साँसारिक दृष्टिकोण से देखते हो इसलिए मेरा न्याय नहीं देख पाते हो। तुम्हें मेरे अधिकार में चलने के लिए मेरा न्याय देखना है, क्योंकि धार्मिकता और न्याय मेरे सिंहासन की नींव हैं।"

"मैं ने अपने चुने हुओं को धार्मिकता दी है, परन्तु जंगल में इस्राएल के समान, कलीसिया के युग के बड़े बड़े सन्तों ने भी अपने समय का एक छोटा सा भाग, या उनके मनों और हृदयों का एक छोटा सा भाग ही मेरे मार्गों के साथ मिलाया है। मैं उनके पक्ष में या उनके शत्रुओं के विरुद्ध नहीं हूँ, परन्तु मैं अपने लोगों को उनके शत्रुओं का उद्धार करने के लिए इस्तेमाल करने आ रहा हूँ। मैं सब मनुष्यों से प्रेम करता हूँ और सब उद्धार पाएँ इच्छा रखता हूँ।"

मैं उस महान युद्ध के विषय में सोचे बिना न रह सका जो हम ने पर्वत पर लड़ा था। हम ने अपने कई भाइयों को घायल किया था जब हम उन्हें नियंत्रित कर रही बुराई से लड़े थे। उनमें से कई अभी भी शत्रु के शिविर में थे, जिन्हें वह या तो इस्तेमाल कर रहा था, या अपने कैदी बनाए कर रखे हुए था। मैं सोचने लगा था कि क्या अगला युद्ध भी हमारे अपने भाइयों के विरुद्ध ही होगा। प्रभु मुझे इन चीजों पर विचार करते देख रहा था, और फिर उसने आगे कहा:

"जब तक अन्तिम युद्ध समाप्त नहीं हो जाता, हमारे कुछ भाइयों को शत्रु इस्तेमाल करता रहेगा। परन्तु मैं यह अभी इस कारण से नहीं बता रहा हूँ। मैं यह तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ कि तुम्हें जानने में सहायता मिले कि किस प्रकार शत्रु तुम्हारे अपने हृदय और मन में घुस जाता है, और कैसे तुम्हें इस्तेमाल करता है! अभी भी तुम सबकुछ वैसे नहीं देखते हो जैसे मैं देखता हूँ।

यह मेरे लोगों के साथ सामान्य होता है। इस समय भी, मेरे बड़े बड़े अगुवे भी मेरे साथ मेल में नहीं होते हैं। कई भले कार्य कर रहे हैं, परन्तु बहुत कम ही वह कर रहे हैं जिसे करने के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है। यह तुम में मतभेद का परिणाम है। मैं किसी एक भाग के पक्ष में होने के लिए नहीं आ रहा हूँ, परन्तु मैं उनको बुला रहा हूँ जो मेरे पक्ष में होंगे।

जब मैं तुम्हें किसी की शारीरिक बीमारी के विषय में एक 'ज्ञान का वचन' देता हूँ, या कोई दूसरी जानकारी देता हूँ जिसका तुम्हें पता नहीं था तब तुम प्रभावित होते हो। यह ज्ञान तब आता है जब तुम मेरे मन को एक छोटे अंश तक ही छूते हो। मैं सब चीजें जानता हूँ। यदि तुम्हारे पास मेरा मन पूरी तरह होता, तब तुम सबके बारे में जिससे तुम मिलोगे सबकुछ जान सकोगे, ठीक जैसे तुम यहाँ अनुभव करने लगे हो। तुम सब मनुष्यों को वैसे देखने लगोगे जैसे मैं उन्हें देखने लगा हूँ। परन्तु फिर भी मुझ में बने रहने के विषय कुछ अधिक है। ऐसे ज्ञान को सही-सही इस्तेमाल करने के लिए तुम्हारे पास मेरा मन होना चाहिए। केवल तब ही तुम्हारे पास मेरा न्याय होगा।

मैं अपने अलौकिक ज्ञान के लिए तुम पर उसी सीमा तक भरोसा कर सकता हूँ जिस तक तुम मेरे हृदय को जानते हो। पवित्र आत्मा के वरदान जिन्हें मैं ने अपनी कलीसिया को दिया है आनेवाले युग के सामर्थ्य का एक छोटा प्रमाण ही है। मैं ने तुम लोगों को उस युग के दूत होने के लिए बुलाया है, इसलिए, तुम्हें इसकी शक्तियों को जानना है। तुम्हें उत्सुकता के साथ वरदानों की इच्छा करनी चाहिए क्योंकि वे मेरा एक अंश हैं, और मैं उन्हें तुम को दिया है ताकि तुम मेरे समान बन सको। मेरे मन, मेरे मार्गों और मेरे उद्देश्यों को जानने की खोज करने में तुम सही हो, परन्तु तुम्हें मेरे हृदय को जानने में भी उत्सुक होना है! जब तुम मेरे हृदय को जानोगे, तब तुम्हारे हृदय की आँखें खुल जाएँगी। तब तुम देखोगे जैसे मैं देखता हूँ, और करोगे जो मैं करता हूँ।

मैं आनेवाले युग के और अधिक सामर्थ्य अपनी कलीसिया को सौंपने वाला हूँ। परन्तु, जिन्हें महान सामर्थ्य सौंपा जाता है उन पर बड़ा धोखा भी आता है, और यदि तुम उसे समझोगे नहीं जो मैं तुम्हें अब दिखाने वाला हूँ, तब तुम भी इस धोखे में पड़ जाओगे। तुम ने मेरे अनुग्रह की माँग की है, और अनुग्रह तुम्हें मिलेगा। पहला अनुग्रह जो तुम्हें जीवन के पथ पर रखेगा वह है अपने वर्तमान धोखे के स्तर को जानना। धोखा में वह सब है जिसे तुम समझते नहीं हो जैसे मैं समझता हूँ। अपने वर्तमान धोखे के स्तर को जानना दीनता लाता है, और मैं दीनों को अपना अनुग्रह देता हूँ। इसी कारण मैं ने कहा था, 'मेरे दास के सिवाय कौन अंधा है...।' इसी कारण से मैं ने फरीसियों को कहा, 'मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो

देखते हैं वे अंधे हो जाएँ...यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते; परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिए तुम्हारा पापा बना रहता है।' इसी लिए, जब मैं ने अपने सेवक पौलुस को बुलाया था, मेरी ज्योति ने उसे अंधा कर दिया था। मेरी ज्योति ने उसकी सच्ची स्थिति को प्रकट किया था। उसके समान, तुम्हें भी स्वाभाविक में अंधा होना है ताकि तुम मेरे आत्मा के द्वारा देख सको।"

तब मैं ने उनकी ओर देखने की बाध्यता महसूस की जो सिंहासनों पर बैठे थे जहाँ से हम गुज़र रहे थे। जैसे मैं ने देखा, तो मेरी नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी जिसे मैं जान गया प्रेरित पौलुस था। जैसे मैं ने वापस प्रभु की ओर देखा, उसने मुझे उससे बात करने का इशारा किया।

"मैं ने इसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा की है", अनाड़ी परन्तु इस मुलाकात के लिए उत्तेजित महसूस करते हुए, मैं ने कहा। "आपको पता ही होगा कि आपके पत्रों ने कलीसिया का कितना मार्गदर्शन किया है, और सम्भवत: वे आज भी हम सबसे अधिक काम कर रहे हैं। आप अभी भी पृथ्वी पर सबसे महान ज्योति हैं।"

"धन्यवाद", उसने अनुग्रह के साथ कहा। "परन्तु तुम समझते नहीं कि हम तुम से मिलने की कितनी प्रतीक्षा कर रहे थे। तुम अन्तिम युद्ध के एक सिपाही हो; तुम सब ही हो जिनसे मिलने की यहाँ सब प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम ने अपने सीमित भविष्यसूचक दर्शन के द्वारा इन दिनों को धुँधला ही देखा था, परन्तु तुम्हें इन में जीने के लिए चुना गया है। तुम अन्तिम युद्ध की तैयारी कर रहे एक सिपाही हो। तुम सब वही हो जिनकी हम सब प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

अभी भी अनाड़ी महसूस करते हुए, मैं ने आगे कहा, "हम जो आपके लिए, और उन सबके लिए जिन्होंने उनके जीवन और लेखों के द्वारा हमारे जीवनों को मार्ग पर रखने में सहायता की है प्रशंसा महसूस करते हैं उसको बयान करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि हमारे पास आभार आदान-प्रदान करने के लिए अनन्तकाल है, परन्तु जबकि मैं यहाँ हूँ, कृपया, मुझे बताइए, "आप मेरी पीढ़ी से कहा कहेंगे जो हमें इस युद्ध में सहायता करेगा?"

"मैं तुम्हें वही कह सकता हूँ जो मैं ने पहले ही अपने लेखों के द्वारा तुम से कहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम यह जानकर उन्हें अच्छी तरह समझो कि जो करने के लिए मुझे बुलाया गया था मैं उससे कम ही कर पाया था", पौलुस ने मेरी आँखों में दृढ़ता के साथ देखते हुए आरम्भ किया।

"परन्तु आप तो यहाँ, एक सबसे महान सिंहासन में हैं। आप अभी भी अनन्तकाल के लिए इतने फल काट रहे हैं जितने की हम अपेक्षा नहीं कर सकते हैं", मैं ने विरोध किया।

"परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा मैं अपना काम समाप्त कर पाया था, परन्तु मैं फिर भी वह सब नहीं कर सका था जिसे करने के लिए मुझे बुलाया गया था। मैं सबसे ऊँचे उद्देश्यों से चूक गया जिनमें मैं चल सकता था। सब चूकते हैं। मैं जानता हूँ कि कुछ सोचते हैं कि मुझे मसीही सेवा के सबसे बड़े उदाहरण से कम समझना ईश-निन्दा है, परन्तु मैं सबसे बड़ा पापी था। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं सबसे बड़ा पापी हूँ, बल्कि मैं तब सबसे बड़ा पापी था। मुझे इतना कुछ समझने के लिए दिया गया था, और मैं कितने कम में चला था।"

"यह कैसे सम्भव हो सकता है? मुझे लगता है आप केवल दीन बन रहे हैं", मैं पूछा।

"सच्ची दीनता सच्चाई के साथ सहमत है। डरो मत। मेरे पत्र सच्चे हैं, और वे पवित्र आत्मा के अभिषेक से लिखे गए थे। परन्तु, मुझे बहुत कुछ दिया गया था, और मैं ने सबकुछ इस्तेमाल नहीं किया जो मुझे दिया गया था। मैं भी चूक गया था। यहाँ केवल एक के सिवाय सब चूके हैं। परन्तु तुम्हें इसे विशेषकर मेरे विषय में देखना है, क्योंकि कई अभी भी मेरी शिक्षाओं को विकृत कर रहे हैं, क्योंकि उनका मेरे विषय में विकृत विचार है।"

"जैसे तुम मेरे पत्रों में अनुक्रम देखोगे, कि मैं पहले सोचता था कि मैं अधिकाँश सन्निकट प्रेरितों से कम नहीं हूँ, फिर स्वीकार किया कि मैं सबसे छोटा प्रेरित हूँ, फिर सबसे छोटा सन्त हूँ, और अन्त में समझा कि मैं सबसे बड़ा पापी था। मैं केवल दीन नहीं बन रहा था। मैं केवल सत्य बोल रहा था। मुझ पर अधिक के लिए भरोसा किया गया था, जो मैं ने इस्तेमाल किया था उससे कहीं अधिक। यहाँ केवल एक ही है जिसने पूर्ण रूप से विश्वास किया, जिसने पूर्ण रूप से आज्ञापालन किया, और जिसने उसे सच में समाप्त किया जो उसे करने को दिया गया था, परन्तु तुम मुझ से अधिक में चल सकते हो।"

मेरा उत्तर दुर्बल था, "मैं जानता हूँ कि जो आप कह रहे हो सत्य है, परन्तु क्या आपको पक्का विश्वास है कि यह सबसे महत्त्वपूर्ण संदेश है जो आप हमें अन्तिम युद्ध के लिए देना चाहते हैं?"

"मुझे विश्वास है", उसने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, "मैं प्रभु के अनुग्रह के लिए कितना आभारी हूँ कि मेरे पत्रों को उसने इस्तेमाल किया है। परन्तु मुझे चिन्ता है जिस तरीके से आप में से कई उन्हें इस्तेमाल कर रहे हैं। वे पवित्र आत्मा की सच्चाई हैं और वे पवित्रशास्त्र हैं। प्रभु ने मुझे उसकी अनन्त कलीसिया में रखने के लिए महान पत्थर दिए थे, परन्तु वे नींव के पत्थर नहीं हैं। नींव के पत्थर केवल यीशु ने रखे थे। मेरा जीवन और सेवा वे उदाहरण नहीं हैं जो बनने के लिए तुम्हें बुलाया गया है, वह तो केवल यीशु ही है। यदि जो मैं ने लिखा है उसे नींव के रूप में इस्तेमाल किया जाता है तो यह उसका वजन नहीं उठा सकेगा जो इस पर बनाया जाएगा। जो मैं ने लिखा है उसे केवल उस नींव पर ही बनाया जाना चाहिए जो इसके वजन को सह सकता है; इसे नींव के रूप में

इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। तुम्हें मेरी शिक्षाएँ प्रभु की शिक्षाओं से देखनी चाहिए, न कि उसे मेरी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करना चाहिए। उसके वचन नींव हैं। मैं ने उसके वचनों को विस्तार देकर उन पर बनाया है। सबसे बड़ी बुद्धि, और सबसे सामर्थी सच्चाइयाँ उसके वचन हैं, मेरे नहीं।"

"तुम्हें यह भी पता होना चाहिए कि मैं उस सब में नहीं चला था जो मुझे उपलब्ध था। जितना मुझे उपलब्ध था उससे कहीं अधिक हर विश्वासी को चलने के लिए दिया गया है। हर सच्चे विश्वासी में पवित्र आत्मा है। उसका सामर्थ्य जिसने सबकुछ रचा है उनमें रहता है। सबसे छोटे सन्त में भी पर्वतों को सरकाने, सेनाओं को रोकने, या मरे हुओं को जीवित करने की सामर्थ्य है। यदि तुम वह सब पूरा करना चाहते हो जो तुम्हें करने के लिए बुलाया गया है, तब तुम्हें मेरी सेवा को अन्तिम के रूप में नहीं बल्कि आरम्भ स्थान के रूप में देखना है। तुम्हारा लक्ष्य मेरे समान बनना नहीं, परन्तु प्रभु के समान बनना होना चाहिए। तुम उसके समान बन सकते हो, और तुम वह सब, और उससे भी अधिक कर सकते हो जो उसने किया था, क्योंकि उसने उत्तम दाखरस अन्त के लिए बचा रखी है।"

मैं जानता था कि यहाँ केवल सच ही बोला जा सकता है। मैं जानता था कि जो पौलुस उसकी शिक्षाओं के विषय में कह रहा था सच था क्योंकि कई उसकी शिक्षाओं को नींव के समान इस्तेमाल कर रहे थे, न कि सुसमाचारों की नींव पर बनाने के लिए इस्तेमाल कर रहे थे, परन्तु मेरे लिए स्वीकार करना अभी भी कठिन था कि वह अपने बुलावे को पूरा नहीं कर पाया था। मैं ने पौलुस के सिंहासन और उसके अस्तित्व की महिमा को देखा। यह उससे अधिक था जो मैं ने सोचा था स्वर्ग के सबसे बड़े सन्त को मिल सकता था। वह हर प्रकार से उतना ही निष्कपट और दृढ़ था जितना होने की मैं ने अपेक्षा की थी। मुझे देखने में आया कि कितना प्रत्यक्ष था कि उसमें अभी सब कलीसियाओं के लिए चिन्ता थी। मैं ने उसकी मूर्ति बनाई हुई थी और इस पाप से वह मुझे मुक्त करने का प्रयास कर रहा था। फिर भी, वह उस पौलुस से कहीं बड़ा था जिसकी मैं ने पूजा की थी। वह जानकर मैं क्या सोच रहा हूँ, उसने उसके दोनों हाथ मेरे कंधों पर रखे, और और अधिक दृढ़ता के साथ सीधे मेरी आँखों में देखा।

"मैं तुम्हारा भाई हूँ, मैं तुम से प्रेम करता हूँ जैसे यहाँ सब तुम से प्रेम करते हैं, परन्तु तुम्हें यह समझना है। हमारा काम अब समाप्त हो गया है। हम न तो उसमें से कुछ निकाल सकते हैं और न ही उसमें जोड़ सकते हैं जो हम ने पृथ्वी पर लगाया था, परन्तु तुम कर सकते हो। हम तुम्हारी आशा नहीं हैं। तुम हमारी आशा हो, और इस बातचीत में भी मैं उसकी ही पुष्टि कर सकता हूँ जो मैं ने पहले ही लिखा है, परन्तु तुम्हें अभी भी काफी कुछ लिखना है। केवल परमेश्वर की आराधना करो, और उसी में सब चीजों में बढ़ते जाओ। कभी भी किसी मनुष्य को अपना लक्ष्य मत बनाओ, केवल उसे बनाओ। शीघ्र ही पृथ्वी पर कई चलेंगे जो हम से बड़े बड़े काम करेंगे। पहले अन्तिम होंगे और अन्तिम, पहले। हमें इसकी आपत्ति नहीं है। यह हमारे हृदयों का आनन्द है, क्योंकि हम तुम्हारे साथ एक हैं। हमारी पीढ़ी को नींव रखने और उस पर बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया था, और यह सम्मान सदा हमारा है। परन्तु नींव पर बनाई हर मंजिल ऊँची जानी चाहिए। जब तक तुम ऊपर नहीं बढ़ते हम वह नहीं बना सकेंगे जो हमें बनाना है।"

जैसे मैं इन चीजों पर विचार कर रहा था वह मुझे ध्यान से देख रहा था। तब उसने आगे कहा, "दो और चीजें थीं जिन्हें हम ने अपने समय में प्राप्त किया था, जिन्हें कलीसिया ने बहुत जल्दी खो दिया था, और उन्हें दोबारा प्राप्त नहीं किया गया है। तुम्हें उन्हें प्राप्त करना होगा।"

"वे क्या हैं ?" मैं ने पूछा, मैं महसूस कर रहा था कि जो वह कहने वाला है उसका मात्र परिशिष्ट नहीं है जो उसने पहले कहा है।

"तुम्हें सेवा, और संदेश को दोबारा प्राप्त करना होगा", उसने जोरदार शब्दों के साथ कहा।

मैं ने प्रभु की ओर देखा, उसने अपने समर्थन में सिर हिलाया, और कहा, "पौलुस का तुम्हें यह कहना सही है। अब तक वह ही दोनों के साथ सबसे अधिक विश्वासयोग्य रहा है।"

"कृपया, समझाइए", मैं ने पौलुस से आग्रह किया।

"ठीक है", उसने उत्तर दिया। "संसार में कुछ छोटे स्थानों के अलावा जहाँ महान सताव या कठिनाइयाँ चल रही हैं, हम न तो सेवा को और न ही संदेश को पहचान पाते हैं जिसका आजकल प्रचार किया जाता है। इसलिए, कलीसिया अब उसका मात्र छायाभास ही है जो यह हमारे समय में थी, और हम उससे दूर नहीं थे जो हमें होने के लिए बुलाया गया था। जब हम ने सेवा की थी, तो सेवा में होना एक सबसे बड़ा बलिदान ता जो कोई कर सकता था, और यह सबसे बड़े बलिदान - क्रूस के संदेश में प्रतिबिम्ब होता था। क्रूस परमेश्वर का सामर्थ्य है, और यह उस सबकुछ का केन्द्र है जो होने के लिए हमें बुलाया गया है। तुम्हारे पास चेलों के मनों और हृदयों को परिवर्तित करने के लिए कितना कम सामर्थ्य है, क्योंकि तुम न तो क्रूस के अनुसार जीते हो, और न क्रूस का प्रचार करते हो। इसलिए, हमें चेलों और साँसारिक लोगों में अन्तर देखने में कठिनाई होती है। यह वह सुसमाचार या उद्धार नहीं है जो हमें सौंपा गया था। तुम्हें क्रूस की ओर लौटना होगा।"

इन शब्दों के साथ उसने एक पिता के समान मेरे कंधे को दबाया, और फिर अपने आसन के पास चला गया। मुझे लगा कि मैं ने एक अविश्वसनीय आशीष और एक गंभीर फटकार पाई है। जैसे मैं वहाँ से चला मैं पर्वत के उद्धार के स्तर, और पर्वत के भीतर

देखे उद्धार के खज़ानों के विषय में सोचने लगा। मैं देखने लगा कि मेरे अपने अधिकाँश फैसले, उस द्वार में प्रवेश करने का फैसला जिससे मैं यहाँ पहुँचा, इस बात पर आधारित थे कि मुझे क्या आगे ले जाएगा, और ये प्रभु की इच्छा के विचार से नहीं किए गए थे। सबकुछ में जो मैं ने किया था मैं उसके लिए नहीं बल्कि अपने लिए जी रहा था। न्याय को गले लगाने की मेरी इच्छा में भी, मेरी प्रेरणा यही थी कि क्या मुझे हानि उठाए बिना विजय में ले जाएगा। मैं अभी भी मसीह-केन्द्रित होने के बदले आत्म-केन्द्रित में चल रहा था।

मैं जानता था कि पौलुस के साथ हुई इस छोटी सी बातचीत के परिणामों को समझने के लिए एक लम्बा समय लगेगा। परन्तु मुझे लगा कि मैं ने सम्पूर्ण, अनन्त कलीसिया से एक आशीष पाई है। गवाहों का महान बादल हमें वास्तव में धैर्य बँधा रहा था। वे हमें गर्वित माता-पिता के समान देख रहे थे जो अपने बच्चों के लिए जो उन्होंने पाया था उससे बेहतर चीजें चाहते हैं। उनका सबसे बड़ा आनन्द तब होगा जब वे कलीसिया को वह सब बनते हुए देखेंगे जो वह उनके समय में नहीं बन सकी थी। मैं यह भी जानता था कि मैं उससे बहुत चूक रहा था जो उन्होंने हमारे चलने के लिए तैयार किया था।

"अन्तिम दिनों की कलीसिया उनकी पीढ़ी से बड़ी नहीं होगी, यदि तुम बड़े बड़े काम करो तब भी नहीं", प्रभु ने टोका। "सबकुछ जो किया जाता है मेरे अनुग्रह से किया जाता है। परन्तु मैं अन्तिम दिनों की कलीसिया को मेरा अधिक अनुग्रह और मेरा अधिक सामर्थ्य उपलब्ध कराऊँगा, क्योंकि कलीसिया को जो इसने किसी भी पीढ़ी में किया है उससे अधिक पूरा करना है। अन्तिम दिनों के विश्वासी, जो सामर्थ्य मैं ने दिखाया था उसमें, वरन् उससे अधिक सामर्थ्य में चलेंगे, क्योंकि वे उनसे पहले गए हुओं के अन्तिम प्रतिनिधि हैं। अन्तिम दिनों की कलीसिया मेरे स्वभाव और मेरे मार्गों को इस प्रकार दिखाएगी जैसे वे पहले कभी भी मनुष्यों द्वारा दिखाए नहीं गए हैं। यह इसलिए है क्योंकि मैं तुम्हें अधिक अनुग्रह दे रहा हूँ, और जिसे अधिक दिया जाता है उससे अधिक लिया भी जाएगा।"

इससे मैं पौलुस के विषय में और सोचने लगा। मैं ने सोचा, "हम उतने समर्पित और विश्वासयोग्य कैसे हो सकते हैं जैसा वह था।?"

"मैं तुम्हें इसे प्राप्त करने को नहीं कह रहा हूँ", प्रभु ने उत्तर दिया। मैं तुम्हें मुझ में बने रहने को कह रहा हूँ। तुम अपनी तुलना किसी दूसरे से, वरन् पौलुस से भी नहीं कर सकते हो। तुम उससे सदा कम रहोगे जिसकी ओर तुम देख रहे हो, परन्तु यदि तुम मेरी ओर देखते हो तो तुम उससे कहीं अधिक दूर जाओगे जो तुम ने वैसे पूरा किया होता। जैसे तुम ने आप सिखाया है, इम्माऊस के मार्ग पर जब दो चेलों ने मुझे रोटी तोड़ते देखा कि उनकी आँकें खुल गई थीं। जब तुम पौलुस के, या किसी दूसरे के पत्र पढ़ते हो तब तुम्हें सुनना है। केवल जब तुम सीधे मुझ से रोटी पाते हो तो तुम्हारी आँखें खुलेंगी।

"तुम्हारा उनके द्वारा बहुत ध्यान भंग हो सकता है जो बहुत अधिक मेरे समान हैं यदि तुम उन में से मुझे नहीं देखते हो। उनके लिए भी एक दूसरा फँदा है जो दूसरों से अधिक मेरे अभिषेक और सामर्थ्य को जानते हैं। वे अकसर अपने आप को देखते हुए ध्यान भंग होते हैं। जैसे मैं तुम से पौलुस से मिलने से पहले कह रहा था, मेरे सेवकों को अंधा होना है इससे पहले वे देख सकें। मैं ने तब तुम्हें उससे बात करने दी थी क्योंकि वह इसका मेरा एक सबसे उत्तम उदाहरण है। मेरे अनुग्रह के कारण मैं ने उसे कलीसिया को सताने दिया था। जब उसने मेरी ज्योति देखी तो उसे समझ आया कि वह जिस सच्चाई की सेवा करने का दावा कर रहा था उसके साथ उसके तर्क के कारण वह सीधे संघर्ष में आया था। तुम्हारा तर्क सदा ऐसा करेगा। यह तुम से वह करवाएगा जो मेरी इच्छा के बिलकुल विपरीत है। बड़े अभिषेक के कारण इसका तुम्हारे साथ होने का बड़ा खतरा होता है, यदि तुम वह नहीं सीखते जो पौलुस ने किया था। यदि तुम अपना क्रूस हर दिन नहीं उठाते, और जो तुम हो और सबकुछ जो तुम्हारे पास है उसे इसके सामने नहीं रखते, तो तुम उस अधिकार और सामर्थ्य के कारण जो मैं तुम्हें दूँगा गिरोगे। जब तक तुम सबकुछ सुसमाचार के लिए करना नहीं सीखते, जितना अधिका प्रभाव तुम्हारा होगा उतने अधिक खतरे में तुम पड़ सकते हो।

"एक सबसे बड़ा धोखा जो मेरे अभिषिक्तों पर आता है, वह है कि वे सोचने लगते हैं कि क्योंकि मैं ने उन्हें थोड़ा अलौकिक ज्ञान या सामर्थ्य दिया है, इसलिए उनके तरीके मेरे तरीके होंगे, और जो वे सोचते हैं वैसा ही मैं सोचता हूँगा। यह एक बड़ा धोखा है, और कइयों ने इसके कारण ठोकर खाई है। तुम मेरे समान सोचोगे जब तुम मेरे साथ सम्पूर्ण संयोग में हो। सबसे अभिषिक्तों के साथ भी जो पृथ्वी पर चले हैं, पौलुस के साथ भी, यह संयोग आशिंक और थोड़े समयों के लिए ही था।

"पौलुस मेरे साथ जितने निकट कोई मनुष्य अभी तक चला है चला था। फिर भी, वह डरों और निर्बलताओं का मारा था जो मुझ से नहीं थे। मैं उसे इन से छुड़ा सकता था, और उसने कुछ बार इसके लिए विनती भी की, परन्तु उसे नहीं छुड़ाने का मेरे पास एक कारण था। पौलुस की महान बुद्धि को उसकी निर्बलताओं को सम्मिलित करना था, और उसे समझना था कि यदि मैं ने उसे इनसे छुड़ा दिया होता तब मैं उस पर प्रकटीकरण और सामर्थ्य के उस स्तर के लिए भरोसा नहीं कर सकता था जो मैं ने किया था। पौलुस ने उसकी अपनी निर्बलताओं और आत्मा के प्रकटीकरण में भेद पहचानना सीख लिया था। वह जानता था कि जब वह निर्बलताओं या डरों से घिरा होता था, तब वह मेरे दृष्टिकोण से नहीं देख रहा होता था, अपने से देख रहा होता था। इससे वह और अधिक मुझे खोजता, और मुझ पर निर्भर होता था। वह ध्यान देता था कि जो उसके हृदय में से निकलता था उसका श्रेय वह

मुझे नहीं देता था। इसलिए मैं प्रकटीकरणों के लिए उस पर भरोसा कर सकता था जो मैं दूसरों पर नहीं कर सकता था। पौलुस अपनी निर्बलताओं को जानता था, और वह अपने अभिषेक को जानता था, और वह उनमें अन्तर जानता था। जो उसके अपने मन और हृदय से आता था उसे उसने जो मेरे मन और हृदय से आता था उलझाया नहीं था।"

मैं सोचने लगा कि यह सब यहाँ कितना स्पष्ट था, परन्तु कितनी बार, ऐसे महान अनुभव के होने के बाद भी, मैं इसे बड़ी सरलता से भूल जाता था। यहाँ ज्योति को समझना और उसमें चलना कितना आसान है, परन्तु पीछे युद्ध में यह दोबारा धुँधला हो जाता है। मैं ने सोचा कि मैं डर से उतना नहीं जितना अधीरता और क्रोध से घिर जाता था, जिस से भी दृष्टिकोष उतना ही विकृति हो जाता है।

बुद्धि रुकी और मेरी ओर फिरी। "तुम एक मिट्टी के पात्र हो, और जब तक तुम पृथ्वी पर चलते हो तुम्हारे साथ ऐसा ही होगा। परन्तु, यदि तुम अपने हृदय की आँखों से देखोगे तो मुझे वहाँ भी उतनी ही स्पष्टता के साथ देखोगे जितना यहाँ देखते हो। तुम वहाँ मेरे इतने निकट हो सकते हो जितना कोई अभी तक हुआ है, और उससे भी अधिक। मैं ने सबके लिए मेरे निकट होने का मार्ग बनाया है जितना होने की वे इच्छा करते हैं। यदि तुम वास्तव में पौलुस से भी अधिक मेरे निकट होना चाहते हो तो तुम हो सकते हो। कुछ इसे चाहेंगे, और वे इसे किसी भी कीमत पर चाहेंगे कि वे उस हर चीज को हटा देंगे जो मेरे साथ उनकी घनिष्ठता में बाधा डालेगा ताकि वे अपने आप को पूरी तरह इसमें दे सकें, और जो वे चाहते हैं वे पाएंगे।

"यदि तुम मेरे साथ वहाँ भी वैसा ही चलना चाहते हो जितना यहाँ चल सकते हो तो मैं वहाँ भी तुम्हारे उतने ही निकट रहूँगा जितना मैं यहाँ हूँ। यदि तुम मुझे खोजोगे तुम मुझे पाओगे। यदि तुम मेरे निकट आओगे, तो मैं तुम्हारे निकट आऊँगा। मेरी इच्छा तुम्हारे लिए तुम्हारे शत्रुओं के बीच एक मेज बिछाने की है। मेरी यह इच्छा केवल मेरे अगुवों के लिए ही नहीं है, बल्कि उन सब के लिए है जो मेरे नाम को पुकारते हैं। मैं तुम्हारे, और उनके भी जो मेरे नाम को पुकारते हैं इतना निकट होना चाहता हूँ जितना मैं किसी के निकट हो सका हूँ। तुम्हें, न कि मुझे, निर्धारित करना है हम कितने निकट हो सकते हैं। जो मुझे खोजते हैं वे मुझे पा लेंगे।

"तुम यहाँ हो क्योंकि तुम ने अपने जीवन में मेरे न्याय को माँगा था। तुम ने मुझे न्यायी के रूप में खोजा था और अब तुम ने मुझे पाया है। परन्तु तुम्हें यह नहीं सोचना है कि क्योंकि तुम ने मेरे न्यायासन को देखा है, इसलिए अब तुम्हारे सब न्याय मेरे न्याय होंगे। तुम्हें मेरे न्याय तब ही मिलेंगे जब तुम मेरे साथ संयोग में चलते हो, और मेरे आत्मा का अभिषेक खोजते हो। इसे हर दिना पाया या खोया जा सकता है।

"मैं ने तुम्हें स्वर्गदूतों को देखने दिया है, और कई स्वपन और दर्शन दिए हैं, क्योंकि तुम उनके लिए प्रार्थना कर रहे थे। मैं अपने बच्चों को अच्छे दान देता हूँ जिनकी वे माँग करते हैं। वर्षों से तुम बुद्धि की माँग कर रहे थे, इसलिए अब पा रहे हो। तुम ने माँगा था कि मैं तुम्हारा न्याय करूँ, तो तुम उसे पा रहे हो। परन्तु ये अनुभव तुम्हें पूर्ण रूप से बुद्धिमान, या एक धर्मी न्यायी नहीं बनाते हैं। तुम्हें बुद्धि और न्याय तब ही मिलेंगे जब तुम मुझ में बने रहोगे। मुझे खोजना कभी भी बंद मत करो। जितने अधिक तुम परिपक्व होते जाओगे उतनी अधिक तुम मेरी अत्यधिक आवश्यकता को जानोगे। जितने अधिक परिपक्व तुम बनोगे, उतना कम तुम मुझे से या दूसरों से छिपोगे, जिससे तुम सदा ज्योति में चल सकोगे।

"तुम ने मुझे एक उद्धारकर्त्ता, प्रभु, बुद्धि और न्यायी के रूप में देखा है। जब तुम युद्ध में लौटोगे, वहाँ से भी तुम मेरे न्यायासन को अपने हृदय की आँखों से देख सकोगे। जब तुम इसकी सच्चाई में चलोगे कि सबकुछ जो तुम सोचते और करते हो यहाँ पूरी तरह प्रकट हैं, तब तुम्हें वहाँ भी जीने की स्वतन्त्रता होगी जैसे यहाँ है। केवल जब तक मुझ से या दूसरों से छिपते हो, कि तुम्हें मुझ से छिपाने के लिए परदा आ जाता है। मैं सच्चाई हूँ, और जो मेरी आराधना करते हैं आत्मा और सच्चाई में आराधना करें। सच्चाई को अन्धकार में छिप कर कभी भी प्राप्त नहीं किया जा सकता है, इसलिए सदा ज्योति में रहने का प्रयत्न करो। ज्योति उघाड़ती और प्रकट करती है, इसलिए जब तुम प्रकट होना चाहते हो, जो तुम हृदय में हो प्रकट करना चाहते हो, तब तुम ज्योति में चलोगे जैसे मैं ज्योति में हूँ। मेरे साथ सच्ची संगति के लिए सम्पूर्ण रूप से प्रकट होने की आवश्यकता है। मेरे लोगों के साथ सच्ची संगति के लिए भी यही चाहिए।

"जब तुम न्यायासन के सामने खड़े थे तब तुम ने बहुत स्वतन्त्रता और सुरक्षा अनुभव की थी जितनी तुम ने कभी नहीं की है क्योंकि तुम्हें कुछ भी छिपाने की आवश्यकता नहीं थी। तुम ने बहुत सुरक्षा महसूस की थी क्योंकि तुम जानते थे कि मेरे न्याय सच्चे और धर्मी हैं। मेरी सृष्टि की नैतिक और आत्मिक व्यवस्था उतनी ही निश्चित है जितनी प्राकृतिक व्यवस्था की है जो प्राकृतिक नियमों पर स्थापित है। तुम बिना इस पर विचार किए मेरे गुरूत्व के नियम पर भरोसा करते हो। तुम्हें मेरे न्यायों पर भी उसी प्रकार भरोसा करना सीखना है। मेरे धार्मिकता के स्तर अपरिवर्तनशील हैं, और वैसे ही निश्चित हैं। इस सच्चाई के अनुसार जीना विश्वास में चलना है। सच्चा विश्वास जो मैं हूँ उसमें भरोसा रखना है।

"तुम मेरे सामर्थ्य को जानना और उसमें चलना चाहते हो ताकि तुम रोगियों को चंगा और चमत्कार कर सको, परन्तु तुम ने मेरे वचन के सामर्थ्य को समझना भी आरम्भ नहीं किया है। सब मरे हुओं को जीवित करने में जो पृथ्वी पर रहे हैं, मुझे कोई परिश्रम

नहीं करना पड़ेगा। मैं अपने वचन के सामर्थ्य से सब चीजों को सम्भाले हुए हूँ। सृष्टि मेरे वचन के कारण बनी हुई है, और यह मेरे वचन के द्वारा इकट्ठी है।

"अन्त से पहले, मुझे पृथ्वी पर अपना सामर्थ्य प्रकट करना है। फिर भी, सबसे बड़ा सामर्थ्य जो मैं ने कभी पृथ्वी पर प्रकट किया है, या करूँगा, मेरे सामर्थ्य का एक छोटा सा प्रदर्शन ही है। मैं अपना सामर्थ्य मनुष्यों को मेरे सामर्थ्य में विश्वास करवाने के लिए प्रकट नहीं करता हूँ, परन्तु मेरे प्रेम में विश्वास करवाने के लिए करता हूँ। यदि मैं जब पृथ्वी पर था अपने सामर्थ्य के द्वारा संसार का उद्धार करना चाहता तो केवल एक अँगुली के इशारे से पर्वत सरका सकता था। तब सब मनुष्य मेरे सामने झुक जाते, परन्तु इसलिए नहीं कि वे मुझ से प्रेम करते थे, या सत्य से प्रेम करते थे, परन्तु इसलिए कि वे मेरे सामर्थ्य से डरते थे। मैं नहीं चाहता कि वे मेरा आज्ञापालन इसलिए करें क्योंकि वे मेरे सामर्थ्य से डरते हैं, परन्तु इसलिए कि वे मुझ से प्रेम करते हैं, और वे सत्य से प्रेम करते हैं।

"यदि तुम मेरे प्रेम को नहीं जानते, तब मेरा सामर्थ्य तुम्हें भ्रष्ट करेगा। मैं तुम्हें प्रेम इसलिए नहीं देता कि तुम मेरा सामर्थ्य जान सको, परन्तु मैं तुम्हें सामर्थ्य देता हूँ ताकि तुम मेरा प्रेम जान सको। तुम्हारे जीवन का लक्ष्य प्रेम होना चाहिए, सामर्थ्य नहीं, तब मैं प्रेम करने के लिए सामर्थ्य दूँगा। मैं तुम्हें रोगियों को चंगा करने का सामर्थ्य दूँगा क्योंकि तुम उनसे प्रेम करते हो, और मैं उनसे प्रेम करता हूँ, और नहीं चाहता वे बीमार रहें।

"इसलिए तुम्हें पहले प्रेम खोजना है, और फिर विश्वास खोजना है। तुम विश्वास बिना मुझे प्रसन्न नहीं कर सकते हो। परन्तु विश्वास मात्र मेरे सामर्थ्य का ज्ञान नहीं है, परन्तु मेरे प्रेम का ज्ञान और मेरे प्रेम का सामर्थ्य है। विश्वास पहले प्रेम के लिए होना चाहिए। अधिक प्रेम करने के लिए, और अपने प्रेम के साथ और अधिक करने के लिए विश्वास खोजो। केवल तब ही जब तुम प्रेम करने के लिए विश्वास खोजते हो, मैं तुम्हें अपना सामर्थ्य सौंप सकता हूँ। विश्वास प्रेम द्वारा कार्य करता है।

मेरा वचन वह सामर्थ्य है जो सब चीजों को सम्भालता है। जिस मात्रा तक तुम विश्वास करोगे कि मेरा वचन सच्चा है तुम सब कुछ कर सकोगे। जो वास्तव में विश्वास करते हैं कि मेरे वचन सच्चे हैं अपने वचनों में भी सच्चे होंगे। सच्चा होना मेरा स्वभाव है, और सृष्टि मेरे वचन पर भरोसा करती है क्योंकि मैं इसमें विश्वासयोग्य हूँ। जो मेरे समान हैं वे भी उनके वचनों में सच्चे हैं। उनके वचन निश्चित हैं, और उनकी वचनबद्धता भरोसेमंद है। उनका 'हाँ' का अर्थ 'हाँ' है और उनके 'नहीं' का अर्थ 'नहीं' है। यदि तुम्हारे अपने वचन सच्चे नहीं हैं तो तुम मेरे वचनों पर भी संदेह करने लगोगे, क्योंकि विवाद तुम्हारे हृदय में है। यदि तुम अपने वचनों में विश्वासयोग्य नहीं हो तो यह इसलिए है क्योंकि तुम असल में मुझे जानते नहीं हो। विश्वास होने के लिए, तुम्हें विश्वासयोग्य होना चाहिए। मैं ने तुम्हें विश्वास में चलने के लिए बुलाया है क्योंकि मैं विश्वासयोग्य हूँ। यह मेरा स्वभाव है।

"इसी कारण से तुम्हारे द्वारा बोले गए हर लापरवाह शब्द के लिए तुम्हारा न्याय होगा। लापरवाह होने का अर्थ कम परवाह करना है। शब्दों में सामर्थ्य होता है, और जो उनके शब्दों में लापरवाह हैं उन पर मेरे वचन की सामर्थ्य का भरोसा नहीं किया जा सकता है। अपने शब्दों के साथ सावधान रहना, और जैसे मैं उन्हें रखता हूँ वैसे रखना बुद्धि है।"

प्रभु के शब्द मेरे ऊपर समुद्र की बड़ी-बड़ी लहरों के समान आ रहे थे। मैं बवण्डर से पहले अय्यूब के समान लग रहा था। मैं ने सोचा मैं छोटा होता जा रहा हूँ और तब समझ आया कि वह बड़ा होता जा रहा है। मैं ने पहले कभी इतना ढीठ महसूस नहीं किया था। मैं परमेश्वर के साथ इतना लापरवाह कैसे हो सकता था? मुझे लगा मैं एक चींटी के समान पर्वतों की श्रृँखला पर चढ़ रहा हूँ। मैं धूल से भी छोटा था, फिर भी वह मुझे से बात करने के लिए समय ले रहा था। मैं और रुक नहीं सका, और चला गया।

कुछ क्षण के बाद, मैं ने अपने कंधे पर एक आश्वासन भरा हाथ महसूस किया। यह बुद्धि थी। उसकी महिमा अब और भी महान थी, परन्तु वह अब मेरे आकार का था। "क्या तुम्हें समझ में आया तब क्या हुआ था?" उसने पूछा।

अच्छी तरह जानते हुए कि जब प्रभु एक प्रश्न पूछता है तब वह जानकारी नहीं चाहता है, मैं विचार करने लगा। मैं जानता था यह वास्तविकता है, उसकी तुलना में मैं पृथ्वी की तुलना में एक धूल के तिनके से भी छोटा था, और किसी कारण से वह चाहता था मैं इसे अनुभव करूँ। मेरा विचारों का उत्तर देते हुए, उसने विस्तार से समझाया।

"जो तुम सोच रहे हो सत्य है, परन्तु मनुष्य की परमेश्वर से यह तुलना केवल आकार में ही नहीं है। तुम मेरे वचन के सामर्थ्य को अनुभव करो। मेरे वचनों के लिए भरोसा करना उस सामर्थ्य के लिए भरोसा करना है जिससे सृष्टि बनी हुई है। मैं ने यह तुम्हें छोटा महसूस कराने के लिए नहीं किया, परन्तु तुम्हें उसकी गम्भीरता और सामर्थ्य को समझने के लिए किया जो तुम्हें सौंपा गया है - परमेश्वर का वचन। अपने सारे प्रयत्नों में याद रखो कि परमेश्वर से मनुष्यों के लिए एक शब्द भी पृथ्वी के सारे भण्डारों से अधिक मूल्यवान है। तुम्हें मेरे वचनों का मूल्य समझना है और मेरे भाइयों को सिखाना है जिन्हें मेरे वचनों को ले जाने के लिए बुलाया है। तुम्हें अपने शब्दों के मूल्य का ध्यान भी रखना है। जो सच्चाई को ले जाएँगे उन्हें सच्चे होना है।

जैसे मैं सुन रहा था, मुझे हमारे निकट एक सिंहासन की ओर देखने की बाध्यता महसूस हुई। तुरन्त मैं ने एक मनुष्य को देखा जिसे मैं ने पहचान लिया। जब मैं छोटा था तब वह एक महान सुसमाचार प्रचारक था, और कई कहते थे कि प्रारम्भिक कलीसिया से लेकर उसके समान सामर्थ्य के काम किसी ने नहीं किए थे। मैं ने उसके विषय में पढ़ा था और उसके कुछ रेकार्ड संदेशों को

सुना था। उसकी असली दीनता, और प्रभु और लोगों के लिए प्रत्यक्ष प्रेम जो उसमें था उससे प्रभावित न हो पाना कठिन था। फिर भी मुझे लगा था कि उसकी कुछ शिक्षाएँ गम्भीर रूप से टेढ़ी हो गई थीं। मैं चकित हुआ, परन्तु उसे एक महान सिंहासन पर बैठे देखकर भारमुक्त भी हुआ। मैं उस दीनता और प्रेम से मोहित हो गया था जो उसमें से निकल रहे थे।

जैसे मैं प्रभु से पूछने के लिए कि मैं उससे बात कर सकता हूँ मुड़ा, मैं देख सकता था कि प्रत्यक्ष रूप से प्रभु इस व्यक्ति से कितना प्रेम करते हैं। परन्तु, प्रभु ने मुझे इस व्यक्ति से बात नहीं करने दी, और मुझे चलते रहने का संकेत किया।

"मैं केवल चाहता था तुम उसे देखो", प्रभु ने समझाया, "और उस स्थान को समझो जो उसका मेरे साथ है। तुम्हारे लिए उसके विषय में काफी कुछ समझने के लिए है। वह मेरी अन्तिम दिन की कलीसिया का एक दूत था, परन्तु कलीसिया उसे सुन नहीं सकी थी जिसका कारण तुम उचित समय पर समझोगे। वह कुछ समय के लिए निराशा और भ्रान्ति में पड़ गया था, और उसके संदेश को विकृत किया गया था। इसे दोबारा प्राप्त करना है, और उसके कुछ अंशों को भी करना है जिन्हें मैं ने दूसरों को दिया था जिन्हें भी विकृत किया गया था।"

मैं जानता था कि जो कुछ यहाँ हो रहा था जिसे मुझे सीखना था, सही समय के अनुसार हो रहा था, और सोचने लगा कि इस व्यक्ति को देखना भी उस बात से सम्बंधित होगा जिसके विषय में हम अभी बात कर रहे थे - भ्रष्ट करने की सामर्थ्य की सम्भावना।

"हाँ। बड़े सामर्थ्य में चलने का एक बड़ा खतरा है", प्रभु ने उत्तर दिया। "यह मेरे अनेक दूतों के साथ हुआ है, और यह उस संदेश का एक अंश है जो उन्हें मेरी अन्तिम दिन की कलीसिया को देना है। तुम्हें मेरे सामर्थ्य में चलना है, और इन अनुभवों से भी बड़े सामर्थ्य में चलना है, परन्तु यदि तुम सोचने लगो कि यह सामर्थ्य तुम्हारे समर्थन के लिए, या तुम्हारे संदेश के लिए है, तो तुम उसी भ्रान्ति के लिए द्वार खोल दोगे। पवित्र आत्मा केवल मेरा गवाह होने के लिए दिया गया है। यदि तुम, पौलुस के समान, बुद्धिमान हो तो तुम अपनी योग्यताओं से अधिक अपनी निर्बलताओं में गौरव करना सीखोगे।"

"सच्चा विश्वास मैं जो हूँ उसकी सच्ची पहचान है। यह न तो अधिक है और न कम है। परन्तु तुम्हें सदा याद रखना है, कि यदि तुम मेरी उपस्थिति में बने रहते हो, यदि तुम मुझे देखते हो जैसा मैं हूँ, तब भी तुम गिर सकते हो यदि तुम मुझ से नज़र हटाकर अपने को देखने लगोगे। लूसीफर भी इसी प्रकार गिरा था। वह इसी कमरे में था। वह मेरी और मेरे पिता की महिमा देखता था। परन्तु, हमें देखने से अधिक वह अपने आप को देखने लगा था। तब वह अपने पद और सामर्थ्य में अभिमान करने लगा। ऐसा मेरे अनेक सेवकों के साथ भी हुआ है जिन्हें मेरी महिमा देखने दिया गया था, और जिन्हें मेरा सामर्थ्य सौंपा गया था। यदि तुम सोचने लगो कि यह तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी धार्मिकता, या शुद्ध शिक्षा की ओर तुम्हारी निष्ठा के कारण है, तो तुम ठोकर खाओगे।

मैं जानता था कि यह उतनी ही कठोर चेतावनी है जितनी मैं ने कोई और यहाँ पाई थी, या बताया गया था। मैं लौट कर अन्तिम युद्ध में लड़ना चाहता था, परन्तु मेरे मन में गम्भीर संदेह खड़े हो रहे थे कि क्या फँदों में फँसे बिना मैं ऐसा कर सकूँगा जो सब जगह हैं लग रहे थे। मैं ने मुड़ कर प्रभु की ओर देखा। वह बुद्धि था और मैं ने सोचा कि जब मैं लौटूँगा तब मुझे उसे बुद्धि के रूप में जानने की कितनी आवश्यकता होगी।

"तुम्हारे लिए अपने आप में विश्वास खोना भला है। जब तक ऐसा नहीं होता मैं तुम पर आनेवाले युद्ध की शक्तियों का भरोसा नहीं कर सकता हूँ। जितना अधिक विश्वास तुम अपने में खोओगे, उतने अधिक सामर्थ्य के लिए मैं तुम पर भरोसा कर सकूँगा, यदि...।"

मैं ने प्रभु की, आगे बोलने के लिए एक लम्बे समय तक प्रतीक्षा की, परन्तु वह बोला नहीं। किसी प्रकार मैं जानता था कि वह चाहता था मैं वाक्य पूरा करूँ, परन्तु मुझे पता नहीं था मैं क्या बोलूँ। परन्तु, जितना अधिक मैं ने उसकी ओर देखा उतना विश्वास मैं ने महसूस किया। अन्त में, मुझे पता था क्या कहना है।

"यदि मैं अपना भरोसा आप में डालता हूँ", मैं ने कहा।

"हाँ। तुम्हें जो करने के लिए बुलाया गया है उसे करने के लिए तुम्हारे पास विश्वास होना चाहिए, परन्तु यह विश्वास मुझ में होना चाहिए। इतना काफी नहीं कि तुम केवल अपने में विश्वास खो दो। यदि तुम रिक्ति को मुझ में विश्वास के साथ भरते नहीं हो तो यह केवल असुरक्षा ही लाएगा। इसी प्रकार से इन में से अनेक लोग उनकी भ्रान्ति में पड़े थे। इन में से कई पुरुष और स्त्रियाँ भविष्यद्वक्ता थे। परन्तु, असुरक्षा के कारण, उन में से कुछ लोगों को उन्हें भविष्यद्वक्ता पुकारने नहीं देते थे। परन्तु यह सत्य नहीं था क्योंकि वे थे। झूठी दीनता भी धोखा है। यदि शत्रु उन्हें सोचने में धोखा दे सकता है कि वे भविष्यद्वक्ता नहीं हैं, तब वह उनके आत्म-विश्वास को बढ़ाकर उनको यह सोचने में भी धोखा दे सकता था कि वे जो हैं उससे बड़े भविष्यद्वक्ता हैं। झूठी दीनता अभिमान को नहीं निकाल सकती है। यह आत्मकेन्द्र की मात्र दूसरी किस्म है, जिस से लाभ उठाने का शत्रु को अधिकार है।"

"तुम्हारी सारी असफलताएँ इस एक चीज, आत्मकेन्द्र, का परिणाम होंगी। इस से छूटने का एक ही तरीका है, प्रेम में चलना। प्रेम अपना भला नहीं खोजता है।"

जैसे मैं इस सब चीजों के विषय सोच रहा था, मैं एक अदभुत स्पष्टता अनुभव करने लगा। मैं सारे अनुभव को आरम्भ से अन्त तक देख सकता था, जिसके केन्द्र में यह एक, सरल संदेश था। "मैं आपकी ओर भक्ति की सरलता से कितनी आसानी के साथ बहक जाता हूँ", मैं ने शोक किया।

तब प्रभु रुके और मेरी ओर एक मुद्रा के साथ देखा जिसके लिए मैं प्रार्थना करता हूँ मैं कभी भूलूँ नहीं। वे मुस्कराए। मैं इस अवसर को खराब नहीं करना चाहता था, परन्तु किसी प्रकार मुझे लगा कि जब प्रभु इस प्रकार मुस्कराते हैं तब मैं उनसे कुछ भी माँग सकता हूँ और वे मुझे दे देंगे, इसलिए मैं ने अवसर का लाभ उठाया।

"प्रभु, जब आपने कहा, 'उजियाला हो', उजियाला हो गया था। आपने यूहन्ना 17 में प्रार्थना की थी कि हम भी आपसे वैसे ही प्रेम के साथ प्रेम करेंगे जिससे पिता आपसे करता है। क्या आप इस समय मुझ से कहेंगे, 'तुम में प्रेम हो', ताकि मैं आपसे पिता के प्रेम के साथ प्रेम कर सकूँ ?"

उन्होंने मुस्कराना बंद नहीं किया, बल्कि एक मित्र के समान मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा। "मैं ने तुम से संसार की सृष्टि के पहले जब मैं तुम्हें बुलाया था यह कहा था। मैं ने यह तुम्हारे भाइयों को भी कहा है जो तुम्हारे साथ अन्तिम युद्ध में लड़ेंगे। तुम मेरे पिता का मेरे लिए प्रेम जानोगे। यह सिद्ध प्रेम है जो तुम्हारे सब डरों को निकाल देगा। यह प्रेम तुम्हें मुझ में विश्वास करने की योग्यता देगा ताकि तुम उन कामों को कर सको जिन्हें मैं ने किया है, वरन् उनसे बड़े काम कर सको, क्योंकि मैं पिता के साथ हूँ, और तुम मेरे लिए उसके प्रेम को जानोगे, और जो काम तुम्हें करने के लिए दिए जाएँगे वे मेरी महिमा करेंगे। अब, तुम्हारे लिए, मैं दोबारा कहता हूँ, 'तुम में मेरे पिता का प्रेम हो।'"

मैं इस सारे अनुभव के लिए प्रशंसा से अभिभूत हो गया था। "मैं तुम्हारे न्यायों से प्रेम करता हूँ", मैं ने कहा और मैं न्यायासन को देखने के लिए मुड़ने लगा, परन्तु प्रभु ने मुझे रोका।

"पीछे मत देखो। मैं तुम्हारे लिए वहाँ नहीं हूँ; मैं यहाँ हूँ। मैं तुम्हें यहाँ इस कमरे से युद्ध में तुम्हारे स्थान में ले चलूँगा, परन्तु तुम्हें पीछे नहीं देखना है। तुम्हें मेरे न्यायासन को अपने हृदय में देखना है, क्योंकि यह अब वहीं पर है।"

"बाग, और उद्धार के खज़ानों के समान...", मैं ने सोचा।

"हाँ, सबकुछ जो मैं कर रहा हूँ, तुम्हारे हृदय में कर रहा हूँ। वहीं पर जीवित जल बहता है। वहीं पर मैं भी हूँ।"

तब उसने मेरी ओर इशारा किया, मैं ने दीनता का वस्त्र हटाते हुए अपनी ओर देखा। जो मैं ने देखा उससे चकित रह गया। मेरे हथियार में वही महिमा थी जो उसके चारों ओर थी। मैं ने तुरन्त इसे अपने वस्त्र से छिपा लिया।

"मेरे क्रूस पर जाने के पहले उस रात मैं ने अपने पिता से यह प्रार्थना भी की थी कि जो महिमा आरम्भ से मेरी उसके साथ थी मेरे लोगों के साथ भी हो, ताकि वे एक हो सकें। यह मेरी महिमा है जो एक कर देती है। जैसे तुम दूसरों के साथ जो मुझ से प्रेम करते हैं इकट्ठे होगे मेरी महिमा बढ़ेगी। इनके जुड़ने से जितनी अधिक मेरी महिमा बढ़ेगी, उतना अधिक संसार जानेगा कि मुझे मेरे पिता ने भेजा था। अब संसार वास्तव में जानेगा कि तुम मेरे चेले हो क्योंकि तुम मुझ से प्रेम करोगे, और तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे।"

जैसे मैं उसकी ओर देखता रहा, मेरा विश्वास बढ़ता रहा। यह ऐसा था जैसे भीतर से धोया जा रहा हूँ। शीघ्र ही मैं कुछ भी जो वह कहेगा करने के लिए तैयार था।

"अभी भी एक व्यक्ति है जिससे तुम्हें युद्ध में लौटने से पहले मिलना अवश्य है", जैसे हम चल रहे थे उसने कहा। जैसे हम चलते रहे, मैं चकित होता रहा कि कुछ मिनट पहले से ही वह कितना अधिक यशस्वी हो जाता था।

"हर बार जब तुम मुझे अपने हृदय की आँखों से देखोगे, तुम्हारा मन थोड़ा सा नया हो जाएगा", उसने आगे कहा। "एक दिन तुम मेरी उपस्थिति में निरन्तर बने रह सकोगे। जब ऐसा होगा, तब सबकुछ जो तुम ने मेरे आत्मा से सीखा है तुम्हारे लिए सहज ही उपलब्ध होगा।"

जो वह कहता था मैं सब सुन सकता था, और समझता भी था, परन्तु मैं उसकी महिमा से इतना मोहित हुआ था कि मुझे उसे पूछना पड़ा, "प्रभु, तू इस समय पहले के समयों से जब तू बुद्धि के रूप में प्रकट हुआ था बहुत अधिक महिमा से भरा क्यों है ?"

"मैं बदला नहीं हूँ, परन्तु तुम बदले हो। जैसे तुम मेरी महिमा को उघाड़े चेहरे से देखते हो तुम बदल रहे हो। जो अनुभव तुम्हें मिल रहे हैं तुम्हारे चेहरे पर से परदे हटा रहे हैं जिससे तुम मुझे अधिक स्पष्टता से देख सकते हो, परन्तु कुछ भी इतनी शीघ्रता के साथ नहीं निकालता है जितना मेरे प्रेम को देखने से निकालता है।"

तब वह रुक गया और मैं हमारे पास के सिंहासनों पर बैठे हुओं को देखने के लिए मुड़ा। हम अभी भी उस स्थान पर थे जहाँ बड़े बड़े राजा बैठे थे। तब मैं ने एक व्यक्ति को पहचाना जो निकट था।

"जनाब, मैं आपको जानता हूँ, परन्तु आप कहाँ से हैं याद नहीं आ रहा है।"

"एक बार तुम ने मुझे एक दर्शन में देखा था", उसने उत्तर दिया।

मुझे तुरन्त याद आया, और मुझे धक्का लगा! "तो आप एक असली व्यक्ति थे ?"

"हाँ", उसने उत्तर दिया।
तब मुझे याद आया जब मैं एक नया मसीही था एक दिन मैं अपने जीवन में कुछ बातों के कारण बहुत परेशान था। मैं अपने घर के पास के एक पार्क में गया और निश्चय किया कि जब तक प्रभु मुझे से बात नहीं करता मैं प्रतीक्षा करूँगा। जैसे मैं बैठ कर बाइबल पढ़ने लगा मैं ने एक दर्शन देखा, पहला दर्शन जो मैं ने देखा था। दर्शन में मैं ने एक व्यक्ति को देखा जो बड़े उत्साह के साथ प्रभु की सेवा कर रहा था। वह लगातार लोगों को गवाही दे रहा था, सिखा रहा था, और बीमारों के लिए प्रार्थना करने को जा रहा था। वह प्रभु के लिए बहुत उत्साही था, और उसमें लोगों के लिए सच्चा प्रेम था। तब मैं ने एक दूसरे व्यक्ति को देखा जो प्रकट था एक आवारा या बेघर व्यक्ति था। एक बिल्ली का बच्चा उसके रास्ते में आ गया और उसने उसे मारने को पैर उठाया, परन्तु अपने को रोक लिया, परन्तु फिर भी अपने पैर के साथ उसे थोड़ी कठोरता से साथ हटा दिया। तब प्रभु ने मुझे पूछा इन में से किसने उसे सबसे अधिक प्रसन्न किया है।
"पहले ने", मैं ने बिना हिचके कहा।
"नहीं, दूसरे ने", उसने कहा, और उनकी कहानियों को सुनाने लगा।
पहला व्यक्ति का पालन-पोषण एक बहुत अच्छे परिवार में हुआ था, जो प्रभु को जानते थे। वह एक सफल कलीसिया में बड़ा हुआ, और फिर एक उत्तम बाइबल कालेज में प्रशिक्षण लिया। उसे परमेश्वर के प्रेम के एक सौ भाग दिए गए थे, परन्तु वह केवल पचहत्तर ही इस्तेमाल कर रहा था।
दूसरा व्यक्ति बहरा पैदा हुआ था। उसके साथ दुर्व्यवहार किया गया था और उसे एक अंधेरी, ठण्डी अटारी में रखा गया था, जब वह अधिकारियों को मिला था तब वह आठ वर्ष का था। तब उसे एक संस्था में भेजा गया जहाँ दुर्व्यवहार जारी रहा था। अन्त में उसे सड़क पर भेज दिया गया था। इन सब बातों पर जय पाने के लिए प्रभु ने उसे प्रेम के तीन भाग ही दिए थे, और उसने बिल्ली के बच्चे को चोट पहुँचाने के अपने हृदय के रोष से लड़ने के लिए उसे पूरा का पूरा इस्तेमाल किया था।
मैं ने उस व्यक्ति की ओर देखा, वह एक राजा के समान एक सिंहासन पर बैठा हुआ था जिसकी कल्पना सुलेमान ने भी नहीं की होगी। स्वर्गदूतों की सेना उसके चारों ओर, उसके आदेशों का पालन करने के लिए तैनात थी। मैं विस्मय के साथ प्रभु की ओर फिरा। मैं अभी भी विश्वास नहीं कर पा रहा था कि वह असली है, महान राजाओं में से एक है दूर की बात थी।
"प्रभु, कृपया मुझे उसकी बाकी की कहानी बताइए", मैं ने याचना की।
"निस्संदेह, इसी लिए तो हम यहाँ हैं। यह व्यक्ति, जिसका नाम एंजलो था, उस थोड़े में जो मैं ने उसे दिया था इतना विश्वासयोग्य था, कि मैं ने उसे अपने प्रेम के तीन और भाग दिए। उसने उन सबको इस्तेमाल करके चोरी करना छोड़ दिया। वह लगभग मूख से मर रहा था, परन्तु उसने उसे लेने से इन्कार किया जो उसका नहीं था। वह बोलतों को इकट्ठा करके जो बनाता उससे अपना खाना खरीदता, और कभी-कभार उसे कोई मिल जाता जो उसे आँगन में काम करने देता। वह सुन नहीं सकता था, परन्तु उसने पढ़ना सीख लिया था इसलिए मैं ने उसके पास एक सुसमाचार का पर्चा भेजा। जैसे उसने पढ़ा पवित्र आत्मा ने उसके हृदय को खोला और उसने अपना जीवन मुझे दे दिया। मैं ने दोबारा मेरे प्रेम का भाग उसके लिए दुगुना कर दिया और उसने उन सब को विश्वासयोग्यता के साथ इस्तेमाल किया। वह मेरे बारे में दूसरों को बताना चाहता था, परन्तु वह बोल नहीं सकता था। हालाँकि वह ऐसी गरीबी में जी रहा था, फिर भी उसने अपनी आमदनी का आधे से ज्यादा नाकों पर बाँटने के लिए सुसमाचार पर्चों पर खर्च करना आरम्भ किया।"
"उसने कितने लोगों को आपके लिए जीता?" मैं ने पूछा, मैं सोच रहा था कि राजाओं के साथ बैठने के लिए उसने असंख्य लोगों को जीता होगा।
"एक" प्रभु ने उत्तर दिया। "मैं ने उसे प्रोत्साहित करने के लिए एक मर रहे शराबी को जीतने दिया। इससे वह इतना प्रोत्साहित हो गया कि केवल एक और मनुष्य को पश्चाताप में लाने के लिए वह उस नाके पर कई और वर्षों तक खड़ा रह सकता था। परन्तु सारा स्वर्ग उसे यहाँ लाने के लिए मुझ से विनती कर रहा था, और मैं भी चाहता था कि वह अपना इनाम पाए।"
"परन्तु उसने राजा बनने के लिए ऐसा क्या किया था?" मैं ने पूछा।
"वह उसमें विश्वासयोग्य था जो उसे दिया गया था। उसने मेरे समान बनने के लिए सबकुछ पर जय पाई, और वह शहीद हो गया।"
"परन्तु किस पर जय पाई, और वह कैसे शहीद हुआ?"
"उसने मेरे प्रेम से संसार पर जय प्राप्त की। बहुत कम लोगों ने इतने कम से इतने अधिक पर जय पाई है। मेरे कई लोग ऐसे घरों में रहते हैं जिनकी सुविधाओं के कारण जिनसे एक शताब्दी पहले के राजाओं को जलन होती होगी, परन्तु वे उनका आभार नहीं मानते, जबकि एंजलो एक ठण्डी रात को एक गत्ते के लिए इतना आभारी होता था कि वह उसे मेरी उपस्थिति के एक यशस्वी मन्दिर में परिवर्तित कर देता था। वह सबसे और सब चीजों से प्रेम करने लगा था। वह एक सेब से इतना प्रसन्न होता था जितना मेरे कुछ लोग एक बड़े भोज से उतने प्रसन्न नहीं होते हैं। वह उसमें विश्वनासयोग्य था जो मैं ने उसे दिया था, हालाँकि यह

उतना नहीं था जितना मैं ने दूसरों को दिया है, और तुम्हें भी। मैं ने तुम्हें उसे एक दर्शन में दिखाया था क्योंकि तुम उसके पास से अनेक बार गुज़रे थे। तुम ने एक बार उसकी ओर इशारा करके अपने मित्रों से कुछ कहा था।"

"मैं ने किया था? मैं ने क्या कहा था?"

"तुम ने कहा, 'यह उन एल्लियाहों में से एक है जो बस स्टेशन से निकल भागा होगा।' तुम ने कहा था कि वह 'एक धार्मिक सनकी व्यक्ति' है, जिसे शत्रु ने लोगों को सुसमाचार के लिए बंद करने के लिए भेजा है।"

यह सबसे बुरा धक्का था जो मैं इस अनुभव में सहा था। मुझे अत्यधिक धक्का लगा था; मैं भयभीत हो गया था। मैं ने विशेष घटना को याद करने का प्रयत्न किया, परन्तु याद नहीं आया, केवल इसलिए कि इसके समान कितने सारे दूसरे थे। मुझ में मैले गली के प्रचारकों के लिए कोई दया नहीं थी जो मुझे लगते थे कि उन्हें लोगों को सुसमाचार की ओर बंद करने के लिए भेजा गया था।

"मुझे दुख है प्रभु। मुझे वास्तव में दुख है।"

"और तुम क्षमा किए जाते हो", प्रभु ने तुरन्त कहा। "और तुम सही हो। कई हैं जो सड़कों पर गलत, और भ्रष्ट कारणों से भी सुसमाचार प्रचार करने का प्रयास करते हैं। फिर भी, कई ऐसे भी हैं जो सच्चे हैं चाहे वे अप्रशिक्षित और अशिक्षित ही क्यों न हों। तुम्हें रूप देखकर न्याय नहीं करना चाहिए। कितने सारे सच्चे सेवक हैं जो वैसे दिखते हैं जैसे यह था, वैसे ही जैसे जितने विशाल कैथीड्रलों और संस्थाओं में परिष्कृत पेशावरों में से हैं जिन्हें मनुष्यों ने मेरे नाम में बनाए हैं।"

तब प्रभु ने इशारा किया कि मैं एंजलो की ओर देखूँ। जब मैं मुड़ा तो वह अपने सिंहासन से नीचे उतर आया था और मेरे सामने खड़ा था। अपनी बाहें खोलकर उसने मुझे गले लगाया, और पिता के समान मेरे माथे को चूमा। प्रेम मेरे ऊपर और मुझ में उमड़ने लगा और मुझे लगा कि यह मेरे तंत्रिका-तन्त्र को अधिक लाद देगा। जब उसने आखिरकार मुझे छोड़ा तब मैं लड़खड़ा रहा था जैसे कि नशे में हूँ, परन्तु यह एक अदभुत भावना थी। यह ऐसा प्रेम था जैसा मैं ने पहले अनुभव नहीं किया था।

"वह तुम्हें यह पृथ्वी पर भी दे सकता था", प्रभु ने आगे कहा। "उसके पास मेरे लोगों को देने के लिए बहुत कुछ था, परन्तु वे उसके पास नहीं आते थे। मेरे भविष्यद्वक्ता भी उससे कतराते थे। वह एक बाइबल और कुछ पुस्तकें खरीद कर विश्वास में बढ़ा जिन्हें वह बार-बार पढ़ता था। उसने कलीसियाओं में जाने का प्रयत्न किया, परन्तु एक भी ऐसी नहीं मिली जो उसे स्वीकार करती। यदि उन्होंने उसे अन्दर लिया होता तब उन्होंने मुझे अन्धर लिया होता। वह उनके दरवाजों पर मेरी दस्तक था।"

मैं शोक की नई परिभाषा सीख रहा था। "वह कैसे मरा था?" मैं ने पूछा, मुझे याद आया था कि वह शहीद हुआ था, थोड़ी अपेक्षा कर रहा था कि मैं किसी प्रकार इसके लिए भी जिम्मेवार था।

"एक बूढ़े शराबी को जीवित रखते हुए जो ठण्ड से बेहोश हो गया था ठिठुरकर मर गया।"

जैसे मैं ने एंजलो की ओर देखा मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मेरा हृदय कितना कठोर है। फिर भी, मुझे यह बात समझ नहीं आई कि इससे वह शहीद कैसे बना था, मैं समझता था कि शहीद उन्हें माना जाता है जो मर जाते हैं परन्तु उनकी गवाही के साथ समझौता नहीं करते हैं।

"प्रभु, मैं जानता हूँ कि वह सच में एक जय पानेवाला है", मैं कहा, "और, इसलिए उसका यहाँ होना सही है। परन्तु क्या उन्हें भी शहीद माना जाता है जो इस प्रकार मरते हैं?"

"एंजलो अपने जीवन के हर दिन शहीद था। वह अपने लिए जो करता था उतना ही करता था जो केवल जीवित रहने के लिए पर्याप्त करता था, और उसने एक जरूरतमंद मित्र को बचाने के लिए अपने जीवन को खुशी से बलिदान कर दिया। जैसे पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखा था, चाहे तुम अपनी देह जलाने के लिए भी दे दो, परन्तु प्रेम न रखो, तो इसका कोई मूल्य नहीं है। परन्तु, जब तुम प्रेम में अपने आप को देते हो तो इसका भारी मूल्य है। एंजलों हर दिन मरता था क्योंकि वह अपने लिए नहीं, परन्तु दूसरों के लिए जीता था। जब वह पृथ्वी पर था वह अपने आप को सबसे छोटा सन्त मानता था, परन्तु एक सबसे बड़ा था। जैसे तुम पहले देख चुके हो, जो अपने आपको सबसे बड़ा समझते हैं, और दूसरों द्वारा भी बड़े माने जाते हैं, यहाँ सबसे छोटे होकर पहुँचते हैं। एंजलो किसी सिद्धान्त के लिए नहीं मरा, या अपनी गवाही के लिए भी नहीं, परन्तु वह मेरे लिए मरा।"

"प्रभु, कृपया, मुझे यह याद रखने के लिए सहायता कीजिए। कृपया जो मैं यहाँ देख रहा हूँ उसे जब मैं लौटूँगा भूलने मत दीजिए", मैं ने याचना की।

"इसी कारण से मैं यहाँ तुम्हारे संग हूँ, और जब तुम लौटोगे मैं तुम्हारे संग रहूँगा। बुद्धि मेरी आँखों से देखना, और रूप देखकर न्याय नहीं करना है। मैं ने तुम्हें एंजलो दर्शन में दिखाया था ताकि जब तुम सड़क पर उसके पास से गुज़रो तो उसे पहचान लो। यदि तुम ने उसके अतीत की जानकारी उसे बताई होती जो मैं ने तुम्हें दर्शन में दिखाई थी, तो उसने अपना जीवन मुझे उसी समय दिया होता। तब तुम इस महान राजा को चेला बना सकते थे, और उसका मेरी कलीसिया पर बड़ा प्रभाव पड़ा होता। यदि मेरे लोग दूसरों को उसी प्रकार देखें जैसे मैं देखता हूँ, तब एंजलो और उसके समान कई दूसरे, पहचाने जाते थे। उन्हें बड़े से बड़े मंचों में

लाया जाता, और मेरे लोग पृथ्वी की छोर से उनके पावों के पास बैठने आते, क्योंकि ऐसा करने से वे मेरे पावों के पास बैठे होते। वह तुम्हें प्रेम करना सिखाता, और उन वरदानों को प्रयोग में लाना सिखाता जो मैं ने दिए हैं जिससे तुम कहीं अधिक फल लाते।"

मैं इतना लज्जित महसूस कर रहा था कि मैं प्रभु से नज़र नहीं मिलाना चाहता था, परन्तु अन्त में मैं उसकी ओर मुड़ा क्योंकि मैं ने पीड़ा को मुझे दोबारा आत्मकेन्द्र की ओर ले जाते महसूस किया। जब मैं ने उसकी ओर देखा तो मैं उसकी महिमा से असल में चौंधिया गया। थोड़ा समय लगा, परन्तु धीरे-धीरे मेरी आँखें अभ्यस्त हो गई और मैं उसे देख सका।

"याद रखो कि तुम क्षमा किए गए हो", प्रभु ने कहा। "मैं तुम्हें यह चीजें दोषी महसूस कराने के लिए नहीं, परन्तु सिखाने के लिए दिखा रहा हूँ। सदा याद रखो कि और किसी भी चीज की तुलना में दया तुम्हारे प्राण पर से परदे तेजी से निकाल देगी।"

जैसे हम दोबारा चलने लगे, एंजलो पहली बार बोला। "कृपया मेरे बेघर मित्रों को याद रखना। उनमें से कई हमारे उद्धारकर्त्ता से प्रेम करेंगे यदि कोई उनके पास जाएगा।" उसके शब्दों में इतनी शक्ति थी कि मैं उत्तर नहीं दे सका, इसलिए मैं ने केवल सिर हिलाया। मैं जानता था कि ये शब्द एक महान राजा, और राजाओं के राजा के एक महान मित्र का आदेश थे। "प्रभु, क्या आप मेरी बेघरों की सहायता करने में सहायता करोगे?" "मैं किसी की भी सहायता करूँगा जो उनकी सहायता करते हैं", उसने उत्तर दिया। "जब तुम उनसे प्रेम करते हो जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ तब तुम सदा मेरी सहायता पाओगे।" उन्हें उनके प्रेम के परिमाण के अनुसार सहायक दिया जाएगा। तुम ने अनेक बार मेरे अभिषेक की माँग की है; तुम उसे किसी प्रकार पाओगे। मेरे अधिक अभिषेक के लिए उनसे प्रेम करो; तुम इसे इसी प्रकार पाओगे। उनसे प्रेम करो जिनसे मैं प्रेम करता हूँ। जैसे तुम उनसे प्रेम करते हो तुम मुझ से प्रेम करते हो। जैसे तुम उन्हें देते हो तुम ने मुझे दिया है, और मैं तुम्हें बदले में अधिक दूँगा।"

मेरा मन मेरे सुन्दर घर और दूसरी चीजों की ओर जो मेरे पास थीं चला गया। मैं धनी नहीं था, परन्तु पृथ्वी के स्तर से मैं जानता था कि मैं एक शताब्दी पहले के राजाओं से कहीं अच्छी तरह जी रहा था। मैं ने इससे पहले इनके विषय में कभी दोषी महसूस नहीं किया था, परन्तु अब कर रहा था। किसी प्रकार यह एक अच्छी भावना थी, परन्तु उसी समय यह सही नहीं लग रहा था। दोबारा मैं ने प्रभु की ओर देखा क्योंकि मैं जानता था कि वह मेरी सहायता करेगा।

"याद है मैं ने मेरे सिद्ध प्रेम के विषय में क्या कहा था कि यह कैसे ज्योति और अन्धकार के अलग करता है। जब उलझन आती है जैसी तुम अभी महसूस कर रहे हो, तुम जान सकते हो कि जो तुम अनुभव कर रहे हो मेरे प्रेम का सिद्ध नियम नहीं है। मैं अपने परिवार को अच्छे वरदान देना पसन्द करता हूँ, जैसे तुम करते हो। मैं चाहता हूँ तुम उनका आनन्द लो, और उनकी कदर करो। केवल तुम्हें उनकी आराधना नहीं करनी है, और जब मैं कहूँ उन्हें दूसरों के साथ स्वेच्छा से बाँटना है। मैं अपना हाथ हिलाकर पृथ्वी पर से तुरन्त सारी गरीबी हटा सकता हूँ। परन्तु न्याय के दिन, जब पर्वत और ऊँचे स्थानों के नीचा किया जाएगा, और गरीबों और उत्पीड़ितों को ऊँचा किया जाएगा, परन्तु मुझे करना है। मानवीय दया मेरे लिए उतनी ही विपरीत है जितना मानवीय अत्याचार है। मानवीय दया को क्रूस के सामर्थ्य के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है। मैं ने बलिदान करने नहीं, परन्तु आज्ञापालन करने बुलाया है! कभी-कभी तुम्हें मेरा आज्ञापालन करने के लिए बलिदान करना होगा, परन्तु यदि तुम्हारा बलिदान आज्ञापालन में नहीं किया जाता है तो यह हमें अलग करेगा।

"तुम ने जिस प्रकार इस महान राजा को जब वह पृथ्वी पर मेरा सेवक था गलत समझा और व्यवहार किया था उसके दोषी हो। किसी का भी मुझ से पूछे बिना न्याय मत करो। तुम्हें अनुमान नहीं है कि तुम ने कितनी मुलाकातें खो दिया है जिन्हें मैं ने तुम्हारे लिए निर्धारित किया था, केवल इसलिए कि तुम मेरी ओर संवेदनशील नहीं थे। परन्तु, मैं ने तुम्हें यह इसलिए नहीं दिखाया कि तुम दोषी महसूस करो, परन्तु कि तुम पश्चाताप करो ताकि तुम उनसे चूकते न रहोगे। यदि तुम केवल दोषी महसूस करके प्रतिक्रिया करते हो तो तुम अपने दोष की क्षतिपूर्ति करने के लिए चीजों को करोगे, जो मेरे क्रूस का अपमान है। केवल मेरा क्रूस ही तुम्हारे दोष को निकाल सकता है, और क्योंकि मैं तुम्हारा दोष निकालने के लिए क्रूस पर गया था, इसलिए जो कुछ दोष में किया जाता है मेरे लिए नहीं किया जाता है।

"मुझे मनुष्यों को दुख उठाते देखकर अच्छा नहीं लगता है", बुद्धि ने आगे कहा। "परन्तु मानवीय दया उन्हें क्रूस तक नहीं ले जा सकता है, केवल वही उनके असली दुखों को मुक्त कर सकता है। तुम एंजलो से चूक गए थे क्योंकि तुम दया में नहीं चल रहे थे। जब तुम लौटोगे तुम्हारे पास अधिक होगा, परन्तु तुम्हारी दया भी मेरे आत्मा के अधीन होनी चाहिए। मैं ने भी उन सब को चंगा नहीं किया था जिनके लिए मैं ने दया महसूस की थी, परन्तु मैं ने वही किया जो मैं ने अपने पिता को करते देखा था। तुम्हें कुछ काम केवल दया के कारण नहीं करने हैं, परन्तु मेरे आत्मा के आज्ञापालन में करने हैं। केवल तब ही तुम्हारी दया में उद्धार की सामर्थ्य होगी।

"मैं ने तुम्हें मेरे आत्मा के वरदान सौंपे हैं। तुम ने अपने प्रचार और लेखों में मेरे अभिषेक को अनुभव किया है, परन्तु तुम ने इसे बहुत कम जाना है जितना तुम समझते हो। तुम बिरले ही मेरी आँखों से देखते, या मेरे कानों से सुनते, या मेरे हृदय से समझते हो। मेरे बिना तुम ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिससे मेरे राज्य को लाभ होगा या मेरे सुसमाचार को बढ़ावा मिलेगा। तुम मेरी लड़ाइयों में लड़े हो, और तुम ने मेरे पर्वत के शिखर को देखा है। तुम ने सच्चाई के तीरों को छोड़ना और शत्रु को मारना सीखा

है। तुम ने मेरी तलवार को थोड़ा इस्तेमाल करना सीखा है। परन्तु प्रेम मेरा सबसे बड़ा हथियार है। प्रेम कभी असफल नहीं होगा। प्रेम वह शक्ति है जो शैतान के कामों को नष्ट करता है। और प्रेम ही वह होगा जो मेरे राज्य को लाता है। प्रेम मेरी सेना के ऊपर झण्डा है। इस झण्डे के नीच ही तुम्हें अब लड़ना है।"

इसके साथ हम एक गलियारे में मुड़े और न्याय के बड़े हाल में नहीं थे। बुद्धि की महिमा मेरे चारों ओर थी, परन्तु मैं उसे स्पष्ट नहीं देख पा रहा था। अचानक मैं एक द्वार के पास पहुँचा। मैं मुड़ा क्योंकि मैं जाना नहीं चाहता था, परन्तु मैं तुरन्त जान गया कि मुझे जाना होगा। बुद्धि मुझे इसी द्वार तक लाई थी। मुझे इस में से जाना था। "जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है!"

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 16 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली,
मुम्बई - 400 030
या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**